देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ

नया उपन्यास

तंत्र-मंत्र, तिलिस्म और मायावी खेलों की महारथी महाकाली का तिलिस्म तोड़ने के लिए देवराज चौहान और मोना चौधरी आगे बढ़े जा रहे थे, परंतु स्वयं महाकाली उनका रास्ता रोके खड़ी थी!
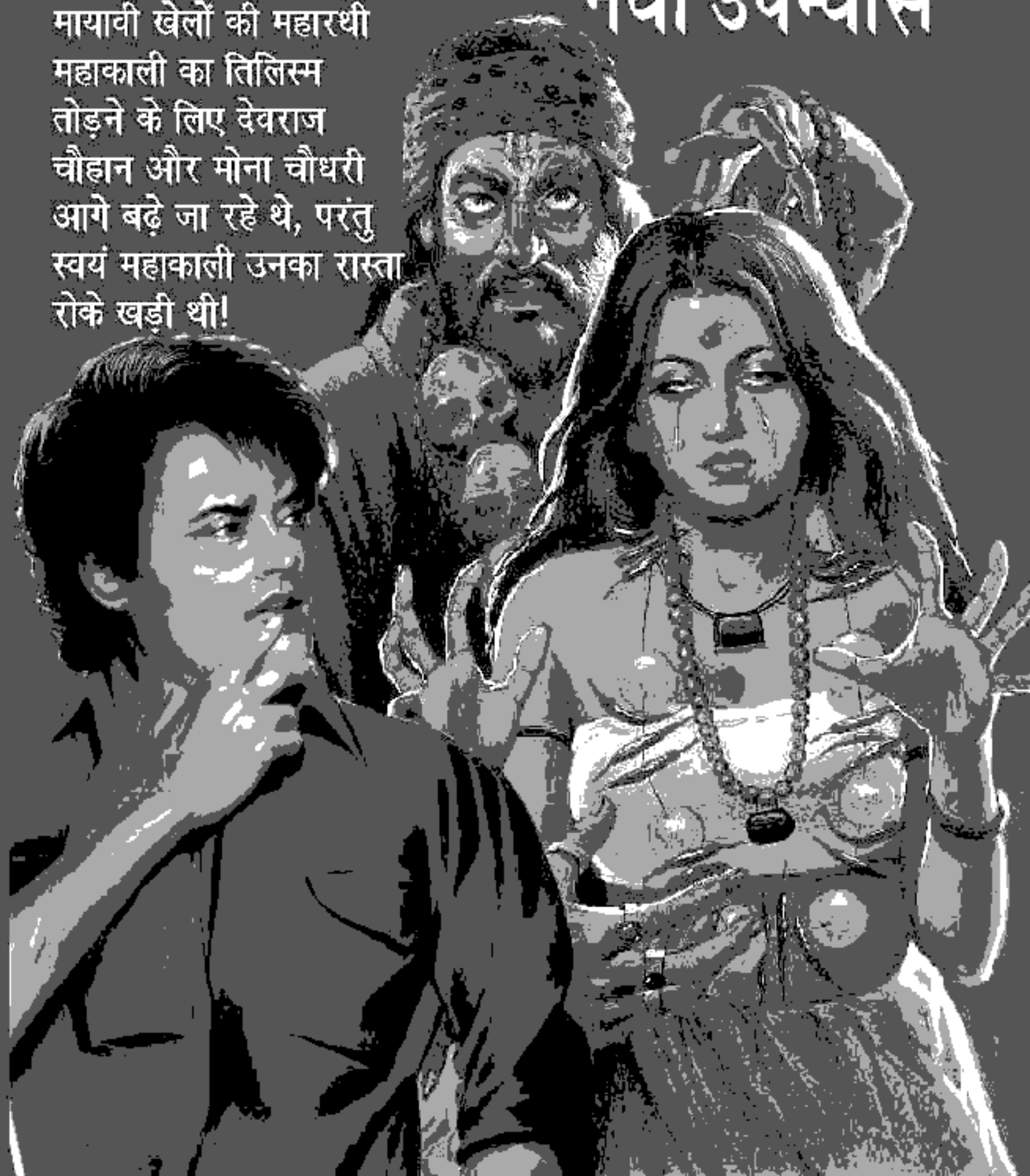
पूर्वजन्म में महाकाली ने देवराज चौहान और मोना चौधरी के नाम का तिलिस्म बांध रखा था, जथूरा की कैद पर। यानी कि अब देवराज चौहान और मोना चौधारी को एक होकर आगे बढ़ना होगा, ताकि महाकाली का बांधा तिलिस्म तोड़कर, जथूरा को आजाद करा सकें।

महाकाली

मोना चौधरी ने सांभरा की दी गोली निकाली और हथेली पर रखकर उसे देखने लगी। वो छोटी-सी गोली, भूरे रंग की चमकदार, खूबसूरत और चिकनी थी।

"क्या कर रही हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"सोच रही हूं कि सांभरा ने ये गोली यूं ही तो दी नहीं होगी। इसका अवश्य कुछ तो महत्त्व होगा।"

मोना चौधरी ने कहा।

देवराज चौहान सिर हिलाकर रह गया।

तभी जगमोहन आगे बढ़ा और पास पहुंचकर मोना चौधरी से बोला।

"मैं इसे देख सकता हूं?"

"देख लो।"

जगमोहन ने मोना चौधरी की खुली हथेली से वो भूरे रंग की गोली उठाई और उसे देखने लगा।

"ऐसी एक मेरे पास भी है।" कहकर देवराज चौहान ने जेब से गोली निकाली।

जगमोहन ने देवराज चौहान से भी गोली ले ली।

कुछ पलों बाद जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं और नजरें महाकाली के बुत की तरफ उठ गईं।

"मिल गया।" एकाएक जगमोहन के होंठों से निकला।

"क्या?" नगीना कह उठी।

अनिल मोहन का नया उपन्यास

अनिल मोहन के
राजा पॉकेट बुक्स में उपलब्ध अन्य उपन्यास

देवराज चौहान सीरीज

- ❖ हाई जैकर
- ❖ माई का लाल
- ❖ गिरोह
- ❖ भगोड़ा
- ❖ हैवान
- ❖ गुर्गा
- ❖ मुखिया
- ❖ जिन्न
- □ भूखा शेर
- □ आदमखोर
- □ आतंक का पहाड़
- □ अण्डरवर्ल्ड
- □ गैंगवार
- □ ज्वालामुखी
- □ जांबाज
- □ डंके की चोट
- □ मिस्टर हीरो
- □ दिल्ली का दादा
- ♦ जैक पॉट
- ♦ जिंदा या मुर्दा
- ♦ बारूद का ढेर
- ♦ पौ बारह
- ♦ दरिंदा
- ● दौलत का ताज
- ● गनमैन
- ● एक रुपए की डकैती
- ● डकैती के बाद
- ● डकैती
- ● टक्कर
- ● घर का शेर
- ● पहरेदार

देवराज चौहान और मोना चौधरी सीरीज

- ❖ **पोतेबाबा**
- ❖ **जथूरा**
- ❖ मंत्र
- ❖ सरगना
- ❖ गुड्डी
- ❖ मास्टर
- ● हमला
- ● जालिम

मोना चौधरी सीरीज

- ❖ खबरी
- ❖ गिरगिट
- ❖ सुरंग
- ♦ नागिन मेरे पीछे
- □ दौलत बुरी बला
- ● एक तीर दो शिकार
- ● तू चल मैं आई
- ● मोना चौधरी खतरे में
- ● आ बैल मुझे मार
- ● बुरे फंसे
- ● एक म्यान दो तलवारें
- ● जान बची लाखों पाए

अर्जुन भारद्वाज (प्राइवेट जासूस)

- □ हिंसा का तांडव
- ♦ खतरनाक आदमी
- ● गैंगस्टर
- ● खतरे का हथौड़ा

जुगलकिशोर सीरीज

- ♦ दस नम्बरी
- ● दहशत का दौर

थ्रिलर सीरीज

- ● जुर्म का जहाज
- ● सीक्रेट एजेंट

आर.डी.एक्स. सीरीज

- ❖ आर.डी.एक्स.
- ❖ डॉन का मंत्री
- ❖ गुरु का गुरु

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर कोई भी दस उपन्यासों के मूल्य का मनीऑर्डर **राजा पॉकेट बुक्स 112, फर्स्ट फ्लोर दरीबा कलां, दिल्ली-110006** के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ।

महाकाली कोई मामूली हस्ती नहीं थी। मायावी दुनिया की मल्लिका थी। तंत्र-मंत्र में उसकी बादशाहत चलती थी। पूर्वजन्म की दुनिया में हर कोई उसे इज्जत की निगाहों से देखता था। ऐसे में महाकाली का बांधा तिलिस्म तोड़ना, देवराज चौहान और मोना चौधरी के लिए बच्चों का खेल नहीं था। आसान नहीं था जथूरा को आजाद करवाना, जबकि महाकाली स्वयं रास्ते में खड़ी थी।

देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ!

अनिल मोहन

राजा पॉकेट बुक्स में

अनिल मोहन का

देवराज चौहान सीरीज का

आगामी नया उपन्यास

डॉलर मामा

एक्शन, सस्पेंस, रोमांच और सनसनी की छड़ी हाथ में लिए आ रहा है 'डॉलर मामा'

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र व घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित व मृत व्यक्ति से इनका कोई संबंध नहीं है। उपन्यास में स्थान आदि का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन मात्र है।

प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084

मुद्रक : विमल ऑफसेट प्रिंटर्स
128, नई मोहनपुरी (नियर शिव मंदिर) मेरठ

दो शब्द—लेखक की कलम से

अपने प्रिय पाठकों को

अनिल मोहन का नमस्कार,

अब हाजिर है **राजा पॉकेट बुक्स** से 'जथूरा' और 'पोतेबाबा' के बाद **'महाकाली'**।

ये तीनों उपन्यास देवराज चौहान और मोना चौधरी एक साथ वाले हैं। यानी कि पूर्वजन्म की रहस्यमय दुनिया की सैर। जहां इनके साथ इनके अपने साथी भी होते हैं और होते हैं अजीबो-गरीब हादसे। जाहिर है कि पूर्वजन्म की दुनिया में प्रवेश करेंगे तो हादसे और घटनाएं होंगी ही।

'जथूरा' और **'पोतेबाबा'** आपने पढ़ लिया होगा और अब **'महाकाली'** का इंतजार खत्म हो गया। मेरे को पाठकों के बराबर पत्र आ रहे थे कि उन्हें महाकाली पढ़ने को चाहिए। 'महाकाली' को पाने के लिए वे बेताब हैं तो अब उनकी बेताबी दूर हो गई। देवराज चौहान और मोना चौधरी के साथ 'महाकाली' हाजिर हो गई।

अब बात पाठकों के पत्रों की भी कर लेते हैं। यूं तो मैं अपने पाठकों के पत्रों के जवाब, अपने किताबी पत्र में देता ही रहता हूं परंतु दो पत्र एक तरफ दबे रह गए थे, इसलिए उनका जिक्र कर देना भी जरूरी है।

मोहम्मद असलम खान, जिला पन्ना, मध्यप्रदेश, सिकालीगर के रहने वाले हैं। कहते हैं मेरे गांव के पास कहीं भी बुक स्टाल नहीं है। जब कभी शहर जाना होता है तो आपके उपन्यास ले आता हूं। हाल ही में इन्हें मेरा उपन्यास **'गुर्गा'** मिला। लिखते हैं कि 'गुर्गा' की स्टोरी लाजवाब है इसलिए पत्र लिखने को मजबूर हो गया। खान साहब लिखते हैं कि मैं सिर्फ आपके ही उपन्यास पढ़ता हूं। दूसरे उपन्यास उन्हें पसंद नहीं आते। बढ़िया है, आप इसी प्रकार उपन्यास पढ़ते रहें और राय से भरे पत्र लिखते रहिए। दूसरा पत्र **'हाई जैकर'** के सम्बंध में है। संतोष साहब, झारखंड दुमका से लिखते हैं कि 'हाईजैकर' पढ़कर दिमाग को खुराक मिली। उपन्यास के पात्र विक्रम त्यागी के बारे में लिखते हैं कि उन्हें कभी मरने मत देना। इनकी फरमाईश है कि रुस्तम राव को किसी उपन्यास में जरूर लूं तो मेरे

ये तीनों उपन्यास जथूरा, पोतेबाबा और महाकाली में रुस्तम राव मौजूद है। उसे आप पढ़ सकते हैं।

अब कुछ 'महाकाली' की बात कर लें।

दोस्तो! 'जथूरा', 'पोतेबाबा' और 'महाकाली', इन तीनों उपन्यासों को मैंने बहुत मेहनत से लिखा है। कभी-कभी तो लिखते हुए बुरा हाल हो जाता है, क्योंकि पात्रों का कोई भरोसा नहीं कि कब कौन-सा पात्र क्या करने लगे। उपन्यासों के पात्र इतने शैतान होते हैं कि कहानी में कभी इस बात पर अड़ जाते हैं कि हमने इस रास्ते पर नहीं, दूसरे रास्ते पर जाना है। तब मुझे मजबूरी में अपना खयाल छोड़कर, पात्र की मर्जी पर आगे बढ़ना पड़ता है। ये तीनों उपन्यास देवराज चौहान और मोना चौधरी और बाकी सब पात्रों की पूर्वजन्म की दुनिया से सम्बंधित हैं। ऐसे उपन्यासों में, साधारण उपन्यासों से कई गुणा ज्यादा मेहनत लगती है और मेहनत तब चुभती नहीं, जब उपन्यास अच्छा बन जाता है। इन तीनों उपन्यासों में मैंने चंद ऐसे पात्र भी डाले हैं, जो हर मौके पर आपको मजा देते रहे। मैं उनके नामों का जिक्र भी जरूर करूंगा, वो हैं मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा, मखानी, कमला रानी। इनके साथ इस बार आपको खास मजा देंगे, बांकेलाल राठौर, रुस्तम राव, सोहनलाल और नानिया। मेरी पूरी कोशिश रही है कि इन तीनों उपन्यासों को पढ़ने में पाठकों को भरपूर मजा आए। और यकीनन आएगा भी। इन उपन्यासों में कौन-सी चीज सबसे बढ़िया रही, कहां ज्यादा मजा आया। इस बारे में जिन पहले तीन पाठकों का जवाब सबसे ठीक लगेगा, उन्हें मैं अपना आगामी नया उपन्यास देवराज चौहान सीरीज का अपने हस्ताक्षरों सहित डाक द्वारा भेजूंगा।

'महाकाली' पढ़िए और कोशिश कीजिए कि हस्ताक्षरयुक्त नए उपन्यास **'डॉलर मामा'** को आप ही हासिल कर सकें। तो अब चलते हैं। देवराज चौहान सीरीज के आगामी नए उपन्यास **'डॉलर मामा'** के साथ फिर मुलाकात होगी।

शेष फिर!

——अनिल मोहन
पोस्ट बॉक्स नम्बर-6627
नई दिल्ली-110018

महाकाली

जहां पर 'पोतेबाबा' की कहानी रुकी थी, 'महाकाली' की कहानी को वहीं से आगे बढ़ाते हैं।

मोना चौधरी की आंखें फटी-सी पड़ी थीं। चेहरे पर ढेर सारे अजीब-से भाव इकट्ठे हुए पड़े थे जिसकी वजह से चेहरा बदरंग-सा हो रहा था। वो एकटक सामने की दीवार को देखे जा रही थी।

मोना चौधरी के इस हाल पर मखानी की निगाह सबसे पहले पड़ी।

"ये क्या हो गया इसको।"

सबकी निगाह मोना चौधरी की तरफ उठी।

मोना चौधरी की हालत देखकर सब चौंके।

"मोना चौधरी।" पारसनाथ ने पुकारा।

परंतु मोना चौधरी के रूप में कोई बदलाव नहीं हुआ।

नगीना ने आगे बढ़कर, मोना चौधरी को कंधे से हिलाते हुए कहा।

"तुम्हें क्या हो गया है मोना चौधरी?"

"ये मैं हूं बेला, नीलकंठ...।" मोना चौधरी के होंठों से खरखराती मर्दाना आवाज निकली।

ये सब होता पाकर हर कोई हक्का-बक्का रह गया।

"कौन नीलकंठ?"

जवाब में मोना चौधरी के होंठों से मर्दाना ठहाका निकला। मोना चौधरी का चेहरा नगीना की तरफ घूमा तो हड़बड़ाकर नगीना एक कदम पीछे हो गई। मोना चौधरी के होंठों से निकलता नीलकंठ का ठहाका रुका।

"हैरानी है कि तू मुझे भूल गई बेला।" मोना चौधरी के होंठों से पुनः नीलकंठ की आवाज निकली।

"मैं तुझे नहीं पहचानती।" नगीना ने कहा।

"तू भूल गई मुझे, याद कर।"

"मुझे कुछ भी याद नहीं।"

"तुम अपने बारे में बताओ।" देवराज चौहान बोला।

"तुझे भी मैं याद नहीं रहा देवा?"

"नहीं। कौन हो तुम?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े हुए थे।

बांकेलाल राठौर रुस्तम राव के कान में कह उठा।

"तंम जाणों हो नीलकंठ को?"

"नेई बाप। पैली बार नाम सुनेला है।"

"यो मन्नो चौधरी के बीचो में घुस गयो का?"

"पता नेई बाप क्या रगड़ेला है।"

"गुलचंद कहां है, वो मुझे जरूर पहचानेगा।" मोना चौधरी के होंठों से पुनः नीलकंठ की आवाज निकली।

"सोहनलाल यहां नहीं है।"

"ओह गुलचंद तो मेरा खास यार है।"

"तुम अपने बारे में बताओ।" महाजन कह उठा—"तुमने बेबी पर कब्जा कैसे कर लिया। छोड़ो इसे।"

"नहीं छोड़ता।" नीलकंठ हंसा—"तूने जो करना है कर ले नीलसिंह।"

महाजन दांत भींचकर रह गया।

"तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता नीलसिंह। कोई भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं तुम में से किसी की पकड़ में आने वाला नहीं। मिन्नो का दिमाग मेरे कब्जे में है।" नीलकंठ ने कहा—"कोई भी कुछ नहीं कर सकता।"

"तुम कौन होईला बाप?"

"यो सब करो के तंम अपणी शक्ति का परीक्षण करो के, का दिखायो हो?"

"त्रिवेणी और भंवर सिंह। तुम दोनों की जोड़ी इस जन्म में भी चल रही है।" नीलकंठ ने कहा।

"जौड़ा—थारा का मतलबो हौवे। अंम शादी न करो हो, जो तंम जौड़ी बोल्लो हो।"

नीलकंठ हंसकर कह उठा।

"पुरानी यादें फिर से ताजा हो गई हैं, तुम लोगों के बीच आकर।"

सब खामोश से मोना चौधरी को देखे जा रहे थे।

"मेरे बारे में जानना चाहते हो। बहुत अजीब लग रहा है, तुम लोगों को अपने बारे में बताना। क्योंकि मेरे बारे में तो तुम लोग जानते ही हो, परंतु नया जन्म लेकर भूले हुए हो। खैर, सुन लो मेरे बारे में...मैं... ।"

तभी मोना चौधरी के शरीर को झटका-सा लगा।

वो लड़खड़ाकर ठिठक गई। इसके साथ ही मोना चौधरी की निगाह हर तरफ घूमी। फिर नजरें हवा में लहराते एक चमकीले बिंदु पर जा टिकीं जो कि मध्यम-सा इधर-उधर लहरा रहा था।

"कौन है?" मोना चौधरी के होंठों से नीलकंठ का स्वर निकला। नजरें चमकते बिंदु पर थीं।

बाकी सब भी उस चमकीले बिंदु को देख चुके थे।

"तू बहुत कमीना है।" वहां महाकाली की आवाज गूंजी।

"तू, महाकाली।" मोना चौधरी के होंठों से नीलकंठ की आवाज निकली—"यहां क्यों आई?"

"तेरी करतूत खींच लाई।"

"मैंने क्या कर दिया ऐसा?" नीलकंठ हंसा।

"यहां क्यों आया?"

"मेरी मर्जी।"

"मैंने पूछा है कि तूने मिन्नो के शरीर पर अधिकार क्यों किया, क्या चाहता है तू?"

"वाह, बात तो ऐसे कर रही है जैसे तेरे को कुछ पता ही न हो।"

"सब पता है मेरे को, तू अपने मुंह से बता।" महाकाली की आवाज सबको सुनाई दे रही थी।

"मैं मिन्नो का नुकसान होते नहीं देख सकता।" नीलकंठ की आवाज मोना चौधरी के होंठों से निकली।

"क्या नुकसान हो गया जो तू तड़प उठा।"

"हुआ नहीं है, परंतु अभी होगा। ये देवा के साथ जथूरा को आजाद कराने जा रही है।"

"तो?"

"जथूरा को तूने कैद कर रखा है। तू नहीं चाहती वो आजाद हो। जो ऐसी कोशिश करेगा, तू उसे मार देगी। या वो खुद ही तेरे बिछाए जाल में फंसकर, अपनी जान गवां देगा।" नीलकंठ बोला।

"और तू ये सब होने से रोक लेगा।"

"कोशिश तो कर सकता हूं।"

"बहुत भला चाहता है मिन्नो का।" महाकाली के स्वर में कड़वापन था—"तेरा एकतरफा प्यार अभी भी जिंदा है, जबकि मिन्नो ने कभी भी तेरी जरा भी परवाह नहीं की।"

"न करे। मुझे तो परवाह है मिन्नो की।"

"पागल मत बन। हम दोनों एक ही गुरु के शिष्य हैं और हमें झगड़ना नहीं चाहिए।"

"मेरा भी यही खयाल है।" नीलकंठ मुस्कराया।

"छोड़ दे मिन्नो को और चला जा यहां से।"

"तू सोबरा की चौकीदारी छोड़ दे। जथूरा को आजाद कर दे। पीछे हट जा।"

"मैंने सोबरा से वादा कर रखा है कि जथूरा को सुरक्षित कैद में रखूंगी और आजाद नहीं होने दूंगी।"

"तेरे जैसी को सोबरा की बात इस कदर मानते पाकर, मुझे अच्छा नहीं लग रहा महाकाली।"

"सोबरा का एक एहसान है मुझ पर।"

"जो तेरा मन करे तू वो ही कर। मैं तेरे पास नहीं आया। तू ही मेरे पास आई है।"

"मिन्नो को छोड़कर तू चला जा।"

"कभी नहीं।"

"मेरे से झगड़ा करेगा नीलकंठ।"

"मैं मिन्नो की सहायता करूंगा।"

"मेरे खिलाफ?"

"तेरे से मुझे कुछ नहीं लेना-देना। मैं तो सिर्फ मिन्नो का बचाव चाहता हूं। उसी के लिए आया हूं।"

"इस रास्ते पर चला तो झगड़ा होगा। मैं तेरे साथ कोई रियायत नहीं करूंगी।" महाकाली ने गुस्से से कहा।

"क्या करेगी तू मेरा?" नीलकंठ ने कड़वे स्वर में कहा।

"तू जानता है कि तेरे से ज्यादा ताकतवर हूं।"

"बेशक। परंतु मुझे जीतने के लिए, तेरे को बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।"

"देवा-मिन्नो के साथ तवेरा है। तू बीच में मत आ।"

"ये तो तूने अच्छी बात बताई। सुना है तवेरा तंत्र-मंत्र की बढ़िया विद्या जानती है।"

"तो तू पीछे नहीं हटेगा?" महाकाली की आवाज में गुस्सा भरा था।

"मैं मिन्नो से प्यार करता हूं।"

"वो तो तेरे से नहीं करती।"

"तो क्या हो गया, मैं तो करता हूं। हो सकता है वो अब मुझसे प्यार करने लगे।"

"नहीं करेगी। उसकी दुनिया जुदा है।"

"कोई बात नहीं, मैं हर हाल में उसका भला चाहूंगा।" मोना चौधरी के होंठ हिल रहे थे। नीलकंठ की आवाज बाहर निकल रही थी।

"नुकसान उठाएगा।"

"मुझे समझा मत। हम एक ही गुरु के चेले हैं। मेरा बुरा करेगी तो तू भी नहीं बचेगी। नुकसान तो तुझे भी होगा।"

उसी पल चमकता बिंदु लुप्त हो गया।

मोना चौधरी ने मुस्कराकर सबको देखा और नीलकंठ की आवाज निकली।

"अब तो आपको कुछ हद तक अंदाजा हो गया होगा कि मैं कौन हूं। मैं मिन्नो का पुराना प्रेमी नीलकंठ हूं। गुलचंद का यार होता था, परंतु मिन्नो के लिए चाहत थी मेरे मन में। ये जुदा बात है कि मिन्नो ने कभी मेरी परवाह नहीं की।"

"तो अब क्या चाहते हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मैं मिन्नो का भला चाहता हूं। ये तेरे साथ जथूरा को आजाद करने के लिए जा रही है और महाकाली जथूरा को आजाद करने वाली नहीं। जो ये काम करेगा, उसे किसी तरह अपने जाल में फंसाकर मार देगी। जबकि मैं मिन्नो का अहित होता नहीं देख सकता। इसलिए आया हूं कि महाकाली से मिन्नो का बचाव कर सकूं।"

"कैसे करोगे बचाव?" महाजन ने पूछा।

"जो पढ़ाई महाकाली ने पढ़ी है, वो ही मैंने पढ़ी है, ये जुदा बात है कि वो मेरे से तेज है। आज उसका नाम है। परंतु मैं इस बात की पूरी कोशिश करूंगा कि मिन्नो का अहित न हो।"

"जथूरा की कैद के बारे में तुम क्या जानते हो?" पारसनाथ ने पूछा।

"महाकाली ने जथूरा को अपनी ताकतों से बनाई कृत्रिम पहाड़ी के भीतर तिलिस्म के जाल में कैद कर रखा है। उस पहाड़ी के भीतर, रहस्यों की दुनिया बसा रखी है महाकाली ने। ऐसा मकड़जाल बिछा रखा है कि जो एक बार भीतर गया वो वहीं फंसकर रह गया। बाहर नहीं आ सकता वो।" मोना चौधरी के होंठों से निकलने वाली नीलकंठ की आवाज गम्भीर थी—"मेरी कोशिश होगी कि पहाड़ी के भीतर महाकाली के मकड़जाल से तुम लोगों को बचाऊं। तुम लोगों को जथूरा तक पहुंचा सकूं। मिन्नो जो चाहती है, उसकी इच्छा को पूरा करके, मुझे खुशी होगी।"

"तुम भी तो खतरे में पड़ सकते हो।" नगीना बोली।

"मैं।" नीलकंठ मुस्करा पड़ा—"मुझे कुछ नहीं होगा। मेरा शरीर तो पास में है नहीं। मैं अपनी ताकतों के सहारे मिन्नो के भीतर आया हूं। अगर कुछ नुकसान हुआ तो मिन्नो का होगा। जो मैं नहीं होने दूंगा।"

"तुम्हें यकीन नहीं कि तुम महाकाली की ताकतों से पार पा लोगे?"

"पूरा यकीन नहीं है। वो ताकतवर है, फिर भी मैं तुम लोगों के बहुत काम आऊंगा। वो परेशान हो जाएगी। इन सब बातों में एक अच्छी बात ये भी है कि तवेरा तुम लोगों के साथ है। सुना है वो भी तंत्र-मंत्र में खासी माहिर है।"

"तुम्हारी ऐसी कोई शर्त तो नहीं कि मोना चौधरी तुम्हें चाहे, तभी तुम हमारी सहायता... ।"

"नहीं परसू। ये तो मेरी इच्छा की बात है कि मैं तुम लोगों की, खासतौर से मिन्नो की सहायता करना चाहता हूं। बरसों बाद मुझे मिन्नो के काम आने का मौका मिला है तो पीछे क्यों हटूंगा।"

"अब तुम क्या करोगे?"

"तुम लोग सुबह यहां से रवाना होने वाले हो?" नीलकंठ बोला।

"हां।"

"हर जरूरत के वक्त तुम लोग मुझे अपने पास पाओगे। मैं मिन्नो में आ जाया करूंगा।"

सब चुप रहे।

नीलकंठ की आवाज पुनः सुनाई दी।

"मैं अब जाता हूं।"

"बेबी को तुम्हारे बारे में क्या कहें?"

"कुछ भी कहने की जरूरत नहीं। वो सब जान गई है। मैंने हर बात उसके दिमाग में डाल दी है।"

"ओह।"

उसके बाद नीलकंठ की आवाज नहीं आई।

वहां खामोशी सी आ ठहरी।

कमला रानी और मखानी कुर्सियों पर पास-पास ही बैठे थे। मखानी कमला रानी के कान में बोला।

"बाथरूम में चलें?"

"हट।" कमला रानी ने मुंह बनाया—"बार-बार थोड़े न जाते हैं।"

"दिल कर रहा... ।"

"अपने दिल को संभाल के रख। अभी मेरा दिल नहीं कर रहा। तेरे को तो ये ही सब सूझता है।"

तभी सबने मोना चौधरी को गहरी सांस लेते देखा।
मोना चौधरी ने सबको देखा फिर एकाएक मुस्कराकर कह उठी।
"नीलकंठ से मिलकर हैरान हो रहे हो।"
"तुम्हें...कैसे पता?" महाजन कह उठा।
"यहां जो भी हुआ, उसकी जानकारी नीलकंठ ने मेरे भीतर डाल दी है।" मोना चौधरी ने कहा।
"तुम...तुम जानती हो उसे—याद है नीलकंठ की?"
"याद नहीं थी, परंतु नीलकंठ ने याद दिला दी। मस्तिष्क की दबी परतों को सामने ला दिया। अब मुझे सब कुछ याद है। नीलकंठ भी, जथूरा भी, महाकाली भी।"
"यानी तुम्हें सब याद आ गया?"
"हां।"
"कौन था नीलकंठ?"
"सोहनलाल यानी कि गुलचंद का यार हुआ करता था। मेरे पे नजर रखता था। जहां मैं जाती, मेरे पीछे चला आया करता था। दो-चार बार प्यार का इजहार भी किया। लेकिन मैंने डांटकर मना कर दिया। उसके बाद भी वो मेरी ताक में ही रहा करता था कि मुझे देख ले। उसके बाद नगरी में आपसी लड़ाई छिड़नी आरम्भ हो गई थी। हम सबके मारे जाने के बाद जो बचे उन्होंने अपना रास्ता चुना। नीलकंठ तंत्र-मंत्र की विद्या लेने गुरुजी की शरण में चला गया था। वहां महाकाली भी शिक्षा ले रही थी।" मोना चौधरी ने सोच-भरे स्वर में बताया।
"और जथूरा?" नगीना ने पूछा।
"जथूरा ने नागमणि से शिक्षा ली। साधारण-सा व्यक्ति होता था जथूरा। नागमणि को जाने क्यों जंच गया। यूं नागमणि आसानी से किसी को अपना शिष्य नहीं बनाती। जथूरा को कई कठिन परीक्षाएं देनी पड़ीं। उनमें सफल होना पड़ा। जथूरा के भाई सोबरा ने भी नागमणि से ही शिक्षा पाई। परंतु नागमणि जथूरा पर ज्यादा मेहरबान रही। यही वजह है कि जथूरा काफी आगे निकल गया और सोबरा उससे कुछ कमजोर पड़ गया। जथूरा की जगमोहन से बना करती थी। उनमें कम ही मुलाकात हो पाती थी, परंतु वे अच्छे दोस्त थे।"
सबकी निगाह मोना चौधरी पर थी।
"अब क्या होगा?" पारसनाथ बोला।
"नीलकंठ मुझसे एकतरफा प्यार करता है। यही वजह है कि वो मेरी सहायता को आगे आया है।" मोना चौधरी ने कहा।

"लेकिन नीलकंठ महाकाली का मुकाबला नहीं कर सकता।"

"बेशक नहीं कर सकता। परंतु साथ में जथूरा की बेटी तवेरा भी है। इन दोनों के साथ होने पर हमें बहुत हौसला रहेगा। राह में आने वाली कठिनाइयों से ये हमें बचा सकते हैं।" मोना चौधरी बोली।

"इसमें कोई शक नहीं।"

"लेकिन नीलकंठ अपने शरीर के साथ सीधी तरह हमारे सामने क्यों नहीं आता?" नगीना ने कहा।

"वो नहीं आ सकता। वो लम्बी समाधि में गया हुआ है। समाधि तोड़नी पड़ेगी उसे और नुकसान में रहेगा। परंतु वो मेरे शरीर के अंदर आता रहेगा। उसकी मौजूदगी की कमी महसूस नहीं होगी। वो सिर्फ मेरा भला चाहता है। वो मेरे बारे में ही सोचेगा। मेरे अलावा किसी और का भी भला हो जाए तो जुदा बाद है।"

"लेकिन हम सब एक ही तो हैं।"

"हैं। परंतु नीलकंठ मेरा ही भला करेगा।" मोना चौधरी मुस्कराकर बोली—"ये बात उसने स्पष्ट कही है।"

"तुमसे कही?"

"मेरे दिमाग में डाली है। वो मेरे से बात नहीं कर सकता। परंतु जो कहना हो उसे, वो बात मेरे दिमाग में डाल सकता है।"

"तो नीलकंठ कल से तुम्हारे साथ रहेगा?"

"हां। कल हम जथूरा को आजाद कराने के लिए चल रहे हैं। पोतेबाबा रात-रात में सफर की तैयारी कर देगा। जब भी जरूरत पड़ेगी नीलकंठ मेरे में आ जाएगा। उसकी चेष्टा यही है कि महाकाली मेरे को क्षति न पहुंचा सके।"

बांकेलाल राठौर ने रुस्तम राव के कान में कहा।

"छोरे यो तो घणा प्यार का मामलो लागे हो।"

"नीलकंठ सीरियस प्यार करेला बाप।"

"म्हारी वो गुरदासपुरो वाली म्हारे से सीरियस प्यार न करो हो। दूसरों के चार बच्चे जण के बैठो हो वो तो।"

"उसका प्यार सच्चा नेई होईला बाप।"

"सच्चो प्यार हौवो, म्हारे को लस्सी के गिलासो में मकखनो का गोला डालो के दयो, पर वो म्हारी लस्सी निकाल भी लयो।"

"लस्सी निकालेगा तुम्हारी। वो कैसे बाप?"

"तंम नेई समझो हो। बच्चो हो अभ्भी।" बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस ली।

मखानी ने कमला रानी को कोहनी मारी।

कमला रानी ने उसे देखा तो मखानी ने आंख के इशारे से बाथरूम की तरफ चलने का इशारा किया।

कमला रानी ने मुंह बनाकर, चेहरा घुमा लिया।

'साली नखरे बहुत दिखाती है।' मखानी बड़बड़ाया—'सारी मेहनत तो मैंने ही करनी है, तब भी इसे नखरे सूझ रहे हैं।'

तभी देवराज चौहान कह उठा।

"मेरे खयाल में ये अच्छी बात है कि नीलकंठ के रूप में हमें एक सहायक मिल गया, जो कि हमें ठीक रास्ता दिखाएगा।"

"मोना चौधरी को।" पारसनाथ मुस्कराया।

"हम मोना चौधरी के साथ ही तो हैं।" देवराज चौहान बोला।

"महाकाली को नहीं भूलना चाहिए, वो हमारे लिए अब जाने क्या जाल बिछा रही होगी।" नगीना कह उठी।

□ □

शाम ढल रही थी। सूर्य पश्चिम की तरफ झुकता अपनी सुर्खी बिखेर रहा था। कुछ गहरे बादल थे पश्चिम में। सूर्य की सुर्खी उन्हें पार करने की चेष्टा में, उन बादलों के किनारों से तीखी-सी होकर निकल रही थी।

जगमोहन, सोहनलाल और नानिया बिना रुके अब तक आगे बढ़े जा रहे थे। उनके चेहरों पर थकान नजर आ रही थी, परंतु उनका रुकने का इरादा नहीं लगता था। नानिया का खूबसूरत चेहरा, लाली से भरा लग रहा था।

"मेरे खयाल में सफर लम्बा हो रहा है।" जगमोहन कह उठा।

"थक गए तुम।" नानिया ने सोहनलाल से मुस्कराकर कहा।

"कुछ-कुछ।"

"मैं उठा लूं तुम्हें?" नानिया हंसी।

"पूछने के लिए मेहरबानी। मैं ऐसे ही ठीक हूं।" सोहनलाल ने प्यार से नानिया को देखा।

नानिया उसे देखती मुस्करा रही थी।

चलते-चलते सोहनलाल ने नानिया का हाथ पकड़ लिया।

"तुम कितने अच्छे हो सोहनलाल।" नानिया बोली—"मुझे अपने साथ अपनी दुनिया में ले जाओगे?"

"जरूर ले जाऊंगा।"

"मुझसे ब्याह करोगे?"

"हां। तुम्हें रानी बनाकर रखूंगा।"

दोनों के चेहरों पर प्यार का खुमार नजर आ रहा था।

तभी जगमोहन कह उठा।

"कम-से-कम मेरे सामने तो ये सब बातें मत करो।"

"क्यों?" नानिया कह उठी—"तुम्हें क्या तकलीफ होती है।"

"तकलीफ होती है तभी तो कह रहा हूं।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"अजीब हो तुम। क्या तुम ऐसी बातें नहीं करते?" नानिया ने पूछा।

"नहीं। इन बातों से मेरा दिमाग खराब होता है।"

"फिर वो तुम्हारे साथ कैसे रहती होगी, जिसे तुम प्यार करते हो।"

"इसके साथ कोई नहीं रहती।" सोहनलाल बोला।

"ऐसे इंसान के साथ रहेगी भी कौन, जिसे प्यार की भाषा पसंद न हो।"

"वो बात नहीं है।" सोहनलाल ने कहा—"इसने ब्याह नहीं किया।"

"ऐसे के साथ ब्याह करेगी भी कौन।" नानिया ने मुंह बनाकर कहा।

"वैसे ब्याह तो इसने कर रखा है।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

नानिया ने गर्दन घुमाकर सोहनलाल को घूरा।

"क्या बात है।" नानिया बोली—"कभी तुम कहते हो ब्याह नहीं किया इसने, कभी कहते हो कि ब्याह कर रखा है। मैं गलत कह रही हूं कि या तुम गलत कह रहे हो। कहना क्या चाहते हो?"

"इसने नोटों के साथ ब्याह कर रखा है।"

"नोटों के साथ?"

"पैसा-दौलत। इसने और देवराज चौहान ने इतनी दौलत इकट्ठी कर रखी है कि इसका सारा वक्त दौलत को संभालने में ही निकल जाता है। ब्याह जैसी बात के बारे में सोचने की इसे फुर्सत ही कहां है। पैसे से ही इसने ब्याह कर रखा है।"

"यूं कहो न।" नानिया ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया।

"किस्मत वाले ही दौलत से शादी कर पाते हैं।" जगमोहन मुस्कराकर बोला।

"पर दौलत से तुम औरत जैसा फायदा तो नहीं उठा सकते।" नानिया ने कहा।

"इससे भी ज्यादा फायदा उठा सकता हूं।"

"क्या मतलब?"

"समझा करो।" सोहनलाल ने कहा—"दौलत हो तो औरत की कमी नहीं होती।"

"छिः। तो ये इस तरह औरत को... ।"

"ये ऐसा नहीं करता। यूं ही बात कही है।" सोहनलाल ने बताया।

"दौलत बच्चे तो पैदा नहीं कर सकती।"

"बिल्कुल नहीं।"

"मैं बच्चे पैदा करूंगी सोहनलाल।"

"जरूर करेंगे।" सोहनलाल ने प्यार से कहा—"हमारा परिवार होगा और... ।"

"अब बस भी करो।" जगमोहन ने मुंह बनाकर कहा।

"तुम चिढ़ते क्यों हो। तुम्हारे नोट बच्चे पैदा नहीं कर सकते तो... ।"

"ये चिढ़ता नहीं है।" सोहनलाल बोला—"इसकी आदत ही ऐसी है, ये ऐसी ही बात करता है।"

"ये बात तुम्हें पहले बतानी चाहिए थी।" नानिया बोली—"तुम्हें ये अजीब सा नहीं लगता?"

"शायद, थोड़ा सा है।" सोहनलाल ने मुस्कराकर जगमोहन को देखा।

"औरत के फेर में पड़कर, तेरे को बदलते देख रहा हूं सोहनलाल।" जगमोहन बोला।

"अब मेरी जिम्मेवारी बढ़ गई है।" सोहनलाल बोला।

"वो कैसे?"

"औरत का दिल भी रखना है और यारों का भी।"

(नानिया के बारे में विस्तार से जानने के लिए **अनिल मोहन** का **राजा पॉकेट बुक्स** में पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'पोतेबाबा** पढ़ें। नानिया के अलावा और भी कई अहम घटनाओं की जानकारी आपको मिलेगी **'पोते बाबा'** में!)

एकाएक नानिया ठिठकी और जमीन को देखने लगी।

इस वक्त वो खुली जमीन पर थे। जंगल जैसा इलाका पीछे छूट गया था और काफी आगे पुनः जंगल जैसा इलाका नजर आ रहा था। शाम के वक्त वहां हर तरफ सुनसानी छाई हुई थी। कोई और नजर नहीं आ रहा था।

"क्या हुआ?" सोहनलाल ने पूछा।

"यहां से सोबरा का इलाका शुरू हो गया है।" नानिया ने कहा।

"कैसे जाना?"

"मिट्टी के रंग से। जथूरा ने अपनी ताकतों से अपनी जमीन

की मिट्टी को सुर्ख जैसा रंग दे रखा है जबकि सोबरा की जमीन की मिट्टी भूरे रंग की है और यहां पर मिट्टी के दोनों रंग मिल रहे हैं। लाल और भूरा रंग। यानी कि हम ऐसी जमीन पर खड़े हैं जहां से सोबरा और जथूरा की जमीन बंट रही है।" नानिया ने सोहनलाल को देखकर कहा।

सोहनलाल और जगमोहन ने देखा कि नानिया का कहना सही था।

जहां वे खड़े थे, वहां नीचे की मिट्टी सुर्ख जैसी और भूरी मिक्स थी।

"हम कितनी देर में सोबरा की नगरी पहुंच जाएंगे?" जगमोहन ने पूछा।

"ज्यादा वक्त नहीं लगेगा, अंधेरा होने वाला है। हमें चलते रहना चाहिए।"

उसके बाद वे तीनों फिर चल पड़े।

कुछ ही देर में मैदानी इलाका पार करके, जंगल में प्रवेश करते चले गए। अंधेरा ज्यादा महसूस होने लगा था पेड़ों की वजह से। जंगल के बीच काफी चौड़ी पगडंडी बनी हुई थी। जिससे जाहिर था कि यहां लोगों का आना-जाना लगा रहता है। वे उसी पगडंडी पर तेजी से आगे बढ़ते रहे।

दिन की रोशनी अब गायब होने लगी थी।

तभी उनके कानों में घोड़ों की टापों की आवाज पड़ने लगी।

वे ठिठके।

एक-दूसरे को देखा।

"कोई इधर ही आ रहा है।" नानिया बोली।

टॉपों की आवाज धीरे-धीरे स्पष्ट होने लगी थी।

"सोबरा की नगरी की तरफ से ही कोई आ रहा है।" सोहनलाल ने कहा—"आवाज उधर से ही आ रही है।"

"एक नहीं, ये दो घोड़ों की टापों की आवाज है।" जगमोहन सोच-भरे स्वर में बोला—"परंतु एक बात अजीब है कि दोनों घोड़ों की टापों की आवाज एकसार है। यानी कि दोनों घोड़े एक समान ही दौड़ते आ रहे हैं। वरना दो घोड़ों की टापों की आवाजें तो आगे-पीछे पड़कर, कानों में उबड़-खाबड़ आवाज पड़ती है।"

"घोड़े बग्गी में लगे होंगे।" नानिया कह उठी।

जगमोहन ने मुस्कराकर नानिया को देखा।

"ऐसे क्या देखता है?" नानिया तुनककर बोली।

"सोच रहा हूं, तेरे में अक्ल है।"

"ये बात तेरे को पहले ही सोच लेनी चाहिए थी।"

"पहले तूने ऐसी समझदारी वाली कोई बात नहीं कही कि मुझे लगे कि तू समझदार है।"

"सोहनलाल, ये बोलता बहुत है।"

"तेरी तारीफ कर रहा है।"

"तू भी इसकी तरफदारी करने लगा।"

"थोड़ा-बहुत तो ध्यान रखना ही पड़ता है। वैसे तेरी जगह ये कैसे ले सकता है।"

घोड़ों के दौड़ने की आवाजें अब करीब ही सुनाई देने लगी थीं।

फिर सामने, दूर पगडंडी पर, घोड़े दिखे। साथ में बग्गी लगी हुई थी।

धूल उड़ाती बग्गी तेजी से पास आती जा रही थी।

तीनों की निगाह करीब आती बग्गी पर टिकी रही।

पास आते-आते बग्गी की रफ्तार कम होती चली गई। फिर रुक गई।

अभी दिन की रोशनी बाकी थी।

कोचवान की जगह पर घोड़ों की लगाम थामे चालीस बरस का एक व्यक्ति बैठा था। मूंछें थीं। सिर के बाल छोटे थे। सफेद कमीज पायजामा पहन रखा था। उसने मुस्कराती निगाहों से तीनों को देखा।

"कैसा है जग्गू?" उसने अपनी जगह पर बैठे-बैठे ही पूछा।

उसकी आवाज से फौरन पहचान गया जगमोहन कि ये वो ही है, जो बिना नजर आए उससे मिलता रहा और उसे रास्ता बताता रहा है। आखिरी बार ये कुएं में तब मिला था जब कमला रानी ने उन्हें कुएं में फेंक दिया था। (ये सब विस्तार से जानने के लिए राजा पॉकेट बुक्स से पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'पोतेबाबा'** अवश्य पढ़ें।)

"तुम।" जगमोहन के होंठों से निकला।

सोहनलाल ने भी उसकी आवाज सुनकर उसे पहचान लिया था।

"हां जग्गू मैं। तेरे को लेने आया हूं। वैसे मैं खुद किसी को लेने कभी नहीं आता।"

"अब तुम अपने बारे में बताओ।"

"बग्गी में बैठ जाओ। सोबरा की नगरी चलते हैं।" वो बोला—"रास्ते में बात भी हो जाएगी।"

जगमोहन ने सोहनलाल को देखा।

"चले चलते हैं।" सोहनलाल ने सिर हिलाया।

तीनों बग्गी में जाकर बैठ गए।

उसने बग्गी मोड़ी और वापस दौड़ा दी।

"ये कौन है सोहनलाल?" नानिया ने पूछा।

"सोबरा का कोई आदमी है। कई बार ये हमसे बातें करता रहा है। परंतु आमने-सामने पहली बार देखा है।"

"ये वो ही है, जिसने कालचक्र से निकलने के बाद हमसे बातें की थीं।"

"हां।"

जगमोहन उससे बोला।

"तुम कौन हो?"

"मैं सोबरा का करीबी सेवक हूं। मनीराम नाम है मेरा।" वो बोला।

"अब हम कहां जा रहे हैं?"

"सोबरा की नगरी। मैंने सोचा पैदल चलने में तुम लोगों को कष्ट होगा। इसलिए घोड़ागाड़ी ले आया।"

"देवराज चौहान कहां है?"

"देवा-मिन्नो, बाकी सब जथूरा की नगरी पहुंच चुके हैं।"

"सब?"

"हां सब।"

"तुमने हमें सोबरा की जमीन पर आने के लिए क्यों कहा?" जगमोहन ने पूछा।

"इसी में सबका भला है।" मनीराम ने कहा।

"क्यों?"

"सब जथूरा की जमीन पर इकट्ठे होते तो गलत हो जाता। देवा-मिन्नो को समझाता कौन?"

"क्या मतलब?"

"सारे मतलब मुझसे मत पूछो। हम सोबरा के पास चल रहे हैं, उससे बात करना।"

"मेरे खयाल में मुझे देवराज चौहान के पास होना चाहिए था। जथूरा उससे कभी भी झगड़ा कर सकता है।"

मनीराम हंस पड़ा।

"क्या हुआ?"

"तुम अभी भी नहीं समझे।"

"क्या?"

"पोतेबाबा तुम सबको यहां लाया है।"

जगमोहन चौंका। आंखें सिकुड़ीं उसकी।

"क्या कह रहे हो। वो तो हमें पूर्वजन्म में आने से रोकना चाहता था।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"जगमोहन ठीक कहता है।" सोहनलाल ने कहा।

"ऐसा आभास कराकर, तुम लोगों को धोखा दे रहा था पोतेबाबा। वो बहुत चालाक है।"

"क्या कहना चाहते हो?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ी हुई थीं।

"सच बात तो ये है कि अपनी हरकतों की आड़ में पोतेबाबा तुम सबको पूर्वजन्म में लाना चाहता था।"

"तुम्हारी बात पर यकीन नहीं होता।"

"तुम सब पूर्वजन्म में पहुंच चुके हो। अब तुम्हें मेरी बात का यकीन कर लेना चाहिए।"

"तुम्हारा मतलब है कि जथूरा देवराज चौहान से झगड़ा नहीं करेगा?"

"नहीं। वो तो झगड़ा करने की स्थिति में ही नहीं है।" मनीराम बग्गी दौड़ाता ऊंचे स्वर में कह रहा था—"पोतेबाबा ही जथूरा के हर काम का कर्ता-धर्ता बना हुआ है। कुछ काम जथूरा की बेटी तवेरा देखती है।"

"तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आ रहीं। खुलकर बताओ।"

"बेहतर होगा कि ये सब बातें सोबरा के मुंह से ही सुनो। सब कुछ कह देना मेरे अधिकार में भी नहीं है।"

"अगर हम सोबरा के पास न आते तो?"

"बुरा होता देवा-मिन्नो का। परंतु अब शायद सब ठीक हो जाए।"

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"तुम अपनी बातों में पहेलियां बुझा रहे हो।"

मनीराम खामोश रहा।

"बग्गी रोक दो।" जगमोहन बोला—"हम जथूरा की जमीन पर, देवराज चौहान के पास जाएंगे।"

"अब ये सम्भव नहीं।"

"क्यों?"

"सोबरा तुम लोगों का इंतजार कर रहा है और क्या तुम चाहते हो कि देवा-मिन्नो को कोई नुकसान हो?"

"नहीं।"

"फिर तुम्हें सोबरा की जमीन पर ही रहना होगा। यहीं से आगे जाने का, तुम लोगों का रास्ता बनेगा।"

"कहां—आगे जाने का रास्ता?"

"इस बारे में सोबरा बताएगा।"

"देवराज चौहान जथूरा की जमीन पर, इस वक्त किस स्थिति में है?" जगमोहन ने पूछा।

"वो सब जथूरा के बड़े महल में मेहमान बने हुए हैं। उनके बारे में फिक्र मत करो।"

जगमोहन ने सोहनलाल को देखा।

"देखते हैं, क्या होता है।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"अभी तो कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"किसी भी बात की फिक्र मत करो। सोबरा तुम लोगों का दुश्मन नहीं है। समझो, तुम लोग अपने घर में हो।"

"लेकिन ये सब हो क्या रहा है, कुछ तो पता चले।" जगमोहन झल्लाया।

"सोबरा से बात होते ही सब जान जाओगे।"

जगमोहन ने नानिया ने कहा।

"तुम तो कहती थी कि सोबरा अच्छा है।"

"तो बुरा क्या कर दिया सोबरा ने तुम्हारे साथ।" नानिया कह उठी—"वैसे मेरा मतलब था कि सोबरा जथूरा से बेहतर है।"

"जथूरा में तुम्हें क्या बुराई दिखी?"

"पता नहीं, पर वो मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"तुम कालचक्र में रानी साहिबा बनी हुई थीं। वो कालचक्र सोबरा का है, जिस पर अब जथूरा का अधिकार है।"

"तो?"

"तुम सोबरा को जानती हो?"

"हां, तभी तो उसने कालचक्र में मेरी जगह बनाई।"

"फिर तो वो तुम्हें, जथूरा से अच्छा लगेगा ही।" जगमोहन ने मुंह बनाकर कहा।

"सोहनलाल, अपने दोस्त से कह दो कि मुझसे ठीक तरह बात किया करे।"

"धीरे-धीरे तुम्हें इसकी और इसे तुम्हारी आदत पड़ जाएगी।"

"ये क्या बात हुई। ब्याह तो मेरा और तुम्हारा होना है।"

"रिश्तेदार भी तो होते हैं ब्याह के बाद।" सोहनलाल मुस्कराया—"तब जगमोहन तेरा रिश्तेदार होगा।"

"ये तो बहुत बोलता है।"

"वो ही तो कहा है कि आदत पड़ जाएगी।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"तुम काम क्या करते हो?" नानिया ने पूछा।

"मैं?" सोहनलाल अचकचाया।

"हां, तुमसे ही पूछ रही हूं। तुम्हारे दोस्त से नहीं।"
"मैं...मैं ताले-तिजौरी खोलता हूं।"
"ये क्या काम हुआ?"
"ये काम ही है।" सोहनलाल अब क्या जवाब देता।
"इसे भी सिखा देना।" जगमोहन ने व्यंग्य से सोहनलाल से कहा।
"तू चुप रह।" सकपकाए से सोहनलाल ने कहा।
जगमोहन ने मुंह घुमा लिया।
"इसे कहो हमारी बातों के बीच न बोले।"
"सुन लिया होगा इसने।"
"इसके साथ तो नहीं रहते तुम उस दुनिया में?" नानिया ने पूछा।
"नहीं। हम दोनों अलग-अलग घरों में रहते हैं।"
"ये तो कितनी अच्छी बात है।" नानिया ने कहकर गहरी सांस ली।
जगमोहन ने मनीराम से पूछा।
"कितनी देर का रास्ता है?"
"थोड़ा वक्त और लगेगा फिर हम सोबरा की नगरी पहुंच जाएंगे।" मनीराम ने बग्गी दौड़ाते कहा।
"अंधेरे में घोड़ों को रास्ता कैसे नजर आ रहा है?"
"घोड़े रास्ता पहचानते हैं।"
"सोबरा और जथूरा भाई हैं?"
"हां।"
"दोनों में बनती नहीं?"
"नहीं। लम्बे समय से मनमुटाव चला आ रहा है।" मनीराम ने बताया।
कुछ देर बाद ही उन्हें नगरी की रोशनियां दिखाई देने लगीं।

▭ ▭

सादी-सी नगरी थी सोबरा की।
जथूरा की तरह, सोबरा की नगरी में तड़क-भड़क नहीं थी। साधारण-सी सड़कें थीं। घोड़ागाड़ी-बग्गी, ठेलागाड़ी वगैरह आ-जा रही थीं। अंधेरा होने के पश्चात रोशनियों का पर्याप्त इंतजाम था।
वहां एक ही महल नजर आ रहा था। उस पर रोशनियां चमक रही थीं।
मनीराम उन तीनों को उसी महल में ले आया था। बग्गी महल के गेट के भीतर जा रुकी थी।

"आओ।" मनीराम नीचे उतरता कह उठा—"नीचे उतरो।"

जगमोहन, सोहनलाल और नानिया नीचे उतरे। महल पर नजर मारी।

"सोबरा यहां रहता है?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।" मनीराम मुस्कराया—"सोबरा यहीं रहता है।"

महल के फाटक पर जलती मध्यम-सी रोशनी उन तक पहुंच रही थी।

"इस वक्त वो भीतर ही है?"

"हां।" मनीराम आगे बढ़ता कह उठा—"मेरे पीछे आओ।"

तीनों उसके पीछे चल पड़े।

"मैं इस महल में बहुत बार आई हूं।" नानिया ने कहा।

"कब?"

"सोबरा के कालचक्र बनाने से पहले। मैं यहीं तो काम किया करती थी। सोबरा के काम। फिर उसने मुझे कालचक्र में रानी साहिबा बनाकर बैठा दिया। मैं कालचक्र में कैद होकर रह गई।"

"तब तो तुम्हें सोबरा से नाराजगी होगी कि उसने तुम्हें कैद में बिठा दिया।" सोहनलाल ने कहा।

"नाराजगी क्यों, ये भी सोबरा का ही काम था।"

मनीराम के साथ वे महल में प्रवेश करते चले गए।

शानदार महल था भीतर से। विशाल, खुले रास्ते। महल के कर्मचारी काले कपड़ों में आ-जा रहे थे।

मनीराम तेजी से एक राहदारी में बढ़ता जा रहा था। जगह-जगह रोशनी हुई पड़ी थी।

उन्हें लेकर मनीराम एक कमरे में जा पहुंचा।

बड़ा और खुला कमरा था। बिस्तरे लगे थे वहां। रोशनी हो रही थी।

"तुम तीनों यहां आराम करो। उस तरफ स्नानघर है। नहा लेना। कुछ ही देर में भोजन हाजिर हो जाएगा।"

"हम सोबरा से मिलना चाहते हैं।"

"अवश्य। परंतु मुलाकात भोजन के बाद होगी। मेहमान की पहले सेवा करना आवश्यक है। तुम लोग दूर से आए हो।" कहने के साथ ही मनीराम पलटा और वहां से बाहर निकलता चला गया।

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"आह। कितना अच्छा लग रहा है महल में ठहरकर।" नानिया कह उठी—"महल में हर कोई नहीं ठहर सकता।"

"तुम खुश हो?" सोहनलाल मुस्कराया।

"बहुत। मैं तो स्नान करने जा रही हूं।" नानिया एक दिशा में बढ़ती कह उठी—"मैं जानती हूं इधर जनाना और मर्दाना, दोनों स्नानघर हैं। पहले मैं कभी महल के स्नानघर में स्नान नहीं कर पाई। परंतु आज करूंगी।"

नानिया चली गई।

"हमें समझ नहीं आ रहा कि हम यहां क्यों आए हैं?" सोहनलाल ने कहा।

"ये बात सोबरा बताएगा।"

"क्या मतलब?"

"सोबरा के आदमी मनीराम ने ही हमें यहां पहुंचने को कहा था। सोबरा के इशारे पर ही उसने ये सब किया होगा।"

सोहनलाल ने सहमति में सिर हिलाया।

"मेरे खयाल में हम जितनी जल्दी नहा-धोकर फारिग होंगे, उतनी ही जल्दी सोबरा से मुलाकात होगी। अब मनीराम सोबरा को हमारे आ जाने की खबर दे रहा होगा। देखें तो सही कि सोबरा कहता क्या है।" जगमोहन बोला।

"देवराज चौहान और बाकी के लोग जथूरा के महल में। हम सोबरा के महल में और दोनों दुश्मन हैं।"

जगमोहन सोहनलाल को देखने लगा।

"सोबरा और जथूरा की दुश्मनी से हम मुसीबत में फंस सकते हैं।" सोहनलाल ने कहा।

जगमोहन के चेहरे पर सोचें छाई रहीं।

"शायद हमें यहां नहीं आना चाहिए था।" सोहनलाल पुनः बोला।

"सोबरा से बातचीत के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है।" जगमोहन कह उठा।

▭ ▭

मनीराम जगमोहन, सोहनलाल और नानिया को लेकर सोबरा के पास पहुंचा।

बहुत बड़े खुले कमरे में सोबरा मौजूद था।

बाहर दो पहरेदार सतर्क खड़े थे।

उस कमरे में मध्यम-सी रोशनियां फैली थीं। छत पर फानूस लटक रहे थे जो कि रोशन थे। एक तरफ फर्श पर नीचे ही नर्म गद्दे बिछे थे। जिन पर पड़े गोल तकियों के बीच पांच फुट का सोबरा बैठा था। बदन पर एक धोती के अलावा और कुछ नहीं था। हाथ में चांदी का गिलास था, जिसमें से वो रह-रहकर घूंट भर रहा था।

पास में घुटने के बल एक कम उम्र की युवती अर्धनग्न से कपड़े पहने, बैठी थी। सोबरा की आंखों में नशे की लाली झलक रही थी।

सोबरा ने तीनों को देखा फिर मुस्कराकर कह उठा।

"स्वागत है। सोबरा तुम तीनों का स्वागत करता है।" इसके साथ ही उसने कुछ फुट दूर गद्दे की तरफ इशारा किया—"मेरे मेहमान वहां बैठकर, आराम कर सकते हैं। बातें भी हो जाएंगी।"

जगमोहन, सोहनलाल और नानिया गद्दे पर जा बैठे।

मनीराम हाथ बांधे खड़ा रहा।

"ये वक्त मेरे आराम करने का होता है। परंतु तुम लोग मेरे खास मेहमान हो। सफर में परेशानी तो नहीं हुई?"

"सब ठीक रहा।" जगमोहन बोला।

सोबरा ने उस कमसिन युवती से कहा।

"मेहमानों को जाम पिलाओ।"

"अभी लीजिए।" कहकर वो फौरन उठी।

"कोई जरूरत नहीं।" जगमोहन कह उठा—"हम इन चीजों का सेवन नहीं करते।"

"बेहतर है।" सोबरा ने युवती को देखा—"तुम जाओ। अभी मुझे मेहमानों से बातचीत करनी है।"

युवती बाहर निकल गई।

"तुम कैसी हो नानिया?"

"अच्छी हूं सोबरा। परंतु कालचक्र में बंदी बनकर रहने में परेशानी अवश्य हुई।"

"मैंने तुम्हें रानी साहिबा बनाया था।"

"यही तो मेरी सजा थी कि एक साधारण युवती को रानी साहिबा बनकर, कालचक्र में रहना पड़ा।"

सोबरा हंस पड़ा।

हाथ में थाम रखे गिलास से घूंट भरा और उसे एक तरफ रख दिया।

"जग्गू और गुलचंद। बहुत समय बाद तुम दोनों को देख रहा हूं।"

"तुम हमें कब से जानते हो?" सोहनलाल ने पूछा।

"बहुत देर से। जब तुम लोगों का पहला जन्म था। फिर तुम सब ही मिन्नो के साथ हुई नगरी की लड़ाई में मर गए। दोबारा तुम दोनों को देखकर अच्छा लगा।"

"हमें काम की बातें करनी चाहिए।" जगमोहन कह उठा।

"अवश्य।" सोबरा मुस्कराया और मनीराम से बोला—"तुम जाओ मनीराम। अब तुम्हारी जरूरत नहीं।"

मनीराम बाहर निकल गया।

"कहो, क्या कहना है जग्गू?"

"तुमने हमें यहां पर क्यों बुला लिया मनीराम के द्वारा?"

"क्या तुम्हें मेरे यहां आना बुरा लगा?"

"ये मेरी बात का जवाब नहीं है।" जगमोहन गम्भीर था।

"तुम्हें बुलाना, गुलचंद को भी यहां लाना जरूरी था, ताकि संतुलन कायम रहे।" सोबरा ने कहा—"नानिया ने तुम लोगों से कहा कि सोबरा के यहां जाना ठीक है। ये बात मैंने ही नानिया के दिमाग में डाली थी।"

"तुमने ऐसा क्यों किया?"

"संतुलन कायम रखने के लिए।" सोबरा शांत स्वर में कह उठा—"देवा, मिन्नो, बेला, त्रिवेणी, भंवर सिंह, नील सिंह, परसू सब तो जथूरा की जमीन पर जा रहे थे। अगर तुम दोनों भी वहां चले जाते तो संतुलन बिगड़ जाता। देवा-मिन्नो को समझाता कौन कि वो जो कर रहे हैं, उन्हें वो नहीं करना चाहिए।"

"क्या कर रहे हैं वो?"

सोबरा खामोश-सा हो गया।

जगमोहन, सोहनलाल, नानिया की नजरें उस पर टिकी रहीं।

फिर सोबरा कह उठा।

"जथूरा मेरा भाई है, परंतु उसकी मेरी बनती नहीं। क्योंकि उसने धोखेबाजी की मुझसे। पिता की मौत के समय उसने पिताश्री से उनकी सारी ताकतें ले लीं। मुझे कुछ भी नहीं दिया। उन्हीं ताकतों के सहारे आज वो मुझसे ज्यादा शक्तिशाली बना हुआ है।"

"तो ये वजह है भाइयों की दुश्मनी की?"

"ये वजह नहीं, दुश्मनी की शुरुआत थी। उसके बाद तो बात-बात पर दुश्मनी बढ़ती ही चली गई। परंतु जथूरा पिता से मिली ताकतों का बंटवारा करने को तैयार नहीं हुआ। ज्यादा ताकतवर होकर, वो हमेशा मुझे नीचा दिखाने की चेष्टा में लगा रहता।"

तीनों उसकी बात को ध्यान से सुन रहे थे।

जगमोहन कह उठा।

"ये भी तो हो सकता है कि जथूरा ने ऐसा कुछ न किया हो, परंतु उसके ज्यादा ताकतवर हो जाने की वजह से तुम्हें अक्सर ये महसूस होता हो कि जथूरा तुम्हें नीचा दिखा रहा हो।"

सोबरा मुस्करा पड़ा।

"अगर ऐसा भी हो तो कोई बड़ी बात नहीं। परंतु वो उन ताकतों की सहायता से बड़ा बना, जिन पर मेरा भी हक था।"

तीनों की निगाह सोबरा पर थी।

"मानते हो या नहीं?" सोबरा ने पूछा।

"पिता की चीज पर तो दोनों का बराबर-बराबर हक होना चाहिए।" सोहनलाल ने कहा।

"ये ही तो मैं कहता हूं।" सोबरा ने सिर हिलाया—"परंतु जथूरा मानने को तैयार नहीं हुआ कभी भी।"

"लेकिन तुम दोनों भाइयों के झगड़े में हमारा क्या मतलब?" जगमोहन ने कहा।

"मतलब पैदा हो गया।"

"कैसे?"

"मेरी बातें वहीं तक पहुंचेंगी। सुनते रहो।" सोबरा बोला—"ताकतवर होने के नाते जथूरा ने मुझे कई बार नुकसान पहुंचाया। उसके खबरी मेरे आदमियों में मौजूद रहते हैं, जो उसे खबरें देते हैं तंग आकर मैंने कालचक्र का निर्माण किया। जथूरा के जासूसों को मैं पहचान गया था, इसलिए उनके द्वारा, कालचक्र की खबर जथूरा तक पहुंचाता रहा कि मैं ऐसे कालचक्र का निर्माण कर रहा हूं कि जथूरा इसमें फंसकर कुछ भी करने के लायक नहीं रहेगा। ये जानकर जथूरा ने कालचक्र पर काबू पाने की तैयारियां शुरू कर दीं और ये ही तो मैं चाहता था।"

"वो क्यों?"

"क्योंकि कालचक्र की आड़ में मैं जथूरा को फंसा देना चाहता था और वो फंस भी गया।"

"कालचक्र होता क्या है?" सोहनलाल ने पूछा।

"कालचक्र में नकली दुनिया और नकली हादसे भरे जाते हैं। हालात के मुताबिक जिन्हें कालचक्र में छोड़ दिया जाता है, उनसे दूर बैठे मनचाहा काम लिया जा सकता है। किसी को कालचक्र के भीतर धकेल दो तो वो कालचक्र में ही भटकता रहेगा। बाहर नहीं निकल सकेगा तमाम उम्र। बहुत कुछ होता है कालचक्र में, बताने लगूं तो सारी उम्र बीत जाए। कालचक्र भी कई तरह के होते हैं। मैंने चालीस वर्ष लगाकर उम्दा—बढ़िया कालचक्र बनाया। परंतु जथूरा के खबरियों की जानकारी में आए बिना मैंने ये बात भी कालचक्र में डाल दी कि जो कालचक्र को काबू में करेगा, वो सजा का हकदार होगा।"

"ये कैसे हो सकता है?"

"ये हो सकता है। विद्या द्वारा ऐसा किया जा सकता है। मैंने कालचक्र को महाकाली के नाम बांध दिया।"

"महाकाली?"

"हां। तंत्र-मंत्र की बहुत बड़ी शक्ति है महाकाली। उससे बात कर पाना भी किसी के लिए आसान नहीं। परंतु मेरे से उसकी पहचान है। कभी मैं उसके काम आया था। महाकाली के नाम बांधने से पहले मैंने महाकाली की इजाजत ली। यानी कि अब कालचक्र को कोई नुकसान पहुंचाता तो महाकाली उसे सजा देने की हकदार थी। ये सारा काम मैंने गुप-चुप किया। जथूरा के खबरियों को ये सारी खबर नहीं होने दी कि बात जथूरा तक पहुंचे। यानी कि जथूरा इस सारी बात से अनजान रहा।" सोबरा बेहद शांत स्वर में कह रहा था—"आखिरकार वो वक्त भी आया, जब मैंने जथूरा पर कालचक्र फेंका।"

"फिर क्या हुआ?"

"जथूरा पहले से ही सावधान था। उसे खबर हो चुकी थी कि मैं कालचक्र फेंकने जा रहा हूं। उसने कालचक्र को काबू में करने का पूरा इंतजाम कर रखा था और उसने कालचक्र पर काबू पा लिया। मेरी चालीस वर्षों की मेहनत पर जथूरा ने अपना अधिकार जमा लिया। कालचक्र का वो मालिक बन बैठा। जबकि उस कालचक्र के साथ ये बात भी जुड़ी थी कि जो उसे पकड़ेगा, कैद करेगा, उसे सजा भुगतनी पड़ेगी। ये बात जथूरा तब जान पाता, जब वो पूरा कालचक्र देखता। तब उसे ये बात भी नजर आती। परंतु वो तो जीत के नशे में चूर था। इन बातों को सोचने की उसे फुर्सत ही कहां थी।"

सोबरा खामोश हुआ तो जगमोहन बोला।

"फिर क्या हुआ?"

"जथूरा ने कालचक्र पर अपना कब्जा जमाया तो महाकाली को फौरन इस बात का संकेत मिल गया। उसने मुझे बताया कि जथूरा ने कालचक्र पर कब्जा कर लिया है। महाकाली आजाद है। उस पर किसी का हुक्म नहीं चल सकता। चूंकि जथूरा मेरा भाई था, इसलिए महाकाली चाहती थी कि जथूरा को सजा न दी जाए। जबकि मैंने ये सब किया ही इसलिए था कि जथूरा को तकलीफ मिले। मैंने महाकाली से कहा कि नियम के मुताबिक वो जथूरा को सजा दे। महाकाली तैयार नहीं हो रही थी तो मैंने उस पर किया एहसान उसे याद दिलाया। तब जाकर वो तैयार हुई, जथूरा को सजा देने के लिए। मैंने महाकाली से कहा कि वो जथूरा को अपनी कैद में रखे।

इस तरह कि जथूरा कभी आजाद न हो सके। महाकाली ने मेरी बात मानी और अपनी ताकतों के दम पर जथूरा को कैद करके, अपनी बनाई एक तिलिस्मी पहाड़ी में कैद कर लिया।"

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"तो क्या जथूरा कैद में है इस वक्त?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"हां।"

"उसी तिलिस्मी पहाड़ी में?"

"ठीक समझे तुम जग्गू।" सोबरा मुस्कराया।

"तो जथूरा के कामों को कौन देखता है?" सोहनलाल ने कहा।

"पोतेबाबा। मेरे खयाल में तुम पोतेबाबा से मिल चुके हो।" सोबरा बोला।

"हां, कई बार मिला मैं पोतेबाबा से।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'जथूरा' अवश्य पढ़ें।)

"लेकिन पोतेबाबा तो चाहता था कि हम पूर्वजन्म में प्रवेश न करें।" सोहनलाल ने कहा।

"पोतेबाबा ने ऐसा कभी नहीं चाहा।" सोबरा गम्भीर स्वर में बोला—"वो तो तुम लोगों को पूर्वजन्म में लाना चाहता था।"

"नहीं, वो हमें रोक रहा... ।" जगमोहन ने तेज स्वर में कहना चाहा।

सोबरा इनकार में सिर हिलाते हुए कह उठा।

"बेवकूफ जग्गू, तुम लोग पूर्वजन्म में आने की सोच रहे थे तब क्या?"

"नहीं।"

"तो फिर वो तुम सबको रोकने क्यों पहुंच गया? तुम लोग तो आ ही नहीं रहे थे।"

जगमोहन-सोहनलाल सोबरा को देखते रहे।

"पोतेबाबा तुम लोगों को पूर्वजन्म में लाना चाहता था। इसके लिए उसने चालाकियों से भरी चाल चली। वो चाल ही ऐसी थी कि तुम लोग फंस गए। उसकी बातों में आते चले गए और... ।"

"पोतेबाबा ने ऐसा क्यों किया?" सोहनलाल बोला।

"उसकी मजबूरी बन गई थी तुम लोगों को पूर्वजन्म में प्रवेश कराना। अगर वो सीधे-सीधे तुम लोगों को पूर्वजन्म में चलने को कहता तो यहां के खतरे के बारे में सोचकर तुममें से कोई भी सहमत नहीं होता कि... ।"

"ठीक कहा तुमने।"

"लेकिन पोतेबाबा हमें पूर्वजन्म में क्यों लाना चाहता था?"

"मेरी बातें उसी तरफ आ रही हैं।" सोबरा कह उठा—"महाकाली ने जथूरा को तिलिस्मी पहाड़ी में कैद कर दिया। परंतु महाकाली हर वक्त जथूरा की निगरानी नहीं कर सकती। वो बहुत व्यस्त रहती है। उसने सोचा कि कहीं जथूरा उसके बिछाए तिलिस्म से अपना बचाव करके आजाद न हो जाए या उसके लोग उसे छुड़ा न लें। इसलिए जथूरा की कैद पर महाकाली ने देवा और मिन्नो के नाम का तिलिस्म बांध दिया। ऐसा करके महाकाली निश्चिंत हो गई।"

"वो कैसे?"

"वो जानती थी कि देवा और मिन्नो इस जन्म में एक-दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं। वो दोनों इकट्ठे होकर काम नहीं कर सकते। ये ही वजह रही कि महाकाली ने देवा और मिन्नो के नाम का तिलस्म बांधा कि ना तो वो इकट्ठा होंगे न ही तिलिस्म टूटेगा। इस तरह जथूरा आजाद नहीं हो सकेगा। ये बात पोतेबाबा को मालूम पड़ गई तो उसने सोचा कि देवा और मिन्नो को किसी तरह पूर्वजन्म में ले आए तो जथूरा को आजाद कराया जा सकता है।"

"अब चूंकि देवराज चौहान और मोना चौधरी पूर्वजन्म में आ पहुंचे हैं, तो महाकाली तिलिस्म के नाम बदल सकती है।" सोहनलाल बोला—"इस तरह वो जथूरा की कैद को पक्का रख सकती है।"

"ऐसा नहीं हो सकता।" सोबरा कह उठा—"एक जगह का तिलिस्म एक बार किसी के नाम का बांध दिया जाए तो उसे बदला नहीं जा सकता।"

"ओह।"

"तो पोतेबाबा का असली मकसद हमें पूर्वजन्म में लाना था।" जगमोहन होंठ सिकोड़े बोला।

"ठीक समझे।"

"बहुत चालाकियां की पोतेबाबा ने हमारे साथ।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"काम बनाने के लिए चालाकियां तो करनी ही पड़ती हैं।" सोबरा मुस्कराया।

सोहनलाल ने जगमोहन से कहा।

"सारी बात समझा कि हालात क्या है।"

"हां।" जगमोहन ने कहा—"महाकाली ने जथूरा की कैद को, देवराज चौहान और मोना चौधरी के नाम का ताला लगा रखा है कि देवराज चौहान और मोना चौधरी आकर ही, जथूरा को आजाद करा सकते हैं।"

"तो अब पोतेबाबा, उन दोनों को इस बात के लिए तैयार करेगा कि वो जथूरा को आजाद कराएं।"

"ये ही हो रहा होगा वहां।"

"जरूरी तो नहीं कि देवराज चौहान और मोना चौधरी, पोतेबाबा की बात माने।"

"जरूरी तो नहीं, परंतु मजबूरी हो सकती है।"

"कैसी मजबूरी?"

"पूर्वजन्म की जमीन पर पहुंचने के बाद, वापसी के लिए दरवाजे तभी खुलेंगे, जब पूर्वजन्म का कोई बिगड़ा काम संवार दिया जाए। ऐसे में देवराज चौहान और मोना चौधरी को कोई काम तो ठीक करना ही होगा। अगर वो जथूरा को आजाद नहीं कराते तो, कोई और बिगड़ा काम तलाशना होगा।"

"इसका मतलब वे जथूरा को आजाद कराने पर मान भी सकते हैं।" सोहनलाल ने कहा।

जगमोहन ने 'हां' में सिर हिलाया।

सोबरा ने गिलास उठाकर खाली किया और वापस रख दिया।

जगमोहन ने सोबरा से कहा।

"जथूरा ने तुम्हारा हक मारा और तुमने उसे कैद में पहुंचा दिया। तुम दोनों ही एक जैसे हो। न तो तुम कम हो, न ही जथूरा कम है। उसने गलत किया तो तुमने भी गलत किया।"

सोबरा मुस्कराया।

"कब से कैद में है जथूरा?" सोहनलाल ने पूछा।

"पचास सालों से।" सोबरा बोला—"जथूरा और मुझमें ये फर्क है कि उसने मुझे मजबूर किया कि मैं ऐसा कुछ करूं। अगर वो मुझे मेरा हक दे देता तो मैं ऐसा क्यों करता।"

"ये तुम भाइयों का मामला है। इससे हमारा कोई मतलब नहीं।" सोहनलाल बोला।

"मतलब तो अनजाने में पैदा हो गया है।"

"वो कैसे?"

"देवा-मिन्नो, जथूरा को आजाद कराने के लिए कल उस तिलिस्मी पहाड़ी की तरफ रवाना होंगे।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"मेरे खबरी जथूरा के महल में मौजूद हैं। वो मुझे खबर देते हैं वहां की।"

"ओह।"

"कोई भी कम नहीं है।" जगमोहन ने मुंह बनाया।

"तुम दोनों को देवा और मिन्नो की चिंता करनी चाहिए।" सोबरा ने दोनों को देखा।

"क्यों?"

"क्योंकि महाकाली ऐसा जाल बिछा रही है कि देवा-मिन्नो जथूरा तक पहुंचने से पहले ही जान गंवा बैठें।"

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तुम महाकाली को ऐसा करने से रोको।" सोहनलाल ने कहा।

"मैंने पहले ही कहा है कि महाकाली पर किसी का बस नहीं। वो सिर्फ अपना काम करती है। किसी की सुनती नहीं। महाकाली को किसी भी हालत में रोका नहीं जा सकता। इस वक्त भी वो उसी तिलिस्मी पहाड़ी पर मौजूद, देवा और मिन्नो की मौत का जाल बुन रही है। उनके साथ जो भी होगा, उसका भी यही हाल होगा।" सोबरा ने कहा।

"तुम महाकाली को रोको सोबरा।" जगमोहन गुर्रा उठा।

"ये अब सम्भव नहीं, परंतु तुम्हें सलाह दे सकता हूं।" सोबरा शांत स्वर में बोला।

"कैसी सलाह?" जगमोहन के दांत भिंच चुके थे।

"तुम देवा और मिन्नो को रोक सकते हो।" सोबरा का स्वर शांत था।

जगमोहन के माथे पर बल पड़े।

सोहनलाल ने जगमोहन को देखा। फिर बोला।

"सुना।"

"समझ भी रहा हूं।" जगमोहन का स्वर तीखा हो गया—"ये वजह है कि इसने हमें अपने पास बुलाया।"

सोबरा मुस्करा पड़ा।

"ये महाकाली को नहीं रोकेगा, परंतु हमें कह रहा है कि हम देवराज चौहान और मोना चौधरी को रोकें।"

"मुझे तो ये दोनों भाई ही कुछ ज्यादा समझदार लगते हैं।" सोहनलाल ने कहा।

सोबरा मुस्कराकर उन्हें देखता रहा।

"तुम अपने को चालाक समझते हो सोबरा।" जगमोहन बोला।

"ऐसी तो कोई बात नहीं है।" सोबरा ने कहा।

"तुमने कैसे सोच लिया कि हम देवराज चौहान और मोना चौधरी को रोकेंगे।"

"रोकना पड़ेगा।"

"क्यों?"

"नहीं तो महाकाली के जाल में फंसकर वे दोनों जान गंवा देंगे।" सोबरा ने कहा।

"फिर तू महाकाली से क्यों नहीं कह देता कि... ।"

"मैंने पहले ही कहा है कि महाकाली को अपनी मर्जी से नहीं चलाया जा सकता।"

"परंतु तेरे कहने पर ही तो उसने जथूरा को कैद कर रखा है।"

"बेशक।"

"फिर तू महाकाली से कहेगा तो वो तेरी बात क्यों नहीं मानेगी?" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"मैं क्यों कहूंगा। मैं तो चाहता ही नहीं कि जथूरा आजाद हो।"

जगमोहन व सोहनलाल की नजरें सोबरा पर थीं।

"ऐसा है तो तू देवराज चौहान और मोना चौधरी की चिंता क्यों कर रहा है?"

"मुझे उन दोनों से ज्यादा इस बात की चिंता है कि जथूरा आजाद न हो सके। देवा और मिन्नो, कहीं जथूरा को आजाद न करा लें। वैसे इस बात की आशा एक प्रतिशत भी नहीं है, लेकिन मैं चाहता हूं देवा और मिन्नो अपने नाम का तिलिस्म तोड़ने के लिए आगे बढ़ें ही नहीं। पोतेबाबा की चेष्टा बेकार चली जाए।"

"इसलिए तुम हमें कह रहे हो कि हम देवा-मिन्नो को रोकें कि वो ये काम न करें।"

"दोनों ही बातें हैं। ये तो तय है कि वो आगे बढ़े तो महाकाली के फंदे में फंसकर जान गंवा बैठेंगे।"

"पक्के हरामी हो।"

"गाली मत दो।" सोबरा ने जगमोहन को घूरा।

"ये गाली नहीं तमगा है।"

"मेरी बात मानोगे तो फायदे में रहोगे। देवा और मिन्नो बच जाएंगे।" सोबरा शांत स्वर में बोला।

"मेरे खयाल में तुम इस बात से घबरा रहे हो कि देवराज चौहान और मोना चौधरी कहीं तिलिस्म तोड़कर जथूरा को आजाद न करा लें।"

सोबरा ने नानिया को देखा।

"नानिया! तुम समझाओ इन्हें कि मेरा क्या मतलब है।" सोबरा बोला।

"देखो सोबरा।" नानिया बोली—"सोहनलाल को मैं समझाऊंगी नहीं, क्योंकि ये बहुत समझदार है। रही बात जगमोहन की तो, इसे मैं समझा नहीं सकती, क्योंकि ये सिरे से ही बेवकूफ है।"

सोबरा ने नानिया को देखा।
नानिया ने दूसरी तरफ मुंह फेर लिया।
"बहुत समझदार हो गई लगती है तू।" सोबरा का स्वर तीखा हो गया।
"क्यों न होऊंगी। तूने कालचक्र में मुझे रानी साहिबा बनाकर रखा था। बातें करनी क्यों नहीं आएंगी मुझे। (नानिया के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़े **अनिल मोहन** का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'पोतेबाबा'**।)
"नानिया अब मेरी है।" सोहनलाल बोला।
"होगी। मुझे इससे कोई मतलब नहीं।" सोबरा ने कहा—"मैं चाहता हूं तुम लोग देवा-मिन्नो को रास्ते पर ले आओ कि वो जथूरा को आजाद कराने की न सोचें।"
"बेहतर होगा कि तुम महाकाली को समझाओ।" जगमोहन ने उखड़े स्वर में कहा।
"लगता है, बात नहीं बनेगी।" सोबरा कह उठा—"देवा-मिन्नो की लाशें ही साथ लेकर अपनी दुनिया में जाओगे।"
"बकवास मत कर।" जगमोहन गुर्राया।
तभी सोहनलाल कह उठा।
"अगर हम देवराज चौहान और मोना चौधरी को समझाना चाहें तो हमें उनके पास जाना होगा।"
"तो तुम तैयार हो मेरी बात मानने के लिए।" सोबरा ने उसे देखा।
"तैयार भी हो जाएं तो जैसा कि तुमने कहा है कि देवराज चौहान व मोना चौधरी कल सुबह महाकाली की उस पहाड़ी की तरफ जाने वाले हैं तो हमें उनके पास पहुंचने में बहुत वक्त लगेगा। शायद, तब तक वो पहाड़ी पर पहुंच भी जाएं।"
"उसकी फिक्र मत करो। उन तक पहुंचने का रास्ता मैं बना दूंगा।"
"कैसे?"
"तिलिस्मी पहाड़ी के उल्टी तरफ से, तुम लोगों को भीतर प्रवेश करा दूंगा। उल्टी तरफ से तिलिस्मी पहाड़ी का रास्ता तय करोगे तो तुममें से किसी को कुछ नहीं होगा। खतरा नहीं आएगा। परंतु जब पलटकर आगे बढ़ना चाहोगे तो कदम-कदम पर खतरे होंगे। बहरहाल तुम लोग उल्टी तरफ से भीतर प्रवेश करके, देवा और मिन्नो को तिलिस्मी रास्तों पर तलाश कर सकते हो। उन्हें समझा सकते हो। रोक सकते हो। अगर ये काम तुमने कर दिखाया तो महाकाली तुम लोगों को पहाड़ी से सुरक्षित बाहर निकाल लेगी और सब ठीक रहेगा।"

जगमोहन कुछ कहने लगा कि तभी वहां महाकाली की आवाज गूंजी।

"सोबरा।"

"ओह, महाकाली।" सोबरा तनिक सीधा हुआ।

"मैंने सब इंतजाम कर दिए हैं। देवा-मिन्नो ने तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश किया तो बच नहीं सकेंगे।"

"ये तो अच्छी खबर सुनाई।"

जगमोहन, सोहनलाल और नानिया की निगाह उस चमकते बिंदु पर जा टिकी थी, जो फर्श से कुछ फुट ऊपर हवा में इधर-उधर डोल रहा था।

"देवा-मिन्नो के साथ बेला, भंवर सिंह, नीलसिंह, परसू व त्रिवेणी भी जा रहे हैं।"

"वो भी मरेंगे महाकाली।" सोबरा बोला।

"अवश्य। परंतु बुरी खबर भी है।"

"वो क्या?"

"उनके साथ जथूरा की बेटी तवेरा भी... ।"

"ये बात मैं जानता हूं महाकाली।" सोबरा कह उठा।

"नीलकंठ के बारे में भी जानता है?"

"नीलकंठ?" सोबरा चौंका—"नीलकंठ का इस मामले से क्या वास्ता?"

"वो मिन्नो को चाहता था।" महाकाली की आवाज सुनाई दे रही थी।

"जानता हूं।"

"उसकी चाहत ने अब फिर जोर मारा है। मिन्नो को कोई खतरा न हो, इसलिए वो मिन्नो के साथ हो गया है।"

"परंतु नीलकंठ तो समाधि में... ।"

"वो समाधि में ही है, परंतु अपनी शक्तियां उसने मिन्नो के साथ कर दी हैं।"

"तो ये बात है। तूने उसे समझाया नहीं।"

"मेरी बात तो सुनने को तैयार नहीं। लेकिन वो मिन्नो को बचा नहीं सकेगा।" महाकाली के स्वर में क्रोध आ गया था।

"नीलकंठ को बीच में नहीं आना चाहिए था।" सोबरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस तरह कोई भी महाकाली का मुकाबला नहीं कर सकता। मैं... ।"

तभी जगमोहन कह उठा।

"मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूं महाकाली।"

"बोल जग्गू।" महाकाली की आवाज आई।

"तुम मुझे जानती हो?"

"मैं सबको जानती हूं। मुझसे कुछ भी छिपा नहीं है। बता, क्या बात है?"

"ये जथूरा और सोबरा की बात है। दो भाइयों का मामला है। तुम इनके बीच में क्यों आती हो?" जगमोहन बोला।

"सोबरा की वजह से मुझे आना पड़ा। वरना, ऐसे कामों की मुझे फुर्सत ही कहां है।" महाकाली की आवाज आई।

"सोबरा को मना कर... ।"

"सोबरा का एक एहसान था मुझ पर, उसी कारण सोबरा की बात मानकर ये काम कर रही हूं।"

सोबरा के होंठों पर शांत मुस्कान टिकी थी।

"देवराज चौहान का क्या करेगी तू?"

"वो सब कल सुबह जथूरा को आजाद कराने के लिए चल रहे हैं। उस तिलिस्मी पहाड़ी पर आएंगे, जहां मैंने जथूरा को कैद कर रखा है।" महाकाली की आवाज कानों में पड़ रही थी।

"तू देवराज चौहान से डरती है?"

"मैं क्यों डरूंगी देवा-मिन्नो से। वो मेरे लिए कोई अहमियत नहीं रखते।"

"तो फिर उन्हें मुसीबत में डालने का इंतजाम क्यों करके आई है?" जगमोहन बोला।

"क्योंकि जथूरा की आजादी का तिलिस्मी ताला मैंने देवा-मिन्नो के नाम से बांध दिया था। मैंने सोचा दोनों में झगड़ा है, तो कभी दोनों इकट्ठे होंगे ही नहीं और जथूरा की आजादी का तिलिस्मी ताला हमेशा बंद रहेगा। परंतु पोतेबाबा दोनों को इकट्ठा करके यहां ले आया। देवा-मिन्नो जथूरा को आजाद कराने की चाह रखते हैं।"

"इसका मतलब तुझे डर है कि दोनों जथूरा को आजाद करा लेंगे।"

महाकाली की आवाज नहीं आई।

कुछ पल शांति रही फिर महाकाली की आवाज आई।

"सारा खेल देवा-मिन्नो के ग्रहों का है। इन दोनों के ग्रह जब इकट्ठे हो जाएं तो ये कठिन से कठिन काम को भी सरलता से कर लेते हैं। सिर्फ इसी बात से मुझे तनिक चिंता है।"

"मतलब कि तू डरती है दोनों से।"

"ऐसा मत बोल।"

"मेरी बात मानेगी?"

"कह।"

"देवा-मिन्नो या उनके किसी साथी की जान मत लेना। जथूरा को आजाद कर दे।"

"मैं तेरी बात क्यों मानूं?"

"शराफत के नाते।"

"यहां सिर्फ कर्म चलते हैं। शराफत नहीं चलती।" महाकाली की आवाज में हंसी आ गई—"देवा-मिन्नो रुकने को तैयार नहीं। वो जानते हैं कि महाकाली की कैद में है जथूरा, फिर भी वो आगे बढ़ने को तैयार हैं तो मैं पीछे क्यों हटूं?"

"देवराज चौहान और मोना चौधरी के ग्रह मिलकर तुझे हरा देंगे।"

"महाकाली को तू जानता नहीं, वरना ऐसा न कहता।"

"तू ताकतवर है तो कमजोर से क्यों झगड़ा करती है।"

"जग्गू, तू मुझे बातों में लपेटने की कोशिश कर रहा है। लेकिन मैं तेरी बातों में आने वाली नहीं।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"तेरे को देवा-मिन्नो की चिंता है तो तू उन्हें मेरी तिलिस्मी पहाड़ी की तरफ जाने से रोक क्यों नहीं लेता?"

"तू देवराज चौहान और मोना चौधरी को जानती है?"

"कुछ-कुछ।"

"तो ये नहीं जानती कि देवराज चौहान एक बार फैसला ले ले तो उसे रोकना कठिन है।"

"तो ये बात है।"

"देवराज चौहान भी जानता होगा कि जथूरा को आजाद कराने में, महाकाली नाम के खतरे को पार करना पड़ेगा।"

"अब जान चुका है वो।"

"फिर भी वो इस काम के लिए तैयार हो गया है तो उसे रोका नहीं जा सकता।"

महाकाली की छोटी सी हंसी गूंजी।

"फिर तो ये अच्छी बात है कि तू और गुलचंद सोबरा के पास आ गए।"

"क्यों?"

"उनकी लाशें ले जाने वाला कोई तो चाहिए होगा।" महाकाली ने व्यंग से कहा।

जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"तू बहुत बड़ी बात कह गई महाकाली।" सोहनलाल कह उठा।

"मेरी बात तू देख लेना गुलचंद।"

"मैं शर्त नहीं लगा रहा। लेकिन तूने बड़ी बात कह दी। देवराज चौहान को मारना इतना भी आसान नहीं है।"

"मैं तेरे को उसकी मौत दिखा के रहूंगी।"

"बहुत घमंड है खुद पर।"

"ये घमंड नहीं, मेरी ताकतें हैं, जबकि देवा, मिन्नो साधारण इंसान हैं। वो मर के ही रहेंगे।"

तभी जगमोहन बोला।

"महाकाली, मुझे देवराज चौहान की चिंता है। लेकिन तू सब ठीक कर सकती है।"

"वो कैसे?"

"पूर्वजन्म में प्रवेश करने पर देवराज चौहान और मोना चौधरी को यहां का एक बिगड़ा काम ठीक करना पड़ता है। तभी उनकी वापसी के दरवाजे खुलते हैं। हो सकता है ये काम करना, इसी वजह से देवराज चौहान की मजबूरी रहा हो।"

"फिर?"

"तू कोई दूसरा बिगड़ा काम बता दे। मैं देवराज चौहान को उस काम पर लगाने की चेष्टा करूंगा।"

"ये नियम के खिलाफ है।"

"क्या मतलब?"

"बाहर से आए लोगों को इस दुनिया की कोई जानकारी देने पर मनाही है।"

"मनाही है, कौन मना करता है?"

"हमारे भी बड़े हैं, जो हम पर नजर रखे हुए हैं। वो हमें इस बात की इजाजत नहीं देंगे। देवा-मिन्नो अगर इसी दुनिया में होते तो उन्हें हर प्रकार की जानकारी दी जा सकती थी।"

"तेरे को कहीं तो मेरा साथ देना होगा।"

"ये सम्भव नहीं।"

"सोबरा तो हमें बता सकता है कि... ।"

"ये भी नहीं बता सकता। इस दुनिया की बात बाहरी लोगों से करना, सबके लिए मना है।"

"हम भी तो कभी इसी दुनिया का हिस्सा थे।"

"जब थे, तब थे। अब बाहरी दुनिया में जन्म ले चुके हो। ये दुनिया तुम लोगों से दूर हो चुकी है।"

"तो फिर बार-बार, किसी-न-किसी बहाने, हमारा पूर्वजन्म में प्रवेश क्यों होता है?"

"क्योंकि तुम सबके तार पूर्वजन्म से बंधे हैं। तुम लोगों के ढेरों अधूरे काम थे, जो आज भी अधूरे पड़े हैं। उन्हें पूरा करने के लिए तुम लोगों को पूर्वजन्म का फेरा लगाना ही पड़ता है।" महाकाली की आवाज गूंज रही थी।

सोहनलाल और नानिया की निगाह चमकते बिंदु पर टिकी थी।

सोबरा शांत मुस्कान के साथ अपनी जगह पर बैठा था।

"ये बात है तो तुम देवराज चौहान की जान ले लोगी तो फिर अधूरे काम कैसे पूरे होंगे?"

"होंगे। दोबारा जन्म कराया जाएगा देवराज चौहान का।"

"कौन कराएगा?"

"बड़ी शक्तियां। जो जीवन और मृत्यु का हिसाब रखती हैं। जब तक देवा-मिन्नो के पूर्वजन्म के अधूरे काम पूरे नहीं होते, उन्हें जन्म लेते रहना होगा। ऐसा ही लिखा है बड़ी ताकतों ने।"

"तो ये सिलसिला नहीं रुकेगा?"

"जब काम खत्म हो जाएंगे तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।" महाकाली की आवाज गूंज रही थी।

"ऐसी बात है तो तुम्हें, चाहिए कि हमें सहयोग दो, ताकि हमारे काम जल्दी पूरे हों।"

"महाकाली से कभी सहयोग की आशा मत रखना। मुझे अपने कर्म बहुत प्यारे हैं। अपने कर्मों के सहारे मैंने भी अपनी मंजिल पानी है, मुझे अभी बहुत ऊंचे जाना है। मेरा लम्बा सफर बाकी है।"

तभी सोहनलाल ने जगमोहन से कहा।

"इससे बात करने का कोई फायदा नहीं।"

"गुलचंद ठीक कहता है। मुझसे बात करने का कोई फायदा नहीं। मैं तुम्हारे किसी काम न आ सकूंगी। अपना कर्म करो। इस वक्त तुम दोनों का कर्म ये है कि देवा-मिन्नो का रास्ता बदल दो।" महाकाली की आवाज आई।

जगमोहन होंठ भींचे रहा।

सोहनलाल व्याकुल दिखा।

सोहनलाल को परेशान देखकर नानिया कह उठी।

"तुम क्यों चिंता करते हो, तुम तो खतरे में नहीं हो।"

"देवराज चौहान है।" सोहनलाल ने नानिया को देखा।

"क्या इस बात से तुम्हें फर्क पड़ता है?"

"हां। देवराज चौहान को कुछ नहीं होना चाहिए। वो मेरा पुराना दोस्त है।"

"तो ये बात है।"

तभी महाकाली ने सोबरा से कहा।

"तुम आराम से रहो सोबरा। जथूरा मेरी कैद में सुरक्षित है।"

"मुझे तुम पर पूरा भरोसा है महाकाली।" सोबरा ने मुस्कराकर कहा।

"अब मैं जाती हूं।"

तभी सबके देखते ही देखते वो चमकीला बिंदु गायब हो गया।

जगमोहन ने सोबरा से कहा।

"तुम अगर महाकाली के बढ़ते कदमों को रोक दोगे तो मैं तुम्हारा एहसानमंद रहूंगा।"

"कभी नहीं, ये नहीं हो सकता। मैं जथूरा को आजाद नहीं देखना चाहता। तुम्हारे सामने एक ही रास्ता है कि तुम देवा से मिलो और उसे समझाओ कि ये रास्ता उसके हक में सही नहीं है।"

"वो मेरी बात नहीं मानेगा। खतरे को समझने के बाद ही उसने रास्ता चुना होगा।"

इसी पल नानिया ने सोबरा से कहा।

"अगर हम तुम्हारी बात न माने तो तुम क्या करोगे?"

"वाह नानिया, तू तो पूरी तरह इनके साथ हो गई।"

"मैं सोहनलाल से ब्याह करने वाली हूं।"

"जरूर कर। तुझे कौन रोकता है।" सोबरा ने हंसकर कहा।

"मेरी बात का जवाब दे सोबरा।"

"मेरी बात नहीं मानोगे तो, मैं कुछ भी नहीं करूंगा। समझाना मेरा काम है।"

"तो हम अभी यहां से जथूरा की नगरी, देवराज चौहान के पास जाना चाहते हैं।" जगमोहन ने कहा।

"मैं तुम लोगों को जाने नहीं दूंगा। मेरी नगरी में तुम लोग कहीं भी जा सकते हो, परंतु नगरी से बाहर नहीं जा सकते।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुम लोग मेरी बात नहीं मान रहे। देवा-मिन्नो को आगे बढ़ने से रोक नहीं रहे।"

"महाकाली ने तुम्हें विश्वास दिलाया है कि देवराज चौहान जिंदा नहीं बचेगा। ऐसे में तुम्हें इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि हमने तुम्हारी बात मानी कि नहीं। हमें कैद में रखकर तुम्हें क्या मिलेगा।"

"महाकाली अपना काम कर रही है और मैं अपना।"

"मुझे लगता है कि तुम किसी चिंता में हो।" सोहनलाल बोला।

"कुछ चिंता तो है मुझे जो तुम्हें कह रहा हूं कि देवा-मिन्नो को आगे बढ़ने से रोको।"

"अपनी चिंता के बारे में बताओगे नहीं?"

सोबरा ने कुछ पल सबको देखा फिर शांत स्वर में कह उठा।

"आज सुबह ही मैंने भविष्य में झांकने की चेष्टा की।"

"भविष्य में?"

"हां। मैं अपनी ताकतों के दम पर भविष्य में झांक सकता हूं। कम-से-कम होने वाली बातों की खबर मैं पहले पा सकता हूं। जब बहुत जरूरी होता है तो मुझे भविष्य में देखना पड़ता है। आज जब जथूरा की कैद के सिलसिले में भविष्य में देखा तो मुझे कुछ भी नजर नहीं आया। सब कुछ धुंधला-धुंधला सा रहा।" सोबरा ने कहा।

"तो इसलिए तुम बुरी आशंका में घिर गए।"

"शायद, ये ही बात है।"

"ये बात तुम्हें महाकाली को बतानी चाहिए थी।"

"महाकाली को मैं खामखाह चिंतित नहीं करना चाहता था। मैं नहीं चाहता कि मेरी बात सुनकर वो परेशान हो जाए और जो इंतजाम वो कर रही है, उसमें चूक जाए। परंतु ये बात सच है कि महाकाली से कोई जीत नहीं पाया।"

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"तुम तीनों जाओ।" सोबरा ने कहा और चांदी का गिलास उठाकर एक ही सांस में खाली कर दिया—"बहुत बात हो गई है हमारे बीच। तुम दोनों को ये भी समझा दिया है कि अगर देवा-मिन्नो को आगे बढ़ने से नहीं रोका तो उनकी मौत हो जाएगी। उन्हें रोकना चाहते हो तो मैं तुम्हें तिलिस्मी पहाड़ी के उस रास्ते से भीतर प्रवेश करा दूंगा कि आगे बढ़ते हुए भीतर कहीं देवा-मिन्नो से मिलो और उन्हें वहीं से वापस ले जाओ। याद रखो, वहां से तुम लोग आगे बढ़ते हुए, पहाड़ी के ऊपरी छोर से बाहर निकलोगे। अगर वापस पलटे तो महाकाली की ताकतें तुम्हें खतरे में डाल देंगी।"

"तुम्हारा मतलब कि तुम हमें उल्टे रास्ते से पहाड़ी के भीतर प्रवेश कराओगे।" जगमोहन बोला।

"ठीक समझे।"

जगमोहन खामोश रहा।

नानिया सोबरा से कह उठी।

"हमें कुछ सोचने का मौका दो सोबरा।"

"अवश्य। महल में रहकर सोच लो। परंतु ज्यादा वक्त नहीं है। सुबह तक फैसला कर लेना। यहां से बाहर निकलोगे तो बाहर खड़े पहरेदार तुम तीनों को वहां पहुंचा देंगे, जहां, यहां आने पर तुम लोग ठहरे थे।"

जगमोहन, सोहनलाल व नानिया बिना कुछ कहे बाहर निकल गए।

□ □

एक पहरेदार उन्हें उसी कमरे में छोड़ गया था।

अब वहां उनके अलावा कोई नहीं था।

जगमोहन, सोहनलाल के चेहरों पर सोचों के भाव दौड़ रहे थे।

"देवराज चौहान, मोना चौधरी, बाकी सब भारी खतरे में हैं।" जगमोहन कह उठा—"कल सुबह वो सब जथूरा को आजाद कराने, तिलिस्मी पहाड़ी की तरफ रवाना होने वाले हैं और उधर महाकाली ने उनकी मौत के सब इंतजाम कर दिए हैं। समझ में नहीं आता कि हम इस मामले को कैसे ठीक करें।"

"सब हालात जानने के बाद ही देवराज चौहान ये काम करने को तैयार हुआ होगा।" सोहनलाल बोला।

"हां, देवराज चौहान ने पहले सब हालात जाने होंगे।"

"तो देवराज चौहान को सफलता दिखी होगी, तभी वो तैयार...।"

"सोहनलाल।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"इस काम के लिए तैयार होना, देवराज चौहान की मजबूरी भी हो सकती है।"

"क्योंकि पूर्वजन्म में आकर कोई एक बिगड़ा काम संवारने पर ही, हमारी वापसी के दरवाजे खुलेंगे।"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया।

"हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल है कि हमें अब क्या करना चाहिए?"

"सोबरा हमें देवराज चौहान के पास नहीं पहुंचने देगा। वो कहता है हम उसकी नगरी से बाहर नहीं जा सकते। एक तरह से हम सोबरा के कैदी बनकर रह गए हैं। हमारे सामने कोई भी रास्ता नहीं बचा।"

नानिया बोल पड़ी।

"मैं रास्ता बताऊं?"

"कहो।" सोहनलाल ने उसे देखा।

"हमें सोबरा की बात मान लेनी चाहिए कि हम तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर जाकर उन्हें समझाएंगे।"

"वो समझने वाले नहीं।" जगमोहन बोला।

"तो हमने कौन-सा समझाना है। इस तरह कम-से-कम देवराज चौहान के साथ तो हो जाएंगे।"

"ये ठीक कहती है।" सोहनलाल बोला।

जगमोहन के चेहरे पर सोचें उछलीं।

"इस तरह हम सोबरा की कैद में रहने से बच भी सकते हैं और देवराज चौहान के पास भी पहुंच सकते हैं।"

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

"तुम खामोश क्यों हो। मन में कुछ है तो कहो।"

"शायद यही एक रास्ता बचा है हमारे पास।" जगमोहन कह उठा।

"मैंने ठीक कहा न?" नानिया खुशी से बोली।

"तुमने बिल्कुल ठीक कहा।" सोहनलाल मुस्कराया।

"तो चलो, सोबरा से कह देते हैं कि... ।"

"अभी नहीं।" जगमोहन कह उठा—"रात का वक्त है हमारे पास। हम इस बारे में और सोचेंगे। सोबरा से सुबह बात करेंगे।"

□ □

मोमो जिन्न एकाएक ठिठका तो लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी ठिठक गए। (इन तीनों के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'** एवं **'पोतेबाबा'**।)

गहरा अंधेरा छाया हुआ था। आकाश में चंद्रमा और तारे नजर आ रहे थे। ठंडी हवा चल रही थी। परंतु लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा लगातार चलते रहने की वजह से पसीने से तर-बतर थे।

दोनों गहरी-गहरी सांसें लेने लगे।

जबकि मोमो जिन्न गर्दन एक तरफ करके, हौले-हौले सिर हिलाने लगा। स्पष्ट था कि जथूरा के सेवक उसे कोई नया निर्देश दे रहे थे। इस दौरान मोमो जिन्न की आंखें बंद हो गई थीं।

चंद्रमा की रोशनी में लक्ष्मणदास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"सपन।" लक्ष्मणदास मुंह लटकाकर बोला—"मुझे तो बहुत भूख लग रही है।"

"मुझे भी।"

"यहां तो खाने को कुछ भी नहीं है। जंगल जैसी जगह, ऊपर से घना अंधेरा।"

"मोमो जिन्न ने हमें बुरा फंसा दिया।"

"पहले ये कितना अच्छा था जब इसके भीतर इंसानी इच्छाएं आ गई थीं। यार बनकर रह रहा था। खुद भी खाता था और हमें भी

खिलाता था। कितने प्यार से बोलता था।" लक्ष्मण दास ने गहरी सांस लेकर कहा।

"अब तो कड़क रहता है।"

"खुद को हमारा मालिक कहता है।"

"जबर्दस्ती मालिक बन गया हमारा। कितना अच्छा बिजनेस करते थे हम। अमीर हैं हम। परंतु मोमो जिन्न ने हम पर कब्जा करके, हमें फकीर से भी बुरा बना दिया। भूखे पेट रहना पड़ रहा है।"

"बहुत कमीना है ये।"

"बहुत ही कमीना। कहता है कि जिन्न झूठ नहीं बोलते, परंतु इसने सब कुछ हमें झूठ बोला। हमें सोबरा के पास ले जा रहा था। कहता था सोबरा से कहकर, हमें वापस हमारी दुनिया में भिजवा देगा। कसमें खाता था। हम दोनों भोले हैं जो इसकी बात मानते रहें। अब कहता है, सोबरा के पास नहीं जाना है।"

"क्योंकि इसके भीतर जो इंसानी इच्छाएं आई थीं, वो गायब हो गई हैं। ये फिर से असली जिन्न बन गया।"

"लेकिन हमारी तो मुसीबत बढ़ गई। यहां तो पेट भरने के लाले पड़ गए हैं।"

सपन चड्ढा थोड़ा करीब आया। मोमो जिन्न पर नजर मारी।

मोमो जिन्न अभी भी सुनने-सुनाने में व्यस्त था।

"लक्ष्मण भाग चलते हैं।"

"ये जिन्न हमें भागने देगा तब न।"

"ये बातों में व्यस्त है। मौका अच्छा है।"

"पागल न बन। इसकी नजर हम पर ही है।"

"तो क्या करें?"

"रात को भागेंगे। इससे कहते हैं कि हम थक गए हैं। हमें नींद आ रही है, उसके बाद... ।"

"लेकिन जिन्न को तो नींद आती नहीं। ये जागता रहेगा।"

"ओह, ये तो मैं भूल गया था।"

"जब तक इसके साथ रहेंगे, ये हमें नचाता रहेगा।"

"मेरे खयाल में हमें नींद लेने का नाटक करना चाहिए और रात को मौका पाते ही खिसक लेंगे।"

"लेकिन जाएंगे कहां?"

"ये बाद में सोचेंगे। पहले इससे तो पीछा छूटे।"

"वो देख, शायद उसकी बातें खत्म हो गई हैं।"

मोमो जिन्न सिर हिलाकर इन दोनों की तरफ पलटा।

"तुम दोनों एक-दूसरे के कान में क्या खुसर-फुसर कर रहे हो।" मोमो जिन्न ने दोनों को गहरी निगाहों से देखा।

"खुसर-फुसर?" लक्ष्मण दास जल्दी से कह उठा—"क्या कह रहे हो, हम तो एक-दूसरे की थकान और भूख के बारे में... ।"

"फिर भूख।" मोमो जिन्न मुंह बनाकर कह उठा—"तुम इंसानों की ये बुरी समस्या है कि बात-बात पर कुछ खाने को कहते हो। शुक्र है कि बनाने वाले ने जिन्नों को पेट की बीमारी नहीं लगाई।"

"ये बीमारी तो तुम्हें भी लगी थी, जब तुम जलेबियां-रबड़ी-तरबूज खाते थे और हम तुम्हारी इच्छाएं पूरी करते थे। भूल गए तुम कि तुम्हें सिल्क का कुर्ता-पायजामा भी सिलवाकर... ।"

"ये बातें मत करो।"

"क्यों—क्या हम गलत... ।"

"बीच में, कुछ वक्त के लिए, किसी ने मेरे भीतर इंसानी इच्छाएं भर दी थीं।" मोमो जिन्न मुंह बनाकर बोला—"तभी तो मेरी इच्छा खाने-पीने और कपड़े पहनने की हुई।"

"तब तुम अपने मतलब को, हमारे यार बन गए थे।"

"वो वक्त मुझे याद मत दिलाओ।"

"क्यों?" सपन चड्ढा ने तीखे स्वर में कहा।

"जिन्न को ये सब सुनना अच्छा नहीं लगता।" मोमो जिन्न ने गहरी सांस ली।

"तब तुमने हमसे वादे भी किए थे।"

"तुमने हमें वापस हमारी दुनिया में पहुंचाने का वादा किया था।"

"तब हम तुम्हारी इच्छाओं के बारे में ढोल पीट देते तो ये बात जथूरा के सेवकों को पता चल जाती। वे तुम्हें मार देते। हमने अपना मुंह बंद रखकर तुम्हारा भला किया और तुम एहसानफरामोश हो कि सब भूल गए।"

"खामोश।" मोमो जिन्न कठोर स्वर में बोला—"जिन्न कभी एहसानफरामोश नहीं होता।"

"लेकिन तुम हो।"

"अपनी जुबान को लगाम दो।"

"तुम कमीने-झूठे-मक्कार... ।"

मोमो जिन्न गुस्से से आगे बढ़ा और सपन चड्ढा की गर्दन थाम ली।

सपन चड्ढा को अपनी सांस रुकती सी महसूस हुई।

"ये क्या कर रहे हो।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाकर बोला—"ये मर जाएगा।"

"इसने मेरे साथ बदतमीजी की।"

"वो तो ठीक है लेकिन जो बातें कही हैं, उसमें कुछ भी झूठ नहीं है।"

"तब मुझमें इंसानी इच्छाएं थीं। मुझे अपने अच्छे-बुरे का पता नहीं था।"

"लेकिन तुमने हमसे वादे तो किए थे। तब भी तो तुम जिन्न थे।"

"म...मेरा गला।" सपन चड्ढा फंसे स्वर में बोला।

"पहले इसका गला छोड़ो।"

मोमो जिन्न ने सपन चड्ढा का गला छोड़ दिया।

सपन चड्ढा गला मसलता, गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

"तुम हमें धोखे में रखकर यहां ले आए।" लक्ष्मणदास ने कहा।

"तुम दोनों मेरे गुलाम हो।"

"हम किसी के गुलाम नहीं हैं।" लक्ष्मणदास गुस्से से कह उठा।

"परंतु तुम हो। जिन्न या तो खुद गुलाम बनता है या बनाता है। मैंने तुम दोनों को... ।"

"लक्ष्मण।" सपन चड्ढा गहरी सासें लेता कह उठा—"ये बहुत बड़ा कमीना है।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

"तुम्हारी ये हिम्मत कि मोमो जिन्न से इस तरह बात करो।" मोमो जिन्न सख्त स्वर में बोला।

"तुम इसी लायक हो।"

"ओफ्फ—मैंने तुम दोनों को अपना गुलाम बनाकर अपनी इज्जत खराब कर ली है।"

"तुमने जो हमसे वादे किए, वो अब कहां गए। तुम स्वयं ही बेइज्जत जिन्न हो। वरना जिन्न तो ऐसे होते हैं कि जो कह देते हैं मरते दम तक अपना कहा पूरा करते हैं। तुम तो... ।"

"आज तक तुम कितने जिन्नों से मिले हो जो ये बात कह रहे हो।" मोमो जिन्न ने दोनों को घूरा।

"ये बात हम तुम्हें नहीं बताएंगे।"

"सीक्रेट है।"

"क्या चाहते हो तुम दोनों?" मोमो जिन्न गम्भीर था।

"हम, वापस अपनी दुनिया में जाना चाहते हैं। तुमने वादा किया था कि हमें हमारी दुनिया में पहुंचा दोगे।"

"पहुंचा दूंगा। परंतु कुछ समय बाद।"

"तुम अब भी झूठ बोल रहे हो।"

"जिन्न को झूठा मत कहो।"

"तुम इस वक्त हमें महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी पर ले जा रहे हो। वहां हम मर गए तो तुम अपना वादा कैसे पूरा करोगे।"

मोमो जिन्न खामोश रहा।

"लक्ष्मण, तुम इसकी किसी बात का भरोसा मत करना।"

"कहने की क्या जरूरत है। मैं तो पहले ही भरोसा नहीं कर रहा। सिर्फ इसे भुगत रहा हूं।"

"पहले कहा करता था कि मैं तुम्हारे लिए जान दे दूंगा। इसकी बातों में आकर हम इसे जलेबी-रबड़ी-तरबूज खिलाते रहे। सिल्क के कपड़े सिलवाकर देते रहे और अब...।"

"जिन्न के बारे में कैसी बातें कर रहे हो।" मोमो जिन्न बोला—"मुझे तो घिन आ रही है।"

"तेरे को तो टापू पर अपने हिस्से का खाना भी खिलाया था। तब तू डकार मारा करता था।"

"छी-छी—कैसी बातें करते हो। भला जिन्न भी कभी डकार मारते हैं।"

"तुम मारते थे।"

"ओह कितना बुरा बन गया था मैं। जाने किस शैतान ने मुझमें इंसानी इच्छाएं भर दी थीं।"

"देख तो कैसा शरीफ जिन्न बन रहा है अब तो।"

"मेरा तो दिल करता है कि पटकी दे दूं इसे।"

"कमीना है ये।"

"तुम दोनों मुझसे बहुत दुखी लगते हो।" मोमो जिन्न गम्भीर स्वर में कह उठा।

"क्या—ये बात तेरे को अब पता चली है। हम तो आत्महत्या करने की सोच रहे हैं।"

"मुझे मालूम है इंसान आत्महत्या कर लेते हैं। ठीक है, तुम दोनों भी कर लो।"

"क्या?" लक्ष्मण दास हड़बड़ाया।

"हम आत्महत्या कर लें?" सपन चड्ढा को कुछ कहते न सूझा।

"तुम ही तो कह रहे थे।"

"वो तो...वो तो यूं ही उदाहरण वाली बात थी। हमने ये तो नहीं कहा कि हम आत्महत्या करने जा रहे हैं।"

"क्या मुसीबत है।" लक्ष्मण दास बड़बड़ा उठा—"इस जिन्न ने तो हमारी इज्जत उतार दी।"

"दिल छोटा न करो।" मोमो जिन्न बोला—"मैं तुम दोनों को वापस तुम्हारी दुनिया में पहुंचा दूंगा।"

"कब?"

"सिर्फ एक काम पूरा होने के बाद।"

"कौन-सा काम?"

"जथूरा तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर कहीं कैद है। उसे वहां से आजाद कराना है।"

"तो हम क्या करें।"

"हमारा इस बात से क्या वास्ता?"

"तुम लोगों को मेरे साथ रहना है। ऐसा जथूरा के सेवकों ने मुझे आदेश दिया है। क्यों, ये तो वो ही जानते होंगे। और जिन्न अपने मालिक से मिले आदेशों को हर हाल में पूरा करता है।"

"लेकिन तुम तो जथूरा के गुलाम हो। उसके सेवकों के नहीं। और जथूरा कैद में है। तुमने बताया।"

"जथूरा की गैरमौजूदगी में, जथूरा के सेवक मुझे आदेश देने का हक रखते हैं। मेरे लिए एक ही बात है। अभी-अभी मुझे बताया गया है कि कल सुबह देवा-मिन्नो-बेला, भंवर सिंह-त्रिवेणी, नील सिंह, परसू, कमला रानी, मखानी, तवेरा, गरुड़ वगैरहा, महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी की तरफ रवाना हो रहे हैं कि जथूरा को आजाद करा सकें। हमें तिलिस्मी पहाड़ी के पहले, एक खास जगह रुकने को कहा गया है और उन सबके वहां पहुंचने पर, उनका साथ देने को कहा है।"

"नई मुसीबत।" लक्ष्मण दास बड़बड़ाया।

"हम भला इस मामले में उनका क्या साथ देंगे।" सपन चड्ढा बोला—"हम वहां मारे जाएंगे।"

"मैं तुम दोनों की रक्षा करूंगा।" मोमो जिन्न बोला।

"तुम हम दोनों को यहीं छोड़ दो। तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी। हम लुढ़कते-ठोकरें खाते किसी तरह अपनी दुनिया में पहुंच जाएंगे।"

"नादान हो जो ऐसी बातें कर रहे हो। अभी तक इस बात को नहीं समझे कि तुम दोनों इस वक्त नई दुनिया में आ चुके हो। यहां से वापस चले जाना, आसान नहीं है। देवा और मिन्नो ही तुम्हें वापस ले जा सकते हैं।"

"तुम नहीं।"

"जथूरा चाहे तो मैं भी तुम दोनों को वापस तुम्हारी दुनिया में पहुंचा सकता हूं।" मोमो जिन्न ने कहा—"अब ये सब बातें छोड़ो और यहां से चलो। हमें अभी आगे चलना है।"

"मेरे में जरा भी हिम्मत नहीं है चल पाने की।"

"मेरा भी यही हाल है।"

"महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी यहां से ज्यादा दूर नहीं है। उससे पहले ही एक जगह पर हमें ठहर जाना है। वहां पर आराम कर लेना। वो लोग कल दिन ढले ही वहां पहुंचेंगे।" मोमो जिन्न ने कहा—"चलो यहां से।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"इसे कहने का कोई फायदा नहीं होगा। ये अपनी बात मनवा के ही रहेगा।" सपन चड्ढा बोला।

"चलो। वहां हमें आराम करने का काफी वक्त मिलेगा।"

फिर वे तीनों अंधेरे में चल पड़े। मोमो जिन्न दो कदम आगे चल रहा था।

"वहां आराम करते हुए जब ये लापरवाह होगा तो हम भाग जाएंगे।" सपन चड्ढा धीमे से कह उठा।

"मैं भी यही सोच रहा हूं।" लक्ष्मण दास फुसफुसाया।

"जिन्न कभी लापरवाह नहीं होते।" आगे जाता मोमो जिन्न कह उठा—"इसलिए तुम दोनों भाग नहीं सकते।"

▭ ▭

आधी रात का वक्त हो रहा था।

जथूरा के महल के उस हॉल में चुप्पी ठहरी हुई थी। वहां देवराज चौहान, नगीना, मोना चौधरी, रुस्तम राव, बांकेलाल राठौर, महाजन, पारसनाथ, मखानी और कमला रानी मौजूद थे।

कुछ नींद में थे तो कुछ जाग रहे थे।

जागने वालों में से देवराज चौहान, मोना चौधरी, मखानी और कमला रानी थे। हॉल की रोशनी मध्यम थी कि नींद लेने में उन्हें परेशानी न हो।

मखानी ने हर तरफ नजरें घुमाईं।

मोना चौधरी को उसने टहलते पाया।

देवराज चौहान सोफे जैसी कुर्सी पर टांगें पसारे बैठा था।

मखानी आहिस्ता से कमला रानी के पास सरक आया। जो कि लेटी छत को देखती सोच रही थी।

"क्या है?" कमला रानी ने मखानी को देखा।

मखानी ने दांत फाड़े।

"सोचने दे, पीछे हो जा।" कमला रानी कह उठी।

"तू रात के अंधेरे में कितनी खूबसूरत लगती है।" मखानी ने दांत फाड़कर कहा।

"अच्छा।" कमला रानी ने व्यंग-भरी नजरों से उसे देखा—"कहीं अब तू बाथरूम की तरफ जाने को तो नहीं कहने वाला।"

"ओह, तूने तो मेरे दिल की बात पकड़ ली।"

"मूड खराब मत कर।"

"चल ना।" मखानी ने आग्रह किया।

"बिल्कुल नहीं।"

"तो यहीं पर... ।"

"सीधा हो जा। मैं मशीन नहीं हूं। दिन में दो बार तूने कर लिया था।"

"सिर्फ दो बार ही तो किया।"

"तो क्या दस-बीस बार करेगा।"

"कम-से-कम तीन-चार बार तो होना चाहिए।" मखानी ने मुंह लटकाकर कहा।

"तू इंसान है या जानवर, जो... ।"

"तेरे को तो पता ही है कि मैं क्या हूं। स्वाद तू चख चुकी है।" मखानी बोला—"क्या पता आने वाले वक्त में कब मौका मिलता है। इसलिए पहले ही पेट भरकर रख लूं तो ठीक रहेगा।"

इसी पल शौहरी की आवाज कानों में पड़ी।

"मखानी! तू बहुत लालची हो गया है।"

"तेरे को क्या, मैं कमला रानी को पटा रहा हूं तो तुझे क्यों जलन होती है।"

"काम की तरफ ध्यान दे।"

"अब आगे के कामों में हमारा क्या काम?"

"बहुत काम है—तुम... ।"

"मैं सोच चुका हूं। महाकाली की पहाड़ी पर हमारा कोई काम नहीं। देवराज चौहान-मोना चौधरी वहां जा रहे हैं। बाकी सब भी साथ में हैं। तू मुझे और कमला रानी को यहीं महल में रहने दे।"

"अच्छा, महल में रहकर तू क्या करेगा?"

"मैं...मैं कमला रानी के साथ प्यार करूंगा।"

"अभी पोतेबाबा, इसी तरफ ही आ रहा है।" शौहरी की आवाज कानों में पड़ी।

"इस तरफ?"

"हां, तुम दोनों के पास।"

"क्यों?"

"वो जो कहे, उसकी बात सुनना। आगे तुम्हें क्या करना है वो बताएगा।"

"तुम लोग हमें काम ही क्यों बताते रहते हो?"
"कालचक्र से जुड़े हर इंसान को काम में लगे रहना पड़ता...।"
"तुमने तो कहा था कि पूर्वजन्म की दुनिया में जाकर बहुत मजा आएगा, परंतु...।"
"क्या तेरे को मजा नहीं आ रहा। कमला रानी के साथ तू दो बार स्नानघर की तरफ गया है।"
मखानी सकपकाकर बोला।
"तू...तुझे कैसे पता?"
"मैं तेरे साथ ही तो था।"
"क्या?" मखानी हड़बड़ा उठा—"तूने सब देखा।"
"हां।"
"कमीना है तू, जो तूने देखा।" मखानी जल-भुनकर कह उठा।
"तू कमला रानी को उस वक्त बहुत तंग करता है।"
"किसने कहा ये।"
"मैंने देखा।"
"कमला रानी को उसमें मजा आता है। मैं तंग कहां करता हूं उसे।"
"मेरे से कुछ भी छिपा नहीं है, सब जानता हूं। तू सीधा हो जा।"
कमला रानी मुस्कराते हुए उसे देख रही थी।
"पोतेबाबा आ गया है। वो जो कहे ध्यान से सुनना। मैं जाता हूं।"
मखानी ने हॉल के दरवाजे की तरफ देखा तो पोतेबाबा को भीतर प्रवेश करते देखा।
"आ गया।" मखानी बड़बड़ा उठा।
"क्या हुआ?" कमला रानी ने पूछा।
"पोतेबाबा हमें आगे का काम बताने आया है।" मखानी उखड़े स्वर में बोला।
"तो तू नाराज क्यों होता है।"
"मेरा मन कोई काम करने का नहीं है।"
कमला रानी ने अपना हाथ मखानी की टांग पर रख दिया।
मखानी के शरीर में बिजली कौंधी।
"तू जब टांग पे हाथ रखती है तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।"
"अपने पर काबू रख। तेरा इंजन बहुत जल्दी ही गर्म हो जाता है।" कमला रानी ने प्यार से कहा।
"चल न, बाथरूम की तरफ।"

तभी पोतेबाबा उनके पास आ पहुंचा।

कमला रानी ने उसकी टांग से हाथ हटा लिया।

मखानी ने उखड़े अंदाज में पोतेबाबा से कहा।

"रात के इस वक्त तू क्यों आया। ये हमारे आराम करने का वक्त है।"

पोतेबाबा ने दूर पड़ी कुर्सी को पास में घसीटा और बैठते हुए बोला।

"जब काम सामने हो तो तब आराम नहीं होता।"

"बहुत गलत वक्त पर आया तू।" मखानी ने मुंह बनाया।

पोतेबाबा ने दूर मौजूद देवा और मिन्नो पर निगाह मारी फिर कमला रानी और मखानी से बोला।

"कल सुबह तुम दोनों सबके साथ महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी पर, जथूरा को आजाद कराने जा रहे हो।"

"हमारी क्या जरूरत है साथ जाने की।" मखानी मुंह बनाकर बोला—"तिलिस्म तो देवा और मिन्नो के नाम बांधा है।"

"वो ही तो बता रहा हूं कि क्या जरूरत है।"

"बताओ।" कमला रानी ने कहा।

मखानी ने नाराजगी-भरी नजरों से, कमला रानी को देखा।

कमला रानी ने अपना हाथ मखानी की टांग पर रख दिया।

मखानी की सारी नाराजगी उड़ गई।

"देवा और मिन्नो महाकाली का मुकाबला नहीं कर सकते। महाकाली तंत्र-मंत्र की विद्या में माहिर है, जबकि देवा-मिन्नो दूसरी दुनिया से आए साधारण इंसान हैं। उन्हें कभी भी तुम दोनों की सहायता की जरूरत पड़ सकती है।"

"भला हम क्या सहायता करेंगे।" मखानी ने कहा।

"तुम दोनों कालचक्र का हिस्सा हो। शौहरी और भौरी तुम दोनों के साथ रहेंगे। वो जरूरत पड़ने पर रास्ता सुझाएंगे।"

"उनसे कहो हर वक्त हमारे साथ न रहें।"

"क्यों?"

"जब हम बाथरूम की तरफ जाते हैं तो वो हमें देखते हैं।"

"उन बातों में शौहरी और भौरी की कोई दिलचस्पी नहीं है। वो बहुत व्यस्त रहते हैं।"

"लेकिन देखते तो हैं।"

"उन बातों की तरफ ध्यान दो, जो मैं तुमसे कर रहा हूं।"

"क्या अभी तुम्हारी बात पूरी नहीं हुई?"

"नहीं।"

"तो कहो।"

"मैं तुम दोनों को जो बता रहा हूं वो तुम दोनों तक ही रहे। रहस्य वाली बात है ये।" पोतेबाबा ने गम्भीर, किंतु धीमे स्वर में कहा—"गरुड़ को तो तुम दोनों ने देखा होगा?"

"हां।"

"सच बात तो ये है कि वो जथूरा का सेवक न होकर, सोबरा का खबरी है।"

"ओह, तुम्हें कैसे पता?"

"पता चल गया। सुनते रहो। गरुड़ यहां की सारी खबरें सोबरा को बताता है। इससे हमें बहुत हानि होती है और... ।"

"तुम गरुड़ को मार दो। हानि नहीं होगी।"

"तुम बोलते ज्यादा हो और मेरी बात कम सुन रहे हो।"

"ठीक है। तुम कहते रहो। हम सुनते हैं।"

"ये बात रातुला और जथूरा की बेटी तवेरा भी जानती है। तवेरा को इस बात की खबर मैंने ही दी। अब तवेरा की चाल ये है कि वो गरुड़ को अपने साथ महाकाली की पहाड़ी पर ले जाएगी। इसलिए कि उसे झूठी-झूठी खबरें दें और गरुड़ वो खबरें आगे सोबरा को दे। इससे सोबरा भटक जाएगा।"

"ओह।"

"तुम दोनों को तवेरा और गरुड़ पर नजर रखनी है। अगर कहीं पर तवेरा चूक जाए तो गरुड़ उसे जान का नुकसान न पहुंचा सके।"

"समझ गया। ये तो अच्छी बात है।" मखानी ने सिर हिलाया।

"क्या तुम्हें शक है कि तवेरा कोई गलती कर बैठेगी।" कमला रानी ने पूछा।

"कोई शक नहीं। तवेरा बहुत समझदार है और तंत्र-मंत्र की विद्या में माहिर है। परंतु महाकाली ज्यादा तेज है। लेकिन हो सकता है कि गरुड़ मेरी आशा से ज्यादा चालाक हो और वो भांप ले कि तवेरा कोई चाल चल रही है।" पोतेबाबा ने कहा—"ऐसे किसी मौके पर तुम दोनों ने तवेरा का बचाव करना है।"

"समझ गए।" कमला रानी ने कहा।

"महाकाली की पहाड़ी पर होगा क्या?"

"तिलिस्मी पहाड़ी है वो। वहां सिर्फ मौत ही सामने आएगी। तुम दोनों ने खुद को भी बचाना है और दूसरों को भी। ये अभियान जथूरा को आजाद कराने का है।" पोतेबाबा गम्भीर था।

"तुम्हें क्या लगता है कि जथूरा आजाद हो सकेगा।"

"मालूम नहीं।" पोतेबाबा के होंठ भिंच गए।

"तुम्हें सब मालूम है। मुझे बताओ कि इस बारे में तुम क्या सोचते हो?"

"मुझे नहीं लगता कि जथूरा को आजाद कराने में हमें सफलता मिल पाएगी।"

"तो फिर इन सबको क्यों भेज रहे हो?"

"कोशिश तो करनी चाहिए, शायद सफलता मिल ही जाए। सब कुछ देवा और मिन्नो पर निर्भर है, क्योंकि महाकाली ने तिलिस्म उन दोनों के नाम पर बांधा है। अगर दोनों काबिल हैं तो शायद सफल हो जाएं।"

"तुम्हें देवा और मिन्नो की काबलियत पर शक है?" कमला रानी ने पूछा।

"दिल की बात बताता हूं कि उनकी काबलियत पर मुझे कोई शक नहीं। ऊपर से दोनों के एक साथ काम करने पर दोनों के ग्रह मिलकर शक्तिशाली हो जाते हैं और वो हर काम को कर पाने का हौंसला रखते हैं। मैं यूं ही इन्हें पूर्वजन्म में नहीं लाया। इन्हें लाने में मुझे बहुत चालें खेलनी पड़ीं।"

"तो फिर तुम्हारे मन में असफल होने की शंका क्यों है?" कमला रानी गम्भीर थी।

"इसकी वजह महाकाली है।" पोतेबाबा ने दोनों को देखा—"महाकाली की ताकतें बहुत ज्यादा हैं। वो आज तक किसी से हारी नहीं। सोबरा के कहने पर उसने जथूरा को कैद में रखा हुआ है। ऐसे में महाकाली कभी नहीं चाहेगी कि जथूरा उसकी इच्छा के बिना, उसकी कैद से निकल जाए। इसके लिए वो भरपूर, कठोर इंतजाम करेगी। किसी की जान लेने से भी पीछे नहीं हटेगी।"

"फिर तो खतरा पूरा है।" मखानी ने कहा।

पोतेबाबा ने सिर हिलाया।

"तुम कहते हो कि तवेरा के पास तंत्र-मंत्र की विद्या है।" कमला रानी ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"परंतु तवेरा महाकाली से कमजोर है।"

"नीलकंठ के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?"

"नीलकंठ हमारे बहुत काम आ सकता है।" पोतेबाबा कह उठा—"एक ही गुरु से दोनों ने विद्या सीखी है। नीलकंठ अवश्य महाकाली की चालों को पहचानता होगा।"

"वो मिन्नो का चाहने वाला है।"

"तभी तो इस मामले में आ गया। उसके आने से महाकाली

अवश्य बेचैन हुई होगी।" पोतेबाबा ने गम्भीर स्वर में कहा—"मैंने सारी बात तुम दोनों को बता दी है। तिलिस्मी पहाड़ी के सफर के वक्त तुम दोनों सतर्क रहना।"

"मोमो जिन्न किधर है?" मखानी बोला—"मैं उसे नहीं छोड़ूंगा। उसने हमारी हत्या करवा दी थी।"

"वो सब मेरे इशारे पर हुआ था।" पोतेबाबा ने कहा।

"तुम्हारे इशारे पर?"

"ज्यादा सवाल मत पूछो। इतना बता दूं कि मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी रास्ते में मिलेंगे और तुम लोगों के साथ ही चल पड़ेंगे। उन्हें अपना दोस्त समझना।"

"मोमो जिन्न की क्या जरूरत है इस मामले में।" मखानी नापसंदगी-भरे स्वर में कह उठा।

"बहुत जरूरत है। मोमो जिन्न वक्त आने पर बहुत काम आएगा।" पोतेबाबा उठ खड़ा हुआ—"अब जो भी बात करनी हो, वो तुम दोनों शौहरी या भौरी से कर सकते हो। मैं चलता हूं।"

पोतेबाबा देवराज चौहान के पास पहुंचा।

"नींद ले लो। इसके बाद तुम्हें आराम नहीं मिलेगा।" पोतेबाबा ने कहा।

देवराज चौहान जवाब में मुस्करा पड़ा।

पोतेबाबा ने कुछ दूर टहलती मोना चौधरी से कहा।

"तुम भी सो जाओ मिन्नो।"

मोना चौधरी ने उसे देखा, कहा कुछ नहीं।

"जथूरा को आजाद करवाने में तुम कोई परेशानी महसूस कर रही हो तो कह सकती हो।" पोतेबाबा पुनः बोला।

"ऐसी कोई बात नहीं।" मोना चौधरी ने ऊंचे स्वर में कहा।

पोतेबाबा ने देवराज चौहान को देखा तो देवराज चौहान ने कहा।

"हमारे सफर की तैयारी कर ली तुमने?"

"हां, तैयारी हो चुकी है देवा।"

"तो सुबह मिलेंगे।"

पोतेबाबा वहां से बाहर निकल गया।

मखानी ने उसी पल कमला रानी से धीमे स्वर में कहा।

"अब तो स्नानघर की तरफ आ जा।"

"अब क्या हो गया?" कमला रानी ने मुंह बनाया।

"कभी तो मेरी बात मान लिया कर।"

"आज दिन में दो बार तेरी बात मानी है।"

"एक बार और मान ले। तेरा क्या जाता है। जाता तो मेरा ही है।"

कमला रानी मुस्करा पड़ी।

मखानी की आंखों में चमक आ ठहरी।

"चलती है?" मखानी के स्वर में आग्रह था।

"चल।" कमला रानी ने गहरी सांस ली—"एक बार और तेरी बात मान लेती हूं।"

"तेरा जवाब नहीं कमला रानी। तू रास्ते पर आ तो जाती है लेकिन मुझे तड़पा-तड़पाकर। ये भी अदा है। इससे भाव बढ़ा रहता है। जवानी में तूने बहुतों को तरसाया होगा, इसी तरह।"

"जल्दी चल ले। मेरा मन बदल गया तो... ।"

"मैं जाता हूं—तू आ जाना।" कहकर मखानी उठा और स्नानघर की तरफ बढ़ गया।

'साला, हरामी।' कमला रानी बड़बड़ा उठी—'जवानी में इसने बहुत गुल खिलाए होंगे। जवान तो अब भी है। मैं भी जवान हूं। भला हो कालचक्र का, जिसने हमें फिर से जवान कर दिया।' बड़बड़ाने के पश्चात कमला रानी उठी और बाथरूम की तरफ बढ़ गई।

तभी कमला रानी की निगाह देवराज चौहान पर पड़ी।

देवराज चौहान उसे ही देख रहा था।

कमला रानी ने मुस्कराकर आंख दबा दी।

देवराज चौहान ने गहरी सांस ली और मुंह फेर लिया।

'हाथ नहीं रखने देगा। नखरे वाला है।' कमला रानी बड़बड़ा उठी।

तभी मोना चौधरी देवराज चौहान के पास पहुंची।

"मैं सोच रही हूं कि हमें महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के बारे में खास जानकारी नहीं है।"

"पोतेबाबा खास कुछ नहीं बता पाया।" देवराज चौहान ने कहा।

"ऐसे में हमारे लिए खतरे बढ़ जाएंगे...हमें... ।"

"तुम नीलकंठ से तिलिस्मी पहाड़ी के बारे में जानकारी ले सकती हो।"

मोना चौधरी ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान की निगाह मोना चौधरी पर थी।

"तुमने ठीक कहा। कल पूछूंगी नीलकंठ से।"

"वो कैसे आएगा तुम्हारे पास?"

"मन-ही-मन पुकारूंगी तो वो आ जाएगा। यही बात उसने मेरे मन में डाली थी।"

देवराज चौहान ने स्नानघर वाली दिशा की तरफ देखकर कहा।

"पोतेबाबा कमला रानी और मखानी से कोई बेहद खास बात करके गया है।"

"तुम कैसे कह सकते हो?"

"इस वक्त पोतेबाबा का आना इसी बात की तरफ इशारा करता है।"

"मैं मालूम कैसे करूं दोनों से?"

"कोई फायदा नहीं। वे बताने वाले नहीं।" देवराज चौहान ने इंकार में सिर हिलाया।

"तुम्हें क्या लगता है कि पोतेबाबा हमसे कुछ छिपा रहा है?" मोना चौधरी बोली।

"मैं तो इतना जानता हूं कि वो हमें अपने काम के लिए इस्तेमाल कर रहा है। ये बात जानते हुए भी हम कुछ नहीं कर सकते। क्योंकि पूर्वजन्म में आने के बाद हम तभी वापस जा सकते हैं, जब यहां का कोई बिगड़ा काम संवार दें।"

"ये नियम किसने बनाया?"

"मैं नहीं जानता। परंतु हमारी वापसी के दरवाजे तभी खुलेंगे, जब हम जथूरा को आजाद करा लेंगे।"

"माना कि न आजाद करा सके तो?"

"तब के बारे में मैं कुछ नहीं जानता। जो भी हो, हमें सफल होने की पूरी चेष्टा करनी है।"

▭ ▭

जगमोहन, सोहनलाल और नानिया सुबह जब उठे तो दिन निकल आया था। कुछ खास छेदों में से होकर सूर्य की किरणें भीतर आ रही थीं।

"हम देर तक सोए रहे।" जगमोहन बोला।

सोहनलाल ने नानिया को देखा। दोनों की नजरें मिलीं।

नानिया मुस्करा पड़ी। उसके चेहरे पर सुबह की खूबसूरती चमक रही थी।

"कम-से-कम सुबह के वक्त का तो खयाल कर लो।" जगमोहन कह उठा।

"हम गुड मॉर्निंग कर रहे हैं।" सोहनलाल ने जगमोहन से कहा।

"ऐसे होती है गुड मॉर्निंग।"

"तुम भी प्यार करना सीख लो, तो गुडमॉर्निंग करना जान जाओगे।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

"तुम्हारा दोस्त चिढ़ता क्यों है हमारे प्यार से?" नानिया कह उठी।

"चिढ़ता नहीं है।"

"चिढ़ता है।"

"ये इसकी सामान्य हरकत है, जिसे तुम चिढ़ता महसूस कर लेती हो।" सोहनलाल ने कहा।

"सच में बहुत अजीब है तुम्हारा दोस्त।"

"प्यार के रंग से दूर है, इसलिए।"

"तुम सीधे हो जाओ सोहनलाल।" जगमोहन कह उठा—"एक औरत के चक्कर में तुम पूरी तरह बिगड़ गए हो।"

"सुना।" नानिया तीखे स्वर में कह उठी—"कहता है, मैंने तुम्हें बिगाड़ दिया है।"

"तुम इसकी बातों की परवाह मत करो। ये इसी तरह की बातें करता है।"

जगमोहन खड़ा होता कह उठा।

"हमें नहा-धोकर, सोबरा से मिलना है। ताकि उसे बता सकें कि हमने देवराज चौहान को समझाने का फैसला कर लिया है।"

तभी एक युवती ने भीतर प्रवेश किया।

"जाग गए आप लोग। मैं सोबरा के आदेश पर आपको जगाने ही आई थी।" वो बोली।

"हम सोबरा से मिलना चाहते हैं।"

"अवश्य, परंतु पहले नहा-धोकर कुछ खा लीजिए। उसके बाद ही सोबरा से मुलाकात होगी।" उसने कहा।

"नहाना-खाना जरूरी है क्या?" जगमोहन बोला।

"ये सोबरा का आदेश है। चूंकि आप हमारे मेहमान हैं, इसलिए सेवा-सत्कार पूरा करना चाहते हैं हम।"

"तुम जाओ। नहाकर हम तुम्हें आवाज दे लेंगे।" सोहनलाल ने कहा।

वो बाहर चली गई।

"देवराज चौहान और बाकी सब, अब तक महाकाली की पहाड़ी की तरफ चल पड़े होंगे?" सोहनलाल बोला।

"हां, मेरे खयाल में उनका सफर शुरू हो चुका होगा।" जगमोहन ने कहा।

"सोबरा के महल में रहने का मजा ही नया है।" नानिया कह उठी—"सोहनलाल।"

"हां।"

"क्या तुम मेरे लिए ऐसा महल नहीं बनवा सकते।"

"महल?" सोहनलाल अचकचाया।

"ले ले प्यार का मजा।"

"फिर चिढ़ गया ये मेरी बात से।" नानिया ने मुंह बनाकर कहा।

"ये तो पागल है।"

जगमोहन मुस्कराकर सोहनलाल को देखे जा रहा था।

"सोहनलाल तुमने जवाब नहीं दिया मेरी बात का?" नानिया ने कहा।

"हमारी दुनिया में लोग छोटे-छोटे घरों में रहते हैं। महलों में नहीं रहते।" सोहनलाल ने कहा।

"कोई बात नहीं। मैं छोटे घर में रह लूंगी। तुम्हारे साथ तो मैं झोंपड़ी में भी रह लूंगी।"

"क्या कहने।" जगमोहन मुस्कराकर बोला—"ये तो... ।"

"सोहनलाल ये फिर... ।"

"धीरे-धीरे इसे, तुम्हारी आदत पड़ जाएगी। तब ये ठीक हो जाएगा। तुम इसकी मत सुना करो।"

▭ ▭

वो युवती नाश्ते के पश्चात उन तीनों को महल की बैठक में ले गई। वहां सोबरा पहले से ही मौजूद था।

उन्हें देखकर सोबरा मुस्कराकर बोला।

"आशा है मेरे महल में तुम तीनों को सुख से भरी नींद आई होगी।"

"सच में।" सोहनलाल ने कहा।

सोबरा के इशारे पर युवती वहां से चली गई।

"बैठ जाओ।" कहने के साथ सोबरा भी आरामदेह कुर्सी पर जा बैठा।

वो तीनों बैठ गए तो सोबरा मुस्कराकर बोला।

"अब तुम लोग ये बताने वाले हो कि तुम लोग देवा-मिन्नो को समझाने को तैयार हो।"

"तुम्हें कैसे पता?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मैंने रात तुम लोगों की बातें सुनीं।"

"ओह।"

"तो तुमने सब इंतजाम कर रखे हैं।" सोहनलाल बोला।

"मेरे लिए ये जानना जरूरी है कि मेरे महल में ठहरे मेहमान, मेरे बारे में कैसे विचार रखते हैं।"

"हमने तुम्हारे बारे में तो कोई गलत बात नहीं कही।" जगमोहन ने कहा।

"जानता हूं, परंतु चालाकी कर रहे हो कि यहां कैद में रहने से

अच्छा है कि महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश पा लिया जाए, ताकि देवा से तो मिल सको।" सोबरा के चेहरे पर मुस्कान थी।

सोहनलाल और जगमोहन की नजरें मिलीं।

"और मुझे कहोगे कि देवा-मिन्नो को पीछे हटने के लिए समझाओगे।"

"तो तुम सब जान गए।" जगमोहन ने होंठ सिकोड़े।

"क्योंकि तुम्हें मालूम नहीं था कि तुम लोगों की बातें सुनी जा रही हैं।" कहकर सोबरा ने नानिया से कहा—"तुम पहले से बहुत समझदार हो गई हो। रानी साहिबा के रूप में तुमने, कालचक्र में बहुत कुछ सीख लिया है।"

"वहां मुझे बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ता था।" नानिया ने कहा।

"अब तुम क्या चाहते हो?" जगमोहन बोला।

"तुम लोगों की बातें सुनकर मेरे मन में किसी के प्रति भी कोई बुरा विचार नहीं आया। क्योंकि जब इंसान फंसा होता है तो बचने के लिए नए-नए उपाय खोजता है। हर कोई बचने का प्रयत्न करता है। तुम भी कर रहे हो। स्वाभाविक बात है ये। परंतु मैं तुम्हें तुम्हारे भले की राह दिखाऊंगा।" सोबरा सरल स्वर में बोला।

"कैसी राह?"

"महाकाली की पहाड़ी में प्रवेश करना तुम लोगों के लिए परेशानी का सबब बन सकता है। क्योंकि वो तिलिस्मी पहाड़ी है। कदम-कदम पर मौत बिछी है। महाकाली ने ऐसे इंतजाम कर रखे हैं कि जो एक बार भीतर प्रवेश कर जाए तो जिंदा बाहर न आ सके। अगर तुम्हारा इरादा सिर्फ देवा से मुलाकात करने का है तो वहां मत जाओ। यही बेहतर है कि मेरी नगरी में कैदी बन जाओ। वहां मारे जाओगे।"

"मतलब कि तुम्हें कोई एतराज नहीं अगर हम वहां जाना चाहें तो?" जगमोहन बोला।

"मुझे कोई एतराज नहीं। लेकिन उससे तुम्हारा भला नहीं होगा। नुकसान ही होगा।"

"तुम हमें पहाड़ी में पहुंचा दो।"

"सोच लो। अभी भी वक्त तुम लोगों के हाथ में है। अगर पहाड़ी में प्रवेश कर गए तो फिर तभी बच सकोगे अगर देवा और मिन्नो को समझाकर, उन्हें बाहर ले आने के लिए तैयार कर लोगे। नहीं तो तुम तीनों की मौत होगी ही।"

"मान लो—मैं उन्हें तैयार कर लेता हूं तो तुम्हें कैसे बताऊंगा?" जगमोहन ने पूछा।

"ये बात होते ही महाकाली को खबर मिल जाएगी।" सोबरा ने कहा—"फिर भी मैं ये राय जरूर दूंगा कि अगर तुम लोग देवा-मिन्नो को समझाना नहीं चाहते तो महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी में जाने की मत सोचना।"

"हम जाएंगे।" सोहनलाल कह उठा।

"ठीक कहता है ये। हम जाएंगे।" जगमोहन बोल पड़ा।

सोबरा मुस्कराया।

सोहनलाल ने नानिया से कहा।

"तुम हमारे साथ मत जाना, वहां जान का खतरा... ।"

"मैं तो तुम्हारे साथ जाऊंगी सोहनलाल। मैंने तुमसे ब्याह करना है।" नानिया कह उठी।

"अगर मैं वापस आ सका तो, तुम्हारे साथ ब्याह... ।"

"मेरी मां कहा करती थी, मर्द का कभी भरोसा मत करो। मैं तो तुम्हारे साथ रहूंगी सोहनलाल।"

"तुम समझती क्यों नहीं। वहां जान जाने का खतरा है। तुम मर... ।"

"तू मरेगा तो मैं भी मर जाऊंगी। तू जिंदा रहेगा तो मैं भी जिंदा रहूंगी।"

"तो तू नहीं मानेगी।" सोहनलाल झल्लाया।

"मैं तेरे साथ रहूंगी। तू भी मत जा।"

"मेरा जाना जरूरी है।" सोहनलाल ने होंठ भींचकर कहा।

"जैसे तेरा जरूरी है, वैसे ही मेरा जाना जरूरी है।" नानिया ने सोहनलाल की बांह पकड़ ली।

सोहनलाल ने अब कुछ भी कहना ठीक नहीं समझा।

सोबरा मुस्कराता हुआ तीनों को देख रहा था।

"ठीक है सोबरा। तुम हमें महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश करा दो।" जगमोहन बोला।

"क्यों नहीं। मैं अभी महाकाली से... ।"

"मैं आ गई सोबरा।" महाकाली की आवाज उभरी।

चमकता बिंदु हवा में लहराता नजर आने लगा था।

"मेरी ताकतों ने मुझे पहले ही एहसास करा दिया कि तू मुझे बुलाने वाला है।"

"इन्हें जथूरा वाली पहाड़ी में प्रवेश करा दे।"

"क्यों?"

"ये अब देवा-मिन्नो को समझाकर, पीछे हटने को तैयार कर लेते हैं तो अपने साथ-साथ उन सबको भी बचा लेंगे। अगर ऐसा नहीं करते तो मरेंगे।"

"समझ गई। बता कहां से इन्हें प्रवेश कराऊं?"

"पीछे की तरफ से। ताकि देवा-मिन्नो की तरफ जाने में इन्हें कोई परेशानी न हो।"

"इन्हें बता दिया है कि तिलिस्मी रास्तों में आगे बढ़ेंगे तो कोई रोक-टोक नहीं होगी, परंतु पलटकर वापस चलेंगे तो वहां फैली मेरी तिलिस्मी ताकतें, इनके लिए खतरा बन जाएंगी।"

"बता चुका हूं।"

"इनका इरादा क्या है?"

"इन्हें अच्छा-बुरा समझा दिया है। जो भी इनका इरादा होगा, तेरे को खबर मिल जाएगी।"

"समझ गई। तू इन्हें खारे पानी तक पहुंचा दे। वहां से मेरी ताकतें इन्हें आगे ले जाएंगी।" महाकाली की आवाज सबने सुनी, फिर इसके साथ ही चमकता बिंदु गायब हो गया।

महाकाली वहां से चली गई थी।

सोबरा ने अपने सेवक को बुलाकर कहा।

"इन तीनों को खारा पानी पहुंचा दो।"

▭ ▭

घोड़े मध्यम गति से आगे बढ़ रहे थे।

उन पर सवार थे देवराज चौहान, नगीना, मोना चौधरी, पारसनाथ—महाजन, बांकेलाल राठौर, रुस्तम राव, मखानी, कमला रानी, तवेरा, गरुड़ और रातुला।

रातुला अंतिम वक्त पर, सबके साथ चलने को तैयार हो गया था।

पोतेबाबा ने रातुला के साथ जाने पर कोई एतराज न किया था।

इस वक्त सूर्य चढ़ने लगा था। इन्हें चलते हुए तीन-चार घंटे हो चुके थे। सबके घोड़ों पर पानी की मुश्कें और खाने-पीने का सामान लदा था। पोतेबाबा सामान उठाने के लिए अपने सैनिकों को साथ भेज रहा था, परंतु मोना चौधरी ने किसी और के साथ जाने से मना कर दिया था। वो लश्कर को बड़ा करने के हक में नहीं थी।

तभी चलते-चलते मोना चौधरी अपना घोड़ा मखानी और कमला रानी के पास ले आई।

"कैसे हो तुम दोनों?" मोना चौधरी ने उनसे कहा।

"तुम्हें क्या?" मखानी बोला।

"रात स्नानघर की तरफ कितनी बार गए?" मोना चौधरी मुस्करा पड़ी।

मखानी पल-भर के लिए सकपकाया फिर कह उठा।

"तुम्हें क्या, हम जो भी करें।"

तभी कमला रानी कह उठी।

"क्या बात करना चाहती हो। तुम खामखाह तो हमारे पास आने से रहीं।"

"तुम दोनों का हमारे साथ क्या काम?"

"कोई काम नहीं।" कमला रानी बोली—"हम यूं ही आ गए।"

"यूं ही तो नहीं आने वाले।" मोना चौधरी ने कहा—"आधी रात को पातेबाबा ने आकर तुम दोनों से बात की।"

"तो?"

"मेरे खयाल में वो तुम दोनों से आगे के काम के बारे में खास बातें कर रहा होगा।"

"तुम्हें क्या?" मखानी कह उठा।

"मुझे नहीं बताओगे कि रात पोतेबाबा ने तुमसे क्या बातें कीं?"

"क्यों बताए?"

"अब हम एक साथ महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी की तरफ जा रहे हैं। हमें मिलकर रहना चाहिए।"

"मिन्नो।" कमला रानी बोली—"हम तेरे को कुछ नहीं बताने वाले। बेकार की कोशिश मत कर।"

"क्या कोई रहस्य वाली बात कही थी पोतेबाबा ने तुमसे?"

"ऐसा ही समझ लो।"

"मैं किसी से न कहूंगी। मेरे कान में बता दो।" मोना चौधरी ने कहा।

"बेवकूफ मत समझो हमें। हम इस बारे में तेरे को कुछ नहीं बताने वाले।" कमला रानी ने कहा।

मोना चौधरी ने गहरी सांस ली और घोड़ा उनके पास से हटा लिया। तभी उसकी निगाह देवराज चौहान पर पड़ी, जो उसे ही सवालिया नजरों से देख रहा था। मोना चौधरी ने इंकार में गर्दन हिला दी।

देवराज चौहान समझ गया कि कमला रानी और मखानी कुछ भी बताने को तैयार नहीं हैं।

घोड़े मध्यम गति से आगे बढ़े जा रहे थे।

घोड़ों की टॉपें गूंज रही थीं।

ये बंजर-सी जमीन थी। दूर तक स्पष्ट दिखाई दे रहा था। सूर्य आसमान में चढ़ने लगा था। धूप में तेजी आते ही, उन्हें गर्मी महसूस होने लगी थी। हवा भी गर्म थी।

तवेरा का खूबसूरत चेहरा तपने-सा लगा था। गर्मी में जैसे वो

और भी खूबसूरत हो उठी थी। उसने घोड़े पर अपना व्यक्तिगत सामान भी लाद रखा था, जो कि तंत्र-मंत्र की विद्या के काम आता था।

तभी गरुड़ का घोड़ा चलते-चलते उसके पास आ गया।

तवेरा ने उसे देखा और मुस्कराई। गरुड़ भी मुस्कराया।

"तुम कितनी अच्छी लग रही हो तवेरा।"

तवेरा पुनः उसे देखकर मुस्कराई।

"मैं अभी तक उलझन में हूं।" गरुड़ धीमे स्वर में बोला।

"क्यों?" तवेरा ने उसे देखा।

"तुम नहीं चाहती कि तुम्हारे पिता आजाद हों।"

"हां। क्योंकि पिताजी की आजादी से, मेरी आजादी खत्म हो जाएगी।"

"फिर तुम्हें साथ नहीं चलना चाहिए था।"

"दुनिया को दिखावा भी तो करना है गरुड़।" तवेरा बोली—"वरना लोग कहेंगे कि तवेरा, अपने पिता को आजाद कराने नहीं गई।"

गरुड़ ने सिर हिलाया।

"तुम क्या सोच रहे हो?" तवेरा ने पूछा।

"सोच रहा हूं प्यार इंसान को कमजोर कर देता है।" गरुड़ ने मुस्कराकर कहा—"पहले मैं किसी से नहीं डरता था। परंतु अब ये सोचकर डर लगता है कि महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी पर तुम्हें या मुझे कुछ हो गया तो क्या होगा।"

"कुछ नहीं होगा।" तवेरा मुस्कराई।

"ये बात तुम कैसे कह सकती हो?"

"मेरे पास ऐसी शक्तियां हैं कि महाकाली की ताकतों से खुद को बचा सकूं।"

"मेरा क्या होगा।"

"मैं तुम्हें भी बचा लूंगी।"

"मैं सोचता हूं कि अगर देवा-मिन्नो ने तुम्हारे पिता को कैद से आजाद करा लिया तो तुम्हें दुख होगा।"

तवेरा एकाएक मुस्करा पड़ी।

घोड़े आगे बढ़ते जा रहे थे।

"तुम मुस्कराई क्यों—मैंने गलत कहा क्या?"

"तुम मुझे अच्छे लगने लगे हो।"

"सच तवेरा?"

"हां। सोचती हूं वापस महल में पहुंचकर तुमसे ब्याह कर लूंगी।"

"ओह। तुम्हारे विचार जानकर मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मेरा ब्याह तुमसे होगा।" गरुड़ खुश हो उठा।

"तुम्हें रहस्य की बात बताना चाहती हूं।"

"क्या?"

"देवा-मिन्नो का इरादा पिताजी को आजाद कराने का नहीं है।" तवेरा ने आहिस्ता से कहा।

"क्या कह रही हो?" गरुड़ के होंठों से निकला।

"सच ही तो कहा है।"

"मैं—समझा नहीं तवेरा कि तुम क्या कह रही हो। स्पष्ट कहो।"

"देवा-मिन्नो से मेरी अकेले में बात हुई। उनकी जरा भी इच्छा नहीं है, जथूरा को आजाद कराने की।"

"ये...ये कैसे हो सकता है?" गरुड़ के होंठों से निकला।

(पाठक बंधु ध्यान रखें कि तवेरा बातों से गरुड़ को भटका रही है कि वो यंत्र पर सोबरा को गलत खबरें दे सके।)

"ये ही बात है। देवा-मिन्नो के मन में ये ही विचार थे पहले से। परंतु मुझे डर था कि कहीं, दोनों पिताजी को महाकाली की कैद से आजाद न करा लें। मैंने देवा-मिन्नो से बात की। कीमती पत्थरों का लालच दिया।"

"ओह, ये बात मेरे लिए नई है। तुमने पहले क्यों न बताया?" गरुड़ कह उठा।

"मैं फैसला नहीं कर पा रही थी कि तुम पर विश्वास करूं या न करूं।"

"मैं तुम्हें प्यार करता हूं तवेरा।"

"तुम्हारी इस बात पर मुझे धीरे-धीरे विश्वास होगा। मैं धोखा नहीं खाना चाहती।"

"विश्वास कर लो मेरा। खैर, फिर क्या हुआ?"

"देवा-मिन्नो बहुत लालची हैं।"

"क्यों?"

"जब मैंने बोरा भरकर कीमती पत्थर देने का वादा किया तो तब ये बात अपने होंठों पर लाए कि जथूरा की आजादी में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। वो तो वापस अपनी दुनिया में लौटना चाहते हैं।"

"फिर?"

"मैंने उन्हें कह दिया कि मैं उन्हें वापस उनकी दुनिया में पहुंचा दूंगी। साथ में बोरा भरकर कीमती पत्थर भी दूंगी। शर्त ये है कि वो जथूरा को आजाद न कराएं। आजाद कराने का नाटक ही करें।"

"ओह, नाटक क्यों?"

"पोतेबाबा को दिखाने के लिए।"

"समझा।"

"जानते हो देवा ने क्या कहा?"

"क्या?"

"देवा ने कहा कि वो जथूरा तक पहुंचकर, उसे गला दबाकर मार देगा। ताकि वो कभी नहीं लौट सके।"

"ऐसा देवा ने कहा?"

"तुम्हारी कसम।"

"ओह। फिर तो तुम्हारा काम बन गया। तुम जथूरा की हर चीज की मालकिन बन जाओगी।"

"तभी तो मैं खुश हूं।"

और गरुड़ बेचैन हो उठा था।

वो इन सब बातों की खबर यंत्र पर सोबरा को दे देना चाहता था। परंतु अभी मौका नहीं था। सब पास में थे। वो व्याकुलता से उस वक्त का इंतजार करने लगा। जब पड़ाव डाला जाएगा आराम करने के लिए तब आसानी से यंत्र पर सोबरा को इन सब बातों की खबर दे सकेगा।

और तवेरा जैसे गरुड़ के मन के भीतर उठ रही खलबली से अच्छी तरह वाकिफ थी।

"मखानी।" कमला रानी तीखे स्वर में कह उठी—"तू बार-बार तवेरा को क्यों देख रहा है।"

"क्यों न देखूं।" मखानी ने गहरी सांस ली—"साली क्या तूफानी चीज है।"

"चीज?" कमला रानी ने मुंह बनाया।

"जो खूबसूरत होती है, वो चीज होती है। टांगें देख उसकी। छातियां, ओह और चेहरा तो... ।"

"अब तू मेरे पास मत आना।" कमला रानी नाराजगी से कह उठी।

"नाराज हो गई।" मखानी मुस्कराया—"पुरानी बीमारी है।"

"बीमारी हो तेरे को। मेरे को मर्दों की कमी नहीं है।" कमला रानी ने नखरे वाले स्वर में कहा—"वो देख, भंवर सिंह तो मेरे को लाइन मार रहा है। बार-बार मेरे को देख रहा है।"

मखानी ने गर्दन घुमाकर कुछ दूर घोड़े पर मौजूद बांकेलाल राठौर को घूरा।

बांके ने हड़बड़ाकर नजरें फेर लीं।

"तेरे को कैसे पता कि वो तेरे को बार-बार देख रहा है। तू भी उसे देखती रही होगी।"

"लग गई आग।" कमला रानी ने व्यंग्य से कहा—"मर्द दस जगह मुंह मार ले। औरत एक जगह मारे तो गुनाह हो गया।"

"मैंने कहां मुंह मारा है?" मखानी मुंह बनाकर बोला।

"तवेरा पर आंख गड़ाए है तू।"

"वो तो यूं ही बात कर रहा... ।"

"यूं ही, तू तो उसकी खूबसूरत टांगों की बात कर रहा था। छातियां भी नाप ली तूने और चेहरा तो... ।"

"वो तो मैं यूं ही तेरे को जलाने को... ।"

"बस—चुप रह। तुम मर्दों की जात मैं अच्छी तरह पहचानती हूं।" कमला रानी व्यंग्य से कह उठी।

"मैं उन मर्दों में नहीं आता। मैं तो तेरा दीवाना हूं कमला रानी।"

"दीवाना?" कमला रानी ने मखानी को घूरा।

"दीवाना न होता तो रात तेरे को बार-बार स्नानघर की तरफ चलने को क्यों कहता।"

"तू मेरा नहीं, उस चीज का दीवाना है, जो तेरे को स्नानघर जाकर मिलती रही हरामी के।"

मखानी ने सकपकाकर मुंह फेर लिया।

"वो देख, भंवर सिंह अभी भी मुझे देख रहा है।"

मखानी ने उधर देखा तो बांके ने तुरंत मुंह फेर लिया।

'मुच्छड़ तो ठरकी लगता है।' मखानी बड़बड़ा उठा।

"क्या कहा?" कमला रानी ने पूछा।

सब घोड़े मध्यम गति से दौड़ रहे थे।

"वो तो बहता पानी है। तू मुच्छड़ के फेर में मत पड़। खा-पीकर चलता बनेगा।"

"और तू?"

"मैं तो अंत तक तेरा साथ निभाऊंगा।"

"तवेरा के बारे में क्या खयाल है?" कमला रानी ने व्यंग्य से कहा।

"जलन वाली बातें नहीं। वो तो मैं यूं ही टाइम पास कर रहा था।"

"मेरे से टाइम पास करता। मेरी टांग, मेरी छातियां देखता—तू तो... ।"

"तेरी ही तो देखता हूं।"

"तू किसी का सगा नहीं हो सकता। खैर जब तक निभती है, तब तक चलने दे। बाद में तू ही तरसेगा। मेरे को लाइन लगी मिल जाएगी। कहीं ऐसा न हो कि तू भी मुझे उस लाइन में लगा दिखे।"

"मजाक करती है।" मखानी ने दांत फाड़कर कमला रानी को देखा।

"जब लाइन में लगना पड़ेगा, तब पता चलेगा मेरा माल तेरे से हज्म नहीं हुआ।"

घोड़े दौड़े जा रहे थे।

कुछ-कुछ धूल घोड़ों की टॉपों से उठ रही थी।

सूर्य की गर्मी तेज होती जा रही थी।

महाजन अपना घोड़ा रातुला के पास ले जाकर बोला।

"कितनी देर का रास्ता बाकी है?"

"पूरा दिन लगेगा।" रातुला ने कहा।

"क्या सारा रास्ता इसी तरह तपता हुआ ही है।"

"आगे जंगल भी आएगा। झरना भी, नदी भी। परंतु दोपहर तक का रास्ता इसी तरह का रहेगा।"

बांकेलाल राठौर एक हाथ से घोड़े की लगाम पकड़े, दूसरे से मूंछों को संवारता कह उठा।

"छोरे, म्हारी लाटरो लगनो को हौवे।"

"कैसे बाप?"

"कमलो रानी म्हारे पे फिदा होवे लगो हो। बारो-म-बार म्हारे को ताको हो।"

रुस्तम राव ने कमला रानी की तरफ देखा फिर कह उठा।

"आपुन को ऐसा नेई लगेला।"

"म्हारी आंख धोखो न खायो। कमलो रानी गर्म हौवे, म्हारे को देखो हो।"

"बाप।"

"बोल छोरे।"

"तुम्हारी उम्र आशीर्वाद देने की होईला, इधर-उधर नेई देखने की होईला।"

"का बात करो हो। अंम भी जवानो हौवे हो छोरो।"

"जरूर जवान होईला बाप। पर आंख लड़ाने की उम्र न होईला।"

"अंखियां तो पैंसठो बरसो की उम्रो में लड़ जायो। अंखियों का, कां हौवे। म्हारो दिल एकदमो सोलह बरसों का हौवे छोरे। थारें से भी जवान हौवे।"

"आपुन से भी जवान होईला?"

"हां छोरे।"

"तब तो तेरे को कमला रानी की गोद में बैठेला। क्योंकि आपुन बच्चा होईला।"

"छोरे तंम बूढ़ो की तरहों बातो मतो मारो। म्हारे साथो रहनो हौवे तो जवानो की तरह बातों करो हो।"

'बुढ़ऊ जवान होईला।' रुस्तम राव बड़बड़ा उठा।

"का बोल्लो हो छोरे?"

"भगवान का नाम ले रिया हूं बाप।" रुस्तम राव ने गहरी सांस लेकर कहा।

□ □

सोबरा का एक सेवक जगमोहन, सोहनलाल और नानिया के साथ घोड़ों पर सवार होकर, एक घंटे का सफर करके, सोबरा की नगरी से दूर ऐसी मैदानी जगह पर पहुंचा, जहां छोटा-सा तालाब बना हुआ था।

ऐसे मैदानी इलाके के बीच, यह तालाब होना कुछ अटपटा लग रहा था।

सेवक कह उठा।

"अब मैं जाता हूं।"

"लेकिन हम यहां क्या करेंगे?" जगमोहन बोला।

"मैं नहीं जानता। मुझे हुक्म था कि तुम लोगों को खारे पानी तक पहुंचाना है, सो पहुंचा दिया।"

"खारा पानी?" जगमोहन की निगाह तालाब की तरफ उठी—"क्या इस तालाब को खारा पानी कहते हैं।"

"हां।" सेवक ने कहा और अपना घोड़ा वापस दौड़ा दिया।

देखते-ही-देखते वो निगाहों से ओझल होता चला गया।

सोहनलाल की निगाह दूर-दूर तक हर तरफ जा रही थी।

तभी नानिया कह उठी।

"ये तालाब पहले तो यहां नहीं होता था।"

"पहले कब?" सोहनलाल ने उसे देखा।

"सोबरा के कालचक्र बनाने तक। तब तो मैंने खारा पानी नाम का शब्द भी नहीं सुना था।" नानिया बोली।

"लेकिन हम यहां करेंगे क्या?" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

अगले ही पल वे तीनों चौंके।

वो छोटा-सा तालाब जैसे बीच में से दो हिस्सों में बंट गया हो।

इस प्रकार पानी के हिस्से दाएं-बाएं हो गए और बीच में सीढ़ियां नजर आने लगीं।

"ये क्या?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

दो पल भी न बीते कि सीढ़ियों पर छोटे कद का एक व्यक्ति दिखाई दिया। सिर पर जरा-जरा बाल थे और कमर में लंगोट जैसा कोई कपड़ा पहना हुआ था। वो मुस्कराकर इनसे बोला।

"महाकाली की दुनिया में स्वागत है तुम तीनों का। भीतर आ जाओ।"

"भीतर?"

"हां, मालूम पड़ा तुम तीनों महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी में, पीछे के रास्ते से प्रवेश करने वाले हो।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"तुम कौन हो?"

"मैं महाकाली का छोटा-सा सेवक खोतड़ा हूं।"

"खोतड़ा?"

"ये मेरा नाम है। सब मुझे इसी नाम से बुलाते हैं। भीतर आइए। अभी हमें लम्बा रास्ता तय करना है।"

"चलो।" जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"हम किसी नई मुसीबत में तो फंसने नहीं जा रहे?" सोहनलाल बोला।

"जब तक पूर्वजन्म की जमीन पर रहेंगे, इसी प्रकार मुसीबतें आती रहेंगी।" जगमोहन ने उलझन-भरे स्वर में कहा।

सोहनलाल ने नानिया से पूछा।

"तुम क्या कहती हो, हमें खोतड़ा ही बात माननी चाहिए?"

"मुझे नहीं पता।" नानिया की निगाह खोतड़ा पर थी।

खोतड़ा मुस्कराता हुआ, नानिया को देखने लगा था।

"अगर हम तुम्हारे साथ जाने को मना कर दें तो?"

"अब तुम लोगों का तीर कमान से निकल चुका है। महाकाली की शक्तियों ने तुम तीनों को घेर लिया है। चाहकर भी तुम तीनों अपनी मनमानी नहीं कर सकते। तुम तीनों को पीछे वाले रास्ते से तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश करना ही होगा, उसके बाद तुम लोग अपनी मनमानी करने पर आजाद हो। उससे पहले नहीं।"

"तुम्हारा मतलब कि हम महाकाली के बंदी हैं?"

"ऐसा ही समझ लो।"

एकाएक सोहनलाल ने घोड़ा मोड़ा और दौड़ाने के लिए एड़ मारी। परंतु घोड़ा वहीं खड़ा रहा।

सोहनलाल ने पुनः चेष्टा की।
परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।
जगमोहन होंठ भींचे ये सब देख रहा था।
"यहां से भाग नहीं सकते।" खोतड़ा की आवाज आई—"कोशिश करना बेकार है।"
सोहनलाल घोड़े से उतरा और वापसी को कदम बढ़ाए।
परंतु अगले ही पल उसे ऐसा लगा, जैसे सामने कोई दीवार आ खड़ी हुई हो।
सोहनलाल ने गहरी सांस लेकर जगमोहन को देखा।
"हमें महाकाली ने घेर लिया है।" नानिया बोली।
"अब वो हमें भागने नहीं देगी। तिलिस्मी पहाड़ी में हमें प्रवेश करा के ही रहेगी।" जगमोहन ने कहा।
"हमने ही तो हामी भरी थी, वहां जाने की।" नानिया बोली।
"तो हम भी कहां पीछे हट रहे हैं।" सोहनलाल बोला—"जरा देखभाल ही तो कर रहे हैं।"
"देखभाल हो गई हो तो यहां आ जाओ।" खोतड़ा बोला।
जगमोहन और नानिया भी घोड़े से उतरे।
फिर तीनों सीढ़ियों पर खड़े खोतड़ा के पास जा पहुंचे।
खोतड़ा वापस पलटकर सीढ़ियां उतरता बोला।
"मेरे पीछे आओ।"
तीनों सीढ़ियां उतरने लगे।
"ये कैसी जगह है?" सोहनलाल ने कहा।
"देखते जाओ, समझ में आ जाएगा।"
वो काफी सीढ़ियां उतर आए।
परंतु सीढ़ियां खत्म होने को नहीं आ रहीं थीं। अब वहां अंधेरा छाने लगा था। ऊपर से आती रोशनी बंद हो चुकी थी। घुप्प अंधेरे से तंग आकर नानिया कह उठी।
"कम-से-कम रोशनी तो कर दो।"
"अभी सब ठीक हो जाएगा। रोशनी होने ही वाली है।" खोतड़ा की आवाज सुनाई दी—"तुम नानिया हो न?"
"तुम मुझे जानते हो?"
"नहीं। परंतु तुम्हारे बारे में जानकारी मिली कि तुम कालचक्र से निकली और अब सोहनलाल से ब्याह करना चाहती हो।"
"एतराज है तेरे को?" नानिया ने चुभते स्वर में कहा।
"नहीं। सोहनलाल भाग्यशाली है जो उसे तुम जैसी मिली।"
"मेरे में क्या खास है जो...।"

"तू वफादार है। तेरी सबसे बड़ी खासियत ही यही है।"

तभी सामने रोशनी दिखाई देने लगी।

"हम आ पहुंचे पहाड़ी पर?" सोहनलाल ने पूछा।

"अभी तो लम्बा रास्ता बाकी है।" खोतड़ा ने कहा—"लेकिन आज के दिन में तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश कर जाओगे।"

सीढ़ियां खत्म हो गईं।

नीचे भरपूर दिन का प्रकाश फैला था।

"ये कैसी जगह है?" जगमोहन बोला।

सामने रोशनी से भरा चौड़ा रास्ता दिखाई दे रहा था।

खोतड़ा उसी रास्ते पार आगे बढ़ गया। तीनों उसके पीछे थे।

जल्दी ही वे सब रास्ते से बाहर आ गए।

उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने वहां नई जमीन, नया आसमान देखा। महज पचास सौ सीढ़ियां ही तो उतरे थे वे। हर तरफ हरियाली ही हरियाली नजर आ रही थी। फलों के बगीचे। बाग और लम्बे वृक्ष।

तीनों की निगाह हर तरफ घूम रही थी।

सामने घोड़ागाड़ी खड़ी थी।

खोतड़ा मुस्कराता हुआ उन्हें देख रहा था।

"ये सब क्या है?" जगमोहन ने खोतड़ा को देखा।

"इसमें हैरानी की क्या बात है।" खोतड़ा कह उठा।

"हमने थोड़ी-सी सीढ़ियां उतरी हैं तो जमीन का सारा नक्शा कैसे बदल गया?"

"ये ही तो महाकाली की माया है।"

"क्या मतलब?"

"ये महाकाली की अपनी बसाई दुनिया है। मायावी दुनिया। महाकाली की ताकतों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता।"

"ये मायावी दुनिया है?" सोहनलाल ने पूछा।

"हां। ये तो महज महाकाली की ताकतों का नमूना-भर है।" खोतड़ा ने कहा—"जब तिलिस्मी पहाड़ी पर पहुंचोगे तो असली रंग तब दिखेगा। अभी तुम लोग महाकाली के बारे में जानते ही क्या हो।"

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

नानिया बहुत हद तक शांत थी।

"वो खारे पानी का तालाब क्या है?"

"छलावा है वो।"

"क्या मतलब?"

"राहगीर मैदानी इलाके में भटककर थका-हारा जब पानी देखता

है तो उसे पीने की इच्छा के साथ पानी में हाथ डालता है तो वहां मौजूद महाकाली की ताकतें उसे भीतर खींच लेती हैं। इस तरह वो हमेशा-हमेशा के लिए गुलाम बनकर महाकाली की सेवा में आ जाता है।"

"ये तो धोखा है।" जगमोहन कह उठा।

"धोखा नहीं ताकतों का खेल है। वो खारा पानी नहीं, महाकाली की वहां रखी ताकतों का जरा सा रूप है। जो भी उन ताकतों के साथ छेड़छाड़ करेगा, वो महाकाली के कब्जे में आ जाएगा। जो बचना चाहता है, वो उस पानी से दूर रहे।"

"ये तो धोखा ही है, मैदानी इलाके में पानी को रखकर दूसरे को बुलावा देना।"

खोतड़ा मुस्कराता हुआ जगमोहन को देखता रहा। फिर बोला।

"लगता है तुम महाकाली के बारे में कुछ ज्यादा नहीं जानते जग्गू?"

"सच में। में सिर्फ महाकाली के नाम से वाकिफ हूं और सुना है वो तंत्र-मंत्र में माहिर है।"

"महाकाली की शक्तियों का कोई अंत नहीं। धीरे-धीरे तुम्हें समझ आ जाएंगी। अब घोड़ागाड़ी पर बैठ जाओ।"

"तिलिस्मी पहाड़ी पर जाने के लिए?"

"हां।"

वो तीनों घोड़ागाड़ी पर जा बैठे।

खोतड़ा ने कोचवान बनकर दोनों घोड़ों की लगाम थामी और घोड़ागाड़ी दौड़ा दी।

अभी तक यहां कोई दूसरा न दिखा था।

घोड़ागाड़ी मध्यम गति से दौड़ रही थी।

सोहनलाल ने नानिया से कहा।

"तुमने मुझे ठीक से महाकाली की शक्तियों के बारे में नहीं बताया?"

"ज्यादा मैं भी नहीं जानती। परंतु इतना सुन रखा है कि महाकाली बड़ी शक्ति है।" नानिया बोली।

सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"मेरे खयाल में तिलिस्मी पहाड़ी पर पहुंचकर हम भारी खतरे में फंसने वाले हैं।"

"मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।"

"तुम डर रहे हो सोहनलाल?" नानिया ने पूछा।

"नहीं। आने वाले वक्त के बारे में सोच रहा हूं।"
तभी बग्गी दौड़ाता खोतड़ा कह उठा।
"तुम लोगों को महाकाली की ताकतों से नहीं डरना चाहिए।"
"क्यों?"
"क्योंकि तुम लोग तो देवा-मिन्नो को समझाकर, इस काम से हटाने जा रहे हो।"
जगमोहन, सोहनलाल की नजरें मिलीं।
"मैंने कुछ गलत कह दिया क्या?" खोतड़ा ने पूछा।
"हमने अभी फैसला नहीं किया कि क्या करना है हमें।" जगमोहन ने कहा।
"कर लेना फैसला। सोचने के लिए तुम लोगों के पास बहुत वक्त है।"
"यहां अभी तक हमें कोई नजर क्यों नहीं आया?" सोहनलाल बोला।
"इस तरफ कम लोगों का आना होता है। मायावी रास्ते मतलब के लिए बनाए जाते हैं।"
"तुम्हारा मतलब कि मायावी जगहों पर लोग बसते नहीं हैं?"
"क्यों नहीं बसते। महाकाली की कई मायावी नगरियां बसी हुई हैं। फल-फूल रही हैं।"
"तो यहां कोई क्यों नहीं है?"
"इस दिशा की तरफ लोगों का कम ही आना-जाना होता है।"
सोहनलाल ने बग्गी से सिर निकालकर आसमान में चमक रहे सूर्य की तरफ देखा। आंखें चौंधिया गईं तो फौरन सिर भीतर कर लिया और खोतड़ा से पूछा।
"ये सूर्य वो ही है, या मायावी है?"
खोतड़ा खामोश रहा।
"जवाब नहीं दिया तुमने?"
"चांद-सितारे-सूरज के बारे में बात करना मना है।" खोतड़ा ने कहा।
"क्यों?"
"मायावी दुनिया में चांद-सितारों की बात करना अपशगुन माना जाता है।"
"ओह। ये बात महाकाली ने कही।"
"सब बातें महाकाली ही बताती है।"
"तुम लोग अपशगुन को मानते हो?"

"हां। इसमें न मानने वाली क्या बात है। महाकाली की शगुन-अपशगुन में पूरी आस्था है।"

घोड़ागाड़ी की रफ्तार अब पहले से ज्यादा तेज हो चुकी थी।

"महाकाली रहती कहां है?"

"वो हर जगह रहती है। उसके कई रूप हैं, जो कि लगभग हर जगह मौजूद रहते हैं।"

"अभी तक महाकाली हमसे क्यों नहीं मिली?"

"महाकाली ने जरूरत नहीं समझी होगी सामने आने की।" खोतड़ा बोला।

तभी जगमोहन कह उठा।

"ये तो पक्की बात है कि महाकाली बेवकूफ है।"

"क्या मतलब?"

"इतनी बड़ी ताकतों की मालिक होकर, वो सोबरा की बातों में आकर जथूरा को कैद में रखे हुए है।"

"इस बात का जवाब तो महाकाली ही दे सकती है कि उसने जथूरा की बात क्यों मानी। परंतु ये तो तय है कि महाकाली बिना किसी मतलब के, कोई काम नहीं करती।" खोतड़ा ने कहा।

"तुम्हारा कहना है कि महाकाली ने अपने किसी मतलब की ही खातिर जथूरा को कैद में रखा है।"

"यही मेरा मतलब है। ठीक समझे तुम।"

जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"उलझी बातें हैं। हमारी समझ में नहीं आने वाली।"

सोहनलाल ने कुछ नहीं कहा।

घोड़ागाड़ी तेजी से दौड़ी जा रही थी।

▭ ▭

सोबरा अपने शयनकक्ष में, खिड़की पर खड़ा, वहां से नजर आती नगरी में नजरें दौड़ा रहा था। चेहरे पर सोच के भाव तैर रहे थे। दोपहर बाद का वक्त हो रहा था।

तभी उसकी जेब में पड़ा यंत्र बजने लगा।

सोबरा ने जल्दी से कुर्ते की जेब से यंत्र निकाला और बटन दबाकर बात की।

"कहो गरुड़।" सोबरा बोला।

"हम सुबह ही, महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी की तरफ चल पड़े थे।" गरुड़ की महीन-सी आवाज यंत्र से निकली।

"खबर है मुझे।"

"हमने आधा रास्ता तय कर लिया है। सुस्ताने के लिए रास्ते में पड़ाव डाला तो मुझे बात करने का वक्त मिला।"

"साथ में कौन-कौन है?"

"देवा-मिन्नो, बेला, भंवरसिंह, त्रिवेणी, परसू, नीलसिंह, मखानी, कमला रानी, तवेरा और रातुला।"

"रातुला भी?" सोबरा के होंठों से निकला।

"हां। आखिरी वक्त पर उसने साथ चलने का मन बना लिया था।"

"नीलकंठ की कोई नई बात?"

"नहीं अभी तक तो वो दोबारा मिन्नो में नहीं आया। तुम्हें बताने को मेरे पास कुछ है।"

"कहो।"

"तवेरा मुझसे ब्याह करने को तैयार है। सफर के दौरान उसने ये बात मुझसे कही।"

"ये तो अच्छी खबर है।"

"तवेरा से नई बात मुझे पता चली। तवेरा ने देवा-मिन्नो को इस बात के लिए तैयार कर लिया है कि वो जथूरा तक पहुंचकर जथूरा को खत्म कर दें। इसके लिए उसने देवा-मिन्नो को कीमती पत्थरों का बोरा देने और उन्हें उनकी दुनिया में पहुंचाने का वादा किया है। तवेरा कहती है कि देवा-मिन्नो बहुत लालची हैं।" यंत्र से गरुड़ की महीन आवाज निकली।

"असम्भव।" सोबरा के होंठों से निकला।

"क्या मतलब?"

"न तो तवेरा ऐसी है न ही देवा-मिन्नो।"

"ये बात मुझे तवेरा ने स्वयं कही है।"

"कुछ तो गड़बड़ है गरुड़।"

"कैसी गड़बड़?"

"मुझे पूरा यकीन है कि तवेरा अपने पिता को बहुत चाहती है। वो ऐसा कभी नहीं चाहेगी और देवा-मिन्नो भी ऐसे नहीं हैं कि कीमती पत्थरों के लालच में जथूरा की जान लेने को तैयार हो जाएं।" सोबरा ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"तवेरा ने ये बातें मुझसे कही है। वो झूठ क्यों कहेगी।"

"तुमने तवेरा के सामने कोई बेवकूफी तो नहीं कर दी।"

"कैसी बेवकूफी?"

"कि वो पहचान गई हो कि तुम मुझे खबरें दे रहे हो।"

"क्या तुम्हें लगता है कि मैं ऐसा करूंगा?"

"तवेरा के साथ, करीबी क्षणों में तुमने ये सब उगल दिया हो कि तुम मुझे खबरें देते हो।"

"गलत बात मत कहो। क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?" गरुड़ का नाराजगी-भरा स्वर यंत्र से निकला।

"भरोसा है, परंतु ये सब बहुत अजीब हो रहा है।"

"तुम ये ही सब तो चाहते थे।"

"परंतु मैं जथूरा की मौत नहीं चाहता। उसे कैद रखने से उसकी तकलीफ ज्यादा बढ़ेगी।"

"ये मेरी नहीं, तवेरा, देवा-मिन्नो की योजना है।"

सोबरा के चेहरे पर सोचें दौड़ रही थीं। वो बोला।

"तुम तवेरा के पास ही रहने की चेष्टा करो।"

"वो मेरे पास ही है। सिर्फ मुझ पर ही भरोसा कर रही है। वो मुझे चाहने लगी है। जब जथूरा मर जाएगा तो तवेरा मुझसे शादी कर लेगी। तब जथूरा की हर चीज का मालिक मैं बन जाऊंगा। उसके बाद तुम जैसे कहोगे, जथूरा की नगरियों का मैं वैसा ही करूंगा। यानी कि करूंगा मैं, परंतु हुक्म तुम्हारा होगा।"

"मुझे तुमसे यही आशा है गरुड़। तुम मेरे बेटे की तरह हो। मेरे बाद सब कुछ तुम्हारा ही तो है।"

"तुमने मुझसे वादा कर रखा है कि अपने अंतिम वक्त में तुम अपनी सारी शक्तियां, नगरी, सब कुछ मुझे दोगे।"

"मैं अभी भी अपने वादे पर कायम हूं और कायम ही रहूंगा।"

"अब मैं बाद में बात करूंगा।"

"ठीक है।"

बातचीत समाप्त हो गई।

सोबरा ने यंत्र का बटन दबाकर वापस जेब में रखा और बड़बड़ा उठा।

'गलत हो रहा है। बहुत कुछ गलत हो रहा है।'

सोबरा बेचैनी-भरे अंदाज में कमर पर हाथ बांधे टहलने लगा।

पेशानी पर बल नजर आ रहे थे।

होंठ भिंचे हुए थे।

यही वो वक्त था, जब मनीराम ने भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

"आज आप महल से बाहर नहीं निकले। खबर आई है कि कोटरा जाति वाले लोग आपसे कुछ कहना चाहते हैं। वो सुबह से ही आपके आने के इंतजार में अपने गांव में इकट्ठे हुए पड़े हैं।"

सोबरा आगे बढ़कर कुर्सी पर जा बैठा।

तभी मनीराम, सोबरा के माथे पर बल देखकर बोला।

"आप कुछ परेशान लग रहे हैं।"

"बात ही ऐसी है मनीराम।" सोबरा ने उसे देखा।

"मैं भी तो जानूं।"

"उलझन ही उलझन है। कुछ भी समझ नहीं आ रहा। असम्भव बातें सामने आ रही हैं। गरुड़ ने खबर दी है कि तवेरा अपने पिता जथूरा की मौत चाहती है, ताकि हर चीज की मालकिन बन सके।"

"तवेरा ऐसी नहीं है।"

"गरुड़ कहता है कि तवेरा ने कीमती पत्थर की बोरी और देवा-मिन्नो को उनकी दुनिया में पहुंचा देने की एवज में, जथूरा को खत्म करा देने का सौदा किया है। देवा-मिन्नो तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश करके, जथूरा को तलाश करके उसे मार देंगे।"

मनीराम के चेहरे पर असहमति के भाव दिखने लगे।

"आपका मतलब देवा-मिन्नो जथूरा को आजाद कराने नहीं, उसे खत्म करने तिलिस्मी पहाड़ी पर जा रहे हैं।"

"गरुड़ ने ऐसी ही खबर दी।" सोबरा बोला।

मनीराम गम्भीर नजर आने लगा।

"मुझे लगता है जैसे आपके खिलाफ चाल खेली जा रही है।"

"कैसी चाल?"

"या तो गरुड़ आपके साथ चाल खेल रहा है। वो आपको झूठी खबरें दे रहा...।"

"गरुड़ ऐसा क्यों करेगा?"

"हो सकता है तवेरा ने अपना प्यार दिखाकर गरुड़ को अपनी तरफ कर लिया हो।"

"सम्भव है।" सोबरा का चेहरा सख्त हुआ।

"दूसरी बात ये भी हो सकती है कि गरुड़ का राज खुल गया हो। तवेरा उसे धोखे में रखकर गलत खबरें दे रही हो।"

"गरुड़ सच कहता क्यों नहीं हो सकता?" सोबरा ने सरल स्वर में कहा।

"क्योंकि आज तक तवेरा ने ऐसा कोई काम नहीं किया कि हम सोचें, वो जथूरा की हर चीज की मालिक बनने की ख्वाहिश रखती है। जथूरा के सारे काम आज भी पोतेबाबा ही देखता है। फिर अचानक तवेरा क्यों बदल गई?"

"वो गरुड़ से ब्याह करने की सोच रही है।"

"ये बात है तो जथूरा या पोतेबाबा को क्यों एतराज होगा।" मनीराम ने सोच-भरे स्वर में कहा—"उधर देवा-मिन्नो के ग्रह ऐसे हैं कि पूर्वजन्म में आकर, वो कोई भी गलत काम नहीं करेंगे।"

"मैं भी यही सोचता हूं कि वो जथूरा की जान नहीं ले सकते।" सोबरा ने उलझन-भरे स्वर में कहा—"अब हमारे मन में शंका तो भर गई कि गरुड़ हमें गलत खबर दे रहा है या गरुड़ को ही तवेरा गलत कह रही है। तीसरी बात ये है कि क्या पता गरुड़ का कहना सही हो। हम ही गलत सोच रहे हों।"

"सच में उलझन वाली बात है।" मनीराम बोला—"हमारा मोहरा, गरुड़ तो अब बेकार हो गया। क्योंकि वो जो भी खबर देगा, उसे लेकर हम शंका में रहेंगे कि वो सच कह रहा है या झूठ।"

"हां, अब हम गरुड़ नाम के मोहरे की बात का पूरा भरोसा नहीं कर सकेंगे।" सोबरा ने सोच-भरे स्वर में कहा—"मेरे खयाल में मुझे इस बारे में महाकाली से बात करनी चाहिए। उसकी राय लेनी चाहिए।"

मनीराम ने कुछ नहीं कहा।

सोबरा एक हाथ ऊंचा करके होंठों-ही-होंठों में कुछ बड़बड़ाया तो उसी पल चमकता बिंदु वहां नजर आने लगा।

"बोल सोबरा।" महाकाली की आवाज उभरी।

"मैं खुद को भारी उलझन में फंसा महसूस कर रहा हूं।"

"अब क्या हो गया?"

सोबरा ने गरुड़ से वास्ता रखती सारी बात बताई। फिर बोला।

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि गरुड़ मेरे साथ कोई खेल खेल रहा है या गरुड़ के साथ तवेरा खेल खेल रही है। या फिर सब ठीक है, मुझे खामखाह ही उलझन हो रही है।"

"ये तेरा मामला है सोबरा।"

"लेकिन अब तेरे से भी वास्ता रखता है। क्योंकि जथूरा तेरी कैद में है।"

"ये जथूरा का नहीं, गरुड़ से वास्ता रखता मामला है।"

"तू कैसी बातें कर रही है महाकाली।"

"मेरी बातों में बुराई ही क्या है।"

"मैं चाहता हूं तू अपनी शक्तियों को इस्तेमाल करके गरुड़ के मन की बात जाने और मुझे बताए।"

"मैं ऐसे छोटे काम नहीं करूंगी।" महाकाली की आवाज आई।

"तुझ पर मेरा एहसान है।"

"उसी की वजह से ही, तेरे कहने पर जथूरा को अपनी कैद में रखा है। वरना ऐसे काम मैं नहीं करती।"

"तू बहुत बदल रही है महाकाली।"

"गलत मत कह। तू अपनी समस्याएं मेरे सामने रख रहा है। जबकि तेरी बातों में मेरी दिलचस्पी नहीं है।"

"मैंने तो सोचा था कि हमारे सम्बंध अच्छे हैं।"

"सम्बंध अच्छे ही हैं, परंतु मैं तेरे जरा-जरा से काम नहीं कर सकती।"

सोबरा ने गहरी सांस ली फिर बोला।

"देवा-मिन्नो जथूरा को मार देना चाहते हैं।"

"वो कुछ नहीं कर सकते। जथूरा तक पहुंचने से पहले ही मर जाएंगे। मेरे बिछाए जाल से बचेंगे नहीं।"

"लेकिन मुझे कैसे मालूम हो कि गरुड़ मेरे साथ कोई चालाकी नहीं कर रहा।"

"ये तेरी समस्या है। तू जान। तेरी बातों में मैं नहीं पड़ना चाहती। तवेरा की तो मुझे ज्यादा परवाह नहीं थी, परंतु अब नीलकंठ भी इस मामले में आ गया है। वो मेरा गुरुभाई है और मिन्नो की खातिर मुझसे झगड़ा करने को तैयार है।"

"तू नीलकंठ से डरती है?"

"नहीं। लेकिन समस्या तो खड़ी कर ही सकता है। इस मामले में आकर उसने मेरा काम बढ़ा दिया है।"

"मैंने तो तेरे से गरुड़ की बात करने के लिए बुलाया था।"

"वो मेरा मामला नहीं।"

अगले ही पल वो चमकता बिंदु गायब हो गया।

"महाकाली ने तो स्पष्ट ही मना कर दिया कि वो इस मामले में नहीं आएगी। चाहती तो गरुड़ के मन को टटोल सकती थी।"

"मुझे ही कुछ करना होगा मनीराम।" सोबरा ने कठोर स्वर में कहा।

"आप क्या करेंगे।"

"गरुड़ को कोई ऐसा काम करने को कहूंगा कि काम भी हो जाएगा और उसकी परीक्षा भी हो जाएगी। मुझे उस पर सिर्फ इतना ही शक है कि वो कहीं तवेरा से सच्चा प्यार करने लग गया हो और मुझे धोखा देने पर आ गया हो।"

"तो आप ऐसा क्या काम करने को कहेंगे गरुड़ को?" मनीराम ने पूछा।

"सोचना पड़ेगा। अभी मेरे पास काफी वक्त है। तब तक कोई बात तो मेरे दिमाग में आ जाएगी।"

"बेहतर होगा कि महाकाली को एक बार फिर अपनी बात के लिए मनाने की चेष्टा करें।"

"एक बार इंकार कर चुकी है तो दोबारा वो नहीं मानेगी। मुझे ही कुछ करना होगा।"

"महल के बाहर चलेंगे आप?"

"नहीं।" सोबरा ने इंकार में सिर हिलाया—"मुझे सोचने दो।"

"मेरे मन में अभी आया कि कहीं गरुड़ सच्चा ही न हो। हम यूं ही उसके खिलाफ सोच रहे हों।" मनीराम कह उठा।

"यही तो पता लगाना है।"

□ □

शाम के चार बज रहे थे।

सूर्य धीरे-धीरे पश्चिम की तरफ सरक रहा था।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा पेड़ की छाया में हरी-भरी घास पर लेटे थे। उनके चेहरों से स्पष्ट जाहिर हो रहा था कि गहरी नींद लेने के पश्चात, वो जागे हैं।

मोमो जिन्न चंद कदमों की दूरी पर टहल रहा था।

"ये साला नींद नहीं लेता।" सपन चड्ढा कह उठा।

"जिन्न को नींद की जरूरत नहीं होती।"

"इसी ने तो कहा था, तूने नहीं सुना क्या।"

सपन चड्ढा ने दूर-दूर तक नजरें घुमाईं।

हर तरफ खामोशी ही दिखी।

"क्या खयाल है लक्ष्मण, भाग लें यहां से?"

"ये कमीना मौका नहीं देगा।" लक्ष्मण दास ने मोमो जिन्न को देखा।

"कोई बढ़िया-सा मौका ढूंढ़ लेते हैं।"

"मेरे खयाल में हमें अलग-अलग दिशाओं में भागना चाहिए। तब ये हम दोनों में से एक को ही पकड़ सकेगा।"

"फिर तो हम अलग हो जाएंगे। हमें इकट्ठे ही रहना है।"

"करें तो क्या करें?"

"मुझे भूख लग रही है।"

"मेरा भी यही हाल है। इसे कहेंगे तो बोलेगा, तुम इंसानों की पेट की समस्या... ।"

तभी सपन चड्ढा ने ऊंचे स्वर में कहा।

"हमें भूख लगी है।"

"तुम इंसानों की यही समस्या है, जब देखो खाने को ढूंढ़ते, रहते हो।"

'साले तेरा भी तो ये ही हाल था, जब तेरे में इंसानी इच्छाएं आ गई थीं।' लक्ष्मण दास बड़बड़ाया।

"हमें भूख लगी है।" सपन चड्ढा ने पुनः कहा।
"यहां फल वाले वृक्ष बहुत हैं। अपना पेट भर सकते हो।" मोमो जिन्न ने कहा।
"हमें फल नहीं चाहिए।"
"परांठे चाहिए। जब से तेरा साथ मिला है, हम परांठे खाने भूल गए हैं।" सपन चड्ढा ने कहा।
"परांठे बहुत बेकार के होते हैं।"
"तू तो बारह-बारह खा जाता था।"
"खबरदार जो जिन्न से ऐसी बात कही।" मोमो जिन्न तेज स्वर में बोला।
"जिन्न परांठे खा सकता है, परंतु परांठे की बात नहीं सुन सकता।"
"चुप रहो। वो मेरा बुरा वक्त था, जब मुझमें इंसानी इच्छाएं आ गई थीं।"
"बुरा वक्त तो हमारा था, जो तेरे को खिलाने के लिए, हमें भागदौड़ करनी पड़ रही थी।"
"बस करो। उठो और फल खा लो।" मोमो जिन्न हाथ हिलाकर बोला।
दोनों उठ खड़े हुए।
"तुम्हारा पेट नहीं है कि तुम्हें भूख लगे।" सपन चड्ढा बोला।
"जिन्न को भूख नहीं लगती।"
"तुम्हारा वो भी नहीं है कि तुम्हें औरत की जरूरत पड़े। तुमने ही बताया था।"
"नहीं है वो...।"
"तो तुम भागदौड़ क्यों करते हो। तुम्हारी कोई जरूरतें तो हैं नहीं। एक ही कपड़ा तुम पहने रहते हो। आराम किया करो तुम।"
"जिन्न के जीवन का उद्देश्य सेवा करना या कराना होता है।"
"अब तुम क्या कह रहे हो?"
"तुम दोनों से सेवा करा रहा हूं और जथूरा की सेवा कर रहा हूं।"
"बकवास।" लक्ष्मण दास मुंह बना के बोला।
"मैंने तो सुना है जिन्न खाने-पीने का सामान पलों में हाजिर कर देते हैं।"
"वो मेरे जैसे जिन्न नहीं होते। वो बूढ़े और बेकार हो चुके जिन्न होते हैं, जो साधारण इंसानों में अपनी अकड़ दिखाने पहुंच जाते हैं। वो इस तरह दिल लगाकर अपना जीवन बिताते हैं। क्योंकि

जिन्न को फुर्सत में बैठना मना है। उसे सिखाया जाता है कि कुछ न कुछ करते रहो। असली जिन्न वो होता है जो न तो खाता है, न खिलाता है।"

"मतलब कि तुम चाहो तो हमारे लिए परांठों का इंतजाम कर सकते हो।"

"मुझसे आशा मत रखो। मैं वैसा जिन्न नहीं हूं।"

"छोड़ लक्ष्मण ये बेकार का जिन्न है। खुद रबड़ी-जलेबियां खाता है और हमें परांठे खिलाने से भी परहेज करता है।"

"चल फल खाएं।"

दोनों पेड़ों को देखते हुए वहां से आगे बढ़ गए।

"भागने का मौका देख।" लक्ष्मण दास बोला।

"वो ही देख रहा हूं।"

"दोनों एक ही तरफ भागेंगे। हम दोनों को इकट्ठे रहना है।"

"ये साला जिन्न भागता कैसे है, क्या ये हमें पकड़ लेगा?"

"मैंने इसे भागते हुए नहीं देखा।" लक्ष्मण दास ने कहा—"कहीं ये तेज न दौड़ता हो।"

"एक बार भागकर देखते हैं।"

तभी पीछे से मोमो जिन्न की आवाज आई।

"मैं तुम्हारी बातें सुन रहा हूं।"

दोनों पलटे। सपन चड्ढा बोला।

"झूठ। इतनी दूर से तुम हमारी बातें कैसे सुन सकते हो।"

"जब तुम लोग नींद में थे तो मैंने तुम दोनों के कानों में सैंसर डाल दिए थे। उससे तुम लोगों की बातें सुन रहा हूं।"

दोनों ने अपने कानों में उंगलियां घुमाईं।

"वो सैंसर ऐसे नहीं हैं कि अपने कानों से तुम निकाल सको। तुम जो भी बात करोगे या तुम लोगों के पास कोई दूसरा बात करेगा तो मुझे सब सुनाई देगा। बेशक मैं कितनी भी दूर रहूं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"कमाल है। जिन्न होकर ये सैंसर का इस्तेमाल करता है। हमारे जमाने में तो जिन्न दूर रहकर यूं ही बात सुन लिया करते थे।"

"अब जमाना बदल गया है। जिन्न वैसे नहीं रहे।"

"ये हमें पागल कर देगा। सपन।"

"कहीं खुद न पागल हो जाए।"

"भागने की कोशिश करना बेकार है। भागे तो तुम्हें पकड़ने के लिए मुझे भागना नहीं पड़ेगा। मेरी छोड़ी शक्तियां तुम लोगों को

पलटने पर मजबूर कर देंगी। तुम लोग भाग नहीं सकते।" मोमो जिन्न शांत स्वर में बोला।

"सुना।"

"हरामी ने सब इंतजाम कर रखे हैं।"

"हमने इस पर कितने एहसान किए और ये हमारे साथ कैसा व्यवहार कर रहा...।"

"क्या इसमें इंसानी इच्छाएं फिर नहीं आ सकतीं?"

"क्या पता आ जाएं। तब मैं इससे गिन-गिन कर बदले लूंगा।"

"बेकार की बातें मत करो। जाकर फल खा लो।"

"तुम हमें यहां लेकर क्यों बैठे हो?"

"देवा-मिन्नो आने वाले हैं यहां। हमें उनके साथ आगे बढ़ना है।"

"किधर?"

"महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी की तरफ। जथूरा के सेवकों ने मुझे आदेश दिया है कि यहां देवा-मिन्नो का इंतजार करूं, वो यहीं से निकलेंगे। समय हो चुका है, वो कभी भी हम तक पहुंच सकते हैं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"जल्दी से फल खा ले सपन। कहीं भूखे ही न रह जाएं।"

▭ ▭

देवराज चौहान और मोना चौधरी का काफिला घोड़ों पर मध्यम गति से आगे बढ़ रहा था। सबसे आगे रातुला था, जो कि रास्ता बताने के लिए आगे था। धूप में सबके चेहरे तप रहे थे। दोपहर को घंटे-भर के लिए पेड़ों की छांव में आराम करने के लिए रुके थे, उसके बाद वे फिर चल पड़े थे।

शाम के पांच बजने जैसा वक्त था।

सूर्य पश्चिम की तरफ सरक चुका था। धूप अब तीखी और सुनहरी हो गई थी।

देवराज चौहान घोड़े को रातुला के करीब ले आया।

"कितना रास्ता है अभी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ज्यादा नहीं बचा रास्ता। रात होने तक हम महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी पर पहुंच जाएंगे।" रातुला ने कहा।

"तिलिस्मी पहाड़ी के बारे में कुछ बताओ।"

"मैं ज्यादा नहीं जानता। पहले कभी तिलिस्मी पहाड़ी पर गया नहीं। परंतु वहां खतरे हैं, ये जानता हूं।"

"कैसे खतरे हैं?"

"महाकाली द्वारा बिछा रखे तिलिस्मी खतरे। जिनका खुलासा मैं

नहीं जानता। वहां हम सबको बहुत सतर्क रहना होगा। मौत कदम-कदम पर बिछा रखी होगी महाकाली ने। वो कभी नहीं चाहेगी कि तुम जथूरा तक पहुंचो।"

"कितनी अजीब बात है मेरे और मोना चौधरी के नाम का उसने तिलिस्म बांधा और वो ही हमें वहां तक पहुंचने से रोक रही है। गलत चाल है महाकाली की। पहले वो आने का बुलावा देती है और खुद ही दरवाजे बंद कर लेती है।"

"वो विद्वान है।"

"परंतु मुझे उसमें चालाकी महसूस होती है।"

"वो जैसी भी है गुणी है।"

"तुम उसकी तारीफ कर रहे हो रातुला।"

"नहीं। मैं तो ये बता रहा हूं कि उसे कम मत आंको। उसकी बुराई भी न करो। उसने कभी कोई गलत काम नहीं किया। वो अपनी शक्तियों के नशे में कभी चूर नहीं हुई। परंतु जथूरा को कैद में रखने का गलत काम जरूर किया है उसने। ये काम भी उसने सोबरा के किसी एहसान तले दबे होने की वजह से किया है।" रातुला शांत स्वर में बोला।

"तुम्हें यकीन है कि उसने इस बात के इंतजाम किए होंगे कि हम जथूरा तक न पहुंचे।"

"पक्का यकीन है। महाकाली हार मानने वाली नहीं। वो जथूरा को आजाद नहीं करना चाहती।"

"ये तुम कैसे कह सकते हो?"

"उसने अगर जथूरा को आजाद करना होता तो अब तक कर चुकी होती।" रातुला ने घोड़ा दौड़ाते हुए कहा—"मैं तो वहां नहीं था तब, पता चला कि नीलकंठ मिन्नो की तरफ से इस मामले में आ गया है?"

"हां।"

"नीलकंठ से बात करने महाकाली आई?"

"हां।"

"तब तुमने नीलकंठ और महाकाली की बात से क्या अंदाजा लगाया?"

"यही कि दोनों में से कोई भी पीछे नहीं हटेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"फिर तुम कैसे सोच सकते हो कि महाकाली, जथूरा तक पहुंचने का रास्ता आसानी से दे देगी।"

देवराज चौहान कुछ न बोला।

"महाकाली जिद्दी है। वो कभी हारी नहीं। जीतना उसकी आदत है।" रातुला ने कहा।

"नीलकंठ महाकाली से नहीं जीत पाएगा?" देवराज चौहान ने रातुला पर नजर मारी।

"मुझे नहीं लगता कि नीलकंठ महाकाली को पार कर लेगा।"

"मतलब कि तुम सबको यकीन है कि विजय महाकाली की रहेगी।"

"शायद ऐसा ही है।"

"तो फिर तुम, तवेरा, कमला रानी, मखानी, गरुड़ क्यों साथ चल पड़े?"

"क्योंकि तुम लोग हमारे मेहमान हो। तुम हमारी खातिर मौत के मुंह में जा रहे हो, तो हमारा फर्ज बनता है कि तुम्हारे साथ रहें।"

"बेशक जान चली जाए।"

"कुछ भी समझ लो।" रातुला शांत भाव से मुस्करा पड़ा।

"पोतेबाबा साथ क्यों नहीं आया?"

"नगरी को संभालने वाला भी तो वहां कोई चाहिए। बिना लगाम के नगरी कैसे चलेगी?" रातुला बोला—"अभी रास्ते में हमें मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा मिलेंगे।"

"रास्ते में?"

"हां। वो हमारे आने का इंतजार कर रहे हैं।"

"वो भी हमारे साथ रहेंगे?"

"ऐसा ही हुक्म है पोतेबाबा का।"

"उनकी क्या जरूरत है। हम लोगों की संख्या पहले ही बहुत हो चुकी है।"

"उनकी जरूरत पड़ेगी, तभी तो पोतेबाबा ने उन्हें साथ रखने का हुक्म दिया है।"

"पोतेबाबा को कैसे पता कि उनकी जरूरत पड़ेगी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"उसके पास भविष्य में झांकने वाली मशीनें हैं। उनसे पता चलता है उसे कि आगे कैसा वक्त आने वाला है।"

"फिर तो उसे ये भी पता चला गया होगा कि हम जिस काम के लिए निकले हैं, उसका अंजाम क्या होगा।"

"ये पता नहीं चल सकता उसे।"

"क्यों?"

"क्योंकि बीच में महाकाली के मायावी रास्ते हैं। तिलिस्मी पहाड़ी

है। भविष्य में झांकने वाली मशीनें, तिलिस्मी-मायावी चीजों के बारे में नहीं बता सकतीं। जथूरा के सेवक दिन-रात इसी काम में लगे हुए हैं कि भविष्य में झांकने वाली मशीनों की कमियां दूर करके, उनके द्वारा मायावी चीजों में भी झांका जा सके।" रातुला ने बताया।

"बहुत-अजीब सी है जथूरा की दुनिया।"

"जथूरा ने बहुत मेहनत की अपनी नगरिया बसाने में। वो सच में मेहनती है।"

घोड़ों पर काफिला दौड़ता जा रहा था।

गरुड़ ने सोबरा से बात करने वाला यंत्र अपने कपड़ों में छिपा रखा था और दोपहर को पड़ाव से चलने के बाद कई बार, यंत्र के बजने की आवाज आई। स्पष्ट था कि सोबरा उससे बात करना चाहता है।

परंतु काफिले के बीच गरुड़ बात नहीं कर सकता था।

तभी तवेरा अपना घोड़ा गरुड़ के पास ले आई।

गरुड़ उसे देखकर मुस्कराया।

"मैं उस वक्त के बारे में सोच रही हूं जब हम ब्याह करके इकट्ठे रहेंगे।" तवेरा ने प्यार से कहा।

"ये सुनकर ही मुझे मीठी गुदगुदी होती है। नशा-सा भर आता है दिल-दिमाग में।" गुरुड़ भी मुस्कराया।

"मैं तो यही कामना करती हूं कि देवा-मिन्नो, पिताजी को खत्म कर दें।"

"मेरे खयाल में तो जथूरा को इसी तरह कैद में ही रहने देना चाहिए।"

"बात तो तुम्हारी सही है, परंतु देवा-मिन्नो ने पोतेबाबा को दिखाने के लिए भी तो कुछ करना है।"

"बाद में हम पोतेबाबा को काम से हटा देंगे तवेरा।"

"क्यों काम कौन देखेगा?"

"मैं देखूंगा।"

"तुम काम देखोगे तो हमें प्यार करने का वक्त ही नहीं मिलेगा। व्यस्त रहोगे तुम। पोतेबाबा को हटाना ठीक नहीं होगा।"

"जैसा तुम ठीक समझो तवेरा।"

"क्या ये ठीक नहीं होगा कि हम दोनों महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी से पहले ही रुक जाएं। बाकी सबको जाने दें।"

"ये ठीक नहीं होगा। मैंने तुमसे पहले भी कहा है कि दिखावा करना है मुझे कि मैं, पिताजी को कैद से छुड़ाने देवा-मिन्नो के

साथ गई हूं। तुम फिक्र मत करो। तुम्हारी जान को कुछ नहीं होगा।" तवेरा बोली।

"मुझे तुम्हारी भी चिंता है।"

"मैं सुरक्षित रहूंगी। वापस महल में जाकर हमें ब्याह करना है गरुड़।"

"तुम कितनी अच्छी हो।"

बांकेलाल राठौर की निगाह कमला रानी पर पड़ी तो कमला रानी को अपनी तरफ देखते पाया।

दोनों की नजरें मिलीं।

बांके का हाथ अपनी मूंछ पर पहुंच गया।

कमला रानी मुस्करा पड़ी फिर मुंह फेर लिया।

"छोरे, आगो दोनों तरफो लगो हो।" बांकेलाल राठौर कह उठा।

"बाप, तेरे बस का कुछ नेई होईला।"

"ईब के हो जायो सबो कुछ छोरे।"

"अपने को क्यों धोखा देईला। तेरे को प्यार-व्यार सूट नेई करेला।"

"अंम थारे को दिखा दयो।"

तभी कमला रानी अपना घोड़ा बांकेलाल राठौर के पास ले आई।

"छोरे मामलो आगे बढ़ो हो।"

पास आकर कमला रानी ने मुस्कराकर बांके को देखा।

बांके का हाथ पुनः मूंछ पर पहुंच गया।

"तुम्हारी मूंछें बहुत अच्छी हैं।" कमला रानी ने कहा।

"गुरदासपुरो वाली को भी बोत पसंदो हौवे।"

"गुरदासपुरो वाली?"

"वां पे म्हारे जान रहो हो।"

"कोई लड़की?"

"ईब तो चार को जन दयो हो उसो ने। दूसरो सांग ब्याह कर लयो हो।"

"तुम्हारे साथ नेई किया?"

"नेई। उसका बाप राजी न हौवो हो। म्हारे को मनो कर दयो शादी से। पर वो तो म्हारे संग घरों से भागने को तैयार हौवो थी, मन्ने ही मनो कर दयो।" बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस लेकर कहा।

'इसके बस का कुछ नेई होईला।' रुस्तम राव बड़बड़ा उठा।

"तुमने क्यों मना कर दिया। भाग जाते।" कमला रानी ने कहा।

"अंम उसो को लेके भाग जातो तो, उसे के बाप का दिल दुखता। इसो वास्ते अंम नेई भागे।"

"और उसका ब्याह किसी और के साथ हो गया?"

"ठीक बोल्लो हो?"

"तुम कैसे मर्द हो।"

"अंम बोत बढ़ियो मर्दो हौवे, तंम देखो नेई म्हारी मर्दानगी।"

"मैंने कहां देखी है।"

"यो म्हारी मूंछें थारे को दिखे न?"

"मूंछों को तुम मर्दानगी कहते हो।"

"अंम गलत बोल्लो का?"

"औरत को मूंछों की मर्दानगी नहीं चाहिए। दूसरी मर्दानगी चाहिए।"

"दूसरो मर्दानगी—वो कैसी हौवे?"

"लगता है तुम औरतों को मूंछों से ही ठंडा करते हो।" कमला रानी ने मुंह बनाया।

"मूंछों में बोत पॉवर हौवे।"

"समझ गई।"

"का समझो हो तंम।"

"उसके बाप ने अपनी बेटी की शादी तुम्हारे साथ क्यों नहीं की।" कमला रानी ने कहा।

"काये को नेई की?"

"तुम्हारी मूंछों की वजह से। मूंछ कटवाई होती तो वो चार बच्चे तुम्हारे पैदा किए होते।"

"थारा मतलब यो मूंछ म्हारी जिंदगी का विलेन हौवे?"

"हां।"

"तंम को मूंछों की वैल्यो न पतो हौवे। मर्द वो ही, जिसो की म्हारे जैसो मूंछ हौवे।"

'मूंछ की बात ही करेला।' रुस्तम राव बड़बड़ा उठा—'आगे-पीछे की बात न करेला। पैंचर होईला इसका।'

तभी मखानी अपने घोड़े को कमला रानी के पास ले आया।

मखानी के चेहरे पर नाराजगी के भाव थे।

"तू इसके साथ बातें क्यों कर रही है?" मखानी ने उखड़े स्वर में कहा।

"इसकी मूंछ मुझे अच्छी लगी तो बात करने चली आई।" कमला रानी ने कहा।

मखानी ने बांकेलाल राठौर को देखा।

बांके का हाथ मूंछ पर पहुंच गया।

"मुझे अच्छा नहीं लगता कि तुम इससे बातें करो।" मखानी बोला।

"जलता है।"

"हां, यही समझ ले।"

कमला रानी हंस पड़ी।

"मर्दों में ये ही बात तो बुरी है। खुद कहीं भी मुंह मारे, औरत को छिपाकर रखते हैं।"

"तू उससे बात मत कर।"

"मैं कुछ भी करूं, मेरी मर्जी।" कमला रानी ने मुंह बनाकर कहा।

"यो तंम ठीको कहो हो।" बांकेलाल राठौर कह उठा।

"भाड़ में जा साले मुच्छड़।" मखानी ने कहा और घोड़ा आगे बढ़ा ले गया।

कमला रानी भी घोड़ा आगे बढ़ाकर मखानी के पास जा पहुंची।

"तंम देखो हो छोरे।" बांके ने रुस्तम से कहा—"म्हारी मूंछों की पॉवरो।"

"बाप तुम्हारी मूंछों की पॉवरो में कुछ नहीं रखेला।"

"का मतलबो थारा?"

"उधर, मखानी की पूंछ में पॉवर होईला।" रुस्तम राव ने मुंह बनाकर कहा।

बांकेलाल राठौर ने साथ-साथ घोड़े दौड़ाते कमला रानी और मखानी को देखा।

"अंम नेई समझो थारी बात।"

"तेरी मूंछों में पॉवर होईला तो, कमला रानी तेरे साथ होईला बाप। पर कमला रानी को मखानी की पूंछ में पॉवर दिखेला, तभ्भी तो वो मखानी के बगल में घोड़ा दौड़ाईला।"

बांकेलाल राठौर ने कुछ नहीं कहा।

"वो तेरे पास आईला। तेरे से बात करेला और उसे अपनी मूंछें दिखाईला। तभ्भी तो वो तेरे पास नेई रुकेला बाप।"

"तो छोरे अंम का दिखावो उसो को।"

"पूंछ।"

"वो तो म्हारे पास न होवे।"

"बाप तू ओल्ड मॉडल ही रहेला। तेरी मूंछ ने तेरे को पैंचर रखेला अभ्भी तक।"

□ □

रातुला के कहने पर सबने घोड़ों की रफ्तार धीमी कर दी।

"यहां कहीं हमें मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा मिलेंगे।" रातुला ने ऊंचे स्वर में कहा।

मध्यम गति से घोड़े दौड़ाते सबकी नजरें दूर-दूर तक जाने लगीं।

"तवेरा।" गरुड़ पास आकर धीमे स्वर में बोला—"मोमो जिन्न की क्या जरूरत थी?"

"ये पोतेबाबा का फैसला है।"

तवेरा ने कुछ नहीं कहा।

फिर कुछ आगे जाने पर मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा उन्हें मिल गए। सब उनके पास पहुंचकर रुक गए।

मोमो जिन्न ने मुस्कराकर सबका स्वागत किया और तवेरा के पास पहुंचा।

"जथूरा की बेटी तवेरा के सामने मोमो जिन्न सिर झुकाता है।" मोमो जिन्न बोला।

"खुश हो?" तवेरा ने पूछा।

"जथूरा की सेवा में रहकर कोई भी दुखी नहीं रह सकता।" मोमो जिन्न ने आभार-भरे स्वर में कहा।

उसके बाद मोमो जिन्न रातुला के पास पहुंचा।

"मेरे लिए क्या हुक्म है?" मोमो जिन्न ने पूछा।

"तुम्हें हमारे साथ महाकाली की पहाड़ी पर जाना है।" रातुला बोला।

"ये हुक्म मुझे मिल चुका है। कोई नया हुक्म नहीं है?"

"नहीं। नए हुक्म तुम्हें जथूरा के सेवक कंट्रोल रूम से ही देंगे।"

"ठीक है। हम चलने को तैयार हैं।" मोमो जिन्न बोला।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की निगाह मखानी, कमला रानी पर पड़ी तो दोनों हड़बड़ा उठे। कमला रानी और मखानी क्रोध-भरी नजरों से दोनों को देख रहे थे।

"वो दोनों हमें घूर रहे हैं।" सपन चड्ढा कह उठा।

"हमने उन्हें जान से मार दिया था। ये हमें नहीं छोड़ेंगे।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़ें पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'पोतेबाबा'**।)

"इनसे बचककर रहना।"

"वो देख मखानी हमारे पास आ रहा है।"

मखानी घोड़े को धीमे से आगे बढ़ाता उनके पास आ पहुंचा।

"तुम दोनों ने मुझे और कमला रानी को जान से मार दिया था।"

"मोमो जिन्न।" लक्ष्मण दास घबराकर ऊंचे स्वर में बोला—"ये हमें मार रहा है।"

तभी रातुला ऊंचे स्वर में कह उठा।

"मखानी। दूर हो जाओ इनसे। इन्होंने जो किया पोतेबाबा के इशारे पर किया था।"

"इन्होंने हमें मारा।" मखानी तेज स्वर में बोला।

"पोतेबाबा का ऐसा ही हुक्म था।"

तभी शौहरी की आवाज मखानी के कानों में पड़ी।

"तू झगड़ने से बाज आ जा। मत भूल तू कालचक्र का अंश है।"

"इन्होंने हमें मारा।"

"ऐसा ही होना था तब। वो सब कुछ तो पोतेबाबा की चाल का हिस्सा था। देवा-मिन्नो को जथूरा की जमीन पर लाने के लिए।"

मखानी के होंठ भिंचे रहे।

"इन्हें कुछ मत कहना। कालचक्र का ये ही हुक्म है।"

मखानी ने उखड़े अंदाज से अपना घोड़ा पीछे ले लिया।

"बच गए सपन।"

"जब तक ये साथ रहेंगे। डर लगा रहेगा कि ये हम पर हमला न कर दें।"

"हम सतर्क रहेंगे।"

तभी गरुड़ घोड़े से उतरता कह उठा।

"मैं पेड़ की ओट में होकर आता हूं।" इसके साथ ही वो दूर होता चला गया।

तवेरा गरुड़ को जाते देखती रही।

गरुड़ एक पेड़ की ओट में होकर, उसकी नजरों से छिप गया।

गरुड़ ने फुर्ती से अपने कपड़ों में छिपा यंत्र निकाला और उसके द्वारा सोबरा से बात की।

"क्या बात है, तुम यंत्र पर मुझसे बात करना चाहते हो?" गरुड़ ने कहा।

"हां। मैं कब से बात करने की कोशिश कर रहा था।"

"तब मैं उन लोगों के साथ था। जल्दी कहो। मेरे पास वक्त कम है।"

"मैंने योजना बदल दी है।"

"क्या मतलब?"

"तुम्हें तवेरा की जान लेनी होगी।"

गरुड़ हैरानी से उछल पड़ा।
"क्या कह रहे हो?" उसके होंठों से निकला।
"ये मेरी नई योजना है।"
"परंतु तवेरा मेरे से ब्याह करने को तैयार है। वो... ।"
"योजना बदल दी गई है। अब तुम्हें नई योजना पर काम करना है गरुड़। तवेरा को मार दो।"
"मुझे बताओ, तुम्हारी योजना क्या है?"
"तवेरा की जान लो। उसके बाद तुम्हें नई योजना भी बता दूंगा।" यंत्र से सोबरा की पतली-सी आवाज निकल रही थी।
गरुड़ के चेहरे पर परेशानी-ही-परेशानी नाच रही थी।
"मेरे खयाल में सोबरा ये ठीक नहीं हो रहा।" गरुड़ बोला।
"क्या तुम्हें तवेरा की जान लेने से इंकार है?"
"न...नहीं। अचानक ही तुम्हारे मुंह से तवेरा को मारने के बारे में सुना तो हैरान रह गया।"
"तवेरा की जान लेकर मुझे बताओ।"
इसके साथ ही बातचीत समाप्त हो गई।
गरुड़ ने यंत्र को कपड़ों में छिपाया और पेड़ के पीछे से बाहर आकर आगे बढ़ गया।
वापस आने पर तवेरा ने उसके चेहरे पर चिंता देखी तो वो कह उठी।
"पेड़ के पीछे क्या था?"
"कुछ भी नहीं।" गरुड़ ने उसे देखकर मुस्कराने की चेष्टा की।
"जब तुम पेड़ के पीछे गए थे तो सामान्य थे, वापस आए तो चिंतित लग रहे हो।"
"यूं ही। घोड़ों की सवारी करने पर, पेट में कुछ दर्द-सा होने लगा है।"
तवेरा मुस्कराई। गरुड़ को देखती रही।
"चला जाए अब।" मोना चौधरी ऊंचे स्वर में कह उठी।
परंतु लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के पास घोड़े नहीं थे।
"तुम सब जाओ।" मोमो जिन्न बोला—"हम सब तुम लोगों के पीछे-पीछे महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी पर पहुंच रहे हैं।"
काफिला पुनः आगे बढ़ गया।
मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के साथ पैदल ही आगे बढ़ने लगा।
"तुम कैसे जिन्न हो।" सपन चड्ढा बोला।
"क्यों, मुझे क्या हुआ है?"

"हमने तो जो जिन्न देखे है वो उड़कर, लोगों को साथ लेकर, फौरन मनचाही जगह पर पहुंच जाते हैं।"

"कहां देखे हैं तुमने ऐसे जिन्न?"

"फिल्मों में।"

"वो नकली हैं। असली जिन्न ये काम तभी करता है, जब उसे ऐसा करने का हुक्म मिलता है।"

"तुम्हें कौन हुक्म देगा?"

"जथूरा के सेवक।"

"तो वो हुक्म क्यों नहीं दे रहे?"

"इस बात की जरूरत न समझी जा रही होगी। चुपचाप पैदल चलते रहो मेरे साथ।"

'ये साला तो हमारी जान ले के ही रहेगा।' लक्ष्मण दास बड़बड़ा उठा।

"जिन्न को गाली देते हो।" मोमो जिन्न ने कठोर स्वर में कहा—"तमीज से पेश आओ। मुझे बदतमीजी जरा भी पसंद नहीं।"

▭ ▭

दिन-भर दौड़ते रहने के बाद घोड़ागाड़ी की रफ्तार कम होने लगी थी। सूर्य पश्चिम की तरफ झुकना आरम्भ हो गया था। धूप और भी तीखी होने लगी थी।

"अभी कितना सफर बाकी है?" जगमोहन ने पूछा।

"दिन के खत्म होते-होते हमारा सफर पूरा हो जाएगा।" खोतड़ा ने कहा।

"तुम्हारे यहां कुछ खिलाने का रिवाज नहीं है?"

"भूख लगी है?"

"तुम्हें खुद ही ये बात सोचनी चाहिए। जब से हम निकले हैं, कुछ भी खाया नहीं।"

"ठीक है। मैं अभी तुम्हारे खाने का इंतजाम कर देता हूं।" कहने के साथ ही खोतड़ा ने जेब से यंत्र निकाला और बटन दबाकर बात की तो दूसरी तरफ यंत्र से औरत की महीन आवाज सुनाई दी।

"क्या बात है खोतड़ा?"

"मेहमानों को भूख लगी है। वे कुछ खाना चाहते हैं।" खोतड़ा ने यंत्र में कहा।

"समझ गई।" औरत की आवाज यंत्र से निकली—"तुम लोग आगे आओ, कुछ ही देर में मैं खाने के साथ मिल जाऊंगी।"

"मैं इस वक्त हरे आम के बाग के पास से निकल रहा हूं।"

"यंत्र से मैं तुम्हारी स्थिति पहले ही जान चुकी हूं।"

"ठीक है।" खोतड़ा ने कहा और यंत्र बंद करके अपने कपड़ों में रख लिया।

"ये क्या है, जिससे तुम बात करते हो।"

"ये बातचीत का यंत्र है। सोबरा ने इन्हें बनाया है और ढेर सारे यंत्र महाकाली को उपहार में दिए हैं।"

"यंत्र से, यंत्र के साथ बातचीत कैसे होती है?"

"सोबरा ने एक मशीन आसमान में छोड़ रखी है। उसी मशीन से इन यंत्रों को संकेत मिलते हैं और बात होती है।"

"कब से ये यंत्र काम कर रहे हैं?"

"सौ साल से ज्यादा हो गए।"

"जथूरा व सोबरा ने बहुत तरक्की कर रखी है।" जगमोहन ने गहरी सांस लेकर कहा और सोहनलाल को देखा।

सोहनलाल ने नानिया का हाथ पकड़ रखा था। चेहरों पर सफर की थकान थी।

"भूख लग रही है।" नानिया बोली।

"खोतड़ा ने खाने का इंतजाम कर दिया है। कुछ ही देर में हमें भोजन मिल जाएगा।"

नानिया ने सोहनलाल से कहा।

"मैं तो उस वक्त का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं जब हम तुम्हारी दुनिया में पहुंचेंगे सोहनलाल।"

"क्या पता वो वक्त आए ही नहीं।"

"क्यों?"

"महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी पर हम बच ही नहीं सके।" सोहनलाल ने कहा।

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि वहां पर तुम जाओ ही नहीं।"

"ऐसा नहीं हो सकता। मुझे वहां जाना ही है।"

"वहां हमारे कई लोग खतरे में पड़ने वाले हैं।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो उनके लिए हम क्या कर सकते हैं। हमारे पास कोई विद्या तो है नहीं।"

"मुसीबत के उस वक्त में उनके साथ रहना है।"

"ये भला क्या बात हुई?"

"तुम मुसीबत में पड़ जाओ और मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊं तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

"बुरा लगेगा।"

"मुझे भी बुरा लगेगा। वो सब मेरी पुरानी पहचान के हैं। ये जानकर कि वो खतरे में कूदने जा रहे हैं। मैं चैन से नहीं बैठ सकता। अगर उन्हें बचा नहीं सकता तो बचाने का ढोंग तो कर सकता हूं।"

"ये क्या बात हुई।"

सोहनलाल का चेहरा गम्भीर रहा। बोला कुछ नहीं।

जगमोहन ने गहरी सांस लेकर मुंह फेर लिया।

तभी घोड़ागाड़ी दौड़ाता खोतड़ा कह उठा।

"तुम लोगों को मायूस नहीं होना चाहिए। तुम लोग अपने साथ-साथ दूसरों को भी बचा सकते हो।"

"कैसे?" नानिया बोली।

"तुम लोग पीछे की तरफ से तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश कर रहे हो। वहां से प्रवेश द्वार तक पहुंचने में तुम लोगों को कोई रुकावट नहीं आएगी। बेखौफ आगे बढ़ सकते हो। रुकावटें तो उनके लिए हैं, जो प्रवेश द्वार से भीतर आकर, आगे बढ़ना चाहेंगे। तुम लोग देवा-मिन्नो को समझाकर, उन्हें वापस लेते हुए बाहर निकल जाओ। बच जाओगे।"

"महाकाली जथूरा को आजाद क्यों नहीं कर देती।"

"इसका जवाब मेरे पास नहीं है।"

"तुम सिर्फ दूसरों को शिक्षा देने के लिए हो। देवा-मिन्नो जथूरा को आजाद कराने आ रहे हैं।"

"महाकाली ऐसा नहीं होने देगी।" खोतड़ा ने कहा।

"मतलब कि देवराज चौहान-मोना चौधरी महाकाली की बात माने। महाकाली उनकी बात नहीं मानेगी।"

"तुम महाकाली को क्या समझते हो। वो बहुत ऊंचे ओहदे पर है जग्गू।"

"परंतु वो जथूरा को कैद करने का मामूली काम कर रही है।"

"अवश्य महाकाली के सामने, ऐसा करने की वजह होगी।"

"सोबरा के एहसान तले दबकर वो ये काम कर रही है।" जगमोहन बोला।

"मैं नहीं मानता।" खोतड़ा ने इंकार में सिर हिलाया।

"क्या नहीं मानते?"

"सोबरा के एहसान में दबकर, महाकाली जथूरा को कैद में रखने वाली नहीं। महाकाली आजाद है।" खोतड़ा बोला।

"तो?"

"कोई और ही बात है, जिसकी वजह से महाकाली ने जथूरा को कैद में रखा हुआ है।"

"और क्या बात होगी?"

"मुझे पता होता तो तब भी न बताता। जो बात महाकाली ने तुम्हें नहीं कही, वो मैं कैसे कह सकता हूं।" खोतड़ा का स्वर गम्भीर था—"लो, हमारा पड़ाव आ गया। यहां खाने-पीने-नहाने को सब कुछ मिलेगा।"

तीनों की निगाह सामने की तरफ उठी।

जंगल के बीचोबीच एक खूबसूरत मकान बना उन्हें दिखा।

▭ ▭

मकान के प्रवेश दरवाजे पर बूढ़ी औरत स्वागत के लिए खड़ी थी। उनके करीब आने पर वो मुस्कराई और पीछे हटती हुई कह उठी।

"मेरे मकान में जग्गू, गुलचंद और नानिया का स्वागत है।"

"मेरा स्वागत नहीं करोगी?" खोतड़ा मुस्कराया।

"तुम्हारा तो पहले करूंगी, क्योंकि मेहमानों को तुम ही मेरे दरवाजे पर लाए हो।" वो मुस्कराई।

वो सब मकान के भीतर पहुंच गए।

मकान को खूबसूरती से सजाया गया था।

"तुम यहीं रहती हो?" नानिया ने पूछा।

"हां, ये मकान ही मेरा सब कुछ है।" वो बोली।

"सुनसान जगह पर तुम कैसे रह लेती हो मौसी?" नानिया ने उसे देखा।

"मैं सुनसान जगह पर नहीं, इस मकान में रहती हूं।" वो बोली।

"ये क्या मतलब हुआ?"

"पहले नहा-धो लो। खाना खा लो। क्या तुम लोग रात को भी यहीं रुकोगे?"

नानिया ने खोतड़ा को देखा।

खोतड़ा कह उठा।

"नहीं। हमारे पास वक्त कम है। हमें तुरंत महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के पीछे वाले द्वार पर पहुंचना है।"

"समझ गई। सब समझ गई।" फिर वो तीनों से बोली—"तुम तीनों नहाकर खाना खा लो। पीछे बाथरूम है। सबके लिए अलग-अलग नहाने की जगह है। चलो मैं दिखा देती हूं।"

वो तीनों को मकान के पीछे कहीं छोड़कर आ गई।

"क्यों खोतड़ा।" उसने आते ही कहा—"तिलिस्मी पहाड़ी के पीछे वाले रास्ते से इन्हें भीतर प्रवेश करना है?"

"हां।"

"ऐसा क्यों?"

"देवा-मिन्नो के बारे में तो तुमने सुना ही होगा।"

"हां। वो जथूरा को कैद से आजाद कराने के लिए तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश करने वाले हैं।"

"ये तीनों देवा-मिन्नो के साथी हैं और सोबरा चाहता है कि ये तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश करके देवा-मिन्नो को समझाएं और उन्हें वापस जाने को तैयार कर लें।"

"ये तीनों इस काम के लिए राजी हैं?"

"अभी इनके मन की बात नहीं पता।"

"आज तक तिलिस्मी पहाड़ी में जिसने प्रवेश किया, वो बाहर नहीं आ सका खोतड़ा।"

"महाकाली ने जथूरा की कैद के लिए सब इंतजाम कर रखे हैं।"

"वो नहाकर आने वाले होंगे। तुम खाना लगा दो।" खोतड़ा ने कहा।

बूढ़ी औरत कमरे की खाली जगह को देखकर कुछ बड़बड़ाई तो उसी पल वहां टेबल और कुर्सी नजर आने लगी। चंद पल बीते कि वहां बर्तनों में तरह-तरह के व्यंजनों का ढेर लग गया। वातावरण खुशबू से महक उठा।

खोतड़ा मुस्करा पड़ा।

बूढ़ी औरत ने खोतड़ा से कहा।

"मैं अपनी बेटी की शादी करने की सोच रही हूं। तुझ जैसा कोई मर्द ढूंढ़ रही हूं।"

"हां, मैंने देखा था, दया अब जवान हो गई है।" खोतड़ा ने कहा।

"तू करेगा उससे ब्याह?"

"मेरे पास काम बहुत होते हैं। उसे वक्त नहीं दे पाऊंगा। किसी और से कर दे उसका ब्याह।"

"पहले भी तूने यही कहकर मुझे टाल दिया था। दया बहुत अच्छी लड़की है।"

"मैं सोचकर बताऊंगा।"

"आना कभी, दया से मिलना। बात करना। तेरा मन बदल जाएगा।"

कुछ देर बाद तीनों नहा-धोकर वहां आ पहुंचे।

टेबल पर लगे खाने को देखकर उनकी भूख और बढ़ गई।

तीनों कुर्सियों पर बैठे और खाने में व्यस्त हो गए।

"तू नहीं खाएगा खोतड़ा?" बूढ़ी औरत ने पूछा।

"मैं दया के हाथ का खाना खाने आऊंगा।"

"कह दूंगी दया से।" बुढ़िया मुस्कराई—"वो खुश होगी सुनकर।"

खाना खाने के बाद सोहनलाल ने बुढ़िया से कहा।

"तुम खाना बहुत अच्छा बनाती हो।"

"महाकाली का आशीर्वाद है, वरना मैं तो कुछ भी नहीं।" बुढ़िया ने कहा।

"मौसी, मैं तुमसे खाना बनाना सीखूंगी।" नानिया ने कहा।

"सोहनलाल को खुश रखना चाहती हो, बढ़िया खाना बनाकर।"

"तुम्हें कैसे पता कि मैं ये सोच रही थी।"

"सब महाकाली का आशीर्वाद है, वरना मैं तो कुछ भी नहीं।"

"तुम मुझे खाना बनाना सिखाओगी?"

"जरूर। परंतु उसके लिए जरूरी है कि तुम जिंदा लौट आओ तिलिस्मी पहाड़ी से।"

"तुम्हें लगता है कि हम नहीं लौट पाएंगे?" जगमोहन बोला।

"आज तक जो भीतर गया, वो वापस नहीं लौट सका। तुम तीनों बचे रहना चाहते हो तो देवा-मिन्नो को समझाकर बाहर ले जाना। तभी तुम सब बच सकते हो।" बुढ़िया ने कहा।

जगमोहन ने गहरी सांस ली। तभी खोतड़ा तीनों से बोला।

"अब हमें चलना चाहिए।"

बुढ़िया खोतड़ा से कह उठी।

"दया के हाथ का खाना खाना भूल मत जाना।"

"नहीं भूलूंगा। मैं तुम्हें यंत्र पर खबर दे दूंगा कि कब आऊंगा मैं।"

"जल्दी आना दया तेरे को पसंद करती है।"

खोतड़ा ने सिर हिलाया और तीनों को लेकर मकान से बाहर निकला।

"याद रखना।" बुढ़िया उन तीनों से कह उठी—"मौत से बचना चाहते हो तो देवा-मिन्नो को तिलिस्मी पहाड़ी से बाहर ले जाना।"

खोतड़ा ने घोड़ागाड़ी आगे बढ़ा दी।

"कह तो ऐसे रही है जैसे हमारी सगी हो। हमारी चिंता करती हो।"

"वो सबकी ही चिंता करती है।" खोतड़ा बोला।

"है कौन—वो?"

"महाकाली की सेविका।"

नानिया ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा तो चौंक पड़ी।
पीछे कोई मकान न दिखा।
"मकान कहां गया?" नानिया के होंठों से निकला—"अभी तो था पीछे।"
"वो चली गई।" खोतड़ा ने बग्गी दौड़ाते कहा।
"कहां?"
"अपने रास्ते। वो मायावी मकान था। वहां की सब चीजें मायावी थीं। ये सारा इंतजाम तुम लोगों को खाना खिलाने के लिए किया गया था। उसके बाद वो मकान को अपनी मुट्ठी में बंद करके वापस चली गई।"
"अजीब बात है।" सोहनलाल ने कहा।
"ऐसी मायावी चीजों से हमारा वास्ता तब भी पड़ चुका है, जब हम पहले पूर्वजन्म में प्रवेश करते रहे हैं।" जगमोहन ने कहा—"ये सब नया नहीं है हमारे लिए। विद्या से ऐसी ताकतें हासिल की जा सकती हैं।"
"मैंने मायावी चीजो के बारे में बहुत कुछ सुन रखा है।" नानिया ने कहा।
जगमोहन खोतड़ा से बोला।
"देवा-मिन्नो कहां पर होंगे? कुछ पता है तुम्हें?"
"वो शाम ढलने तक, तिलिस्मी पहाड़ी के पास पहुंच जाएंगे।" खोतड़ा ने बताया।
"और हम?"
"हम भी शाम ढलने पर तिलिस्मी पहाड़ी के पीछे पहुंच जाएंगे।"
"आगे और पीछे में फासला कितना है?" जगमोहन ने सोच-भरे स्वर में पूछा।
"मीलों लम्बा। एक सिरा उत्तर में है तो दूसरा दक्षिण में।"
"तो क्या तिलिस्मी पहाड़ी मीलों लम्बी है?"
"हां।"
खोतड़ा तेजी से बग्गी दौड़ाए जा रहा था।
"जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।
"मुसीबत ही मुसीबत है हर तरफ।" सोहनलाल बोला।
"पूर्वजन्म में प्रवेश कर आने का मतलब ही खतरा और अजीबोगरीब हादसों में फंसना है।"
"तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर क्या होगा?" नानिया ने पूछा।
"तिलिस्म में लिपटे अजीबोगरीब खतरे। जान आफत में।"
घोड़ा गाड़ी तेजी से दौड़ी जा रही थी।

▭ ▭

घोड़ों पर सवार उन सबका काफिला आगे बढ़ता जा रहा था। रफ्तार मध्यम थी।

सबसे आगे रातुला था। अब कभी बंजर जमीन आ जाती तो कभी पेड़ों जैसी जगह।

सूर्य पश्चिम में छिप चुका था।

शाम का ठंडा मौसम महसूस हो रहा था।

तवेरा ने गरुड़ को देखा और कह उठी।

"क्या बात है गरुड़? तुम चुप-चुप से हो।"

"न...नहीं। ऐसा तो कुछ नहीं।"

"कुछ तो है। जब पड़ाव में तुम पेड़ के पीछे गए और फिर बाहर आए तो तुम परेशान थे। वो ही परेशानी अब भी है।"

गरुड़ ने तवेरा को देखा। कहा कुछ नहीं।

तवेरा अपना घोड़ा गरुड़ के पास ले आई।

"गरुड़।"

"हां।"

"मैं तुम्हें परख रही हूं कि तुम अपनी दिल की बात मुझे बताते हो या नहीं। अपना जीवन साथी मैं उसी को बनाऊंगी जो मेरे सामने खुली किताब की तरह हो। मुझे वो लोग पसंद नहीं जो मन में कुछ और होंठों पर कुछ रखें।"

गरुड़ चुप रहा।

"क्या तुम मेरे से ब्याह नहीं करना चाहते?" तवेरा ने पुनः कहा।

"करना चाहता हूं। मैं सच में तुम्हें प्यार करने लगा हूं।"

"तो मुझे बताओ कि तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?" तवेरा ने पूछा।

गरुड़ के होंठ भिंच गए।

"मैं बहुत परेशान हूं।"

"जानती हूं।"

"मैं तुमसे प्यार करता हूं तवेरा।"

"साबित करके दिखाओ। अभी तक तुमने ऐसी कोई बात नहीं की कि मुझे लगे कि तुम मुझसे सच्चा प्यार करते हो।"

"तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?

"भरोसे वाली बात करो तो भरोसा होगा।"

"मैं तुमसे सच्चा प्यार करने लगा हूं।"

"मैंने तुम्हें अपने मन की बात बताई कि मैं पिता की आजादी नहीं चाहती। देवा-मिन्नो पिताजी को मार देंगे। परंतु तुम अपने मन

की बात बताने में क्यों हिचक रहे हो। बताओ तुम्हें किस बात की चिंता है।"

गरुड़ कुछ देर खामोश रहा फिर धीमे स्वर में बोला।

"तुम थोड़ा पीछे हट जाओ इनसे। मैंने तुम्हें कुछ बताना है।"

तवेरा ने अपना घोड़ा धीमा करना शुरू कर दिया।

मखानी रह-रहकर तवेरा और गरुड़ को ही देख रहा था और सोच रहा था कि गरुड़ की किस्मत कितनी अच्छी है, जो इसे तवेरा जैसी युवती मिली।

तभी उसने तवेरा को घोड़ा धीमा करते देखा।

गरुड़ का घोड़ा भी धीमा हो रहा था।

'ये दोनों कोई गड़बड़ तो नहीं करना चाहते अकेले में।' मखानी बड़बड़ा उठा।

मखानी ने कमला रानी को देखा।

कमला रानी का ध्यान दूसरी तरफ था।

"मखानी।" तभी शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"शौहरी।" मखानी बड़बड़ाया।

"क्या बात है तू तवेरा और गरुड़ को ही देखे जा रहा है।"

"तुझे क्यों जलन होती है।" मखानी ने मुंह बनाया।

"मुझे संकेत मिल रहे हैं कि कुछ गलत होने वाला है तवेरा के साथ।"

"क्या गलत?"

"ये तो मैं नहीं जानता।"

"तवेरा और गरुड़ के घोड़े सबसे पीछे हो गए हैं।" मखानी के होंठों से निकला।

"मेरी ताकतें मुझे संकेत दे रही हैं कि गरुड़ कुछ गलत करने वाला है।"

"तो मैं क्या करूं?"

"तू भी पीछे हो जा। उन पर नजर रख। उनके पास रहने की कोशिश कर। गलत होने लगे तो उसे रोक।"

"ठीक है।"

मखानी ने अपने घोड़े की रफ्तार कम कर दी। काफिले में वो थोड़ा पीछे होने लगा।

तवेरा और गरुड़ के घोड़े काफिले में सबसे पीछे आ गए।

तवेरा अपने घोड़े को गरुड़ के घोड़े के पास ले आई।

उनके आगे सब घोड़े मध्यम रफ्तार में दौड़े जा रहे थे।

"बता गरुड़, क्या कहना चाहता है?" तवेरा बोली।

"तवेरा।" गरुड़ गम्भीर था—"कभी-कभी ऐसे काम भी करने पड़ते हैं, जिन्हें करने को मन नहीं चाहता।"

"तो?"

"मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। अगर मैं कहूं कि मैं तुम्हारी जान ले लूंगा तो?"

"तो मैं कहूंगी, मजाक मत करो।" तवेरा मुस्करा पड़ी।

"परंतु ये सच है।"

तवेरा ने गरुड़ पर निगाह मारी।

गरुड़ ने अपने जूते में फंसी जहरीली सुई निकाली।

"मुझे आदेश मिला है कि मैं तुम्हारी जान ले लूं।"

"सोबरा ने आदेश दिया?" तवेरा शांत स्वर में कह उठी।

"ओह।" गरुड़ चौंका—"तुम जानती हो?"

"मैं सब कुछ जानती हूं कि तुम यहां की खबरें सोबरा को देते रहते हो।"

"किससे जाना?" गरुड़ पर आश्चर्य दिखा।

"ये मत पूछो।" तवेरा सतर्क थी—"तुम ऐसा क्यों कर रहे हो गरुड़?"

"क्योंकि सोबरा मुझे अपनी हर चीज का मालिक बनाएगा।"

"उसने कहा और तुमने मान लिया।"

"मुझे बातों के जाल में मत उलझाओ।" गरुड़ के हाथ में अभी भी जहरीली सुई थिरक रही थी।

"सोबरा मुझे क्यों मारना चाहता है?"

"ये उसने नहीं बताया, परंतु बताएगा।"

"तो अब तुम मुझे मारने वाले हो।"

"हां—मैं... ।"

"मुझे मारकर तुम कैसे बच जाओगे गरुड़। यहां और लोग भी तो हैं।"

"किसी को नहीं पता चलेगा कि तुम कैसे मरी। जहरीली सुई पलों में तुम्हारी जान ले लेगी। फिर... ।"

तवेरा को मुस्कराते पाकर, गरुड़ ठिठका और माथे पर बल डालकर बोला।

"तुम्हें मौत का डर नहीं, जो मुस्करा रही हो।"

"मैंने अपने मंत्र की शक्तियों से सुई के जहर को अपने लिए पानी बना दिया है।"

"नहीं।" गरुड़ चौंका।

"अब तुम मुझे नहीं मार सकते।" तवेरा कठोर स्वर में बोली—"बल्कि तुम मरने वाले हो अब।"

गरुड़ का चेहरा खतरनाक भावों से भर उठा।
"मैं नहीं मर...।"
तब तक पास आ चुके मखानी ने अपना घोड़ा छोड़ते हुए गरुड़ के घोड़े पर छलांग लगा दी।
मखानी ने सब बातें सुन ली थीं।
गरुड़ को मखानी की हरकत का आभास न हुआ।
परंतु तवेरा ने मखानी की पास आने की हरकत महसूस कर ली थी।
मखानी ने गरुड़ का वो हाथ पकड़ा, जिसमें जहर वाली सुई थी और उसके हाथ में दबी सुई को गरुड़ की टांग की तरफ मोड़ दिया। सुई गरुड़ की टांग में धंस गई।
गरुड़ की आंखें भय से फैल गईं।
उसने मखानी को देखा फिर तवेरा को।
तवेरा के चेहरे पर जहर-भरी मुस्कान थिरक रही थी।
"शाबाश मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"तूने तो कमाल कर दिया।"
"मैं पहले भी कई बार कमाल कर चुका हूं—भूल गया तू।"
इसी पल गरुड़ के शरीर को झटका लगा और वो घोड़े से नीचे जा गिरा।
काफिला फौरन रुक गया।
मखानी पीछे रह चुके अपने घोड़े के पास पहुंचा और उछलकर उसकी पीठ पर जा बैठा।
तभी कमला रानी घोड़े पर उसके पास पहुंची।
"तू ठीक तो है मखानी?"
"बिल्कुल ठीक हूं।"
"क्या हुआ?"
"गरुड़, जहर वाली सुई से तवेरा की जान लेना चाहता था। मैंने वो ही सुई उसकी टांग में लगा दी।"
"अच्छा किया।"
दोनों काफिले के पास आ गए।
रातुला तुरंत तवेरा के पास आ पहुंचा।
"गरुड़ को क्या हुआ तवेरा?"
"मुझे मारना चाहता था, परंतु मखानी ने इसे मार दिया।" तवेरा बोली।
"ऐसा क्यों करना चाहता था गरुड़?"
"सोबरा ने इसे ऐसा करने को कहा था।" तवेरा बोली—"मुझे

मारने से पहले गरुड़ ने ये बात मुझे इसलिए बता दी कि वो मुझ पर जहरीली सुई को फेंकने जा रहा था। जिससे मैं फौरन मर जाती। परंतु मुझे वक्त मिल गया और मैंने मंत्र पढ़कर अपने लिए जहर को पानी में बदल दिया। तभी मखानी बीच में आ गया।"

"गरुड़ सच में बहुत बुरा था।" रातुला कह उठा—"शुक्र है कि तुम बच गईं।"

"मैंने तो बचना ही था रातुला। क्योंकि मैं पहले ही भांप चुकी थी कि गरुड़ कुछ गलत करने वाला है।"

"गरुड़ ऐसा क्यों कर रहा था?"

"मरने से पहले बता दिया इसने कि सोबरा ने इसे अपना सब कुछ देने का लालच दिया है।"

"बेवकूफ। सोबरा की बातों में आ गया।" रातुला कह उठा।

गरुड़ की लाश और उसका घोड़ा वहीं रह गया। सब पुनः आगे बढ़ गए।

"हमारे सफर की पहली मुसीबत गरुड़ था।" महाजन पारसनाथ से बोला।

"मुसीबतें तो अभी आनी हैं।" पारसनाथ मुस्करा पड़ा।

कमला रानी, मखानी से कह उठी।

"तू सच में शेर है। आज तूने साबित कर दिया।"

"तेरे को अब पता चला, मैं तो कब से शेर था।" मखानी ने दांत फाड़े।

कुछ देर बाद मखानी अपना घोड़ा, तवेरा के घोड़े के पास ले आया।

मध्यम गति से काफिला बढ़ा जा रहा था।

"मैंने तुम्हारी जान बचाई है।" मखानी बोला।

"शुक्रिया।" तवेरा ने मुस्कराकर कहा।

"शुक्रिया से काम नहीं चलेगा। तुम्हें मेरा ध्यान रखना होगा।" मखानी ने दांत फाड़े।

"कैसा ध्यान?"

"वैसा ही, जैसा रखा जाता है।" कहकर मखानी ने आंख दबाई—"तुम्हें मेरा एहसान उतार देना चाहिए।"

"मैं जथूरा की बेटी हूं।"

"तो?"

"तुम कालचक्र के हिस्से हो। कालचक्र मेरे पिता के अधीन है। इस तरह तुम मेरे नौकर हुए।"

"नौकर तो गरुड़ भी था। फिर उसके साथ क्यों हंस-हंस के...।"

"वो सब एक चाल थी। उस चाल का नतीजा, गरुड़ की मौत पर आकर खत्म हुआ।"

"तो मुझे तुमसे कुछ नहीं मिलेगा?"

"कुछ नहीं।" तवेरा ने मुस्कराकर सिर हिलाया।

"आशा रखूं?" मखानी ने आखिरी कोशिश की।

"वो देखो, कमला रानी तुम्हें चांटा मारने वाली नजरों से देख रही है।"

मखानी ने उधर देखा। घोड़ा दौड़ाती कमला रानी उसे गुस्से से बार-बार देखे जा रही थी।

"मैं आशा करता हूं कि तुम मेरा एहसान उतार दोगी।" कहकर मखानी ने घोड़ा आगे दौड़ा दिया।

मखानी घोड़े को कमला रानी के पास ले आया।

"क्या बातें कर रहे थे उससे?"

"कुछ नहीं, हाल-चाल पूछ रहा था।" मखानी ने दांत फाड़े।

"कभी मेरा हाल-चाल पूछा है जो उसका...।" कमला रानी ने कहना चाहा।

"तुम्हारा पूछ के क्या करूंगा। सब कुछ जानता हूं। उसका कुछ नहीं जानता, इसलिए...।"

"तू सीधा हो जा नहीं तो...।"

"नाराज मत हो। मेरे सारे प्रोग्राम तेरे साथ ही तो बनते हैं। तू ही तो मेरे दिल की रानी है कमला रानी।"

"कमीना। हर समय मेरे पीछे पड़ा रहता है।"

▭ ▭

वो बहुत लम्बी और फैली हुई पहाड़ी थी।

जगमोहन, सोहनलाल और नानिया ने दूर से ही उस पहाड़ी को देख लिया था।

पहाड़ी पर पेड़ और पौधे खड़े नजर आ रहे थे। दूर से वो बाग जैसे लग रहे थे।

"वो है पहाड़ी?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।" खोतड़ा ने बग्गी दौड़ाते हुए कहा—"कुछ ही देर में हम वहां पर होंगे।"

"पहले तो इस दिशा में कोई पहाड़ी नहीं होती थी।" नानिया ने कहा।

"ये मायावी पहाड़ी है। महाकाली ने अपनी ताकतों से पहाड़ी को

बनाया है। फिर इसमें तिलिस्मी भरा जादुई चक्र चालू किया। बहुत मेहनत की महाकाली ने इसे तैयार करने में। उसके बाद यहां जथूरा को कैद में रखा।" खोतड़ा बोला।

"मुझे हैरानी है कि इतनी ज्यादा मेहनत महाकाली ने सिर्फ जथूरा को कैद करने के लिए की।" नानिया बोली।

खोतड़ा ने कुछ नहीं कहा।

बग्गी दौड़ती रही।

"ये सब करने में अवश्य महाकाली का कोई अपना ही मतलब रहा होगा।" नानिया कह उठी।

"मुझे ऐसा नहीं लगता।" खोतड़ा बोला।

काफी देर बाद बग्गी पहाड़ी के पास जा पहुंची।

मीलों लम्बी-चौड़ी थी पहाड़ी।

खोतड़ा पहाड़ी के साथ-साथ बग्गी दौड़ाता रहा।

"तुम कहां जा रहे हो। पहाड़ी के साथ-साथ क्यों बग्गी दौड़ा रहे हो?" सोहनलाल ने पूछा।

"पीछे के प्रवेश द्वार पर तुम तीनों को छोड़ना है।" खोतड़ा ने कहा।

तीनों खामोशी से बग्गी में बैठे, इधर-उधर नजरें दौड़ाते रहे।

फिर वो वक्त भी आया, जब बग्गी का दौड़ना थम गया।

सामने ही पहाड़ी थी। खोतड़ा बोला।

"तुम लोग यहां उतर जाओ।"

"रास्ता कहां है?"

"पहाड़ी पर सामने ही रास्ता बनेगा तो भीतर चले जाना। नीचे उतरो।"

तीनों नीचे उतरे। खोतड़ा ने पुनः कहा।

"अब मुझे वापस जाना होगा।"

"रास्ता कैसे खुलेगा?" जगमोहन ने पूछा।

"महाकाली को सब खबर है कि तुम लोग पहुंच गए हो यहां। वो जब भी ठीक समझेगी, रास्ता खोल देगी।" इसके साथ ही खोतड़ा ने लगामों को झटका दिया तो घोड़े दौड़ पड़े। बग्गी दूर जाने लगी।

तीनों बग्गी को देखते रहे, जो कि कुछ ही देर में नजरों से ओझल हो गई।

ये सुनसान जगह थी। पक्षी-परिंदा, जानवर कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। मध्यम हवा के संग हिलते पेड़-पौधे ही दिखाई दे रहे थे।

पहाड़ी ज्यादा ऊंची नहीं थी, पचास-सत्तर मीटर ऊंची रही होगी वो।

"क्या पता पहाड़ी का रास्ता कब खुलता है।" नानिया ने कहा।

"खुल जाएगा।" सोहनलाल की नजरें आसपास घूम रही थीं।

जगमोहन एक पत्थर पर जा बैठा था।

नानिया ने प्यारी-सी नजरों से सोहनलाल को देखा।

"सोहनलाल।"

"हां।" सोहनलाल ने भी नानिया को देखा। होंठों पर मुस्कान आ गई।

"जब हम वापस तुम्हारी दुनिया में जाएंगे तो वहां पहाड़ी पर घर बनाएंगे।"

"पहाड़ी पर?"

"तुम्हें पहाड़ी पर रहना अच्छा नहीं लगता क्या?"

"बहुत अच्छा लगता है।" सोहनलाल ने नानिया का हाथ पकड़ा—"परंतु मैं जिस शहर में रहता हूं, वहां पहाड़ नहीं हैं।"

"नहीं हैं?"

"जरा भी नहीं।" सोहनलाल ने मुस्कराकर कहा।

"ओह, कोई बात नहीं, हम बिना पहाड़ वाली जगह पर रह लेंगे।"

"देखते हैं कि हम वापस पहुंच पाते हैं भी या नहीं?"

"क्यों नहीं वापस जा पाएंगे?"

"इस तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर जाने किन हादसों का सामना करना पड़ेगा।"

"हम दोनों भीतर साथ ही रहेंगे।"

"हां। हम साथ रहेंगे।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली और मुंह फेर लिया।

"ये तुम्हारा दोस्त सांसें क्यों भरता रहता है?" नानिया ने जगमोहन को देखा।

"तुम इसकी किसी हरकत की परवाह मत किया करो।"

"क्यों, दिमाग का कुछ ढीला है क्या?"

"दिमाग तो कसा हुआ है, परंतु मन उदास रहता है, क्योंकि इसे किसी से प्यार नहीं हुआ।"

"प्यार करने में क्या है, किसी से भी कर लें।"

"मैंने तो बहुत समझाया परंतु ये समझता नहीं।"

जगमोहन ने खा जाने वाली निगाहों से सोहनलाल को देखा।

सोहनलाल उसे देखकर दांत फाड़ने लगा।

"ये देखो सोहनलाल—ये क्या।" उसी पल नानिया ने कहा।

दोनों की नजरें घूमीं।

जमीन के साथ जहां से पहाड़ी शुरू हो रही थी, वहां पहाड़ी का दस फुट लम्बा हिस्सा जैसे फटकर दाएं-बाएं हो उठा था और भीतर जाने का रास्ता नजर आने लगा था।

जगमोहन फौरन उठकर खड़ा हो गया।

तीनों की निगाहें रास्ते पर थीं।

"ये रास्ता हमारे लिए ही खुला है।" सोहनलाल ने कहा।

"हमें भीतर जाना चाहिए।" नानिया कह उठी।

जगमोहन ने होंठ सिकोड़कर पहले आसमान की तरफ फिर हर तरफ देखा।

"क्या हुआ तुम्हें?" सोहनलाल ने उसे देखा।

"बाहर के माहौल को देख रहा हूं और सोच रहा हूं फिर शायद खुला मौसम देखने को न मिले।" जगमोहन ने कहा।

"ये तो निराशावादी है।" नानिया ने कहा।

"ये आशावादी है, इसे गलत मत समझो।" सोहनलाल मुस्कराया।

तभी उस पहाड़ी के पैदा हुए रास्ते में एक व्यक्ति दिखा।

वो तीस बरस का, ठिगना-सा था। धोती बांध रखी थी। शेव बढ़ी हुई थी। वो पहाड़ी की सीमा से बाहर नहीं आया और वहीं से उन्हें आवाज लगाता कह उठा।

"भीतर आ जाओ जल्दी से। महाकाली ने रास्ता तुम लोगों के लिए ही खोला है। ये कभी भी बंद हो सकता है।"

जगमोहन फौरन आगे बढ़ गया।

पहाड़ी के भीतर भरपूर प्रकाश हो रहा था।

सोहनलाल और नानिया हाथ पकड़े जगमोहन के पीछे चल पड़े।

बीच रास्ते में खड़ा वो आदमी फौरन पीछे हट गया।

तीनों भीतर प्रवेश कर गए।

उस आदमी ने दोनों हाथ हवा में उठाए और होंठों में कुछ बड़बड़ाया।

अगले ही पल वो रास्ता धीरे-धीरे बंद होने लगा।

▭ ▭

रास्ता बंद हो गया।

यहां पर्याप्त रोशनी थी। सब कुछ स्पष्ट नजर आ रहा था।

ये खुला कमरा था। फर्श साफ था। परंतु दीवार और छतें पहाड़ी की थीं। सामने ही एक साथ बने तीन रास्ते नजर आ रहे थे। दरवाजों की तरह रास्ते। इसके अलावा कमरे में कुछ नहीं था।

सोहनलाल और नानिया एक-दूसरे का हाथ थामे यहां के माहौल को देख-समझ रहे थे।

जगमोहन ने उस व्यक्ति को देखा।

वो व्यक्ति हसरत भरी निगाहों से नानिया को देखे जा रहा था।

"तुम कौन हो?" जगमोहन ने पूछा।

"मेरा नाम बूंदी है।" कहते हुए उसने नानिया से निगाह न हटाई।

सोहनलाल और नानिया ने भी उसे देखा।

"इस तरह आंखें फाड़कर क्या देख रहे हो?" जगमोहन बोला।

"औरत। औरत को देख रहा हूं। कब से नहीं देखा। कितने बरसों हो गए।" बूंदी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा—"ये आदमी कितना किस्मत वाला है कि इसने औरत का हाथ थाम रखा है। मेरी बात सुनो भैया।" वो सोहनलाल से बोला।

"क्या?"

"क्या तुम मुझे मौका दोगे कि कुछ देर मैं इस औरत का हाथ पकड़ सकूं?" बूंदी ने कहा।

"मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा। ये मेरी औरत है।"

"कितनी बुरी किस्मत है मेरी।" उसने गहरी सांस ली। वो उदास हो गया।

"अब मेरी बात का जवाब दो। तुम अपने बारे में बताओ।" जगमोहन बोला।

"मैं बूंदी हूं। महाकाली का सेवक हूं।" उसने जगमोहन को देखा—"मैं यहां पर बहुत दुखी हूं।"

"क्यों?"

"महाकाली ने तिलिस्मी पहाड़ी के पीछे के रास्ते का पहरेदार बना रखा है मुझे। उधर आगे के रास्ते पर मेरा भाई बांदा, पहरेदार है। हम दोनों भाई कभी मिल भी नहीं सकते। मुझे उसकी बहुत याद आती है। क्या तुम लोग मेरा भला करोगे?"

"कैसे?"

"मुझे महकाली की कैद से आजाद करा दो।"

"हमें तुम्हारी जिंदगी से कोई मतलब नहीं।"

"मैं जानता हूं कि मैंने बुरी किस्मत पाई है। कोई मेरी सहायता नहीं करेगा।" उसने उदास स्वर में कहा और नीचे बैठ गया।

"बेचारा, कितना दुखी है।" नानिया कह उठी।

"चुप कर।" सोहनलाल ने मुंह बनाया—"ऐसे दुखी तेरे को मेरी दुनिया में हर कदम पर मिलेंगे।"

"वहां भी ऐसा होता है?"
"इससे ज्यादा होता है।"
तभी जगमोहन बोला।
"ये सामने तीन रास्ते क्यों बने हुए हैं?"
"आने वाले को धोखा देने के लिए।" बूंदी ने कहा।
"आने वाले को? कहां से अपने वाले को?"
"उधर से जो इस तरफ आ पहुंचेगा। उसे तीन दरवाजे नजर आएंगे।" बूंदी ने बैठे-बैठे कहा—"वो इस वाले रास्ते से इधर आना चाहेगा तो, ये रास्ता उसे तिलिस्मी नदी में फेंक देगा। इस वाले रास्ते से भीतर आएगा तो उसी पल पहाड़ी के ऊपर पहुंच जाएगा, जहां से चला था और अगर इस तीसरे रास्ते से आएगा तो, इस कमरे में आ जाएगा और बाहर जाने के लिए वैसा ही रास्ता खुल जाएगा। जहां से तुम लोग भीतर आए हो।"
"बहुत खतरनाक रास्ते हैं ये।" सोहनलाल ने कहा।
"तिलिस्मी पहाड़ी है, इस पहाड़ी का निर्माण महाकाली ने अपने दुश्मनों को भटकाने के लिए किया है।" बूंदी बोला—"परंतु एक बात मैं तुम लोगों से स्पष्ट कर देता हूं कि मेरी किसी बात का भरोसा मत करना।"
"क्या मतलब?"
"मैं जो कहूंगा उसमें सच भी छिपा होगा और झूठ भी। जैसे कि मैंने तुम लोगों को इन तीनों रास्तों के बारे में बताया। मैंने जो कहा वो सच है, परंतु ये झूठ बताया कि कौन-से रास्ते से प्रवेश करने से क्या होगा।"
"मतलब कि रास्तों की जानकारी तुमने गलत कही।"
"हां। क्या पता जिस रास्ते से होकर आने से, आने वाला तिलिस्मी नदी की अपेक्षा, सीधा इस कमरे में आ जाए और बाहर जाने का रास्ता खुल जाए।" बूंदी ने कहा।
"तुमने आधा सच, आधा झूठ क्यों बोला हमसे?"
"इस तिलिस्म में झूठ तभी बोला जा सकता है, जबकि सच भी साथ में जुड़ा हो।" बूंदी बोला।
"हमारे आने पर तुमने दो बातें कहीं।" जगमोहन बोला—"खुद के दुखी होने की और इस औरत का हाथ पकड़ने की। इन दोनों बातों में कौन-सी सच बात थी और कौन-सी झूठ?"
"मैं यहां पर दुखी हूं ये झूठ है और इस औरत का मैंने हाथ पकड़ना चाहा, ये सच है।"
"तिलिस्म में हमें जो भी मिलेगा, वो सच और झूठ एक साथ बोलेगा?"

"हां और उसी में तुम लोगों की बात का सच्चा जवाब भी होगा। ये तुम लोगों की बुद्धि पर है कि सही जवाब ढूंढ़ पाते हो या नहीं?"

जगमोहन के होंठ सिकुड़ गए।

"ये तो बहुत चक्कर वाला मामला है।" सोहनलाल बोला।

"तू घबरा मत।" नानिया बोली—"सच झूठ को मैं पहचान लूंगी।"

तभी बूंदी कह उठा।

"लेकिन तुम लोगो को इस बात से घबराने की जरूरत नहीं है।"

"क्यों?"

"तुम लोगों ने तो पीछे की तरफ से आगे जाना है। जो रास्ता मिले, चलते जाना। कहीं-न-कहीं तो देवा-मिन्नो मिल ही जाएंगे तो उन्हें समझाकर, उन्हें वहीं से वापस ले जाना। शर्त ये है कि तब तक वो जिंदा रहे तो।"

"तुम मुझे बताओ कि किस रास्ते से हम प्रवेश करें तो देवा-मिन्नो के पास जल्दी पहुंचेंगे।"

"ये मैं नहीं बता सकता।"

"क्यों?"

"इस बात का जवाब मेरे अधिकार सीमा से बाहर है।"

"अगर हम किसी गलत रास्ते में प्रवेश कर गए तो?" नानिया बोली।

"तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। जाओगे तो पहाड़ी के सामने वाले रास्ते की तरफ ही, जहां से देवा-मिन्नो ने आना है। अगर तुम लोगों की किस्मत खराब हुई तो, देवा-मिन्नो से मुलाकात ही नहीं होगी।" बूंदी ने कहा।

"क्या मतलब?"

"इतनी फैली हुई पहाड़ी है। भीतर जाने कितने रास्ते सामने वाले रास्ते की तरफ जाते हैं। देवा-मिन्नो क्या पता किस रास्ते की तरफ से आते हैं और तुम लोग जाने किस रास्ते पर आगे जाते हो।"

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"फिर तो तुम्हें बताना चाहिए कि हम किस रास्ते से जाएं तो देवराज चौहान मिलेगा।"

"मैं नहीं बताऊंगा।"

"क्यों?"

"मैं अगर कह दूं कि पहले रास्ते से जाओ और दूसरा रास्ता ठीक हुआ तो। क्या पता तीसरे रास्ते से भीतर जाते ही तुम तीनों फौरन देवा-मिन्नो को अपने सामने पाओ।" बूंदी ने कहा।

"इसने तीन बातें कहीं हैं।" सोहनलाल बोला—"उसमें से एक सच है।"

"कोई फायदा नहीं।" जगमोहन ने गहरी सांस ली—"तीन में से एक सच्ची बात का ढूंढ़ना कठिन है। दो में से एक को ढूंढ़ना होता तो हम शायद कोई फैसला ले लेते।"

बूंदी मुस्कराकर बोला।

"पते की बात कही जग्गू ने। अब एक बात और भी सुन ले।"

"क्या?"

"जितना मर्जी आगे बढ़ जाओ, परंतु वापस मत पलटना। वापस आने पर तिलिस्मी रुकावटों का सामना करना पड़ेगा, जैसे कि देवा-मिन्नो को करना पड़ेगा।" बूंदी बोला।

"इतना कुछ बता रहे हो तो एक बात का जवाब और दे दो।" जगमोहन मुस्कराया।

"पूछो—पूछो।"

"इस पहाड़ी में जथूरा कहां है?"

"बे-ईमानी नहीं करूंगा महाकाली से, बेशक मैं यहां दुखी ही क्यों न होऊं।" बूंदी मुस्करा पड़ा—"सारा खेल ही जथूरा का है। वैसे मैंने बता भी दिया तो तुम उस तक नहीं पहुंच सकोगे।"

"क्यों?"

"जथूरा तक पहुंचने के रास्ते पर देवा-मिन्नो के नाम का तिलिस्म बंधा है। जब तक देवा-मिन्नो तिलिस्म नहीं तोड़ देते तब तक कोई भी जथूरा तक नहीं पहुंच सकता।" बूंदी ने कहा।

"फिर तो तुम्हें बताने में कोई परेशानी नहीं होनी...।"

"तुम लोग वहां तक नहीं पहुंच सकते तो पूछते ही क्यों हो। जाओ अब, मेरा आराम करने का वक्त हो रहा है।"

"नमूने भरे हुए हैं यहां तो।" सोहनलाल कह उठा।

"मैं नमूना नहीं, बूंदी हूं।" बूंदी ने शांत स्वर में कहा।

जगमोहन की निगाह उन तीनों रास्तों पर जा टिकी। चेहरे पर सोच के भाव थे।

"हमें इनमें से एक रास्ता चुनना है।"

"कौन-सा चुनें?"

तभी नानिया ने कहा।

"हम तीनों एक-एक रास्ते में प्रवेश कर सकते हैं।"

"उससे हम अलग हो जाएंगे। बेहतर होगा कि हम एक साथ ही रहें।" जगमोहन ने कहा।

"तो हम किस रास्ते पर आगे बढ़ें। तीन रास्तों में से एक को चुनना आसान भी तो नहीं।"

जगमोहन ने बूंदी को देखा।

उन्हें देखता बूंदी फौरन हाथ हिलाकर कह उठा।

"मुझसे मत पूछना। मेरे से सच नहीं जान पाओगे।"

"एक इशारा ही तो करना है।" सोहनलाल मुस्कराया।

"ये मुझसे नहीं होगा।"

"ठीक है।" नानिया कह उठी—"अगर मैं तुम्हें हाथ पकड़ने का मौका दूं तो तब बताओगे।"

बूंदी का चेहरा खिल उठा।

"नानिया—तुम... ।" सोहनलाल ने कहना चाहा।

"मुझे बात करने दो सोहनलाल। बीच में मत बोलो।"

"तुम कितनी अच्छी हो।" बूंदी नानिया से कह उठा।

"जवाब दो मेरी बात का।"

"ये मेरा सौभाग्य होगा कि तुम्हारा हाथ थामा तो, क्या तुम बिना किसी शर्त के अपना हाथ मेरे हाथ में नहीं दे सकती।"

"अगर तुम सही रास्ता बताओगे तो तभी हाथ थामने दूंगी।"

"क्या फायदा कि मैं झूठ कह दूं कि पहले वाले रास्ते में चले जाओ, जबकि सही रास्ता तीसरे में हो।" बूंदी ने मुंह बनाकर कहा।

"मतलब कि तुम हमें कुछ नहीं बताओगे?" नानिया ने कहा।

"नहीं। क्या अब मैं तुम्हारा हाथ पकड़ सकता हूं?"

उसी पल जगमोहन ने कहा।

"तुमने पहले और तीसरे रास्ते का जिक्र किया, परंतु दूसरे रास्ते के बारे में कुछ नहीं कहा।"

"मेरी मर्जी, मैं नहीं लेता दूसरे का नाम।" बूंदी मुस्करा पड़ा।

जगमोहन ने सोहनलाल को देखा।

"हमें पहले और तीसरे में से एक रास्ते का चुनाव करना चाहिए।" सोहनलाल बोला।

"तुम तय करो।"

"जो नानिया कहेगी, उस पर जाएंगे।" सोहनलाल ने कहा।

दोनों की निगाह नानिया पर जा टिकी।

नानिया गम्भीर दिखी। तीनों रास्तों पर उसने निगाह मारी। बोली।

"पहले रास्ते से भीतर जाएंगे।"

"ठीक है।" जगमोहन ने सिर हिलाया।

सोहनलाल ने बूंदी को देखा।

बूंदी टुकर-टुकर सा तीनों को देख रहा था।

"अब ये तो बता सकते हो कि हमने सही रास्ते का चुनाव किया है या नहीं?"

"पहला रास्ता गलत भी हो सकता है और ठीक भी।"

"ये तो हम भी जानते हैं।"

"कहीं बीच वाला रास्ता तुम लोगों के काम का न हो।" बूंदी लापरवाही से बोला।

जगमोहन सोहनलाल की नजरें मिलीं।

"ये हमें भटका रहा है।" जगमोहन बोला।

"हम पहले रास्ते से ही भीतर जाएंगे।" सोहनलाल ने कहा।

"औरत का कहना मत मानो। दूसरे रास्ते से भीतर प्रवेश कर जाओ।" बूंदी मुस्करा पड़ा।

"ये हमें भटका रहा है।" जगमोहन ने पुनः कहा।

"सही रास्ता बता रहा हूं तो मेरा एहसान मानने की अपेक्षा इल्जाम लगा रहे हो।" बूंदी नाराजगी से बोला।

"तुम किसी भी कीमत पर हमें सही दिशा नहीं बता सकते।" सोहनलाल ने कहा।

"क्यों?"

"तुम खुद कबूल कर चुके हो कि तुम हमें सही जवाब नहीं दोगे।"

"सही दे रहा हूं तो तुम लोग मान नहीं रहे। शक कर रहे हो।"

जगमोहन सोहनलाल और नानिया को देखता कह उठा।

"अपनी बातों से ये हमारा दिमाग खराब कर देगा। हमें पहले रास्ते से ही चलना चाहिए।"

"चलो।" नानिया पहले वाले रास्ते की तरफ बढ़ी।

जगमोहन-सोहनलाल उसके पीछे हो गए।

"ये क्या कर रहे हो।" बूंदी कह उठा—"मारे जाओगे। पहले दरवाजे से भीतर प्रवेश करते ही आग के दरिया से सामना हो जाएगा।"

उसकी बात पर तीनों ठिठक गए।

पलटकर बूंदी को देखा।

"मेरी मानो तो तीसरे दरवाजे से भीतर प्रवेश कर जाओ। उसके बाद आनंद ही आनंद मिलेगा।" बूंदी हंसकर बोला।

"हमें रुकना नहीं।" बूंदी को घूरते जगमोहन बोला—"पहले रास्ते से ही भीतर प्रवेश करो।"

"वहां...वहां अगर आग का दरिया हुआ तो?" नानिया के होंठों से निकला।

"तो तुम अकेली नहीं, हम दोनों भी मरेंगे।"

"शुभ-शुभ बोल सोहनलाल।"

फिर एक-एक करके तीनों पहले वाले रास्ते से भीतर प्रवेश कर गए।

बूंदी फर्श पर बैठा, शांत निगाहों से पहले रास्ते की तरफ देखे जा रहा था।

□ □

मन आशंकाओं से घिरे थे। भय भी लग रहा था। परंतु तीनों में से एक रास्ता तो चुनना ही था और बूंदी विश्वास के काबिल नहीं था कि उसकी बात मानी जाए।

मन में ये बात बैठाए कि देखते हैं क्या होता है, पहले रास्ते से वे भीतर प्रवेश कर गए थे।

भीतर प्रवेश करते ही तीनों ने खुद को एक बाजार में पाया।

चहल-पहल थी बाजार में।

लोग आ-जा रहे थे। शोर उठ रहा था। छोटी-बड़ी पुरानी दुकानें नजर आ रही थीं। सिर पर खुला आसमान था। सामने से घोड़ागाड़ी आते पाकर तीनों एक तरफ हो गए।

"ये कैसी जगह है?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"महाकाली की मायावी दुनिया है।" नानिया ने कहा।

"लेकिन ये आसमान कैसे नजर आ रहा है, हमने तो पहाड़ी के भीतर प्रवेश किया था।"

"आंखों का धोखा है ये सोहनलाल।"

"धोखा?"

"हां। ये सब मायावी जाल है। देखने में असली, कुछ भी नकली नहीं। परंतु सब कुछ जादुई है। महाकाली ने अपनी ताकतों से ये सब बसा रखा है। इस दुनिया में ये सब होना मामूली है।"

"हैरानी है।" सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

जगमोहन हर तरफ ध्यानपूर्वक देख रहा था।

"क्या कहते हो?" सोहनलाल ने पूछा।

"कुछ भी समझ नहीं आ रहा कि हम कहां आ पहुंचे हैं।" जगमोहन ने कहा।

"यहां के लोगों से बात करें?"

"उससे क्या होगा?"

"शायद कोई काम की बात सुनने को मिले।"

"महाकाली की जगह है ये। यहां हमें कोई काम की बात क्यों बताएगा।" जगमोहन ने आसपास देखते हुए कहा।

"फिर भी पूछने में क्या हर्ज है।" कहने के साथ ही सोहनलाल ने पास जाते आदमी को टोका—"सुनना भाई साहब।"

वो आदमी ठिठका। सोहनलाल को देखने लगा।

"ये कौन-सी जगह है?"

"तुम नहीं जानते?"

"नहीं।"

"नए आए हो?"

"हां।" सोहनलाल ने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

"ये महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर बसाई मायावी दुनिया है।"

"मायावी दुनिया। तो क्या तुम असली आदमी नहीं हो?"

"असली हूं। जैसे तुम असली हो।"

"तुम इस मायावी दुनिया में कैसे आ गए?"

"महाकाली हम सब लोगों को यहां ले आई अपनी ताकतों से। हम यहीं के हो के रह गए।"

"तुम यहां से निकलना चाहते होंगे?"

"नहीं। मैं खुश हूं यहां। मजे से जिंदगी बीत रही है।"

"एक बात बताओ। हमने पहाड़ी के पीछे से भीतर प्रवेश किया है और सामने वाले रास्ते पर जाना चाहते हैं। कैसे जाएं?"

"मैं न तो पीछे का रास्ता जानता हूं न आगे का। मुझे कुछ नहीं पता।" कहकर वो आगे बढ़ गया।

सोहनलाल उसे जाते देखता रहा।

सब कुछ सामान्य नजर आ रहा था, परंतु ये सब मायावी था।

"क्या करें अब?" सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

"हमें रास्ता पूछते रहना होगा।" जगमोहन ने कहा—"किसी से तो पता चले...।"

तभी नानिया का स्वर दोनों ने सुना।

"लो, ये फिर आ गया।"

दोनों की नजरें घूमीं।

सामने से बूंदी आ रहा था। वो पास आ पहुंचा।

"मैं तुम लोगों को ही ढूंढ़ रहा था।" बूंदी बोला—"तुम्हारे बिना मन नहीं लगा मेरा।"

"तुम्हें आना ही था तो हमारे साथ आ जाते।" सोहनलाल ने उसे घूरा।

"तब मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।" बूंदी ने नानिया को देखा—"मैं इसका हाथ पकड़ना चाहता हूं।"

"कभी नहीं।" नानिया ने तेज स्वर में कहा।

"गुस्सा मत करो।" बूंदी बोला—"मैं तुम्हें गुस्से में नहीं देख सकता।"

"तुम चाहते क्या हो?" जगमोहन ने पूछा।

"कुछ नहीं। मैं तो सेवक हूं। सेवा करना मेरा काम है। अगर तुम लोग दूसरे वाले दरवाजे से भीतर आते तो अब तक सामने वाले दरवाजे के पास पहुंच गए होते। परंतु तुम लोग तो यहां आ गए। एकदम उल्टी तरफ।"

"तू सच में घटिया इंसान है।" जगमोहन मुस्कराया।

"मैं ज्योतिष का काम भी जानता हूं और बता सकता हूं कि तुम तीनों बहुत जल्द मरने वाले हो, परंतु तुम तीनों की ही उम्र बहुत लम्बी है। जीते-जीते तंग आ जाओगे।" बूंदी ने कहा।

"आशीर्वाद दे रहा है या फांसी की सजा सुना रहा है।" सोहनलाल ने कड़वे स्वर में कहा।

"इन दोनों बातों में कौन-सी बात सच है?" जगमोहन ने बूंदी की आंखों में झांका।

"दोनों ही सच हैं। वैसे ये पता लगाना तुम लोगों का काम है कि कौन-सी बात सच है।"

"ये इसी तरह की बातें करके हमारा दिमाग खराब करता रहेगा।" नानिया बोली।

"मैं तुम्हारा हाथ...।"

"चुप रहो।" नानिया उखड़ी।

"फिर नाराज हो गई। जबकि मैं तुम्हें खुश देखना चाहता हूं।" बूंदी ने गहरी सांस लेकर कहा।

"तुम हमें काम की बात बताओगे या यूं ही उल्टी बात करते रहोगे?"

"पूछो-पूछो। काम की बात पूछो।"

"सामने वाला रास्ता किधर है, जहां से देवराज चौहान ने आना है।"

"पूर्व या पश्चिम। इन दोनों तरफ से एक रास्ता चुन लो।" बूंदी मुस्कराया—"इससे या तो तुम्हारी उम्र लम्बी हो जाएगी या छोटी। या तो देवा से मिल लोगे या नहीं।"

"ये इसी तरह की बातें करेगा।"

"जथूरा कहां है?"

"वो जहां भी है आराम से है, परंतु दुखी बहुत है।" बूंदी ने मुंह लटकाकर कहा—"सोबरा का कालचक्र पकड़ते ही उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। लेकिन जो भी हुआ, उससे वो खुश है।"

"तुम पागल तो नहीं हो।" नानिया ने तेज स्वर में कहा।

"बिल्कुल नहीं। मैं तो सेवक हूं।"

जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"हम देवराज चौहान से नहीं मिलना चाहते।"

"ये तो अच्छी बात है।" बूंदी बोला।

"तो अब कहां जाएं?"

"उत्तर चले जाओ। दक्षिण चले जाओ। वहां देवा से मुलाकात नहीं होगी।"

"हम जथूरा से भी नहीं मिलना चाहते।"

"फिर तो तुम लोगों को पूर्व या उत्तर दिशा में जाना होगा।" बूंदी कह उठा।

"ये हमारे किसी काम का नहीं।" सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

"इसे पकड़कर पीटना शुरू कर दो। ठीक हो जाएगा।" नानिया ने गुस्से से कहा।

"तुम अपना हाथ थामने का मुझे मौका दो। फिर मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं होने दूंगा।"

"बूंदी।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कहो—कहो।" बूंदी ने सिर हिलाकर जगमोहन को देखा।

"हमें महाकाली ने तिलिस्मी पहाड़ी में इसलिए प्रवेश दिया है कि हम देवराज चौहान को समझाकर वापस ले जाएं।"

"मालूम है।"

"तो ये काम हम तभी कर सकते हैं, जब देवराज चौहान से हमारी मुलाकात हो जाए।"

"ठीक कहते हो।"

"तो तुम हमें बताओ कि हम किधर जाएं, जहां देवराज चौहान हमें मिले।"

"बताया तो है, पूर्व चले जाओ, पश्चिम चले जाओ। उम्र लम्बी या छोटी हो जाएगी। देवा मिलेगा या... ।"

इसी पल जगमोहन ने बाज की तरह बूंदी पर झपट्टा मारा।

और तीनों को हक्के-बक्के रह जाना पड़ा।

तब उन्हें मालूम हुआ कि बूंदी मानव नहीं, मानव की छाया-भर है।

जगमोहन बूंदी के हवारूपी इंसानी शरीर को पार करता हुआ नीचे जा गिरा।

ऐसा होते ही बूंदी का छायारूपी शरीर पल-भर के लिए छिन्न-भिन्न हुआ और अगले ही पल वो सामान्य दिखने लगा। उसके होंठ मुस्कराहट के रूप में फैलते चले गए।

जगमोहन गिरते ही संभला और फुर्ती से उठकर, बूंदी को देखा।

बूंदी बराबर मुस्करा रहा था।

नानिया ने सोहनलाल का हाथ पकड़ लिया। दोनों हैरान थे।

"तुम लोग मुझे पकड़ नहीं सकते। मुझ पर वार नहीं कर सकते।"

"तुम कैसे इंसान हो?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं भी तुम जैसा ही हूं, परंतु महाकाली का सेवक हूं। तुम लोगों के सामने तो मैं छाया-भर हूं। मेरा असली शरीर तो एक कमरे में है। जहां मैं रहता हूं।" बूंदी ने मुस्कराते हुए कहा।

"तुम धोखा हो।"

"तुमने कैसे सोच लिया कि महाकाली के सेवक पर हाथ डाल लेंगे।"

"तुम तो मेरा हाथ पकड़ने को कह रहे थे।" नानिया बोली।

"हां पकडूं क्या?"

"तुम तो छाया भर हो। मेरा हाथ नहीं पकड़ सकते।" नानिया ने सिर हिलाकर कहा।

बूंदी मुस्कराता रहा।

"तुम हमें भटकाने के लिए यहां मौजूद हो या राह दिखाने के लिए?" जगमोहन ने पूछा।

"दोनों ही बातें हैं।"

"वो कैसे?"

"जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूं कि हर बात के दो जवाब दूंगा। एक झूठा, एक सच्चा। सच को पहचान सको तो समझ लेना कि मैंने राह दिखाई। सच को नहीं समझे तो समझ लो, मैंने भटका दिया।"

"बेहतर होगा कि अब से इसकी बात को गम्भीरता से न लिया जाए।" जगमोहन ने सोहनलाल से कहा।

"तुम जाओ।" सोहनलाल बोला—"हमें तुम्हारी जरूरत नहीं है।"

"मेहमानों का मार्गदर्शक बनना ही मेरा काम है।"

"हम तुम्हें अपने पास नहीं चाहते।"

"मैं तो नहीं जाऊंगा।"

"तुम मेरा हाथ क्यों नहीं पकड़ लेते?"

"मेरी ऐसी किस्मत कहां कि कालचक्र की रानी साहिबा का हाथ थाम सकूं।" बूंदी ने गहरी सांस लेकर कहा।

"तुम तो मेरे बारे में सब जानते हो।" नानिया बोली।

"मैं सबके बारे में सब जानता हूं।"

तभी जगमोहन ने राह चलती औरत से पूछा।

"यहां सूर्य किधर से निकलता है?"

"उधर से।" औरत ने एक दिशा की तरफ इशारा किया—"कहां जाना है तुम्हें?"

"पहाड़ी के सामने वाले रास्ते की तरफ।"

"कौन-सी पहाड़ी—यहां तो कई पहाड़ियां हैं।"

"मैं उस पहाड़ी की बात कर रहा हूं, जिसके भीतर ये सब चीजें मौजूद हैं।" जगमोहन ने कहा।

"मुझे तुम्हारी बातें समझ नहीं आ रहीं।" कहकर वो आगे बढ़ गई।

जगमोहन ने बूंदी को देखा।

बूंदी मुस्करा रहा था।

जगमोहन ने नानिया से कहा।

"जथूरा की नगरी और सोबरा की नगरी, दोनों किस दिशा में हैं?"

"जथूरा की पूर्व की तरफ और सोबरा की पश्चिम की तरफ।"

"तो हम पूर्व की तरफ बढ़ेंगे।" जगमोहन ने कहा।

"ऐसी गलती मत करना।" कह उठा बूंदी—"पूर्व की तरफ जाओगे तो उम्र घट जाएगी। पश्चिम की तरफ जाओगे तो उम्र बढ़ेगी।"

"हमें तुम्हारी बातों की परवाह नहीं।"

"मैं तुम लोगों का भला चाहता हूं।"

"हम पश्चिम की तरफ से, सोबरा की नगरी में आए हैं।" सोहनलाल बोला—"तो हमें पूर्व की तरफ ही जाना चाहिए।"

"हां। इसकी बातों की परवाह मत करो।"

तीनों पूर्व दिशा की तरफ चल पड़े।

नानिया ने सोहनलाल का हाथ पकड़ लिया।

बूंदी भी उनके साथ चल पड़ा।

"तुम जाते क्यों नहीं?" जगमोहन बूंदी से कह उठा।

"तुम तीनों की मौत देखने से पहले मैं कैसे जा सकता हूं।"

"इससे बात ही मत करो।" नानिया बोली।

उसके बाद तीनों ने बूंदी से बात नहीं की।

जबकि बूंदी कुछ-न-कुछ कहता ही रहा।

चलते-चलते तीनों उस बाजार से तो क्या, बस्ती से भी बाहर, दूर आ गए थे। पत्थरों से भरा रास्ता था ये जिसे तय करते हुए उन्हें काफी वक्त बीत चुका था। परंतु रास्ता खत्म होने का नाम नहीं ले रहा था।

बूंदी अब खामोश-सा उनके साथ चल रहा था।

"सोहनलाल।" नानिया बोली—"अब थकान होने लगी है।"

"मैं भूख भी महसूस कर रहा हूं।" सोहनलाल ने आसपास देखते हुए कहा—"हमें आराम कर लेना चाहिए। यहां खाने को तो कुछ मिलेगा नहीं। हमें उस बस्ती से ही खाने का सामान लेकर चलना चाहिए था।"

"बूंदी के होते हुए आप लोग चिंता क्यों करते हैं।" बूंदी कह उठा—"मैं खाना अभी हाजिर कर देता हूं।"

"तुम खाना दोगे?" नानिया ने उसे देखा।

"पलों में हाजिर कर दूंगा। आप लोग एक बार हुक्म तो करें, मैं तो सेवक हूं।"

तभी जगमोहन कह उठा।

"नदी बहने की, पानी की आवाज आ रही है।"

"नहीं?" सोहनलाल ने नानिया को देखा—"तुम्हें कोई आवाज सुनाई दे रही है?"

"नहीं तो।"

"आगे बढ़ो।" जगमोहन ने कहा—"पास में पानी है।"

वे आगे बढ़ते रहे।

जगमोहन का कहना सच था।

कुछ ही देर में नदी पर पहुंच गए।

परंतु नदी का रूप देखकर वो सिहर उठे।

पानी की जगह लावा बह रहा था। सुनहरी-लाल रंग का। नदी में से अंगारे उछल-उछलकर किनारे पर या नदी के बीच ही गिर रहे थे। बहती नदी में बड़े-बड़े अंगारे लावे के साथ बह रहे थे।

"ये तो लावे की नदी लगती है। कहीं पर ज्वालामुखी फटा है।" सोहनलाल ने कहा।

जगमोहन ने बूंदी को देखा और बोला।

"ये कैसी नदी है?"

"ये ठंडी भी बहुत है और गर्म भी बहुत है। पूर्व दिशा में जाना है तो इसे पार करना पड़ेगा।"

"बेवकूफ।" सोहनलाल बोला—"आग उगलती नदी को पार किया जा सकता है क्या?"

"किया भी जा सकता है और नहीं भी किया जा सकता।"

"तुम हमारे लिए खाने का इंतजाम करो।"

"अभी करता हूं।" बूंदी ने शांत स्वर में कहा।

जगमोहन, सोहनलाल और नानिया की परेशानी-भरी निगाह नदी पर थी।

नदी में लावा उफान पर था।

दिल दहल-सा रहा था, नदी को देखते हुए।

वे तीनों नदी के किनारे से पंद्रह-बीस फुट की दूरी पर खड़े थे।

"बूंदी कहता है कि पूर्व दिशा की तरफ बढ़ना है तो नदी पार करनी होगी, जो कि सम्भव ही नहीं है।" सोहनलाल बोला।

"क्या पता ये झूठ कह रहा हो।" नानिया ने कहा।

"ये झूठ नहीं कह रहा। क्योंकि इसने एक ही बात कही है इस बारे में। दो बातें नहीं कहीं।"

"खाना हाजिर है।"

बूंदी की आवाज सुनकर तीनों पलटे।

अपने पीछे टेबलों पर खाना लगा देखा। पानी का घड़ा भी वहां था।

"ये तुमने कैसे कर लिया?" सोहनलाल ने बूंदी को देखा।

"मैं कुछ भी नहीं। ये तो महाकाली की छोटी-सी माया है।" बूंदी ने कहा।

नानिया आगे बढ़कर खाने को चैक करने लगी।

"एकदम असली और ताजा है।" बूंदी कह उठा—"मेहमानों को हम पूरी इज्जत देते हैं।"

"वो तो नजर आ ही रहा है।" नानिया कड़वे स्वर में बोली।

नानिया पलटकर जगमोहन और सोहनलाल से बोली।

"खाना ठीक है, खा लो।"

वे पास आ गए। घड़े के पानी से हाथ मुंह धोया। टेबल पर खाना था परंतु कुर्सियां नहीं थीं।

"कुर्सियां होतीं तो आराम से खाना खाते।" सोहनलाल ने कहा।

"मेहमानों का हम इतना भी ध्यान नहीं रखते कि वे आलसी हो जाएं।" बूंदी कह उठा।

"बहुत चिंता रहती है मेहमानों की तुम्हें।"

"क्यों न होगी। सेवक का पहला काम ही मेहमाननवाजी है।" बूंदी ने मुस्कराकर कहा।

टेबल के पास खड़े होकर ही तीनों ने खाना शुरू किया।
खाना सच में बढ़िया था। मजे से, पेट भर के खाया।
"मुझे समझ नहीं आता कि हम लावे की नदी को कैसे पार करेंगे?" सोहनलाल बोला।
"नहीं कर सकते।" नानिया ने कहा—"नदी को देखकर तो मेरा दिल कांप रहा है।"
पानी पीने के बाद जगमोहन फुर्सत में आया और बूंदी से बोला।
"बाकी का खाना तुम खा लो।"
"मेहरबानी, जो आप को मेरा खयाल रहा।" बूंदी ने शराफत से कहा।
अगले ही पल वो टेबल बचे खाने सहित गायब हो गया।
"हम नदी कैसे पार करेंगे?" जगमोहन ने पूछा।
"तैरकर भी पार कर सकते हैं। परंतु ऐसा करने पर या तो आप जिंदा रहेंगे या मर जाएंगे।" बूंदी ने कहा।
जगमोहन मुस्कराया। नजरें बूंदी पर थीं। फिर बोला।
"एक बात मैंने अभी-अभी महसूस की है।"
"क्या?"
"लावे की नदी है ये। नदी में अंगारे नाच रहे हैं, परंतु गर्मी हमें महसूस नहीं हो रही।"
"ये ही तो महाकाली की माया है।"
"इसका राज क्या है?"
"मैं नहीं बता सकता।"
"ठंडे लावे की नदी होती तो लावा जम चुका होता। जमा लावा नदी के रूप में नहीं बह सकता। परंतु ये बह रहा है, यानी कि लावा गर्म है। गर्म है तो नदी के किनारे पर हम दो पल भी खड़े नहीं रह सकते थे।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा।
"ओह।" सोहनलाल के होंठों से निकला—"इस तरफ तो मैंने ध्यान ही नहीं दिया था। तुमने ठीक बात कही।"
जगमोहन की निगाह बूंदी पर थी।
बूंदी शांत खड़ा उन्हें देख रहा था।
"तुम इस बारे में कुछ कहो बूंदी।"
"नदी का रहस्य तो तुम लोगों को ही समझना होगा जग्गू।" बूंदी ने कहा।
जगमोहन की निगाह लावे की नदी पर जा टिकी। फिर वो नदी की तरफ बढ़ा।
"तुम कहां जा रहे हो?" सोहनलाल ने उसकी बांह पकड़ी।

"फिक्र मत करो। नदी में कूदने का मेरा इरादा नहीं है।" जगमोहन मुस्कराया।

सोहनलाल जगमोहन के साथ ही रहा। दोनों किनारे पर आकर ठिठके।

जगमोहन आंखें सिकोड़े, बहते लावे को देखे जा रहा था।

सोहनलाल बेचैन दिखा।

"चार-पांच फुट लम्बी पेड़-पौधे की टहनी लाओ सोहनलाल।"

सोहनलाल वहां से हटकर पेड़ और झाड़ियों की तरफ बढ़ गया।

एक तरफ खड़ी नानिया ने बूंदी से कहा।

"अगर तुम नदी का रहस्य बता दो तो मैं तुम्हें पकड़ने के लिए, अपना हाथ दे सकती हूं।"

"मेरा ऐसा सौभाग्य कहां कि तुम्हारा हाथ पकड़ सकूं।" बूंदी ने गहरी सांस लेकर कहा।

"मेरा हाथ पकड़ोगे तो सुख मिलेगा।"

"जानता हूं।"

"कैसे जानते हो?"

"हर औरत का हाथ पकड़ने में सुख मिलता है। मैं बहुत सुख ले चुका हूं। अब और नहीं लेना चाहता।"

"तुम तो मेरा हाथ पकड़ने को बहुत बेसब्र थे।"

"वो तो मैं अब भी हूं। परंतु मैं अपनी छाया से, अपनी इच्छा पूरी नहीं करा सकता।"

"तुम शरीर के साथ सामने आकर, मेरा हाथ पकड़ लो। परंतु नदी का रहस्य बताना होगा।"

बूंदी मुस्कराया। फिर कह उठा।

"जग्गू नदी का रहस्य खोजने में जुटा है। शायद वो रहस्य पा ले।"

"तुम किसी काम के नहीं हो।" नानिया ने कहा और मुंह बनाकर जगमोहन की तरफ बढ़ गई।

तब तक सोहनलाल पांच फुट लम्बी डंडी लिए जगमोहन के पास आ गया था।

"लो।"

जगमोहन ने डंडी थामी और एक सिरे से पकड़कर दूसरा सिरा बहते लावे में डाला।

नानिया ने सोहनलाल का हाथ पकड़ लिया।

"लगता है हम फंस गए।"

"चुप रहो।" सोहनलाल ने कुछ दूर खड़े बूंदी को देखा—"सब ठीक हो जाएगा।"

जगमोहन ने डंडी बाहर निकाली तो वो गीली जैसी दिखी।

"ये क्या।" सोहनलाल के होंठों से निकला—"लावे ने इस डंडी को पूरी तरह जला देना था, लेकिन ये तो गीली है।"

जगमोहन ने गीला सिरा पुनः ध्यान से देखा और उसके बाद फिर उसे बहते लावे में डाल दिया।

"क्या कर रहे हो?" सोहनलाल ने पूछा।

"देखते रहो।"

कुछ पलों बाद जगमोहन ने डंडी को पुनः बाहर निकाला।

वो पहले की ही तरह गीली थी।

जगमोहन ने गीले सिरे पर उंगली रखी।

सब ठीक रहा।

गर्मी का एहसास नहीं हुआ। डंडी का गीला सिरा ठंडा महसूस हुआ।

जगमोहन ने डंडी का गीला सिरा मुट्ठी में जकड़ लिया।

सोहनलाल के होंठ भिंच गए।

"हाथ जल जाएगा।" नानिया चीखी।

परंतु सब ठीक रहा।

जगमोहन के हाथ को ठंडक का एहसास हुआ।

"सब ठीक है। ये ठंडी नदी है।"

"ये...ये क्या कह रहे हो?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"बहता लावा और उस पर लुढ़कते अंगारे मात्र आंखों का धोखा है। मायावी खेल है महाकाली का।" फिर अगले ही पल नीचे झुकते हुए जगमोहन ने अपना हाथ लावे की बहती नदी में डाल दिया।

"रुको।" सोहनलाल चीखा।

नानिया का मुंह खुला का खुला रह गया।

फिर जैसे आंखों को धोखा हुआ हो।

लावे की नदी एकाएक शीतल जल में बदलती चली गई। इस तरह जैसे किसी ने जादू के जोर से सब कुछ बदल दिया हो। लावे की नदी में बहते अंगारे भी गायब हो गए।

अब तो स्पष्ट साफ पानी की बहती नदी नजर आने लगी थी। पानी में छोटे-बड़े पत्थर, बहाव के साथ धीमे-धीमे से लुढ़क रहे थे, जैसे पहले लावे की नदी में अंगारे लुढ़क रहे थे।

दृश्य बदल चुका था।

जगमोहन ने नदी से हाथ बाहर निकाला तो हाथ में लगी पानी की बूंदें नीचे गिरीं।

सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

नानिया की हालत अभी तक सुधरी नहीं थी।

जगमोहन पलटा और सोहनलाल को देखकर मुस्कराया।

"तुम्हारा दोस्त पागल तो नहीं है।" नानिया के होंठों से निकला।

"क्यों?" सोहनलाल ने नानिया को देखा।

"लावे की नदी में हाथ डाल दिया।"

"उसे विश्वास रहा होगा कि सब ठीक है, तभी उसने ऐसा किया।" सोहनलाल ने कहा।

"अगर उसका विश्वास गलत होता तो लावा में जलकर उसका हाथ ही गायब हो जाना था।"

तभी जगमोहन बोला।

"अब हम आगे बढ़ सकते हैं। ये मायावी नदी थी। मेरे हाथ का स्पर्श पाते ही सामान्य ढंग में बदल गई।"

"अगर ये सच में लावे की नदी होती तो?" नानिया बोली।

"मुझे विश्वास था कि ये लावे की नदी नहीं है। क्योंकि लावे में इतनी गर्मी होती है कि इंसान उसके पास तो क्या दूर भी खड़ा नहीं हो सकता। लावा कभी भी ठंडा नहीं होता।"

"तुम अगर किसी से प्यार करते तो, तब ऐसी हरकत हरगिज न करते। क्यों सोहनलाल?"

"ह...हां।"

"तू तो इसकी गोद में बैठ जा सोहनलाल।" जगमोहन ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा।

"ये तो बैठेगा। तुम क्यों जलते हो।" नानिया तुनककर बोली।

जगमोहन ने बूंदी की तरफ देखा।

बूंदी मुस्कराता हुआ उसे ही देख रहा था। वो पास आ गया।

"तुमने तो जंग जीत ली जग्गू।" बूंदी बोला।

जगमोहन कुछ नहीं बोला।

"ये मायावी, लावे की नदी ने तब ही सामान्य होना था, जब इसके पानी को कोई छू लेता। जबकि बहते लावे को देखकर कोई इसके भीतर हाथ डालने की हिम्मत नहीं कर सकता था। परंतु तुमने कर दिया जग्गू। सच में हिम्मत वाले हो।"

जगमोहन की निगाह बहते पानी पर जा टिकी।

"तेज बहाव है। परंतु तैरा जा सकता है।" बूंदी बोला।

सोहनलाल और नानिया जगमोहन के करीब आ गए।

"तुम तैरना जानती हो?" जगमोहन ने नानिया से पूछा।

"हां-हां—मैं गांव के तालाब पर तैरा करता थी।" नानिया ने फौरन कहा।

"ये गांव का तालाब नहीं है।" सोहनलाल बोला—"बहती नदी है।"

"मैं तैरकर पार कर लूंगी इसे।" नानिया ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

सोहनलाल ने बूंदी को देखा और कह उठा।

"तुम खड़े-खड़े मुंह क्या देख रहे हो?"

"मैं आप तीनों की सेवा के लिए मौजूद हूं।" बूंदी ने मुस्कराकर कहा।

"तुम हमारी कोई सेवा नहीं कर सकते।" सोहनलाल ने तीखे स्वर में कहा।

"इतनी जल्दी भूल गए। मैंने कुछ पहले ही तुम लोगों को भर पेट खाना खिलाया है।" बूंदी बोला।

"चलो हम नदी पार कर लें।" जगमोहन ने कहा।

"इतना आसान भी नहीं है नदी पार करना।" बूंदी कह उठा।

"क्यों?" जगमोहन बोला—"ये नदी पचास फुट चौड़ी है। आसानी से तैरकर... ।"

"नदी में मगरमच्छ हो भी सकते हैं और नहीं भी।" बूंदी ने कहा।

तीनों की निगाह नदी के बहते पानी पर जा टिकी।

स्वच्छ पानी तेजी से बह रहा था। पानी इतना साफ था कि नीचे तक स्पष्ट देखा जा सकता था।

परंतु पानी में मगरमच्छ तो क्या मछली तक न दिखी।

"तुम।" जगमोहन ने तीखी निगाहों से बूंदी को देखा—"हमें भटका रहे हो।"

"नहीं मैं सच कह रहा हूं। नदी में मगरमच्छ हो भी सकते हैं और नहीं भी। मगरमच्छ तुम तीनों की उम्र लम्बी भी कर सकते हैं और छोटी भी। तुम लोग मर भी सकते हो और जिंदा भी रह सकते हो।"

"इसकी बात पर हमें ध्यान देना चाहिए।" सोहनलाल ने कहा—"ये हर बात दोनों तरफ की कर रहा है।"

"पानी साफ है। मगरमच्छ नहीं है नदी में।"

"मैंने तो पहले ही कहा है कि मगरमच्छ हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते।" बूंदी पुनः बोला।

"चलो हम नदी पार करें।" जगमोहन बोला।
सोहनलाल ने नानिया से पूछा।
"तुम सच में ठीक से तैर लोगी?"
"हां सोहनलाल, मुझ पर भरोसा रखो।"
तीनों नदी में कूदने को तैयार हो गए।
पीछे खड़ा बूंदी कह उठा।
"अब हम दोबारा मिल भी सकते हैं और नहीं भी मिल सकते।"
जगमोहन ने गर्दन घुमाकर बूंदी को देखा और कह उठा।
"तुम्हारी गर्दन पकड़ने का मुझे कभी मौका मिल भी सकता है और नहीं भी मिल सकता।"
"ये मौका तुम्हें कभी नहीं मिलेगा जग्गू।" बूंदी ने मुस्कराकर कहा।
"इसके मुंह मत लगो।" नानिया ने उखड़े स्वर में कहा।
फिर जगमोहन, सोहनलाल और नानिया नदी में कूदते चले गए।
पानी का बहाव तेज था। तैरकर आगे बढ़ने में उन्हें थोड़ी-बहुत परेशानी हो रही थी।
सोहनलाल ने पानी से मुंह निकालकर नानिया को देखा और बोला।
"तुम ठीक हो नानिया?"
"हां-हां।" नानिया का मुंह पानी से बाहर था—"मेरी फिक्र मत करो।"
जगमोहन उनसे पांच फुट आगे जा चुका था।
अभी उन्होंने आधी नदी पार की थी कि सोहनलाल और नानिया चिहुंक पड़े।
एक तरफ से जगमोहन के पास उन्होंने मगरमच्छ को आते देखा।
मोटा-सेहतमंद दस फुट लम्बा मगरमच्छ। उसके जबड़े कैंची की तरह खुले हुए थे। लम्बे-नुकीले दांत चमक रहे थे। मोटी खुरदरी चमड़ी जैसे मन में डर पैदा कर रही थी।
"जगमोहन।" सोहनलाल गला फाड़कर चीखा—"मगरमच्छ।"
परंतु शायद जगमोहन नदी के बहने के शोर में आवाज सुन नहीं पाया।
सुन भी लेता तो तब भी अपने बचाव में कुछ नहीं कर सकता था।
उसके देखते ही देखते मगरमच्छ ने अपने खुले जबड़ों में

जगमोहन के शरीर को फंसाया और पानी के बीच गुम होता चला गया। ये सब दो पलों में ही हो गया।

सोहनलाल और नगीना हक्के-बक्के से, तैरना भूलकर पानी में ही ठहर चुके थे जैसे।

"सोहनलाल तुम्हारा दोस्त मर गया।" नानिया चीखी।

"अभी नहीं मरा।" सोहनलाल बदहवास-सा था।

"मगरमच्छ उसे खा जाएगा।"

"यहां मत रुको। जल्दी से किनारे की तरफ बढ़ो।" कहकर सोहनलाल ने होंठ भींचे तैरना शुरू कर दिया।

नानिया भी जल्दी से तैरने लगी।

अभी वे दोनों थोड़ा ही आगे गए होंगे कि एकाएक नानिया सिहर उठी।

उसकी टांगों से कोई चीज छुई।

"सोहनलाल।" नानिया चीखी—"कोई है।"

तैरता सोहनलाल उसी पल ठिठका और पलटकर पीछे देखा।

अगले ही पल सोहनलाल की आंखें भय से फटकर फैलती चली गईं।

उसने नानिया के पास बहुत बड़े मगरमच्छ को देखा। जो कि अपने जबड़ों में नानिया को भींचने जा रहा था और देखते ही देखते नानिया को अपने जबड़ों में भींचा और पानी में गुम होता चला गया।

इससे पहले कि सोहनलाल कुछ सोच पाता कि क्या किया जाए, तभी उसकी टांगों से किसी चीज के टकराने का एहसास हुआ। ठंडी सिहरन सोहनलाल के शरीर में दौड़ती चली गई।

अगले ही पल उसे अपने बेहद करीब जबड़े खोले मगरमच्छ दिखा।

उसके गले तक का नजारा, सोहनलाल ने स्पष्ट देखा। मौत नाच उठी आंखों के सामने कि तभी मगरमच्छ का खुला जबड़ा पेट की तरफ से, उसके शरीर के जबड़ों में फंसाया और पानी के भीतर गुम होता चला गया।

चंद पलों में ही पानी की हलचल थम गई।

सब कुछ सामान्य नजर आने लगा।

लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो।

किनारे पर खड़े बूंदी के चेहरे पर मुस्कान थिरक उठी। नजरें बहती नदी पर थीं।

देवराज चौहान, मोना चौधरी, नगीना, बांके-रुस्तम, पारसनाथ, महाजन, मखानी, कमला रानी, तवेरा और रातुला महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के पास पहुंच चुके थे। शाम ढल रही थी। कुछ ही देर में अंधेरा हो जाना था। सबके चेहरों पर थकान के भाव थे। देवराज चौहान रातुला के पास पहुंचा।

"अब क्या करना है। अंधेरा होने वाला है।" देवराज चौहान ने कहा।

"रुककर वक्त बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं।" रातुला ने कहा।

"ठीक है। रास्ता किधर से है, पहाड़ी के भीतर जाने का?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ऊपर से। पहाड़ी के ठीक ऊपर जथूरा के चेहरे का बुत लेटा हुआ है।" रातुला बोला—"उस बुत के नथुने गुफा जैसे हैं, उन्हीं में से भीतर जाना है।"

"तुम्हें ये बात कैसे पता?"

"दो बार हम पहाड़ी पर चढ़ाई कर चुके हैं। वहां तक पहुंच चुके हैं। परंतु जितने भी लोग भीतर गए, वो बाहर नहीं आए।"

"पहाड़ी पर चढ़ते हुए परेशानी नहीं आई कोई?"

"आई। महाकाली रुकावटें डालती है।" रातुला ने कहा—"हमारे आधे लोग तो पहाड़ी चढ़ने के दौरान ही जान गंवा बैठे।"

"फिर तो हमें भी खतरा है।"

"हां।" रातुला ने गम्भीरता से सिर हिलाया—"परंतु चिंता की खास बात नहीं है। तवेरा हमारे साथ है, वो मुकाबला कर लेगी, पहाड़ी पर मौजूद महाकाली की ताकतों से।"

देवराज चौहान ने कुछ दूर मौजूद तवेरा पर निगाह मारकर कहा।

"तुम नीलकंठ को भूल रहे हो।"

"ओह। सच में...उसे तो मैं भूल ही गया था।"

"जरूरत पड़ने पर नीलकंठ मोना चौधरी में प्रवेश करके हमारी सहायता करेगा।" देवराज चौहान ने कहा—"मोना चौधरी को मुसीबत में देखते ही नीलकंठ आ जाएगा।"

"फिर तो हमें जरा भी चिंता नहीं करनी चाहिए।" रातुला ने कहा—"हम अभी पहाड़ी पर चढ़ेंगे।"

देवराज चौहान तवेरा के पास पहुंचा।

"हम अभी पहाड़ी पर जाने का फैसला कर चुके हैं।"

"मैं तैयार हूं।"

"पहाड़ी पर महाकाली के बिछाए खतरे आ सकते हैं।"

"मैं उन खतरों को दूर कर दूंगी देवा।" तवेरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

उसके बाद सबने घोड़ों पर से अपना सामान उतारा और अपनी पीठ पर लाद लिया।

आधे घंटे में ही पहाड़ी पर चढ़ने की तैयारियां पूरी हो गईं।

अब तक अंधेरा घिर आया था। कुछ भी स्पष्ट नजर नहीं आ रहा था।

तवेरा ने अपने सामान में से अंडे के आकार की कांच की गोली निकाली और होंठों-ही-होंठों में मंत्र बुदबुदाकर ऊपर की तरफ उछाल दी। एकाएक वो गोली चमक उठी और बीस फुट ऊपर हवा में जा ठहरी। उसमें से प्रकाश की तीव्र किरणें निकलकर आस-पास की जगह में फैल गईं।

अंधेरे से भरी जगह रोशन हो उठी।

अब उन्हें सारा रास्ता स्पष्ट नजर आ रहा था।

पारसनाथ मोना चौधरी के पास पहुंचकर बोला।

"मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा तो अभी पहुंचे नहीं। वो पीछे आ रहे हैं।"

पास में मौजूद रातुला कह उठा।

"मोमो जिन्न की फिक्र मत करो। उसे जथूरा के सेवकों की तरफ से आदेश मिल जाएगा।"

उसके बाद वे सब पहाड़ी पर चढ़ने लगे।

चलते-चलते मखानी कमला रानी के पास आ पहुंचा।

"कैसी है तू कमला रानी?" मखानी ने बेहद प्यार से पूछा।

"मुझे क्या होना है।" कमला रानी ने लापरवाही से कहा।

"तेरे बिना दिल नहीं लगता।"

"मेरा भी कहां लगता है।"

"दिल चाहता है हर वक्त तेरे को गोद में लेकर बैठा रहूं।"

"हर वक्त।" कमला रानी के चेहरे पर तीखे भाव उभरे।

"हां, हर वक्त।"

"कोई और काम नहीं है तेरे को?"

"ये क्या कम काम है। सुन...।"

"बोल।"

"यहां मौका भी है, वक्त भी है। कुछ हो जाए।" मखानी ने दांत फाड़े—"देख, मना मत करना। बहुत मन है।"

कमला रानी ने गहरी सांस ली।

"क्या हुआ?"

"तू क्या समझता है कि मेरा मन नहीं होता।"

"फिर तू कहती क्यों नहीं कि... ।"

"तेरे को बताया है न कि औरत की चुप में ही हां है। तू समझता क्यों नहीं।"

"विश्वास नहीं होता इस बात का।"

"क्यों?"

"जब मैं अपनी पत्नी से कहा करता था कि आ, तो वो चुप रहती थी, जब मैं पास पहुंचता तो वो भड़क उठती थी।"

"वो बाहर से खाकर आती होगी। पेट भरा रहता होगा उसका।"

"तेरे पेट का क्या हाल है?"

"खाली ही रहता है।"

"तो इस भीड़ से कुछ पीछे हो जा।" मखानी धीमे से बोला—"हम प्यार कर लेते हैं।"

"अभी नहीं।"

"कर दी ना।"

"ये मना नहीं है—ये तो... ।"

"कमला रानी।" भौरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"इन बातों की तरफ ध्यान मत दो।"

"मखानी कह रहा है।"

"तू उसकी बात की परवाह मत कर।"

"ठीक है।"

तभी मखानी कह उठा।

"क्या हुआ?"

"भौरी कहती है कि ये वक्त इन बातों का नहीं है।"

"इन बातों के लिए तो कोई भी वक्त हो सकता है।" मखानी ने मुंह बनाया—"तू भौरी की बात की परवाह मत कर।"

"वो डांटती है।"

"डांटने दे। तू धीमे हो जा। इन सबसे पीछे होकर, हम जल्दी से प्यार कर... ।"

"मखानी।" शौहरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी—"तू काम के वक्त में, उल्टी बातें क्यों करता है।"

"मेरी बातें तेरे को हमेशा ही उल्टी लगती हैं। कभी पूरी की तूने मेरी बात।"

"इस वक्त तू काम करेगा या ये सब... ।"

"दोनों बातें कर लूंगा।" मखानी ने बच्चों जैसी जिद की।
"मत भूल तू इस वक्त महाकाली की पहाड़ी चढ़ रहा है। यहां कभी भी कुछ भी हो सकता है। अगर तू काम के वक्त इसी तरह की बातें करता रहा तो, मैं तेरे को कालचक्र से अलग कर दूंगा।"
"कमला रानी को भी अलग कर।"
"उसे नहीं, वो काम के प्रति गम्भीर है।"
"फिर मैं अलग क्यों होऊं, मैंने कमला रानी के साथ ही...।"
तभी आगे की तरफ से चीख गूंजी।
"क्या हुआ?" मखानी के होंठों से निकला।
"आगे कुछ हुआ है मखानी।" कमला रानी जल्दी से कह उठी—"आ, देखें।"

▭ ▭

रातुला सबसे आगे था। उसके साथ तवेरा थी। बाकी सब पीछे थे।
ऊपर हवा में तैरती उस छोटी-सी गोली से निकलती तीव्र रोशनी से, वहां की सारी जगह रोशन हो रही थी। आगे बढ़ने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं हो रही थी।
अभी वे लोग पहाड़ी पर सौ-डेढ़ सौ कदम ही आगे बढ़े होंगे कि एकाएक पहाड़ी की आगे की जमीन किसी खाई की तरह फटती चली गई। ये सब अचानक हुआ।
रातुला भीतर गिरा। उसके होंठों से चीख निकली।
सबका ध्यान रातुला की तरफ हुआ।
तब तक रातुला ने फुर्ती से खाई के किनारे का हिस्सा थाम लिया था। अब वो नीचे लटकने लगा था। सब ठिठक चुके थे। तवेरा सबसे आगे थी। उसने खाई के भीतर झांका।
तवेरा के होंठ भिंच गए।
खाई में सांप-बिच्छू भरे हुए थे। जो कि भीतर लटकते रातुला तक पहुंचने की चेष्टा कर रहे थे। उनमें ज्यादा फासला नहीं बचा था।
"मुझे बचाओ तवेरा।" रातुला फंसी आवाज में कह उठा।
तभी महाजन पास आ पहुंचा और झुकते हुए नीचे बैठते कह उठा।
"लाओ, मुझे अपना हाथ दो।"
"रहने दो नीलसिंह।" तवेरा कह उठी—"इसे मैं निकालती हूं।"
"लेकिन...।"
तब तक तवेरा ने अपनी कमर पर लटके लबादे से छोटी-सी

डंडी निकाली और उसे खाई की तरफ करके कुछ होंठों ही होंठों में बुदबुदाई। जाने क्या मंत्र था वो जो कि समझ में नहीं आया।

परंतु उसके खामोश होते ही एकाएक सिरों पर चमगादड़ जैसा पक्षी नजर आने लगा। इसके साथ ही उस पक्षी ने खाई में झपट्टा मारा और दूसरे ही पल उसके पंजों में रातुला की टांगें दबी थीं। वो हवा में रातुला को खाई से बाहर लाया और पास ही जमीन पर रखकर खुद आकाश के अंधेरे में कहीं गायब हो गया।

रातुला जमीन पर पड़ा, गहरी-गहरी सांसें लेने लगा।

हवा में ऊपर मंडराती गोली से निकलता प्रकाश पास में हर तरफ चमक रहा था। चंद पलों के लिए वहां खामोशी उभर आई थी।

देवराज चौहान रातुला की तरफ लपका।

बांकेलाल राठौर तवेरा के पास पहुंचा। तवेरा ने अभी भी छड़ी थाम रखी थी। तवेरा ने बांके को देखा और गहरी सांस लेकर अपने चेहरे पर छाया तनाव कम करने लगी। बांकेलाल राठौर का हाथ अपनी मूंछ पर पहुंचा और बोला।

"तुम तो घणो जादूगरनी हौवे तवेरो।"

तवेरा ने छड़ी को अपने कंधें पर लटके झोले में रख लिया।

"म्हारो को एक बातो बतायो तुमो।"

"बोल भंवर सिंह।" तवेरा ने उसे देखा।

"यो जादूगरी किधरो से सीखो हो तुम?"

"क्यों?" तवेरा मुस्कराई—"तुम्हें भी सीखनी है क्या?"

"हां, अंम भी सीखो हो, तंम सिखाओ म्हारे को?"

"ये आसान नहीं है सीखना।"

"कोणो बातो नेई। अंम मुश्किल से सीखो लयो।"

"इसके लिए वक्त चाहिए। बहुत ज्यादा वक्त।"

"म्हारे पासो बोत वक्तो हौवे। तुम राजी हौवो म्हारे को सिखाणो वास्ते?"

"तुमने तो वापस अपनी दुनिया में जाना है। ये दुनिया तुम्हारी नहीं है भंवर सिंह।"

"अंम रुक जायो। थारे से सबो कुछ सीखो के ही वापस जायो।"

"तुम नहीं सीख सकते।"

"काये को?"

"ये बहुत मेहनत और लम्बी तपस्या का काम है। हर कोई सीख सकता तो आज सब ही मेरी तरह निपुण होते।"

"तंम म्हारे को सिखायो। अंम तपस्यो करो हो।" बांकेलाल राठौर ने जिद-भरे स्वर में कहा।

"ठीक है, मैं सिखाऊंगी तुम्हें, अगर तुम सीख सके तो।"

"ठीको। ईब एको बात म्हारे को और बतायो।"

"क्या?"

"वो आसमानो से का आयो जो रातुलो को बाहर खींच के फेंक गयो।"

तवेरा ने मुस्कराकर बांके को देखा।

बांके की निगाह तवेरा पर थी।

"तुमने ये विद्या मुझसे सीखनी है न?"

"पक्को।"

"तो उस वक्त का इंतजार करो। जब तुम सीखोगे तब सब कुछ जान जाओगे।"

"ठीको। बढ़ियो।" बांकेलाल राठौर गर्दन हिलाता कह उठा—"पर ईक बातो तो म्हारे को जरूर बता दयो।"

तवेरा ने पुनः बांके को देखा।

"यो आसमानो में का चमको हो, जो रोशनी करो हो।"

"ये रोशनी वाली गोली है। मामूली करतब है ये।"

"ये मामूलो हौवे?"

"हां।"

"अंम थारे से सबो कुछ सीखो हो। यो रोशनी वालो गोली भी। म्हारो घरो में बिजली का बिलो बोत मोटो आये हो। अंम अपणो घरो के भीतरो इसो गोली से रोशनी करो हो।" बांकेलाल राठौर ने गर्दन हिलाकर कहा।

"रोशनी वाली गोली को अपने किसी स्वार्थ के लिए, रोशन करना मना है।"

"कौणो रोको म्हारे को?"

"ये विद्या का नियम है।"

"समझो।"

"बेहद खास जरूरत के वक्त ही इस विद्या का इस्तेमाल किया जाता है। अगर अपने स्वार्थ की वजह से बार-बार इस विद्या का इस्तेमाल किया जाए तो ये विद्या भूलनी आरम्भ हो जाती है।"

"समझ गयो। कोणों बातें नेई। अंम बां ये बिजली का बिलो मोटो दे दयो। पर यो विद्यो जरूरो सीखो।"

देवराज चौहान ने रातुला को संभाला।

"तुम ठीक हो रातुला?"

"हां।" रातुला स्वयं ही बैठता कह उठा।

"तुम बुरे बचे हो।" मोना चौधरी ने कहा और नजरें खाई की तरफ उठ गईं।

"उसमें सांप-बिच्छू भरे हैं।" महाजन ने कहा।

"महाकाली हमें रोकने की पूरी चेष्टा करेगी।" मोना चौधरी ने होंठ भींचे कहा।

रातुला उठ खड़ा हुआ। उसने तवेरा को देखकर कहा।

"तुमने मुझे बचा लिया तवेरा।"

तवेरा ने जवाब में कुछ नहीं कहा। नजरें हर तरफ घूमती रहीं।

"हम आगे कैसे बढ़ेंगे।" नगीना बोली—"आगे तो खाई है, जो कि दोनों तरफ से दूर तक जा रही है।"

"महाकाली मानने वाली नहीं।" तवेरा बोली—"वो अभी और कुछ भी करेगी।"

"क्या?"

"मैं नहीं जानती। लेकिन वो करेगी कुछ। वो हमें मंजिल तक नहीं पहुंचने देगी। ये ही उसकी कोशिश होगी।" तवेरा के होंठों में खिंचाव आ गया—"इस खाई को तो मैं अभी बंद करती हूं।" कहने के साथ ही तवेरा ने अपने झोले से ऐसी छड़ी निकाली जिसमें कांटे लगे हुए थे। उसने छड़ी को खाई की तरफ करके ऊंचे स्वर में कुछ मंत्र पढ़े और छड़ी को खाई के भीतर फेंक दिया। ऐसा लगा जैसे खाई के भीतर कुछ हलचल हुई हो।

अगले ही पल वो खाई बंद होने लगी।

फट चुकी जमीन के कोने एक-दूसरे की तरफ बढ़ने लगे।

"यो तो कमाल हो गयो तवेरो।" बांके खुशी से भरे स्वर में कह उठा।

चंद मिनट लगे कि वो खाई बंद हो गई। जमीन के दोनों किनारे आपस में मिलकर जमीन एकसार हो गई थी। पहाड़ी सामान्य नजर आने लगी थी।

"तंम म्हारे को यो विद्यो जरूर सिखायो।"

मखानी ने पास आकर कमला रानी को कोहनी मारी।

"क्या है?" कमला रानी मुंह बनाकर अपनी कोहनी को साफ करती कह उठी।

"उधर अंधेरे में आ-जा।"

"तू नहीं सुधरेगा।" कमला रानी ने कहा और दो कदम आगे बढ़ गई।

"हो गए नखरे शुरू। हाथ भी नहीं रखा अभी और बिदकने लगी।" मखानी गुस्से में झुंझलाया।

तभी तवेरा की आवाज सबको सुनाई दी।
"चलो। महाकाली की इन बातों से हमें डरना नहीं है। सावधान रहो। वो और भी हरकतें करेगी।"
फिर वे सब आगे बढ़ने लगे।
रोशनी की गोली ठीक उनके सिरों पर मंडराती उन्हें रास्ता दिखा रही थी।
चलते-चलते बांके और कमला रानी बराबर साथ हुए तो कमला रानी कह उठी।
"क्यों मुच्छड़। मजे हो रहे हैं।"
"मुच्छड़ो। तंम म्हारे को मुच्छड़ो कहो हो।"
"तेरी मूंछें हैं तो मुच्छड़ ही कहूंगी। कटवा दे इन्हें, तब नहीं कहूंगी।"
"म्हारे को मूंछों से बोत प्यारो हौवे।"
"तभी मूंछों पर लगाने के लिए मलाई ढूंढ़ता फिर रहा है।" कमला रानी ने आंखें नचाईं।
बांकेलाल राठौर ने दांत फाड़े। उसे देखा फिर कहा।
"तंम म्हारो को थोड़ी मलाईयो दे दयो।"
"थोड़ी क्यों मेरे मुच्छड़। मैं तो पूरी दे देती।"
"मखानो थारे को रोके हो।"
"मेरे को कोई नहीं रोक सकता।"
"फिरो का बात हौवे?"
"तुम मेरे को भाई से लगते हो।"
बांकेलाल राठौर ने ऐसे मुंह बनाया जैसे कड़वी दवा निगल ली हो।
"तंम म्हारे को दूसरो बारो भायो बोल्लो हो।" बांके ने जैसे शिकायत की।
"तेरे को बुरा लगा?"
"बोत बुरो लागे हो। म्हारे मन को हो कि अंम सबो को 'वड' दयो।"
"ठीक है। अब तेरे को भाई नहीं बोलूंगी।"
"पक्को वादो?"
"पक्का वादा।" कमला रानी मुस्कराई।
"मलाई मिलेगी मूंछों पे लगाने वास्ते?" बांकेलाल राठौर जल्दी से बोला।
"वो तो मैंने मखानी के लिए संभालकर रखी है।"
"म्हारी वैल्यू मखानी से ज्यादो हौवे।"

"मखानी नाराज हो जाएगा अगर तेरी मूंछों पे मलाई लगा दी तो।"

"मखानो को पतो ही न चल्लो हो कि अंम थारी मलाईयो खायो हो।" बांके ने धीमे स्वर में कहा।

"वो बड़ा कमीना है, सूंघकर बता देगा कि मैंने किसी को मलाई खिलाई है या नहीं।"

"तंम तो कांपो हो उसो से। अम मखानो को 'वड' दयो। वो म्हारे को मलाई न खाणो दयो, अंम... ।"

यही वो पल थे कि एकाएक उनके सिरों के ऊपर अंधेरे से भरे आसमान में पीले रंग का चमकता हुआ छल्ला नजर आने लगा। उसमें से हीरे की भांति रोशनी चमक रही थी। कुछ ऊपर था वो, जो कि धीरे-धीरे नीचे आने लगा। इसके साथ ही उसका आकार बड़ा होता जा रहा था। चमक बढ़ती जा रही थी।

सब ठिठक चुके थे।

नजरें आसमान पर नजर आते उसी छल्ले पर थीं।

"यो तो म्हारे को दूसरो ग्रहो से आयो लागे हो।" बांके चीखा—"परो यो हौवो का?"

"ये महाकाली की कोई नई चाल है।" तवेरा ने ऊंचे स्वर में कहा।

सबकी नजरें उस छल्ले पर थीं।

जो कि अब काफी नीचे, उनके करीब आ चुका था।

छल्ले की पीली रोशनी ने वहां की जगह और रोशन कर दी थी।

फिर वो कुछ और फैलकर नीचे आया और सबको अपने घेरे में ले लिया।

जमीन से पांच फुट ऊपर रहा।

इसी पल देवराज चौहान ने महसूस किया कि उसके कदम नहीं उठ रहे हैं।

दूसरों ने भी ऐसा ही महसूस किया।

"ये कैसा छल्ला है।" महाजन चीखा—"मैं पांव नहीं उठा पा रहा।"

"महाकाली ने अपनी ताकत से हमारे पैरों को बांध दिया है।" तवेरा ने कहा।

"अंम महाकाली को 'वड' दयो।"

"तुम कुछ करो तवेरा।" नगीना कह उठी।

इसी पल मोना चौधरी के चेहरे के भाव बदले और उसके होंठों से नीलकंठ की मर्दानी आवाज निकली।

"घबराओ मत। मैं सब ठीक कर दूंगा।"
"नीलकंठ।" नगीना की निगाह मोना चौधरी की तरफ उठी।
अन्यों ने भी मोना चौधरी को देखा।
नीलकंठ मोना चौधरी में आ चुका था।
मोना चौधरी ने हाथ ऊपर उठाया और हवा में घुमाया। होंठों से सीटी जैसी आवाज निकली।
इसके साथ ही वो पीला घेरा गायब हो गया।
सबने खुद को सामान्य पाया।
"अब ठीक है।" पारसनाथ बोला।
"मिन्नो पर जब भी कोई मुसीबत आएगी। मैं आ जाऊंगा।" मोना चौधरी के होंठों से नीलकंठ की आवाज निकली।
"तुम्हें सिर्फ मिन्नो की परवाह है?" तवेरा बोली।
"हां।"
"तुम्हें सबकी चिंता करनी चाहिए नीलकंठ।"
"मुझे सिर्फ मिन्नो की परवाह है। मैंने कभी मन-ही-मन मिन्नो से प्यार किया...।"
तभी महाकाली का स्वर वहां गूंजा।
"ये तूने ठीक नहीं किया नीलकंठ।"
"आ गई महाकाली।" नीलकंठ का व्यंग-भरा स्वर, मोना चौधरी के होंठों से निकला।
"तू मेरे काम खराब कर रहा है।" महाकाली की आवाज में गुस्सा था।
"मैं सिर्फ मिन्नो की रखवाली कर रहा हूं।"
"मान जा नीलकंठ। मेरे कामों में अड़चन मत डाल।"
"मैं सिर्फ मिन्नो के लिए हूं।"
"तो तू नहीं मानेगा।" महाकाली की आवाज में गुर्राहट आ गई।
"नहीं।"
"तू मेरे से जीत नहीं सकेगा। हार जाएगा तू।"
"ये तो आने वाला वक्त बताएगा महाकाली।" नीलकंठ का स्वर शांत था—"तू मिन्नो को तकलीफ दे, ये मुझे पसंद नहीं।"
"मैं तेरे से झगड़ा नहीं करना चाहती। हम गुरुभाई हैं।"
"मुझे बातों में न फंसा। मैं अपने इरादे से पीछे हटने वाला नहीं।"
तभी तवेरा कह उठी।
"तू बेईमान है महाकाली। तूने ही देवा-मिन्नो के नाम से तिलिस्म बांधा मेरे पिता पर। और जब देवा-मिन्नो तिलिस्म तोड़ने आ गए

हैं तो तू इन्हें आगे बढ़ने से रोकने के लिए, हर सम्भव प्रयास कर रही है।"

दो पलों की खामोशी के बाद महाकाली की आवाज आई।

"ये करना मेरी मजबूरी है।"

"मजबूरी नहीं, चालाकी है। अगर तेरा मन साफ होता तो तू मेरे पिता को आजाद कर देती।"

महाकाली की आवाज नहीं आई।

"तू रुकावटें डालनी बंद कर दे।" नीलकंठ कह उठा।

"मैं अपने कर्म से पीछे नहीं हट सकती।"

"पछताएगी तू।"

"तुम सब तिलिस्मी पहाड़ी में प्रवेश करना चाहते हो। ठीक है, आ जाओ। मैं नहीं रोकती। परंतु तुम लोग वहां बिछाए मेरे जाल से बच नहीं सकते। मैं भी देखूंगी नीलकंठ कि तू कब तक मिन्नो को बचाता है।"

"बहुत पछताएगी तू महाकाली।"

परंतु महाकाली की आवाज नहीं आई।

"चलो।" नीलकंठ की आवाज निकली, मोना चौधरी के होंठों से—"अब महाकाली रुकावट नहीं डालेगी।"

वे सब पुनः आगे बढ़ने लगे।

अगले कुछ पलों में मोना चौधरी सामान्य हो गई।

"तुम्हें मालूम है, तुम में नीलकंठ आया था।" महाजन ने कहा।

"हां।" मोना चौधरी गम्भीर स्वर में बोली—"मैंने सब सुना।"

"वो तुझे नुकसान नहीं होने देगा।" महाजन मुस्कराया।

मोना चौधरी खामोश रही।

"अगर वो सबकी चिंता करता तो ज्यादा अच्छा होता।"

"नीलकंठ जिद्दी है।" मोना चौधरी बोली—"वो किसी की बात नहीं मानेगा। वो सिर्फ मेरी चिंता करेगा।"

"तुम उसे कहो कि वो सबकी चिंता करे।"

"नहीं मानेगा। मेरी बात भी नहीं मानेगा।" मोना चौधरी ने इंकार में सिर हिलाया।

एक घंटे के पश्चात वे सब पहाड़ी के ऊपर जा पहुंचे।

उनके सिरों पर रोशनी जगमगा रही थी।

"रातुला उन सबको पहाड़ी के उस हिस्से पर ले आया, जहां जथूरा के चेहरे का बुत लेटा हुआ आसमान की तरफ जैसे देख रहा था। वो चेहरा इतना बड़ा था कि एकाएक उसे समझ पाना आसान नहीं था। वहां दो गुफाएं दिखाई दीं। जो कि बुत के नाक के छेद थे।

"ये गुफाएं भीतर जाने का रास्ता है।" रातुला बोला।

"दो रास्ते हैं ये।" देवराज चौहान बोला—"किस रास्ते से भीतर जाया जाए।"

मोना चौधरी ने तवेरा से कहा।

"तुम बताओ।"

"ये बात तो मैं भी नहीं बता सकती।" तवेरा कह उठी—"नीलकंठ से पूछो।"

तभी मोना चौधरी ने होंठों से नीलकंठ की आवाज निकली।

"इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता।"

"मेरे खयाल में यहां से हमें आधे-आधे बंटकर दोनों रास्तों में प्रवेश कर जाना चाहिए।" रातुला ने कहा।

"हम जहां भी जाएंगे एक साथ ही जाएंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"यो बातों हौवे तो किसो रास्ते भी चल पड़ो।" बांकेलाल राठौर कह उठा।

"ठीक कहेला बाप।"

"आओ।" मोना चौधरी ने कहा और एक गुफा में प्रवेश करती चली गई।

उसके भीतर पांव रखने की देर थी कि भीतर की जगह रोशन हो उठी।

सब मोना चौधरी के पीछे चल पड़े।

तवेरा ने अपना हाथ ऊपर किया और होंठों-ही-होंठों में कुछ बुदबुदाई तो हवा में लहराती, प्रकाश देती रोशनी की गोली बुझ गई और उसके हाथ में आ गई। तवेरा ने गोली को कंधे पर लटकते झोले में डाला और गुफा में प्रवेश कर गई।

बांकेलाल राठौर तवेरा के साथ चलने लगा।

"थारे को यादो हौवे कि म्हारे को जादू सिखाणों है।"

"याद है।" तवेरा कह उठी—"परंतु पहले पिताजी को आजाद कराना है।"

"वो अंम करा दयो।"

सब आगे बढ़ते जा रहे थे।

मोना चौधरी और रातुला सबसे आगे थे।

रास्ता सीधा और साफ था। भरपूर रोशनी थी हर तरफ।

कुछ आगे जाकर रास्ता ढलान लेने लगा।

सब सतर्क थे। कभी भी खतरा सामने आ सकता था।

दस मिनट इसी प्रकार चलते रहने के बाद वे एक कमरे में जा

पहुंचे। कमरे की दीवारों में छः रास्ते नजर आ रहे थे। किसी रास्ते के पार बरसात हो रही थी तो किसी के पार तेज धूप खिली हुई थी। किसी दरवाजे के पार आग जल रही थी तो किसी के पार गहरा अंधेरा था। दो रास्ते ऐसे थे जिनके पार कुछ भी नजर नहीं आ रहा था।

कमरे में एक तरफ बांदा बैठ था उदास-सा।

सबकी निगाह उस पर जा टिकी।

"स्वागत है आप सबका।" बांदा ने उत्साहहीन स्वर में कहा—"यूं ही आये इधर।"

"तुम कौन हो?"

"बांदा हूं मैं। यहां आने वालों की सेवा करना मेरा काम है।" बांदा ने कहा।

"तंम तो म्हारे को बीमारो दिखो हो।"

"मैं उदास हूं।" बांदा ने कहा—"इस मायावी पहाड़ी के भीतर जाने के दो रास्ते हैं। ये रास्ता आगे वाला है, दूसरा रास्ता पीछे वाला है। पीछे वाले रास्ते पर मेरा भाई बूंदी सेवा में रहता है। मैं उससे मिलना चाहता हूं, परंतु महाकाली मिलने नहीं देती। क्या तुम लोग मुझे बूंदी से मिला सकते हो?"

"जरूर मिलाएंगे।" तवेरा ने तीखे स्वर में कहा—"लेकिन तू बेईमान है।"

"ऐसा क्या कह दिया मैंने?" बांदा ने तवेरा को देखा।

"तू महाकाली का सेवक है। उसने हमारे लिए तेरे को यहां बैठा रखा है कि तू हमसे चालाकी करे।"

"मैंने तो कोई चालाकी नहीं की।"

"तुम अपने भाई से मिलना चाहते हो। महाकाली मिलने नहीं देती। ये चालाकी ही तो की तुमने झूठ बोलकर।"

"मेरी बात को कोई सच नहीं मानता।" बांदा ने मुंह बनाकर कहा।

"यहां जो लोग पहले आए थे वो कहां गए?" तवेरा ने पूछा।

"इन्हीं रास्तों में प्रवेश कर गए।"

"उसके बाद वो कहां गए?"

"मुझे क्या पता।"

"मेरे पिता कहां हैं?"

"महाकाली ने जथूरा पर तिलिस्म बांध रखा है। वो कैदी हैं।"

"किधर हैं मेरे पिता?"

"भीतर चले आओ। मिल जाएंगे।" बांदा बोला।

देवराज चौहान उन छः रास्तों को ध्यानपूर्वक देख रहा था।

"इन अलग-अलग रास्तों का क्या मतलब है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हर रास्ते में रहस्य है। जिस रास्ते पर जाओगे, वो अपना फल देगा।"

"अंम फलो न खावे। लस्सी पिओ हो, मक्खनो का गोला डालो के।"

"तुम बताओ कि किस रास्ते का क्या असर है?" रातुला ने कहा।

"क्या फायदा।"

"क्यों?" पारसनाथ के होंठों से निकला।

"तुम लोग मेरी बात का भरोसा तो करोगे नहीं।"

"तुम हमें बताओ।" नगीना कह उठी—"भरोसा करना या न करना, बाद की बात है।"

"मैं तो कहूंगा कि उस रास्ते में प्रवेश कर जाओ, जहां आग लगी है। ऐसा करते ही तुम सब जथूरा के उस कमरे के बाहर जा पहुंचोगे, जिसके भीतर वो बंद है।" बांदा मुस्कराकर कह उठा।

"तुम सच कह रहे हो?" पारसनाथ बोला।

"मैं कभी भी झूठ नहीं बोलता। वैसे उस रास्ते में भी जा सकते हो, जहां बरसात हो रही है। जग्गू से मिलना है तो...।"

"जगमोहन।" देवराज चौहान के होंठों से निकला—"वो तो सोबरा की तरफ गया है।"

"जरूर गया था, परंतु सोबरा ने महाकाली से कहकर, जग्गू को इसी मायावी पहाड़ी में प्रवेश करा दिया।"

"तुम्हारा मतलब जगमोहन इसी पहाड़ी में है।"

"हां। उसके साथ गुलचंद और नानिया भी है।" बांदा बराबर मुस्करा रहा था।

"बरसात वाले रास्ते में जाएं तो जगमोहन हमें मिल जाएगा?" नगीना ने पूछा।

"हां।"

"और आग वाले रास्ते पर जाएं तो जथूरा के पास पहुंच जाएंगे?" रातुला कह उठा।

"हां।" बांदा ने बैठे-बैठे सिर हिलाया।

"इसकी बात का भरोसा मत करो।" तवेरा बोल पड़ी—"ये हमें कभी भी सही बात नहीं बताएगा।"

"तवेरा भी ठीक कहती है।" बांदा बोला।

"तो तुम हमें गलत बता रहे थे?" देवराज चौहान ने उसे घूरा।

"महाकाली का सेवक हूं। जो महाकाली कहेगी, वो ही करूंगा। वो ही कहूंगा।"

"तुम यहां पर क्यों हो?"

"तुम लोगों को भटकाने के लिए।"

"इसका मतलब हमें तुम्हारी किसी बात का विश्वास नहीं करना चाहिए।" महाजन ने कहा।

"ऐसी बात भी नहीं है। बातें मेरी सच हैं, परंतु कौन-सी बात कहां फिट बैठती है ये नहीं बता रहा। जैसे कि इन छः रास्तों में एक रास्ता ऐसा है, जिसके भीतर प्रवेश करते ही जथूरा के करीब पहुंच जाओगे। एक रास्ता ऐसा भी है कि जग्गू के पास पहुंच जाओगे। एक रास्ता ऐसा भी है कि मौत की घाटी में पहुंच जाओगे। यानी कि हर रास्ते का अलग मतलब है। देखना तो ये है कि तुम लोग कौन-सा रास्ता चुनते हो।"

"तुम इस बारे में हमें ठीक नहीं बताओगे?"

"मैं सही क्यों बताऊंगा। मेरा तो काम ही तुम लोगों को भटकाना है।"

तभी बांकेलाल राठौर आगे बढ़ा और बांदा के पास जा पहुंचा।

"कैसे हो भंवर सिंह?" बांदा मुस्कराया।

"तंम पैचानो म्हारे को?"

"अच्छी तरह।"

"ये भी जाणो हो कि अंमने बोतो को 'वडा' है।"

बांदा मुस्कराता रहा।

"अंम थारे को भी 'वड' दयो बांदो।"

"तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"छोरे सुनो तमने...। यो म्हारे को उकसायो।"

"करंट चालू करेला बाप।"

"छोरा म्हारे को हरो झंडो दिखा दयो। तंम म्हारे को जथूरो तको पोंचने का रास्ता ठीको-ठीको बता दयो।"

बांदा मुस्कराता रहा।

"यो न मानो हो सीधो तरहो।" बांकेलाल ने खतरनाक स्वर में कहा और उसकी गर्दन पकड़ ली।

अगले ही पल बांके के मस्तिष्क को झटका लगा।

बाकी सब भी चौंके।

बांदा की आकृति गले और छाती से थोड़ी-सी खंडित हुई। बांके

का हाथ पीछे की दीवार से जा टकराया। उसने हड़बड़ाकर हाथ पीछे किया तो बांदा की मानवीय आकृति पुनः स्पष्ट हो उठी।

सब हैरानी से बांदा को देख रहे थे।

"छोरे यो का हो गयो। अंम तो लुट गयो।"

"बाप, ये धोखा है। इंसान नेई होईला।"

"बांदे।" बांकेलाल राठौर उसे देखता बोला—"थारे में का जादू हौवे?"

"मैं यहां हूं ही नहीं। मैं तो अपने कमरे में हूं। महाकाली ने यहां मेरी आकृति भेजी है, जो कि ठीक इंसान की तरह है।"

"तम्भी तुमो म्हारे से अकड़ो हो।" बांके ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया—"एको बात थारे काणों में भी डालो दूं कि अंम भी जल्दो जादू सीखो हो, तब थारे को नजारो दिखाइयो।"

जवाब में बांदा मुस्कराया।

"थारी महाकाली को तो फूंको से उड़ा दयो तबो।"

"महाकाली से पार पाना आसान नहीं है।" तवेरा गम्भीर स्वर में कह उठी—"ये तो शुरुआत भर है। उसने हमारे लिए कदम-कदम पर मौत के जाल बिछा रखे होंगे।"

मोना चौधरी की निगाह उन छः रास्तों पर जा रही थी।

"फैसला करो कि हमें किस रास्ते पर जाना है।" पारसनाथ बोला—"या हम अकेले-अकेले छः के छः रास्तों में... ।"

"मैं पहले भी कह चुका हूं कि हम जहां भी जाएंगे, एक साथ ही जाएंगे।" देवराज चौहान बोला।

"जैसी तुम्हारी मर्जी।" महाजन ने कहा और मोना चौधरी के पास पहुंचा—"अब क्या करना है बेबी।"

"एक रास्ता चुनना है।"

"कौन-सा?"

"ये ही समझ नहीं आ रहा।"

महाजन ने देवराज चौहान को देखा।

"तुमने कोई रास्ता पसंद किया?"

"नहीं। मेरे लिए सब रास्ते ही एक जैसे हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"लेकिन मेरी नजर में तो सब रास्ते अलग-अलग मंजिलों तक पहुंचते हैं।" बांदा कह उठा—"दिमाग लगाओ। रास्तों को पहचानो। पहचानने के निशान, समझ सको तो समझ लो।"

"किधर होईला निशान?" रुस्तम राव बोला।

"इन्हीं रास्तों में देखो, शायद कुछ समझ सको।" बांदा बोला।

"तुम क्यों चाहोगे कि हम जथूरा के पास जा पहुंचे।" नगीना ने कहा।

"ठीक कहा बेला।" बांदा ने सिर हिलाया।

"इस नाते मैं ये भी कह सकती हूं कि ऐसा कोई निशान होगा ही नहीं, जिससे रास्ता समझा जा सके।"

"विश्वास करो, ऐसा निशान है।" बांदा ने कहा—"ये बात मैं सच बोल रहा हूं।"

और वो बांदा की बात पर यकीन करके, रास्तों में देखते हुए इस बात का इशारा ढूंढ़ने लगे कि कौन-से रास्ते में जाना उनके लिए बेहतर होगा।

▭ ▭

मखानी ने मुस्कराकर कमला रानी को देखा।

कमला रानी ने फौरन मुंह फेर लिया।

मखानी पास पहुंचा और धीरे-से उसे कोहनी मारी।

"क्या है?"

"धीरे बोल, क्यों सबको सुनाती है।"

"तंग मत कर मुझे।"

"जिस रास्ते से आए हैं, थोड़ा-सा उधर आ-जा।"

"क्यों?" कमला रानी ने उसे घूरा।

"मेरे से क्या पूछती है, तेरे को नहीं पता।" मखानी धीमे स्वर में बोला।

"मैं नहीं आऊंगी।"

"फिर नखरे।"

"नहीं आऊंगी।" कमला रानी ने इंकार में सिर हिलाया।

"दिल मत तोड़।"

"ये वक्त नहीं है इन बातों का।"

"इन बातों के लिए हर वक्त, वक्त होता है। नखरे मत झाड़। उधर चल।"

"नहीं।" कमला रानी ने कहा और वहीं नीचे बैठ गई।

'नहीं मानने वाली ये।' मखानी बड़बड़ा उठा।

"भौरी।" कमला रानी बड़बड़ाई।

"क्या है?" भौरी की फुसफुसाहट कानों में पड़ी।

"तेरे को पता है कि कौन-से रास्ते से भीतर जाना ठीक होगा?" कमला रानी ने पूछा।

"मुझे कुछ नहीं पता। इस जगह में तो मैं पहली बार आई हूं। अब देखूंगी कि महाकाली ने यहां क्या-क्या इंतजाम कर रखा है।"

तभी मखानी पास ही बैठ गया। कमला रानी ने मखानी को देखा।

मखानी दांत फाड़कर मुस्कराया और आंख से उधर चलने का इशारा किया।

"तेरे को कोई और काम नहीं है।" कमला रानी ने झल्लाकर कहा।

"इसी काम से फुर्सत नहीं मिलती तो दूसरा क्या काम करूंगा।" मखानी ने मुस्कराकर कहा।

"चूल्हे में जा।" कमला रानी भुनभुनाकर दूसरी तरफ देखने लगी।

"अड़ गई मेरी कमला रानी।" मखानी गहरी सांस लेकर कह उठा।

वो सब काफी देर उन रास्तों में देखते, समझने की चेष्टा करते रहे। परंतु कुछ समझ में नहीं आया।

इस दौरान बांदा शांत बैठा रहा।

"मेरे खयाल में बांदा ने झूठ कहा है कि इन रास्तों से हमें कोई इशारा मिल सकता है।" मोना चौधरी कह उठी।

मन-ही-मन बाकी सब भी ये ही सोच रहे थे।

"ये ही तो मुसीबत है कि कोई मेरी बात का यकीन नहीं करता।" बांदा कह उठा।

"तंम दसों नम्बरों के हरामो हौवे।"

"इतना भी नहीं हूं।" बांदा ने मुंह लटकाकर कहा—"मैं तो चाहता था कि तुम ठीक रास्ते पर जाओ।"

"और सही रास्ता बता नहीं रहे।"

"मैं कहूंगा तो क्या तुम लोग मेरी बात मानोगे। मानोगे तो आग वाले रास्ते में चले जाओ।"

"तंम म्हारे को आगो वालो रास्तो में ही क्यों भेजो हो?"

"मैं कुछ नहीं कहूंगा। जो रास्ता ठीक लगे, उसमें चले जाओ।" बांदा ने नाराजगी से कहा।

सब रास्तों के पास खड़े एक-दूसरे को देख रहे थे।

"हमें किसी एक रास्ते का चुनाव करना होगा।" देवराज चौहान बोला।

"तो आग वाला रास्ता ही क्यों न चुनें?" मोना चौधरी ने सोच-भरे स्वर में कहा।

"आग वाले रास्ते में ज्यादा मुसीबतें हो सकती हैं।" नगीना बोली—"बांदा बार-बार हमें वहीं जाने को कह रहा है।"

देवराज चौहान ने बांदा को देखा तो बांदा ने मुंह फेर लिया।
"यो तो म्हारे को पागलो कर दयो।"
"मेरे खयाल में आग वाले रास्ते पर ही जाना चाहिए।" पारसनाथ बोला—"क्या पता हम दूसरे रास्ते में जाएं तो वहां ज्यादा खतरे मिले। कोई एक रास्ता तो चुनना ही है हमें।"
रातुला ने तवेरा से कहा।
"तुम कुछ कहोगी?"
"ये जो फैसला करेंगे—मुझे मंजूर होगा।"
तभी देवराज चौहान कह उठा।
"हम आग वाले रास्ते पर ही जाएंगे।"
"वाह।" बांदा खुश हो गया—"तुम लोगों ने मेरी बात मान ली।"
"तुम इतने खुश क्या इसीलिए हो रहे हो?" महाजन ने उसे देखा।
"हां।" बांदा ने सिर हिलाया।
फिर सब एक-एक करके आग वाले रास्ते में प्रवेश करने लगे।
मखानी ने बांदा से कहा।
"तुम नहीं आओगे?"
"मैं तुम लोगों के साथ ही हूं। तुम सबकी सेवा करना ही मेरा काम है।" बांदा बोला—"तुम्हारे साथ जो औरत है, वो मुझे पसंद आई।"
"तुम भी कमीने हो।" मखानी ने उसे घूरा।
"वो तेरी क्या लगती है?"
"तुझे क्या?" मखानी ने कहा और भीतर प्रवेश कर गया।
देखते-देखते सब उस रास्ते में चले गए।

▭ ▭

देवराज चौहान, नगीना, बांके, रुस्तम, मोना चौधरी, पारसनाथ, महाजन, मखानी, कमला रानी, रातुला और तवेरा ने उस दरवाजे से भीतर प्रवेश करते ही खुद को खुली जमीन पर पाया।
अगले ही पल सब हड़बड़ा से उठे।
आसमान से अंगारे बरस रहे थे। छोटे-छोटे अंगारे जो कि उनके आस-पास ही गिर रहे थे। परंतु उन्हें छू नहीं रहे थे। पहले तो उन्होंने खुद को अंगारों से बचाने की चेष्टा की, परंतु जब उन्हें लगा कि अंगारे उन्हें छू नहीं रहे तो वो कुछ शांत हुए।
"बांदो ने म्हारो को कां पे फंसा दयो।"
"ये कैसी जगह है?" महाजन कह उठा।
"अंगारो की बरसातो हौवे इधरो तो।"

मोना चौधरी, तवेरा के पास पहुंचकर बोली।
"ये सब क्या हो रहा है?"
"मैं नहीं जानती।"
"कुछ करो। अंगारों को हमारे सिर से हटाओ।"
नगीना देवराज चौहान के पास थी।
"इन अंगारों का मतलब समझ में नहीं आ रहा।" नगीना बोली—"ये ऊपर से गिर तो रहे हैं, परंतु हमें छू नहीं रहे।"
"अवश्य इस बात में कोई रहस्य है।" देवराज चौहान सोच-भरे स्वर में बोला।
अंगारे जमीन पर गिरते और कुछ पल सुलगने के पश्चात बुझ जाते थे।
"इन अंगारों में गर्मी भी नहीं है।" नगीना बोली—"परंतु हम क्या करें?"
"कुछ देर इंतजार करो। सब ठीक हो जाएगा।"
"कैसे ठीक होगा?"
"मोना चौधरी भी अंगारों से घिरी है। नीलकंठ उसकी सहायता के लिए जरूर जाएगा।"
"ओह।"
तवेरा ने अपने कंधे से लटके झोले से चक्री जैसी कोई चीज निकाली और मन-ही-मन कुछ मंत्रों को बोलने के पश्चात उसे आसमान की तरफ उछाल दिया। चक्री तेजी से आसमान में घूमने लगी और गिरते अंगारों को तबाह करने लगी। चक्री की तेजी देखने लायक थी, परंतु इससे अंगारों को कोई फर्क न पड़ा। वो वैसे ही गिरे जा रहे थे।
"इससे तो कोई भी फायदा नहीं हुआ।" मोना चौधरी बोली।
तवेरा ने मंत्र पढ़कर चक्री को वापस बुलाया और उसे झोले में डालती कह उठी।
"इस वक्त मैं कुछ नहीं कर सकती।" तवेरा बोली।
"क्यों?"
"अंगारों को दूर करने का कोई रास्ता मुझे समझ नहीं आ रहा।"
मोना चौधरी ऊपर से गिरते अंगारों को देखती कह उठी।
"ये अंगारे हमारे सिरों पर ही हैं। हमें यहां से दूर चले जाना चाहिए।"
"ये ठीक रहेगा।" पास आते रातुला ने उसकी बात सुन ली थी।
"सबसे कहो, यहां से दूर हो जाए।"
रातुला ने ऊंचे स्वर में कहा।

उसके बाद सब वहां से दूर होने के लिए दौड़ पड़े।

लेकिन वो अंगारे उनके सिरों पर ही रहे।

आखिरकार वे ठिठक गए।

तभी बांकेलाल राठौर कह उठा।

"वो देखो, क्या बढ़ियो मकान हौवे।"

सबकी निगाह उस तरफ गई।

काफी दूर मकान बना नजर आया।

"हमें वहां जाना चाहिए।" महाजन कह उठा।

"चल्लो।" बांकेलाल ने सिर हिलाया।

"इस तरह बिना सोचे समझे, मकान की तरफ नहीं जाना चाहिए।" तवेरा कह उठी—"हर कदम पर यहां धोखे ही हैं।"

अंगारे अभी भी बिना रुके गिरे जा रहे थे।

"छोरे। तंम खामोश क्यों हौवे?"

"आपुन सोचेला बाप।" रुस्तम राव ने गम्भीर स्वर में कहा—"अंगारे हमें छू नेई रहेला। पर आपुन लोगों के सिर पर नाचेला। पास में गिरेला।"

"तो?"

"इसमें जरूर कोई रहस्य होएला बाप।"

एकाएक मोना चौधरी के चेहरे के भाव बदले, आंखें सुर्ख-सी हो उठीं। अगले ही पल मोना चौधरी ने हाथ आगे बढ़ाया और गिरते अंगारे को हथेली में थाम लिया।

"ये क्या कर रही हो मोना चौधरी।" पारसनाथ कह उठा।

परंतु तब तक मोना चौधरी अंगारा मुट्ठी में भींच चुकी थी।

मोना चौधरी ने पारसनाथ को देखा।

मोना चौधरी के चेहरे के बदले भाव देखकर पारसनाथ की आंखें सिकुड़ीं।

"नीलकंठ।" पारसनाथ के होंठों से निकला—"तुम सब ऐसा ही करो।"

"अंगारे पकड़ें?" पारसनाथ के होंठों से निकला।

"हां।"

"हाथ जल जाएगा।"

मोना चौधरी ने मुट्ठी खोली तो उसकी हथेली पर राख पड़ी दिखी। उसने हाथ झाड़ा तो हथेली साफ हो गई। वहां पर अब कोई निशान तक नहीं था।

"कुछ नहीं होगा। तुम सब अंगारे पकड़ो।" मोना चौधरी के होंठों से नीलकंठ का स्वर निकला।

"इससे क्या होगा?" नगीना ने पूछा।

"अंगारों से बच जाओगे। ये दूर चले जाएंगे। जब तक ये तुम सबके सिरों पर रहेंगे, तब तक तुम सब परेशान रहोगे।"

और फिर सबने अंगारे पकड़ने शुरू कर दिए।

सबने अंगारे पकड़ लिए तो एकाएक आसमान में नाचते अंगारे गायब हो गए।

ये देखकर सबको राहत-सी मिली।

"अब तुम सब उस मकान में जाओ।" नीलकंठ की आवाज फिर सुनाई दी।

"नीलकंठ।" देवराज चौहान बोला—"तुम जानते हो कि हमें जथूरा कहां पर मिलेगा?"

"नहीं जानता।"

"तो तुम हमारी कोई सहायता नहीं कर सकते, जथूरा तक पहुंचने में?"

"नहीं। क्योंकि महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के रहस्यों से मैं वाकिफ नहीं हूं।"

"उस मकान में क्या है?"

"वहीं से आगे जाने का रास्ता मिलेगा। वरना यहां पर भटकते रह जाओगे।"

वो सब उस मकान की तरफ बढ़ गए।

अंगारे जब तक उनके सिरों पर नाच रहे थे, तब तक वो ठीक से सोच न पा रहे थे। उन्हें हर तरफ समतल जमीन ही नजर आ रही थी, जिसका कहीं पर भी अंत नजर नहीं आ रहा था।

कुछ देर चलते रहने के बाद वे उस मकान के पास आ पहुंचे।

धूप में वो मकान सुलगता-सा नजर आ रहा था।

मकान का दरवाजा खुला था।

वे सब भीतर प्रवेश करते चले गए।

पहला कमरा बैठक जैसा था और वहां पर बांदा आराम से बैठा था।

बांदा को वहां देखकर वे चौंके।

"तुम?" रातुला के होंठों से निकला।

"यो बोत बड़ो हरामी होवे।"

"अंगारों से मुक्ति पाकर यहां तक आ गए।" बांदा बोला—"नीलकंठ ने सहायता कर दी।"

"तूने क्यों नहीं बताया कि अंगारों से हम पीछा कैसे छुड़ाएंगे।" नगीना बोली।

"मैं तो यहां पर आप लोगों का इंतजार कर रहा था।" बांदा बोला—"अगर आप लोग अंगारों से मुक्ति न पाते तो इस मकान में प्रवेश नहीं कर सकते थे। मैं उस काम में आपकी सहायता नहीं कर सकता था।"

"तुम चाहते क्या हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"आप लोगों की सेवा के लिए मुझे लगाया गया है।" बांदा मुस्करा पड़ा।

"तुम दिल से सेवा कर रहे होते तो, हमें अवश्य बता देते कि जथूरा कहां मिलेगा।"

"मेहनत करो। खतरों से बचो और जथूरा तक पहुंच जाओ।" बांदा ने कहा।

"यो कमीणों हौवे। कुछो न बतायो यो।"

"यहां पर हमारे लिए क्या है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"आगे बढ़ने का रास्ता। उस दरवाजे से भीतर जाओगे तो रास्ता मिल जाएगा।"

सबकी निगाह दूसरी तरफ दरवाजे पर गई।

"वहां क्या है?" महाजन ने पूछा।

"खुद ही देख लो। जाओ भीतर प्रवेश करो।"

सब दरवाजे के पास पहुंचे।

महाजन ने दरवाजे के पार देखा, परंतु उसे कुछ नजर नहीं आया।

"यहां तो कुछ भी नजर नहीं आ रहा।" महाजन बोला।

"भीतर प्रवेश कर जाओ।" बांदा की आवाज आई—"सब कुछ दिख जाएगा।"

महाजन भीतर प्रवेश कर गया।

ऐसा करते ही महाजन सबकी निगाहों से ओझल हो गया।

"महाजन कहां गया?" पारसनाथ ने एकाएक बेचैनी से कहा और खुद भी दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गया।

एकाएक पारसनाथ भी सबकी निगाहों से ओझल हो गया।

"जो भी दरवाजे में प्रवेश करता है, वो दिखना बंद हो जाता है।" मोना चौधरी ने बांदा को देखा।

"तुम सबको इसी दरवाजे से भीतर जाना होगा, तभी आगे जाने का रास्ता मिलेगा।" बांदा ने शांत स्वर में कहा।

तवेरा कह उठी।

"नीलकंठ कह तो रहा था कि इस मकान के भीतर जाने से ही हमें आगे जाने का रास्ता मिलेगा। फिर सोचना क्या। नीलकंठ गलत

नहीं कहेगा।" तवेरा आगे बढ़ी और उस दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गई।

तवेरा भी एकाएक निगाहों से ओझल हो गई।

अब रुकने या सोचने का कोई फायदा नहीं था।

सब एक-एक करके उस दरवाजे से भीतर प्रवेश करते चले गए।

□ □

सबने पलक झपकते ही खुद को पेड़ की छांव में खुली जगह पर पाया। शाम हो रही थी। मध्यम-सी हवा चल रही थी। आसमान साफ था। नीला था। सूर्य की लाली आसमान में थी।

ठीक सामने खुले में एक आदमी कुएं की छोटी-सी दीवार पर बैठा उन्हें देख रहा था।

इन सबने भी उसे देखा।

"ये हम कहां आ गए?" नगीना बोली।

"बहना, यो ही बातों तो म्हारी समझ में न आयो हो।"

"वो सामने कुएं पर कौन बैठा है।" मोना चौधरी ने कहा।

"हमें ही देख रहा है।" रातुला बोला।

"आओ उससे बात करते हैं। वो यूं ही तो यहां पर मौजूद नहीं होगा।" कहकर मोना चौधरी आगे बढ़ गई।

नगीना ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिला दिया।

सब मोना चौधरी के पीछे चल पड़े।

"जब से हमने पहाड़ी के भीतर प्रवेश किया है, हमें एक पल का भी चैन नहीं मिला।" नगीना ने कहा।

"चिंता मत करेला दीदी।" रुस्तम राव ने कहा—"लम्बी तान के सोने को भी मिलेईला।"

"जैसे तेरे को सब कुछ पता है।" नगीना मुस्कराई।

देवराज चौहान की निगाह हर तरफ जा रही थी।

परंतु उसे कोई भी अन्य व्यक्ति न दिखाई दे रहा था।

उन्हें पास आते देखकर वो व्यक्ति कुएं की दीवार से उतरकर जमीन पर खड़ा हो गया।

सबसे पहले मोना चौधरी उसके पास पहुंची।

"तुम कौन हो?" मोना चौधरी ने पूछा।

बाकी सब भी पास आ पहुंचे।

"मैं बांदा और बूंदी का बाप, प्रणाम सिंह हूं।"

"बांदो?" बांके कह उठा—"वो तो नम्बरो हरामो हौवे।"

"सच कहा।" प्रणाम सिंह ने दुख-भरे स्वर में कहा—"मैंने उसे बहुत समझाया, परंतु वो कभी भी मेरी बात नहीं समझा।"

"तन्ने ही उसो को पैदा करो हो।"

"पैदा तो उसकी मां ने किया है।" प्रणाम सिंह बोला—"मैंने तो प्यार किया था उसकी मां से तो वो पैदा हो गया।"

"ब्याह करो के प्यारो करो या यूं ही गोल-गोल बेल दयो उसो को।"

प्रणाम सिंह गहरी सांस लेकर रह गया।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" मोना चौधरी ने पूछा।

"मैं तो तुम लोगों की ही राह देख रहा था।"

"क्यों?"

"मैं जानता हूं तुम लोग जथूरा को आजाद कराने आए हो। तुम मिन्नो हो और वो देवा है। तुम दोनों तिलिस्म तोड़ने आए हो।"

"तुम जानते हो कि जथूरा कहां पर कैद है?"

"हां। परंतु आसानी से नहीं बताऊंगा।"

"कैसे बताओगे?"

"मेरे से कुश्ती लड़कर मुझे हराना होगा।"

"कुश्ती?" मोना चौधरी के माथे पर बल पड़े।

"हां। मुझे हरा दिया तो, मैं तुम लोगों को बता दूंगा कि जथूरा कहां मिलेगा।"

"यो बापो तो म्हारे को बूंदो से ज्यादो हरामो लगो हो।"

"बांदा का बाप होएला तो हरामी क्यों न होईला।"

"ठीको बोल्लो हो तंम।"

"ये सब क्या हो रहा है?" नगीना ने देवराज चौहान से पूछा।

"मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा हूं। मोना चौधरी का आगे रहना ही ठीक है। उसे बात करने दो।"

"क्यों?"

"कोई मुसीबत आएगी तो नीलकंठ आकर सब संभाल लेगा। वो मोना चौधरी पर परेशानी नहीं आने देगा।"

मोना चौधरी प्रणाम सिंह से बोली।

"तुम बड़ी उम्र के हो। तुम्हें इस उम्र में किसी से कुश्ती नहीं लड़नी चाहिए।"

प्रणाम सिंह मुस्करा पड़ा।

"तुम्हें शक है कि मैं पहली बार में ही हार जाऊंगा।"

"हां।"

"वहम है तुम्हारा। देखो मैं तुम्हें अपनी ताकत दिखाता हूं।"

कहने के साथ ही उसने बेहद फुर्ती से मोना चौधरी को बांह और टांग से पकड़ा और अपने सिर से ऊपर हवा में उठा लिया।

"छोड़ो मुझे।" मोना चौधरी तेज स्वर में बोली।

"अब तो मानती हो न कि मुझमें कुश्ती लड़ने के लिए ताकत है।"

"ठीक है। माना—अब मुझे नीचे उतारो।"

अगले ही पल सब स्तब्ध रह गए।

जैसे काटो तो खून नहीं। वो हाल हो गया सबका।

क्योंकि प्रणाम सिंह ने बेहद स्वाभाविक ढंग से मोना चौधरी को नीचे उतारने की अपेक्षा कुएं में फेंक दिया।

दो पल तो किसी को कुछ समझ ही न आया कि प्रणाम सिंह ने क्या कर डाला है।

अगले ही क्षण महाजन गला फाड़कर चीखा और प्रणाम सिंह पर झपटा।

"कमीने-कुत्ते, मैं तुझे जिंदा नहीं... ।"

प्रणाम सिंह ने महाजन को बांह से थामा और उठाकर पलक झपकते ही उसे भी कुएं में फेंक दिया।

"ये भी कुएं में गईला बाप।"

"मन्ने तो पैले ही कहो हो कि बांदा का बाप बोत बड़ो हरामी हौवे। नतीजो सामणे हौवे।"

उस पल पारसनाथ सतर्कता से प्रणाम सिंह की तरफ बढ़ा। चेहरे पर कठोरता थी। पारसनाथ जैसे लम्बे-चौड़े इंसान को कुएं में फेंकना आसान काम नहीं था। पारसनाथ के चेहरे पर दरिंदगी नाच रही थी।

देवराज चौहान आगे बढ़ा और कुएं की मुंडेर से भीतर झांका।

कुआं बहुत गहरा था। भीतर अंधेरे के अलावा कुछ भी नहीं दिखा।

"आ परसू।" प्रणाम सिंह मुस्कराकर बोला—"तेरे से कुश्ती लड़ने में तो मुझे बहुत मजा आएगा।"

इसी पल पारसनाथ ने प्रणाम सिंह पर झपट्टा मारा।

अगले ही पल प्रणाम सिंह की फुर्ती देखकर सब ठगे से रह गए।

इससे पहले कि पारसनाथ उसे छू पाता, प्रणाम सिंह तेजी से नीचे बैठा और पारसनाथ को पिंडलियों से पकड़कर, कुएं की तरफ उछाल दिया। सबने पारसनाथ को जैसे हवा में उड़कर, कुएं के भीतर जाते देखा।

"अंम थारे को 'वड' दयो।" बांकेलाल राठौर गुर्राया और उसने प्रणाम सिंह पर छलांग लगा दी।

प्रणाम सिंह ने बांके को दोनों हाथों से संभाला और कुएं में उछाल दिया।

देवराज चौहान होंठ भींचे प्रणाम सिंह के सामने आ पहुंचा।

"तू कैसा है देवा?" प्रणाम सिंह मुस्कराया।

"क्या चाहते हो तुम?"

"मुझसे कुश्ती लड़ो। मुझे हरा दोगे तो मैं जथूरा का पता बता दूंगा।"

"तुम सबको कुएं में क्यों फेंक रहे हो?"

"हारे हुए को मौत ही मिलती है।"

"तुम्हारा मतलब कि जो कुएं में गए, वो मर गए हैं।" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"मेरा तो यही ख्याल है।" प्रणाम सिंह ने मुस्कराकर कहा।

एकाएक देवराज चौहान ने फुर्ती से झपट्टा मारकर, प्रणाम सिंह की गर्दन दोनों हाथों से पकड़ ली।

उसी पल प्रणाम सिंह ने देवराज चौहान के पेट में घूंसा मारा।

घूंसा क्या लोहे का हथौड़ा था। देवराज चौहान पीड़ा से छटपटा उठा। गर्दन पर से हाथ हट गए। प्रणाम सिंह ने देवराज चौहान को थामा और कुएं में उछाल दिया।

"न-हीं-ऽ-ऽ-ऽ।" नगीना चीख उठी। वो तेजी से कुएं की तरफ दौड़ी।

"मैं जानता हूं बेला कि तू रुकने वाली नहीं।" प्रणाम सिंह बोला—"तू देवा के पीछे कुएं में कूद के ही रहेगी।"

हुआ भी यही।

नगीना कुएं की दीवार पर चढ़ी और इस तरह कुएं में कूद गई जैसे वो कूदते ही देवराज चौहान को बचा लेगी।

अब सिर्फ पांच बचे थे।

मखानी, कमला रानी, रुस्तम राव, तवेरा और रातुला।

जो हुआ, उसके लिए सब हक्के-बक्के थे।

"बाप।" रुस्तम राव हाथ जोड़े प्रणाम सिंह के पास आ पहुंचा—"आपुन को कुएं में नेई फेंकने का।"

"डर गया त्रिवेणी।" प्रणाम सिंह मुस्कराया।

"हां बाप।"

"मुझे बेवकूफ बनाता है।" प्रणाम सिंह हंसा—"मैं जानता हूं, तू डरने वाला नहीं। तू तो... ।"

"नेई बाप। आपुन सच में कांहेला। देख तेरे पांव पड़ता।" रुस्तम राव ने नीचे झुकते ही प्रणाम सिंह की टांगें पकड़ीं और तीव्रता से ऊपर को उठाते हुए झटका दिया। रुस्तम राव उसे कुएं में फेंक देना चाहता था।

प्रणाम सिंह जोरों से लड़खड़ाया।

कुएं की दीवार थामकर उसने खुद को संभाला।

इसी पल रातुला भी प्रणाम सिंह पर झपट पड़ा।

प्रणाम सिंह ने रातुला को बांह से पकड़ा और कुएं में उछाल दिया।

इसके साथ ही उसने रुस्तम राव को नीचे से पकड़कर उठाया और कुएं में उछाल दिया।

अब सिर्फ तीन बचे थे।

मखानी, कमला रानी और तवेरा।

प्रणाम सिंह ने मुस्कराकर तवेरा को देखा।

"तेरा जादू मुझ पर नहीं चलने वाला तवेरा।"

"मैं तुझे जानती हूं प्रणाम सिंह।" तवेरा गम्भीर स्वर में बोली—"तू तो महाकाली का खास आदमी है।"

प्रणाम सिंह मुस्कराया।

"क्यों फेंक रहा है तू सबको कुएं में?"

"जो हुक्म मिला, उसे पूरा कर रहा हूं।" प्रणाम सिंह ने शांत स्वर में कहा।

"क्या है कुएं में?" तवेरा ने पूछा।

"मैं क्या जानूं।"

"महाकाली कहां है?"

"नहीं जानता। बरसों हो गए, उसे देखा नहीं। सिर्फ उसकी परछाई ही आती है सामने।"

"जथूरा कहां है?"

"नहीं जानता। परंतु जब से महाकाली ने जथूरा को कैद किया है, तब से वो स्वयं भी नजर नहीं आई।"

"क्यों, क्या रहस्य है इसमें?"

"मैं नहीं जानता। तुमने भी कुएं में जाना है। खुद जाओगी या मैं उठाकर फेंकूं?"

"मैं स्वयं जाऊंगी।" तवेरा ने कहा और आगे बढ़कर कुएं की मुंडेर पर चढ़ी और भीतर कूद गई।

प्रणाम सिंह ने अब बचे मखानी और कमला रानी को देखा।

दोनों के चेहरों पर घबराहट थी।

"क्यों भोले बलम।" प्रणाम सिंह मखानी से बोला—"तेरा क्या इरादा है। कुश्ती हो जाए?"

"मैं...मैं सिर्फ औरतों से कुश्ती लड़ता हूं, पूछ ले कमला रानी से। बता कमला रानी।"

"ये बात तो तेरे मुंह पर लिखी है, पूछना क्या?"

"क्या...क्या लिखा है?"

"ठरकी।"

"क्या?"

प्रणाम सिंह ने झपट्टा मारा और मखानी को इस तरह दबोच लिया जैसे बिल्ली चूहे को पकड़ लेती है।

"मुझे मत फेंक।" मखानी चीखा—"मुझे छोड़... ।"

प्रणाम सिंह ने मखानी को कुएं में फेंक दिया।

"आंय मर गई। ये तूने क्या किया।" कमला रानी चिल्ला पड़ी—"वो मेरे काम का आदमी था।"

"तेरे को भी उसके पीछे भेज देता हूं।" प्रणाम सिंह कमला रानी की तरफ बढ़ा।

"नहीं...नहीं।" कमला रानी पलटकर भागी—"मुझे नहीं जाना उसके पीछे।"

परंतु प्रणाम सिंह से बचकर कहां भाग पाती वो।

प्रणाम सिंह ने उसे पकड़कर कंधे पर लादा और कुएं की तरफ बढ़ गया।

"मुझे छोड़ दो। मैं तेरे को खुश कर दूंगी। लॉटरी निकलवा दूंगी तेरी। एक बार सेवा का मौका तो दे। मैं तेरे को... ।"

प्रणाम सिंह ने कमला रानी को भी कुएं में फेंक दिया।

▭ ▭

शादी वाला घर था वो।

ढोलक बज रही थी। तबले की थाप सुनाई दे रही थी। चारों तरफ खिलखिलाहटें फैली थीं। हर कोई सजा-संवरा घूम रहा था। बच्चे नए-नए कपड़े पहने अपने ही खेल में लगे हुए थे। ब्याह के इस मौके पर जैसे औरतों को सजने-संवरने का मौका मिल गया था। हर हसीन औरत भाग-दौड़ में व्यस्त नजर आ रही थी।

पुरुषों ने ज्यादातर सफेद कमीज-पायजामा और गुलाबी पगड़ी बांध रखी थी।

मकान पर रंग-बिरंगी लाइटें लगी थीं।

आंगन में घी के दीपक जल रहे थे।

कुछ बूढ़े व्यक्ति सफेद कमीज-पायजामा पहने एक तरफ

चारपाइयों में बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। वहीं एक तरफ छोटे से मंच पर बैठा व्यक्ति देर से शहनाई बजा रहा था। बारात आने का वक्त हो रहा था और इसके साथ ही चहल-पहल बढ़ती जा रही थी। भीतर एक कमरे में दुल्हन सजी बैठी थी। पास में उसकी सहेलियां मौजूद थीं।

हर तरफ उल्लास और खुशी का माहौल था।

घर के बाहर पास में ही बहुत बड़ा तम्बू लगा था, जहां से खाने के सामानों की महक आ रही थी। वहां पर बारातियों को खाना-खिलाया जाना था। इस वक्त कोई भी फुर्सत में नहीं था।

▭ ▭

एक-एक करके सबको होश आने लगा था।

उन्हें सिर्फ इतना याद था कि वे कुएं में गिरे। जाने कितनी गहराई थी कुएं की कि गिरते-गिरते होश गुम हो गए थे। बेहोश होने से पहले उनके जेहन में प्रणाम सिंह का चेहरा ही नाच रहा था।

होश में आते ही उनके कानों में ढोल-तबले और शहनाई की आवाजें पड़ने लगीं।

"म्हारे ब्याहो का बैंडो किधरो बजो हो?"

"बाप तेरी शादी होईला है क्या?"

"म्हारे को भी ये ई सपणों आयो हो।" बांकेलाल राठौर ने आंखें खोलते हुए कहा।

"ये सपना नेई, हकीकत होईला बाप।"

सबको होश आ गया था।

उन्होंने खुद को अंधेरे में घास पर पड़े पाया। सामने ही ब्याह वाला घर था। घर में लगी रोशनियां वहां तक आ रही थीं। शोर-शराबे की आवाजें भी सुनाई दे रही थीं।

"ये हम कहां आ गए?" मोना चौधरी कह उठी।

"भूख तगड़ी लग रही है।"

"सामने ही शादी वाला घर है।" नगीना बोली—"भूख का तो इंतजाम हो ही जाएगा।"

"वो बांदों का बापो प्रणाम सिंहों बोत बड़ो हरामी निकलो हो।"

"पर हम हैं कहां?" नगीना बोली।

"महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर।" देवराज चौहान ने कहा—"हमें यहीं पहुंचाने के लिए कुएं में फेंका गया था।"

"यहां हमारा क्या काम?" रातुला कह उठा।

"अवश्य कुछ तो होगा ही, तभी हम यहां तक आ पहुंचे हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"तुम कुछ कहो तवेरा।" रातुला बोला।

"अभी मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।" तवेरा गम्भीर स्वर में बोली—"लेकिन इतना जरूर है कि महाकाली ने हमें भटकाने के लिए तगड़ा जाल फैला रखा है। वो हमें हर कदम पर उलझाए जा रही है। पहले बांदा ने हमें बातों में लगाकर, आग वाले रास्तों पर जाने को तैयार कर लिया। फिर उस मकान में बांदा ने हमें उस रास्ते पर जाने को कहा। वहां से आगे हमें कुआं मिला और प्रणाम सिंह ने हमें कुएं में धकेल दिया और यहां आ पहुंचे।"

"इस हिसाब से तो हम एक कदम भी अपनी मर्जी से नहीं चले।" मोना चौधरी कह उठी।

"हां, हम इस वक्त भी महाकाली के इशारे पर ही नाच रहे हैं।" तवेरा सोचों में डूबी थी।

"आखिर महाकाली चाहती क्या है हमसे?"

"वो हमें जथूरा तक नहीं पहुंचने देगी। वो हमें भटका-भटकाकर, हमारी जान ले लेगी।"

"ये नहीं होगा।" मोना चौधरी ने दांत भींचकर कहा।

"ये ही होगा। महाकाली की ताकतों का हम मुकाबला नहीं कर सकते।"

"ये तुम कहती हो।"

"सच बात कहने में क्या बुराई है।"

"तुम तो हमारे साथ इसलिए हो कि, महाकाली द्वारा पैदा की गई मुसीबतों से बचाओगी।"

"इस बात से मैं अब भी पीछे नहीं हट रही। परंतु महाकाली की हर हरकत का मुकाबला नहीं कर सकती मैं। जैसे कि आसमान से गिरते अंगारों की असलियत मैं नहीं समझ पाई कि तब मुझे क्या करना चाहिए।"

"नीलकंठ तुमसे ज्यादा ज्ञानी है?"

"हां। वो मुझसे कहीं आगे है। परंतु मिन्नो में आकर, वो ज्यादा खुलकर काम नहीं कर सकता। ऐसे में वो शायद ही मेरे से ज्यादा काम कर सके। परंतु ये तो पक्का है कि मिन्नो को बचाने में वो पूरी ताकत लगा देगा।" तवेरा ने सोच-भरे स्वर में कहा।

मोना चौधरी मुस्करा पड़ी।

मखानी ने पास पड़ी कमला रानी को पैर मारा।

"क्या है?" कमला रानी झुंझलाई।

"धीरे बोल। लोगों को क्यों सुनाती है।" मखानी ने तीखे स्वर में कहा।

"तूने मुझे पैर क्यों मारा?"

"प्यार से मारा था।"

"मैं सब समझती हूं।"

"यहां अंधेरा है। शादी-ब्याह का माहौल है। मजे लेने के एक नहीं, कई मौके मिलेंगे।"

"मजे?" कमला रानी ने उसे देखा।

"अंधेरे में। कोने में।"

"इसके अलावा तेरे को कोई दूसरा काम नहीं।"

"ये काम ही पूरा नहीं होता कि दूसरा कर सकूं।" मखानी ने गहरी सांस ली—"जब मेरे को कुएं में फेंका तो तेरे को क्या लगा?"

"मैंने तो सोचा कि तू मर गया।"

"फिर?"

"मैं रोई, तड़पी कि मेरा मखानी मर गया।"

"सच।"

"तेरी कसम। मेरा तो दिल ही डूब गया था।"

"फिर तूने क्या किया?"

"मैंने तेरे पीछे कुएं में छलांग लगा दी।"

"लगता तो नहीं कि तू इतनी बहादुर है। तेरे को उसने ही नीचे फेंक दिया होगा।"

"वो तो मुझे बांहों में लेने को कह रहा था कि मुझे कुएं में नहीं फेंकेगा। परंतु मैं तो तेरी दीवानी हूं। लगा दी कुएं में छलांग।"

"छोड़ो, बीती बातों पर क्या बहस करना। चल जरा अंधेरे में खिसक जाते हैं। प्यार करेंगे।"

तभी ब्याह वाले घर की तरफ से एक आदमी को इस तरफ आते देखा। वो सफेद कमीज-पायजामे में था और सिर पर गुलाबी पगड़ी बांधी हुई थी। उसकी चाल में खुशी के भाव थे।

सबकी निगाह उस पर जा टिकी।

वो पास आते ही कह उठा।

"ओह, बाराती पहले से ही आ पहुंचे हैं। बारात भी आती होगी। आइए, भीतर चलिए। आप लोग यहां क्यों बैठे हैं।"

"बाराती?" रुस्तम राव के होंठों से निकला।

"बारातो बोत बनो हो अंम। परो म्हारी बरातो कमो न निकलो हो।"

"तुम कौन हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हम लड़की वाले हैं। चलिए, भीतर चलिए आप सब।"

"लेकिन...।" रातुला ने कहना चाहा।

तभी तवेरा ने रातुला का हाथ दबाया।

रातुला ने तवेरा को देखा।

"मत भूलो कि हम महाकाली की मायावी पहाड़ी के भीतर हैं। यहां हर बात का कोई मतलब अवश्य है।"

"ये हमें बाराती कह रहा...।"

"तो हम बाराती बन जाएंगे।" तवेरा का स्वर धीमा था।

"भूख भी लगी है।" महाजन ने कहा।

वो आदमी आदर-भरे ढंग से खड़ा रहा।

"चल्लो।" बांकेलाल राठौर उठता हुआ बोला—"ब्याहो बोतो देखो हो, यो ब्याह भी देख लयो।"

सब उठ खड़े हुए।

"आइए...आइए।" वो आदमी आगे बढ़ता कह उठा।

सब उसके पीछे चलते मकान के गेट पर पहुंचे। वहां गुलाबी पगड़ी पहने तीन-चार आदमी मौजूद थे।

बांकेलाल राठौर मूंछ पर उंगली फेरता सबसे आगे था कि एकाएक उसकी आंखें सिकुड़ीं।

मकान के भीतर से बांदा आता दिखा। सफेद कमीज-पायजामे के ऊपर उसने गुलाबी पगड़ी बांध रखी थी। उसके चेहरे पर कोमल मुस्कान थी।

"तंम बांदो।"

"स्वागत है आप सबका।" बांदा पास में ठिठककर मधुर स्वर में बोला।

"तंम लड़की वाले हो?"

"हां भंवर सिंह।"

"लड़का ढूंढने से पैले म्हारे को पूछो तो लयो हो।"

"वो क्यों?"

"अंम भी राजी हौवो ब्याह को। म्हारे को एको बोत बड़ी शिकायतो हौवे।"

"क्या?"

"थारा बापो तो तुमसे भी बड़ो हरामी हौवे। प्रणाम सिंहो नाम हौवे ना उसो का?"

"हां, वो ही मेरा पिता है।"

"म्हारे को कुओ में फैंको दयो।"

"पिताजी की इन्हीं आदतों से मैं परेशान हूं। बहुत समझाया, परंतु वो मानते नहीं।"

"का समझायो?"

"कि जिसको कुएं में फेंको, गर्दन काट के फेंको। ताकि वो किसी से शिकायत न कर सके।"

"तम सबो ही हरामी हौवो। एक बातो तो बतायो।"

"क्या?"

"म्हारे ब्याह का इधरो कोई चांस हौवे? कोई छोरी दुल्हो के वास्तो बैठी, म्हारा इंतजार करो हो।"

"यहां सब ब्याहता हैं। एक ही कंवारी थी, उसका ब्याह आज हो रहा है।"

"ब्याहतो भी चल जायो।"

"सबके पति जिंदा हैं भंवर सिंह। तुम्हारा ब्याह नहीं हो सकता।"

"तंम तो हरामी हौवो। म्हारा केंई पे जुगाड़ो भिड़ा दयो।"

तभी पीछे से महाजन पास आया।

"तुम्हें यहां देखकर हैरानी हुई।"

"मैं तो आप लोगों का सेवक हूं। जहां आप जाएंगे। मुझे पाएंगे।" बांदा मुस्कराकर बोला।

"हमें भूख लगी है।"

"चलिए। उधर खाने का इंतजाम है। खाना भी तैयार है। सब मेरे पीछे-पीछे आ जाएं।" कहकर वो आगे बढ़ गया।

सब उसके पीछे चल पड़े।

"बांदा भी यहां है।" नगीना बोली—"कुछ तो गड़बड़ होगी ही।"

"तुम ठीक कहती हो।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"ये हमें हर बार किसी मुसीबत में डाल देता है।"

"इस बार देखते हैं कि ये क्या करता है।" देवराज चौहान मुस्करा पड़ा।

मोना चौधरी तवेरा के पास पहुंचकर बोली।

"तुम बांदा पर काबू नहीं पा सकती?"

"नहीं। महाकाली ने इस वक्त बांदा को खास ताकतें दे रखी हैं। ये उन्हीं का फायदा उठा रहा है।" तवेरा ने कहा।

"तुम महाकाली से बहुत कमजोर हो।"

"मैंने कभी कहा ही नहीं कि मैं महाकाली का मुकाबला कर सकती हूं। परंतु तुम क्यों उस पर काबू पाने की सोच रही हो?"

"बांदा, महाकाली का भेदी है। ये सब कुछ जानता है और बार-बार हमें मिलकर किसी नए रास्ते में फंसा देता है। अगर बांदा पर काबू पा लिया जाए हम इससे अपने काम की कई बातें जान सकते हैं।"

"जथूरा के बारे में जान लेना चाहती हो तुम?"

"सब कुछ। खासतौर से महाकाली का ठिकाना।"

"महाकाली का ठिकाना कोई नहीं जानता। मैंने तो बरसों से नहीं सुना कि वो किसी के सामने आई हो। जहां भी जरूरत होती है अपनी परछाई को भेज देती है। उससे मिल पाने का खयाल अपने मन से निकाल दो।"

"मैंने तो सोचा था कि तुम इस बारे में कुछ कर पाओगी।"

"ये बात नीलकंठ से क्यों नहीं कहती कि... ।"

"वो सब देख-सुन रहा है।" मोना चौधरी कह उठी—"यहां के हालातों से वाकिफ रहता है। जरूरत पड़ी तो वो जरूर कुछ करेगा।"

"नीलकंठ के लिए भी ये सब हालात आसान नहीं हैं।"

वो सब खाने वाली जगह पर पहुंचे। तम्बू लगा हुआ था। भरपूर रोशनियां थीं।

परंतु अगले ही पल वो ठिठककर रह गए।

खाने की एक टेबल गर्म खानों से भरी पड़ी थी। पास में कुर्सियां रखी थीं। खाने की खुशबू वहां फैली हुई थी। हैरानी की बात तो ये ही थी कि उस टेबल के अलावा कहीं पर भी खाना और नहीं था। जबकि उन्हें लग रहा था कि सारा तम्बू बारात के लिए खाने के वास्ते भरा पड़ा होगा। परंतु ऐसा कुछ नहीं था।

ये सवाल सबके जेहन में कौंधा।

उन्होंने ठिठककर बांदा को देखा तो बांदा कह उठा।

"क्या हुआ?"

"बारात का खाना कहां है?"

"आपके सामने टेबल पर।" बांदा ने मुस्कराकर कहा।

"लेकिन बारात का खाना तो... ।"

"बारात आ चुकी है।" बांदा बोला—"आप सब ही तो हैं बाराती। आप लोगों ने ही आना था।"

"अंम बराती हौवे?"

"हां, आप सब ही बाराती हैं।"

"दूल्हो कौणों हौवे?"

"आप सब में कोई एक दूल्हा बनेगा। लेकिन पहले खाना खा लीजिए।"

"अंम बनो दूल्हो।"

"मैं बनूंगा।" मखानी कह उठा।

"तू।" कमला रानी हड़बड़ाई—"तो मेरा क्या होगा।"

"जो भी हो। मुझे क्या। जब भी तेरे को कहता हूं तू नखरे दिखाती है।"

"खाना तो खा ले पहले।" कमला रानी मुस्कराई—"फिर मैं घोड़ी बनूंगी, तू दूल्हा बनना।"

"पक्का।"

कमला रानी ने हाथ बढ़ाकर उसके गाल को छुआ।

मखानी खिल उठा और बांदा से बोला।

"मुझे नहीं बनना दूल्हा। अपनी कमला रानी ही ठीक है।"

"मखानो।" बांकेलाल राठौर कह उठा—"तंम बच गयो। वरनो अंम थारो गलो अम्भी 'वड' दयो हो।"

"दूल्हा कौन बनेगा, इसका फैसला दुल्हन करेगी।" बांदा ने कहा।

बांदा को घूरता देवराज चौहान कह उठा।

"आखिर तुम क्या खेल खेल रहे हो।"

"ये तो कोई खेल नहीं देवा।" मुस्कराया बांदा।

"खेल ही है। जहां हम जाते हैं, वहां तुम या तुम्हारे पिता प्रणाम सिंह आ जाते हैं और हमें मनचाही जगह धकेल देते हैं। आखिर तुम सब करना क्या चाहते हो?" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"मेरा काम आप लोगों को भटकाकर, गहरे खतरे में डालना है।"

"गहरा खतरा?"

"हां, आप लोग जल्दी वहां पहुंचने वाले हैं।"

"अगर हम तुम्हारी बातें न माने तो?"

"माननी पड़ेगी, वरना बड़ी मुसीबत में फंस जाओगे। अगर तुम महाकाली की इस मायावी पहाड़ी से बाहर निकलना चाहते हो तो बता दो।"

"मैं बाहर क्यों जाऊंगा?"

"होने वाली इन बातों से तंग आ जाओगे तो अवश्य यहां से बाहर जाना चाहोगे।"

"हम जथूरा को आजाद कराने आए हैं।"

"वो आपकी मर्जी, परंतु इस कोशिश में आप सफल नहीं हो सकते।" बांदा बोला।

"महाकाली से हम मिलना चाहते हैं।" पारसनाथ ने कहा।

"महाकाली किसी से नहीं मिलती। वो सिर्फ अपनी परछाई को ही भेजती है बातचीत के लिए।"

"उसकी परछाई से हमारी बात कराओ।"

"ये बात तो महाकाली की मर्जी पर निर्भर है कि वो बात करना चाहती है या नहीं। बात करना चाहती होती तो अब तक आपके पास

अपनी परछाई को भेज चुकी होती।" बांदा ने नगीना, देवराज चौहान को देखते हुए कहा।

"इन बातों को छोड़ो। पहले खाना खा लें।" महाजन ने कहा।

उसके बाद वे बांदा की तरफ से ध्यान हटाकर सब खाना खाने लगे।

बांदा एक तरफ शराफत से खड़ा हो गया।

मखानी ने रोटी पर सब्जी लगाकर कमला रानी की तरफ बढ़ाया।

"ले मुंह खोल।"

"क्यों—मेरे हाथ टूटे हैं क्या। मैं नहीं खा सकती।" कमला रानी ने मुंह बनाकर कहा।

"समझा कर।" मखानी प्यार से बोला—"इससे प्यार बढ़ता है।"

"प्यार।" कमला रानी ने उसे घूरा—"अभी तो तू ब्याह करने को तैयार था।"

"वो...तो यूं ही।" मखानी ने दांत दिखाए—"तेरे को चिढ़ा रहा था।"

"मैं सब समझती हूं। तेरे को इधर-उधर मुंह मारने की बुरी आदत है।"

"तू समझती नहीं कमला रानी।" मखानी ने समझाने वाले स्वर में कहा—"मैं ब्याह कर लेता तो, तब भी तेरा ही रहना था। तेरे को भूल थोड़े न पाता। तू तो मेरी जान है। तेरे बिना तो...।"

"बस कर। तेरी बात सुनकर तो खाया-पिया बाहर आ जाएगा।"

"तो पक्का है न?" मखानी ने धीमे स्वर में पूछा।

"क्या?"

"खाने के बाद हम प्यार... ।" मखानी ने कहना चाहा।

"पहले खाना खा ले। कहीं मेरा जवाब सुनकर तेरी भूख ही गायब न हो जाए।"

जब तक खाना चलता रहा। बांदा कुछ भी नहीं बोला।

खाने से जब सब फारिग हुए तो बांदा कह उठा।

"चलिए। दुल्हन के पास जाना है।"

"क्यों?"

"दुल्हन ने अपना वर चुनना है।"

तबला-ढोलक और शहनाई की आवाज उनके कानों में पड़ रही थी।

"हम में से कई पहले से ही शादीशुदा हैं।" महाजन बोला।

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।" बांदा ने मुस्कराकर कहा।

"क्यों फर्क नहीं पड़ता।" नगीना कह उठी—"कंवारों में तो बांके, रुस्तम या मखानी ही हैं।"

"इसका फैसला दुल्हन करेगी।"

नगीना कुछ कहने लगी कि देवराज चौहान बोला।

"चुप रहो और देखो आगे क्या होता है।"

"मेरे पीछे आइए।"

बांदा आगे और बाकी सब पीछे चल पड़े।

चलते-चलते देवराज चौहान और मोना चौधरी करीब आ गए।

"आखिर हम बांदा की बातें क्यों माने जा रहे हैं?" मोना चौधरी बोली।

"हालात हमारे सामने ऐसे होते हैं कि हम अपनी सोचों का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे।"

"बांदा हमें जथूरा से दूर ले जाने की चेष्टा कर रहा है।"

"मालूम है।" देवराज चौहान गम्भीर था।

"अब से हम बांदा की कोई बात नहीं मानेंगे।"

"अभी से?"

"हां।"

"मेरा खयाल है कि हमें देख लेना चाहिए कि इस बार बांदा क्या चाहता है। ये हमारी मर्जी है कि हम उसकी बात मानें या नहीं।"

मोना चौधरी ने खामोशी से सिर हिला दिया।

बांदा के पीछे वे ब्याह वाले घर में प्रवेश कर गए।

"छोरे।" बांकेलाल राठौर रुस्तम राव के पास पहुंचा।

"बोल बाप।"

"तंम कम्पोटीशनो से हट जाओ।"

"मैं समझेला नेई बाप।"

"तंम बोल्लो कि तंम ब्याहो न करो। मखानो को अंम सम्भालो। दुल्हनो म्हारे से ही ब्याह करो हो।"

"बाप, तेरे बस का कुछ नेई होईला।"

"टेड़ा मतो बोल्लो छोरे।"

"सच कहेला अंम।" रुस्तम राव ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"ईब की बारो मौको न चूको अंम।" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर पहुंच गया।

"कोई फायदा नेई होईला बाप।"

तभी कमला रानी, चलते-चलते बांकेलाल राठौर के करीब आ गई।

बांकेलाल राठौर ने उसे देखा।

कमला रानी अदा के साथ मुस्कराई।
बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा। छाती कुछ फूल गई।
"तुम शादी करने जा रहे हो।" कमला रानी ने प्यार से पूछा।
"कम्पोटिशन हौवे। छोरा और मखानो भी लाइनो में लगो हो।"
"मखानी तो हट गया लाइन से।"
"थारे को थैंकयो।"
"तेरे को क्या जरूरत है शादी करने की?" कमला रानी कह उठी।
"बोत जरूरतो हौवे म्हारे को।"
"क्या?"
बांके पल-भर के लिए हड़बड़ाया फिर कह उठा।
"बसो, जरूरतों हौवो। तंम ही बोल्लो का करो हो ब्याह करके?"
"बच्चे पैदा करते हैं।"
"अंम भी पैदो करो।"
"मैं तो सोच रही थी कि तेरे साथ जोड़ा बना लूंगी।"
"म्हारे संगो। मखानो ने मणों कर दयो का?"
"वो पुराना हो गया है। तू नया है। तेरी मूंछें मुझे बहुत पसंद हैं।"
"थारे को प्राब्लमो लगो हो म्हारे ब्याहो से। तम्भी तंम म्हारी राह में आयो हो।"
"मैं तेरे को बहुत...।"
तभी मखानी पास आ पहुंचा।
"क्या कर रही है इसके साथ?" मखानी की आवाज में नाराजगी के भाव थे।
"भैया से बात कर रही हूं। तुझे क्या?"
"भायो?" बांकेलाल राठौर सकपकाया।
"समझा कर, इसे बहला रही हूं।"
"बहला रही हो मुझे?" मखानी ने आंखें निकालीं।
"तुम दोनों को बहला रही हूं।"
"यो तो बोत खतरनाको हौवे। यो तो...।"
तभी बांदा एक कमरे के बंद दरवाजे के सामने रुकता कह उठा।
"इस कमरे में दुल्हन है।"
भीतर से ढोलकी की और खिलखिलाने की आवाजें आ रही थीं।
"आप लोग एक-एक करके यहां से भीतर जाएंगे और दुल्हन

आपको पसंद या ना पसंद करने के बाद दूसरे दरवाजे से बाहर निकाल देगी।" बांदा ने मुस्कराकर सबको देखते हुए कहा।

"तुम खेल क्या खेलना चाहते हो?"

"कोई खेल नहीं देवा। ये तो ब्याह की रस्म निभाई जा रही है।" बांदा ने कहा।

"इस रस्म की आड़ में तुम क्या करना चाहते हो?"

"मैं तो महाकाली का हुक्म बजा रहा हूं।"

"और महाकाली नहीं चाहती कि हम तिलिस्म तोड़कर, जथूरा को आजाद कराएं।"

"वो क्या चाहती है, मैं नहीं जानता। मैं तो उसके आदेशानुसार काम कर रहा हूं।" बांदा ने सबको देखते हुए कहा—"चूंकि इस काम में औरतों का कोई काम नहीं, इसलिए वो पहले एक-एक कमरे में जाएंगी, जिन्हें दूसरी तरफ से निकाल दिया जाएगा। उसके बाद मर्दों की बारी शुरू होगी।"

देवराज चौहान और मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

"इसके बाद हम बांदा की कोई बात नहीं मानेंगे।"

देवराज चौहान ने सिर हिला दिया।

बांदा ने दरवाजा खटखटाया।

अगले ही पल दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाली बीस बरस की हसीन और खूबसूरत लड़की थी, जिसने आसमानी रंग का सूट पहन रखा था। दुपट्टा ओढ़ रखा था। चुटिया कूल्हों तक लम्बी थी।

"हुक्म?" वो बांदा से बोली।

"युवतियों को एक-एक करके भीतर ले जाओ और दूसरे रास्ते से बाहर निकाल दो।"

"जी।" फिर वो आगे खड़ी नगीना से बोली—"आइए।"

नगीना उसके साथ जाने लगी तो मोना चौधरी ने टोका।

"पहले मैं जाऊंगी।"

"ठीक है। आप आ जाइए।"

आगे बढ़कर मोना चौधरी ने भीतर प्रवेश किया।

दरवाजा पुनः बंद हो गया।

भीतर से हंसने-खिलखिलाने की, युवतियों की आवाजें बराबर आ रही थीं।

दो मिनट बाद दरवाजा खुला। वो ही आसमानी सूट वाली युवती थी।

"अब आप आइए।"

नगीना कमरे में प्रवेश कर गई।

दरवाजा पुनः बंद हो गया।

"दरवाजा बंद करने की क्या जरूरत है?" महाजन कह उठा।

"ब्याह वाला घर है।" बांदा ने कहा—"सब युवतियां शरारत से भरी पड़ी हैं। इस वक्त इन्हें कुछ भी कहना ठीक नहीं।"

"ये एक-एक को क्यों भीतर ले जा रही है। हमें इकट्ठे भी तो भीतर ले जाया जा सकता है।" तवेरा ने कहा।

"ये बात तो ये युवतियां ही जानें।"

तभी दरवाजा खुला और आसमानी सूट वाली युवती कमला रानी से बोली।

"तुम आओ।"

कमला रानी ने मखानी से कहा।

"तुम ब्याह के लिए हां मत करना।"

मखानी ने कमला रानी के कान में कुछ कहा।

जिसे सुनकर कमला रानी ने मुस्कराकर कहा।

"उसकी तू फिक्र मत कर। तेरे को उसमें नहला दूंगी।"

"ठीक है।" मखानी खुशी से भर उठा—"मैं ब्याह नहीं करूंगा।"

कमला रानी कमरे में चली गई।

दरवाजा फिर बंद हो गया।

"छोरे।" बांके रुस्तम राव के कान में बोला।

"बोल बाप।"

"म्हारे को तो दुल्हनो के बदले यो आसमानी कपड़ों वाली ही बोत पसंद आ गयो हो।"

"तेरे को तो सब पसंद आईला बाप।"

"यो उम्रो ही ऐसी हौवे। सबो ही भलो लगे हो।"

"कमला रानी तेरे से क्या बात करेला बाप?"

"दानों फैंको हो अंम पे। ईब वो देखो हो कि म्हारा ब्याह हो जाइयो तो सबो कुछ देने में तैयार होवे वो।"

"सब कुछ क्या बाप?"

"मत पूछो छोरे। म्हारो पूरा ध्यानो दुल्हनो पर हौवे। तन्ने म्हारे कम्पोटिशन में नेई आणो।"

"नेई बाप। इस मामले में आपुन नेई पड़ेला।"

"समझदारो हौवो तम।"

तभी दरवाजा खुला।

तवेरा भीतर गई। दरवाजा बंद हो गया।

"यो तो बोतो ही देर लगो हो।"

"हौंसला रखेला बाप।"

"म्हारो दिल बजो हो जोरों से।"
"घबराने का नेई बाप।"
"तंम म्हारे साथो हौवो न?"
"पक्का बाप।"
"थारा ही सहारो हौवे ईब म्हारे को। म्हारे को पसीनो आयो हो।"
"दुल्हन देखने से पहले ही तू पसीने से भीगेला बाप।"
"म्हारो यो ही आदतो हौवे।"
तभी दरवाजा खुला और उस युवती ने सब पर नजर मारी।
बांदा कह उठा।
"मर्दों में सब से पहले कौन जाना चाहेगा?"
"मैं जाऊंगा।" देवराज चौहान बोला।
दरवाजे पर खड़ी आसमानी कपड़े वाली युवती मुस्कराकर बोली।
"आइए। दुल्हन आपका इंतजार कर रही है।"
देवराज चौहान खुले दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गया।
युवती ने दरवाजा बंद कर लिया।
"देवराज चौहानो तो गयो। ईब पीछो वाले दरवाजे से ही बाहरो निकलो हो।"
"ये शादीशुदा होईला। तुरंत पीछे वाले दरवाजे से दुल्हन इसे निकाईला।"
"म्हारे को डर लगो हो कि दुल्हनो देवराज चौहानो को पसंदो न कर लयो।"
"देवराज चौहान शादी को तैयार नेई होईला बाप।"
"म्हारा चांसो खूबो हो।"
"पक्का बाप।"
तभी दरवाजा खुला। वो आसमानी कपड़े वाली युवती दिखी।
बांदा आगे खड़े महाजन से बोला।
"तुम जाओ।"
महाजन खुले दरवाजे से भीतर प्रवेश कर गया।
"देवराज चौहानो को पसंद तो न करो हो दुल्हनो?" बांके ने जल्दी पूछा।
युवती उसे देखकर मुस्कराई और दरवाजा बंद कर लिया।
"म्हारे को तिरछी नजरों से देखो हो। बोल्लो ना।" बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस ली।
बांदा मुस्कराता हुआ बारी-बारी सबको देखे जा रहा था।
तभी दरवाजा खुला।

पारसनाथ भीतर प्रवेश कर गया। दरवाजा पुनः बंद हो गया।
बांकेलाल राठौर बांदा के पास पहुंचा।
"बांदो।"
"बोल भंवर सिंह।"
"म्हारा दिल जोरों से बजो हो कि वो म्हारे को पसंद करो या न करो।"
"ये तो मैं भी नहीं बता सकता।"
"उधरो ब्याहो की तैयारियो, सबो पूरो हौवे न?"
"सब पूरी है।"
"पण्डतो ब्याह के फेरो वास्ते आ गयो?"
"हां, वो तो कब से तैयार बैठा है।"
"घोड़ी न दिखो हो?"
"वो भी तैयार खड़ी है।" बांदा ने कहा।
"दुल्हनो म्हारे को पसंद कर लयो तो कोई अड़चनो ना हौवे ब्याह को।"
"हां भंवर सिंह। तब तो तुरंत ब्याह हो जाएगा।"
बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस ली।
तभी दरवाजा खुला।
मखानी भीतर चला गया। दरवाजा फिर बंद हो गया।
"छोरे।" बांकेलाल राठौर रुस्तम राव के पास पहुंचा।
"बोल बाप।"
"यो मखानी गड़बड़ कर दयो हो। दुल्हनो मखानी को पसंद कर लयो तो मखानी ब्याह के लिए तैयार हो जाए।"
"ये खतरा तो होईला।"
"ऐसो हो गयो तो अंम कमलो रानी से काम चला लयो।"
"पैले ही सब सोचेला बाप।"
"म्हारे को ब्याहो की बोत जरूरतो हौवे। गुरदासपुरो वाली म्हारे को धोखो दे दयो।"
उसके बाद रातुला और फिर रुस्तम राव गया।
अब बांकेलाल राठौर ही अकेला बचा था दरवाजे के बाहर।
"बांदो।" बांकेलाल राठौर कह उठा—"म्हारी बारो सबसे बादो में आयो हो।"
"अब क्या चिंता। अब तो तुम ही बचे हो।"
"वो पैले किसी दूसरो को पसंद कर लयो तो म्हारा नम्बरो तो कट गयो।"
बांदा मुस्कराता हुआ उसे देखता रहा।

"तंम क्यों मुस्करावो?"
"तुम्हें बहुत जल्दी है ब्याह करने की।"
"खासो जल्दो न हौवे, पर हो जावे तो अंम भी ठिकाणो लग जायो।" बांकेलाल राठौर ने गहरी सांस ली।
"मैंने दुल्हन से कह रखा है कि मूंछों वाले को पसंद करे।" बांदा बोला।
"सच्चो?" बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा—"मन्ने मूंछों को बोत प्यार से पालो हो। उसो ही प्यार से दुल्हनों को भी पालो। ईक बार फेरे हो जाणे दयो। काम हो जाणे दयो।"
तभी दरवाजा खुला। आसमानी कपड़े वाली युवती दिखी। वो बांके से कह उठी।
"आइए—आइए। अब तो आप ही का इंतजार है।"
"म्..म्हारा?" बांकेलाल राठौर की आंखें चमकीं।
"जी हां। अब तो सिर्फ आप ही बचे हैं।"
"म्हारे को शिकायत हौवे। तंम म्हारे को बोत इंतजारो करायो।"
"सब शिकायत दूर ही जाएगी। दुल्हन आपका इंतजार कर रही है।"
"म्हारा?" बांके ने बांदा को देखा।
बांदा ने मुस्कराकर सिर हिलाया।
बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर जा पहुंचा। आगे बढ़ा और युवती से बोला।
"चल्लो, अंम भी तैयार हौवो।"
युवती ने रास्ता दिया। बांके ने भीतर प्रवेश किया तो युवती ने दरवाजा बंद कर लिया।

▭ ▭

बांकेलाल राठौर भीतर प्रवेश करते ही ठिठका।
दस-बारह युवतियां थीं वहां सजी-संवरी सी। हर एक के चेहरे से नूर चमक रहा था। खूबसूरती देखते ही बनती थी। एक युवती एक तरफ बैठी ढोलक बजा रही थी। दूसरी तबला बजा रही थी। बाकी दुल्हन को घेरे बैठी खिलखिलाकर हंस रही थीं। दुल्हन घूंघट ओढ़े शानदार बेड पर बैठी थी। ये सब देखते हुए बांके की आंखों में चमक थी।
आसमानी कपड़े वाली बांके की बांह पकड़ते कह उठी।
"दुल्हन के पास तो चलिए। आप तो घबरा रहे हैं।"
बांके ने प्यार-भरी नजरों से उसे देखा। हाथ मूंछ पर पहुंच गया।
"अंम आपो से कुछो कहो?"
"कहो-कहो।"

"म्हारे को तो आप ही बोत जंचो हो।"

आसमानी कपड़े वाली खिलखिलाकर हंसी फिर कह उठी।

"एक बार दुल्हन को देख लीजिए। उसके बाद आपको दूसरी पसंद नहीं आएगी।"

"म्हारे को आप ही ठीको लगो।"

"चलिए भी। दुल्हन को तो आपको देखना ही पड़ेगा।"

"बादो में तंम म्हारे को किधरो मिल्लो हो?"

"मैं तो दहेज में साथ चलूंगी।"

"सच्चो।"

"बिल्कुल सच। कसम से।"

"फिरो ठीको। दुल्हनो भी म्हारी। सखी भी म्हारी। ईक बात बतायो।"

"क्या?"

"दुल्हनो को अम्भी तको कोई पसंदो न आयो?"

"नहीं। दुल्हन को तो मूंछें पसंद हैं।"

"वो म्हारी हौवे।"

"तभी तो वो तुम्हें पसंद करेगी। चलिए, एक बार दुल्हन से हाथ फिरवा लीजिए।"

"हाथ फिरवा लयो। किधरो?"

"चलो भी।" वो बांके को खींचती कह उठी—"इतनी बातें तो किसी ने भी नहीं पूछीं।"

"म्हारी जिंदगो का सवाल हौवे, इसो वास्ते अंम पूछो हो।" बांके उसके साथ आगे बढ़ा।

दुल्हन की सहेलियां शरारत-भरे अंदाज से हंस रही थीं।

ढोलकी और तबला बजाया जा रहा था।

ऐसे माहौल में अलग ही आनंद आ रहा था। आसमानी कपड़े वाली बांके को लेकर बेड के पास पहुंची और कह उठी।

"दुल्हन साहिबा। आपका मूंछों वाला दूल्हा आ गया।"

बांके का हाथ मूंछ पर पहुंच गया। गर्दन थोड़ी अकड़ गई।

"कैसा लगता है मूंछों वाला कड़क गबरू?" घूंघट उठाए बिना दुल्हन ने पूछा। दुल्हन की मादकता से भरी आवाज सुनकर बांके जैसे निहाल हो गया।

"मैं क्या बताऊं।" आसमानी कपड़े वाली हंसकर बोली—"बिल्कुल वैसा ही लगता है, जैसा दूल्हा आपको चाहिए।"

बांकेलाल राठौर ने सहमति से सिर हिलाया फिर कह उठा।

"अंम थारे को बोत सुखो रखो।"

"और।" दुल्हन ने घूंघट की ओट से पूछा।

“अंम थारे को लम्बी मोटर गाड़ी दयो।”
“और।”
“थारे को दिल की रानी बनायो के पालो हो। थारी बोत सेवा करो। थारे पांवों जमीन पर न पड़ने दयो कि मैले हो जावे। अंम थारे को गोदी में खिलायो। बोत प्यारो से रखो।”
“और।”
“ओरो।” बांकेलाल राठौर के चेहरे पर सोच के भाव उभरे—“हर वक्तो थारे दिलो को बहलाऊं।”
“मेरी खूब सेवा करोगे?” दुल्हन ने पूछा।
“खूब।”
“मुझे खाना बना के खिलाओगे?”
“बोत बढ़ियो खाणो बनाऊं थारे वास्तो।”
“प्यार में कोई कमी तो नहीं रखोगे?”
“बोत प्यार करूं थारे को। तभ्भी तो अंम ब्याह करणो चाहो हो। प्यारो के वास्ते।”
“मेरे को बहन बना के रखोगे?”
“अंम थारे से राखो भी बंधवायो—अंम... ।” एकाएक बांकेलाल राठौर ठिठका और घूंघट को देखता कह उठा—“अंम थारे से ब्याहो करो हो। थारे को बहन बना के ना रखो, औरतो बना के रखो हो।”
“फिर तो आप मेरे को पसंद हैं।”
बांकेलाल राठौर की आंखें चमक उठीं।
“पक्का अंम थारे को पसंद हौवे?”
“हां।”
“तंम म्हारे से ब्याह करो हो?”
“हां।”
“चल्लो। बाहर पंडतो भी हौवे। सबो इंतजाम हौवे। अंम जल्दो से ब्याह कर लयो।”
“कितना परेशान है ब्याह को।” आसमानी कपड़े वाली गहरी सांस लेकर कह उठी—“दुल्हन को देखने की भी चाह नहीं।”
“सारो जिंदगो दुल्हनो को ही तो देखना हौवे।”
तभी दुल्हन ने घूंघट पलट दिया।
दुल्हन पर नजर पड़ते ही बांकेलाल राठौर की आंखें फैल गईं।
“तंम?”
साड़ी में प्रणाम सिंह मौजूद था।
प्रणाम सिंह मुस्कराया।

"तंमने म्हारे को कुओं में फेकों हो ईब यां पे दुल्हनो बनके बैठ गयो। तंम बोत बड़ो हरामो हौवे—तंम... ।"

तभी सारी युवतियां बांकेलाल राठौर पर झपट पड़ीं।

"यो का करो हो।" बांकेलाल राठौर ने बचना चाहा। परंतु युवतियों ने उसे अच्छी तरह जकड़ लिया।

साड़ी में फंसा प्रणाम सिंह बेड से नीचे उतरा और थोड़ा-सा झुकते हुए बेड को धकेला तो बेड बे-आवाज-सा एक तरफ सरकता चला गया। उसके नीचे खाली जगह दिखाई दी।

उधर दो युवतियां तबला और ढोलक बजाए जा रही थीं। प्रणाम सिंह पीछे हटता, बांके को पकड़े युवतियों की तरफ इशारा किया।

"यो का करो। मन्ने एको से ही ब्याह करणो हौवे। सबो से नहीं।" बांकेलाल राठौर युवतियों की पकड़ में हड़बड़ाया-सा खड़ा था।

युवतियां बांके को धकेलकर, बेड के नीचे वाली खाली जगह पर लाईं।

"ईब समझो। यो थारा पीछो वालो दरवाजो हौवे। इधरो ही तमने सबो को फेंको हो, ईब म्हारे को फेंको इधरो।"

युवतियों ने उसे धक्का देना चाहा।

परंतु बांके खुद को संभालता कह उठा।

"प्रणाम सिंहो, अंम थारे को 'वड' दयो। अंम थारी औलादो बांदो को भी... ।"

तभी युवतियों ने मिलकर उसे उठाया और बेड के नीचे की खाली जगह के भीतर फेंक दिया।

▭ ▭

मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा जब महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के नीचे पहुंचे तो आधी रात हो चुकी थी। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। ठंडी हवा चल रही थी। परंतु लक्ष्मण और सपन पूरी तरह पसीने से भीगे हुए थे। थककर चूर हो गए थे वे। उनकी बात नहीं मानी गई, वरना वो तो रास्ते में ही लेट जाते।

वहां पहुंचते ही दोनों जमीन पर जा बैठे।

"तुम इंसान बहुत जल्दी थक जाते हो।" मोमो जिन्न ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"चुप कर।" सपन चड्ढा उखड़ा—"यहां जान निकली जा रही है और तू... ।"

"जिन्न से तमीज से बात करो।" मोमो जिन्न ने कठोर स्वर में कहा।

"भूखे पेट हमसे तमीज से बात नहीं होती।" लक्ष्मण दास ने कहा—"खाने का इंतजाम करो।"

"पानी भी।" सपन ने कहा—"ठंडा होना चाहिए।"

वहां गहरा अंधेरा था।

मोमो जिन्न ने उंगली आसमान की तरफ करके कुछ बुदबुदाया तो उसके दाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊपर के हिस्से में टॉर्च की तरह तीव्र रोशनी हो उठी। आस-पास की सारी जगह स्पष्ट नजर आने लगी।

"तुम्हारे पीछे खाना पड़ा है। खा लो।" मोमो जिन्न ने कहा।

दोनों ने फौरन पीछे की तरफ देखा तो वहां बर्तनों में खाना और पानी पड़ा देखा। दोनों ने राहत की सांस ली और खाने के पास पहुंचकर, खाने में व्यस्त हो गए।

"तुम भी खा लो।" लक्ष्मण कह उठा।

"खबरदार। जिन्न से खाने-पीने की बात मत करो। जिन्नों को भूख नहीं लगती।"

'साला।' सपन बड़बड़ाया—'नौ चूहे खाकर गंगा स्नान की बात करता है।'

"नौ नहीं, नौ सौ।" लक्ष्मण दास कह उठा।

"ठीक है, ठीक है।" चिढ़ा-सा सपन बोला—"चूहे तो खा लिए।"

"बाकी लोगों को यहां होना चाहिए। परंतु यहां तो कोई भी नजर नहीं आ रहा।"

"वो घोड़ों पर थे। जल्दी पहुंचे। पहाड़ी के भीतर चले गए होंगे।"

"घोड़े भी तो नजर नहीं आ रहे।"

"फुर्सत मिलते ही खिसक गए होंगे। हमें खिसकने का मौका नहीं मिल रहा।"

"महाकाली की मायावी पहाड़ी में खतरे होंगे।"

"मेरा मन नहीं कर रहा पहाड़ी के भीतर जाने को।"

"मोमो जिन्न, हमें भीतर लिए बिना मानेगा नहीं।"

"हरामी। हमें पालतू कुत्तों की तरह साथ लिए घूमे जा रहा है।"

बातों के साथ दोनों खाते भी जा रहे थे।

मोमो जिन्न की नजरें दूसरों की तलाश में हर तरफ घूम रही थीं।

"यहां तो कोई भी नजर नहीं आ रहा।" मोमो जिन्न बोला।

"तेरे इंतजार में रुके तो रहेंगे नहीं। पहाड़ी के भीतर चले गए होंगे।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"पहाड़ी के भीतर नहीं—वापस चले गए होंगे।"

"वापस?" लक्ष्मण ने सपन को देखा।

"हां।" सपन कह उठा—"जथूरा को आजाद कराकर, वापस भी चले गए होंगे।"

"हां-हां।" लक्ष्मण दास जल्दी से बोला—"यही बात होगी। फिर तो हमें भी वापस चलना चाहिए।"

"चुप रहो।" मोमो जिन्न ने तीखे स्वर में कहा—"वो सब पहाड़ी के भीतर चले गए हैं। हमें उनके पीछे जाना होगा।"

"क्या ये जरूरी है?"

"बहुत जरूरी है।"

"हम यहीं रहकर उनकी वापसी का इंतजार कर सकते हैं।"

"आलसी मत बनो। समझदार लोग काम करने में सबसे आगे रहते हैं।"

"हम थके हुए हैं। नींद भी आ रही है। ये रात तो हम यहीं पर बिताएंगे।"

"हमने वक्त नहीं खराब करना है।" मोमो जिन्न बोला—"हमें चलना होगा।"

"हमने कौन-से तीर मार लेने हैं वहां जाकर।" सपन चड्ढा तीखे स्वर में बोला—"यहीं पर उनकी वापसी का इंतजार...।"

"नहीं, हमें...।" मोमो जिन्न कहते-कहते ठिठका। अगले ही पल उसकी गर्दन थोड़ी-सी टेढ़ी हो गई। आंखें बंद कर लीं। साथ ही फिर धीरे-धीरे सिर हिलाने लगा। जैसे किसी की बात सुन रहा हो।

"जथूरा के सेवकों से बात कर रहा है कमीना।" लक्ष्मण दास कह उठा।

मोमो जिन्न धीरे-धीरे सिर हिला रहा था। फिर मोमो जिन्न बोला।

"मैं अभी चल देता हूं।"

"यहां टांगों की जान निकली हुई है और ये चलने की बात कह रहा है।"

अगले ही पल मोमो जिन्न ने आंखें खोलीं और दोनों से बोला।

"हमें यहां से चलना है।"

"हम नहीं जाएंगे। थके पड़े हैं।" सपन चड्ढा ने कहा—"हम जिन्न नहीं हैं। जो कि...।"

"खबरदार जो जिन्न बनने की भी सोची। तुम साधारण लोग जिन्न बनने की कैसे सोच सकते हो। जिन्न बनने के लिए कई

बाधाएं पार करनी पड़ती हैं। तुम लोग तो जरा-सा चल नहीं सकते।"

"जरा सा। सारा दिन हो गया चलते-चलते और तुम कहते हो कि... ।"

"ये जरा-सा चलना ही है। मुझे तो समझ में नहीं आता कि इतने दिनों तक तुम लोगों के साथ कैसे रह लिया मैं।"

"क्या?" लक्ष्मण दास हड़बड़ाया—"तुम-तुम कह रहे हो ये बात।"

"मैं क्यों नहीं कह सकता।"

"तुम तो हमें यार कहते थे। हमारे लिए जान देने की बात कहते थे।"

मोमो जिन्न नजरें चुराता कह उठा।

"तब की बात और थी।"

"और क्यों थी?"

"वो...वो तब किसी ने शरारत करके मुझ में इंसानी इच्छाएं डाल दी थीं। तब मैं इंसानों जैसा बन गया था।"

"तब हमने ही तुम्हें बचाया कि, तुम्हारे बारे में किसी से कुछ नहीं कहा।"

"हमने तुम्हें जलेबियां-रबड़ी खिलाईं। तुम्हें सिल्क के कपडे सिलवाकर दिए।" (ये सब विस्तार से जानने के लिए पढ़ें अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**।)

"खबरदार जो जिन्न से खाने-पीने की बातें कीं।" मोमो जिन्न कठोर स्वर में बोला।

"गलत क्या कहा?"

"तुम दोनों शिष्टता भूल गए हो क्या?"

"जलेबी-रबड़ी खाते हुए तुम्हारी शिष्टता कहां थी।"

"ज्यादा बोले तो मैं तुम लोगों को नंगे कर दूंगा।"

"हां-हां कर दे।" लक्ष्मण दास गुस्से से बोला—"यहां हमें नंगा देखने के लिए है ही कौन।"

"ठीक कहा।" सपन ने सिर हिलाया—"कर दे नंगा।"

मोमो जिन्न ने दोनों को घूरा।

"देखता तो ऐसे है कि जैसे खा जाएगा हमें।" सपन चड्ढा ने मुंह बनाकर कहा।

"बड़े देखे ऐसे जिन्न।"

"मैं तुम दोनों की बुद्धि पलटा रहा हूं। तब तुम जथूरा महान है—जथूरा महान है, ही कहते रहोगे।"

"बुद्धि कैसे पलटाओगे?"
"अपनी ताकत से। तब तुम लोग सोचने-समझने के जरा भी काबिल नहीं रहोगे। मेरे पीछे पूंछ हिलाओगे।"
"पूंछ?"
"मतलब कि कुत्ते बन जाएंगे हम सपन।" लक्ष्मण दास ने कहा।
"ये ऐसा नहीं कर सकता। हमें सिर्फ धमका रहा है।"
"क्या पता कर दे, फिर हम क्या करेंगे?"
लक्ष्मण और सपन की नजरें मिलीं।
"क्या करें?" लक्ष्मण दास बोला।
"इस वक्त इसकी बात मान लेते हैं।" सपन चड्ढा ने परेशान स्वर में कहा।
"ठीक है, बाद में साले से निबटेंगे।"
"लेकिन हम थके हुए हैं। चल नहीं सकते।"
उनकी बात सुनता मोमो जिन्न बोला।
"मैं तुम दोनों को अपनी शक्ति से पहाड़ी के ऊपर पहुंचा दूंगा।"
"ये ठीक रहेगा।"
"चलो मेरी बांहें पकड़ो और आंखें बंद कर लो।" मोमो जिन्न ने अपनी बांहें फैलाकर कहा।
"ऐसी सैर तो हम पहले भी कर चुके हैं।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़िए पूर्व उपन्यास **'जथूरा'**।)
दोनों खाना खा चुके थे।
वे उठे और दोनों ने मोमो जिन्न की फैली बांहों में से एक-एक बांह पकड़ ली।
उसी पल मोमो जिन्न बड़बड़ाया कुछ।
"लक्ष्मण कस के पकड़ना गिर मत जाना।" सपन चीखा।
"तू अपना खयाल रख।"
अगले ही पल मोमो जिन्न का शरीर, दोनों को बांहों में फंसाए, जमीन से ऊपर उठने लगा।

▭ ▭

मोमो जिन्न के पांव जथूरा के चेहरे पर, नाक की गुफा के पास पड़े। फिर लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के पांव भी नीचे टकराए। वे सकुशल पहाड़ी के ऊपर चंद मिनटों में पहुंच गए थे।
"यार तुम तो हनुमान जैसे उड़ते हो।" लक्ष्मण दास बोला।
"खबरदार। मैं जिन्न हूं। मुझे किसी के साथ न मिलाओ।"
"जिन्न क्या हो गया, तोप समझता है खुद को।" सपन चड्ढा व्यंग से बोला।

"मेरी बांहें छोड़ो।"

दोनों ने बांहें छोड़ीं।

मोमो जिन्न की उंगली से निकली रोशनी में उन्हें सब कुछ नजर आ रहा था।

"लक्ष्मण। ये क्या, हम पहाड़ी के ऊपर पहुंच गए?"

"हां।"

"जिन्न बनना भी क्या मजेदार खेल है। जहां चाहे पलक झपकते ही पहुंचे जाओ।"

"तो इसने हमें दिन में इतना चलाया क्यों?"

"पागल है साला।"

"शिष्टता से बात करो।" मोमो जिन्न ने सख्त स्वर में कहा।

"शिष्टता से ही तो कर रहे हैं।"

"थोड़ी और शिष्टता का इस्तेमाल करो।"

"सुन लिया सपन।"

"बोलने दे इसे।"

"अगर मेरी बात नहीं मानोगे तो औरतों के बीच में तुम लोगों को नंगा कर दूंगा।"

"यहां औरतें हैं ही नहीं।"

"कहीं तो मिलेंगी। तब मैं... ।"

"ऐसा मत कह यार—मैं... ।"

"मैं जिन्न हूं यार नहीं।"

"ठीक है। जिन्न ही सही। तू कोई उल्टा काम मत करना। हम तेरी बात मानेंगे।"

"लेकिन अब जाना कहां है?"

"हमारे सामने दो गुफाएं नजर आ रही हैं। पहाड़ी के भीतर जाने का रास्ता इन गुफाओं से ही है।"

"ये तो दो हैं, कौन-सी से भीतर जाएं?"

"बाईं वाली गुफा से भीतर जाएंगे।"

पाठक बंधु याद रखें कि देवराज चौहान, मोना चौधरी, अन्य सब दाईं वाली गुफा से भीतर गए थे।

"दाईं से क्यों नहीं?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"जथूरा के सेवकों ने मुझे बाईं तरफ वाले रास्ते से भीतर जाने को कहा है।"

"ठीक है, चलो।"

तीनों आगे बढ़े और बाईं गुफा के भीतर प्रवेश कर गए।

उनके भीतर प्रवेश करते ही वो सारी जगह रोशनी से जगमगा उठी।

मोमो जिन्न ने अपनी उंगली से निकलती रोशनी बंद कर दी।

"ये रोशनी कहां से आ गई?" लक्ष्मण दास बोला।

सामने ही रास्ता जा रहा था।

मोमो जिन्न आगे बढ़ता कह उठा।

"मेरे पीछे आओ।"

दोनों उनके पीछे चल पड़े।

"ये मायावी पहाड़ी है लक्ष्मण।" सपन चड्ढा उसके करीब आकर कह उठा।

"सुना तो है।"

"तिलिस्म का भी कुछ है भीतर। मोमो जिन्न ने बताया था।"

"ये सब बातें तू मुझे क्यों याद दिला रहा है?"

"हम फंस गए तो मोमो जिन्न फौरन खिसक जाएगा। तब हमारा क्या होगा।"

"इस कमीने जिन्न का कोई भरोसा नहीं।"

तभी आगे चलता मोमो जिन्न कह उठा।

"मुझ पर पूरा भरोसा रखो। मैं तुम दोनों को छोड़कर नहीं जाऊंगा।"

"तुम हमारी बातें सुन रहे हो।"

"भूल गए, मैंने बताया था कि तुम दोनों के कानों में सैंसर लगा रखे हैं। जो भी बात करोगे, मुझे सुनाई देगी।"

"क्या मुसीबत है।"

"यहां जिन्न भी है। सैंसर भी है, सैटलाइट भी है। कैसी दुनिया है ये।"

"हमारी दुनिया ज्यादा बेहतर है।" सपन चड्ढा ने कहा।

"ये दुनिया ज्यादा अच्छी है।"

"वो कैसे?"

"क्योंकि यहां जिन्नों को आराम से रहने दिया जाता है। तुम्हारी दुनिया में जिन्नों के लिए जगह नहीं है।"

"वहां इंसानों के रहने की जगह नहीं है तो जिन्नों को कहां जगह मिलेगी।"

"हम जिन्न जब भी तुम्हारी दुनिया में जाते हैं, रहने की जगह को लेकर हमारे सामने समस्या आ जाती है। कई बार तो चुपके से लोगों के घरों में घुसकर अपना ठिकाना बनाना पड़ता है। अच्छे जंगल भी नहीं दिखते वहां।"

"लोगों के घरों में घुसकर तुम जिन्न, वहां उत्पात भी मचाते हो।"

"कभी-कभी।"

"ऐसा क्यों करते हो?"

"उस घर के लोग जिन्न को असमय तंग करते हैं। आराम नहीं करने देते। हमारी कार्यशैली में बाधा डालते हैं। तब जिन्न को क्रोध आ जाता है तो गुस्से में वो घर की चीजों को आग लगा देता है। बर्तनों को इधर-उधर फेंकता है।"

"जानते हैं। तुम लोगों के इन कामों से घर के लोग कितने डर जाते हैं।"

"तो वो हमें तंग न करें।"

"तुम उनके घर में घुसते ही क्यों हो।"

"हमें भी तो ठिकाना चाहिए।"

"किसी के घर में घुसकर बैठ जाने का तुम्हें कोई हक नहीं है। ये बदमाशी है।"

"जिन्न की हरकतें बदमाशों जैसी ही होती हैं। परंतु हम बदमाश नहीं जिन्न होते हैं।"

"छोड़ यार।" लक्ष्मण दास बोला—"किसके मुंह लग गया तू।"

"बहुत बदतमीज होते जा रहे हो तुम दोनों।"

कुछ देर बाद ही वो खुली जगह में जा निकले।

यहां धूप निकली हुई थी। सामने पेड़ों की कतारें नजर आ रही थीं। तेज हवा चल रही थी।

"यहां तो दिन निकला हुआ है।" सपन चड्ढा के होंठों से निकला।

"सूर्य भी निकला हुआ है। ये क्या हो रहा है सपन?"

"हम...हम तो अभी अंधेरे में थे। रात हो रही थी। परंतु...परंतु ये सब क्या?"

मोमो जिन्न कह उठा।

"यहां से महाकाली की मायावी दुनिया शुरू होती है। ये उसी की दुनिया का सूरज है। ये सब चीजें उसने अपनी शक्तियों से बना रखी हैं। वो बहुत ताकतवर शक्ति है।"

"लेकिन हम यहां क्यों आए हैं?"

"देवा-मिन्नो की सहायता के लिए कि शायद उन्हें हमारी जरूरत पड़ जाए। देवा-मिन्नो को ढूंढ़ना होगा कि वो कहां है।"

"देवा-मिन्नो की सहायता, हम भला क्या सहायता कर सकते हैं।"

"खामोश रहो।" मोमो जिन्न की नजरें हर तरफ जा रही थीं।

"जरा-सा चलते हैं और हम थक जाते हैं। हम भला क्या किसी की सहायता... ।"

"लक्ष्मण।"

"कह।"

"ये महाकाली नाम की बहुत बड़ी जादूगरनी की जगह है।"

"तो?"

"हम बिना पूछे उसकी हद में घुस आए हैं। वो हमें मार देगी। ये साला मोमो जिन्न तो भाग जाएगा, जान बचा के।"

"वो देख, जथूरा के सेवकों से बात कर रहा है हरामी।"

मोमो जिन्न एक तरफ सिर झुकाए, आंखें बंद किए, कान पर हाथ रखे, हौले-हौले सिर हिला रहा था। ऐसा वक्त कुछ देर तक रहा फिर वो सामान्य होकर, इधर-उधर देखने लगा।

"हमें इस तरफ जाना है।"

"इधर क्या है?"

"नदी है। वहां हमें सवारी मिलेगी, काले रंग की। उस पर सवार हो जाना है।"

"काले रंग की सवारी, नदी में?"

"पागल हो गया लगता है।"

"आओ।"

लक्ष्मण और सपन, मोमो जिन्न के पीछे चल पड़े।

"ये हमें थका देगा।"

"जो किस्मत में लिखा है, वो ही होगा।"

"मैं टांगों की किस्मत की बात कर रहा हूं। मुझसे और नहीं चला जाता।"

दस मिनट के बाद ही उन्हें नदी दिखाई देने लगी।

दूर तक जाती, लम्बी नदी। उसका पानी मध्यम गति से बह रहा था। किनारे पर चौदह नावें एक ही कतार में खड़ी थीं। नाविक या चप्पू नावों में नहीं नजर आ रहा था।

वे किनारे पर पहुंचकर ठिठके।

रंग-बिरंगी नावें थीं वे।

लाल-पीली-नीली-काली-हरी-गुलाबी-भूरी यानी कि सबका रंग अलग-अलग था।

"हम काली नाव पर बैठेंगे।" मोमो जिन्न बोला।

"तुम भी?" लक्ष्मण दास ने उसे देखा।

"मैं क्यों नहीं बैठ सकता?" जिन्न ने लक्ष्मण दास को देखा।

"तुम जिन्न हो। तुम्हें अपनी शान बनाए रखनी चाहिए। जिन्न

भी भला नाव में सफर करते हैं। तुम्हें तो शान से नाव के ऊपर-ही-ऊपर उड़ते हुए आना चाहिए हमारे साथ। क्यों सपन?"

"ठीक ही तो कहा है तूने।"

"जब नाव में बैठकर सफर हो सकता है तो मैं अपनी शक्ति व्यर्थ में क्यों खर्च करूं।"

"कंजूस है। अपनी ताकत खर्च करने में डरता है।"

मोमो जिन्न आगे बढ़ा और काली नाव में जा बैठा। लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी नाव में पहुंच गए।

"ये चलेगी कैसे?" सपन चड्ढा ने कहा—"नाविक नहीं, चप्पू नहीं और... ।"

तभी नाव धीमे से आगे सरकने लगी।

"चल पड़ी, बैठ जा सपन।" लक्ष्मण दास चीखा।

सपन चड्ढा हड़बड़ाकर फौरन नीचे बैठ गया।

"ये-ये चल कैसे रही है?" लक्ष्मण दास ने सपन चड्ढा से पूछा।

"मुझे क्या पता, जादूगरनी की नगरी है, यहां जो हो जाए वो ही कम है।"

"लक्ष्मण दास ने मोमो जिन्न को देखा, जो आराम से बैठा था।

"देख तो कैसे मुफ्त की सवारी करने में मस्त है।" लक्ष्मण दास कह उठा।

नाव किनारे से नदी के बीचोबीच पहुंची और फिर धीरे-धीरे तेज होने लगी।

न तो इंजन की आवाज न चप्पू।

बे-आवाज सी वो नदी के पानी पर दौड़े जा रही थी।

हर पल जैसे नाव की रफ्तार बढ़ती जा रही थी।

"मोमो जिन्न।" लक्ष्मण दास परेशान-सा कह उठा—"ये चल कैसे रही है, इंजन नहीं, चप्पू नहीं, चलाने वाला नहीं।"

"चल तो रही है।" मोमो जिन्न बोला—"आराम से बैठे रहो।"

"लेकिन-लेकिन जाना कहां है?"

"मैं नहीं जानता। नाव हमें जहां पहुंचाएगी, वो ही हमारी मंजिल होगी।"

"मंजिल? वहां क्या होगा?"

"यहां पर मैं भी तुम्हारी तरह नया ही हूं। इस मायावी पहाड़ी के बारे में मैं कुछ नहीं जानता।"

"महाकाली को तो जानते होगे?"

"नहीं।"

नाव की रफ्तार इतनी तेज थी कि उन्हें नाव को पकड़कर बैठना पड़ रहा था।

जबकि मोमो जिन्न मजे में बैठा था।

"सुना तुमने लक्ष्मण।" सपन चड्ढा ऊंचे स्वर में कह उठा—"ये महाकाली को नहीं जानता। मायावी पहाड़ी के बारे में कुछ नहीं जानता। यहां के रास्तों का इसे पता नहीं और हमें अपने साथ यहां ले आया है।"

"मुसीबत आने पर ये तो भाग जाएगा। तब हमारा क्या... ।"

"मैं नहीं भागूंगा।" मोमो जिन्न बोला।

"तेरा क्या भरोसा तू तो कहता है कि जिन्न झूठ नहीं बोलते और तूने कभी सच नहीं बोला। कभी तू हमारा पक्का यार बनता था और अब तू हमें नंगा घुमाने को कहता है। तू तो सबसे बड़ा कमीना है।"

मोमो जिन्न मुस्कराया।

"देख तो सपन। साला पहली बार अपनी तारीफ सुनकर मुस्कराया है।"

"तुम दोनों नादान बच्चे हो।"

"नादान बच्चे। हम तो उम्र में तुमसे बड़े हैं।" सपन चड्ढा कुढ़कर बोला।

"जिन्न की उम्र की बराबरी करने की चेष्टा मत करो। जिन्नों की उम्र हजारों साल लम्बी होती है। हमारे मालिक बदलते रहते हैं। परंतु हम वही रहते हैं। तुम इंसान तो 50-60 बरस की उम्र में ही मर जाते हो।"

"50-60?" लक्ष्मण दास तेजी से भागती नाव में चिल्लाया—"पचास के तो हम दोनों हैं।"

"उम्र हो गई तुम दोनों की। मरने वाले हो अब।"

"देखा सपन। ये हमें मार रहा है।"

"मौत के रास्ते पर ले जा रहा है। तभी तो कह रहा है कि हम मरने वाले हैं। साले को सब पता होगा।"

"इस साले से फुर्सत में निबटेंगे।"

"जब हम ही निबट गए तो फिर इससे क्या निबटना—निबटाना।"

"तुम दोनों चाहो तो मरने के बाद जिन्न बनने की लाइन में भरती हो सकते हो।"

"वो कैसे?"

"मरने के बाद श्मशान में लगे पीपल पर अपना घर बना लेना। वहां से तुम दोनों को आगे का रास्ता मिलेगा।"

"कैसा आगे का रास्ता?"
"कुछ टैस्ट होंगे, उसके बाद भूत-प्रेत की योनि में प्रवेश।"
"लेकिन तुम तो जिन्न बनने को कह रहे...।"
"सीधे कोई भी जिन्न नहीं बन जाता। एक-एक सीढ़ी चढ़कर ऊपर आना पड़ता है। पहले भूत-प्रेत बनकर क्लासें पढ़नी पड़ती हैं। भूत-प्रेती के काम में माहिर होकर टैस्ट पास करना पड़ता है। पास होने के बाद लम्बी ट्रेनिंग लेनी पड़ती है और बूढ़े जिन्न सब कुछ सिखाते हैं। परंतु कोई-कोई ही सीख पाता...।"
"लक्ष्मण।" सपन चड्ढा चीखा—"इस हरामी की बातें मत सुन। ये तो हमें जीते-जी ही जिन्न बना देगा। अभी हमारे खेलने-खाने के दिन हैं और ये कहता है कि हमारी मौत आ...।"
इसी पल नाव की रफ्तार एकाएक कम होने लगी।
"ये...ये तो धीमी होने लगी।" लक्ष्मण दास के होंठों से निकला।
"हम कहां पहुंच रहे हैं लक्ष्मण?"
लक्ष्मण दास ने हड़बड़ाकर मोमो जिन्न से कहा।
"तुम्हें डर नहीं लग रहा?"
"जिन्न को कभी डर नहीं लगता।" मोमो जिन्न बोला।
लक्ष्मण और सपन की नजरें घूमीं।
नदी के दोनों तरफ घना जंगल दिखाई दे रहा था। सुनसान जगह थी वो। कोई भी इंसान नहीं दिखा।
"हम कहां आ गए हैं मोमो जिन्न?" सपन चड्ढा ने पूछा।
"मैं नहीं जानता।"
"बुरा वक्त आने पर तू तो खिसक जाएगा। हमारी जान नहीं बचेगी।" सपन चढ्डा ने मोमो जिन्न से कहा।
"मैं नहीं भागूंगा।"
"पक्का?"
"जिन्न पर शक मत करो। जिन्न का विश्वास करना सीखो।"
"सपन।"
"हां।"
"इसका भरोसा कभी मत करना। इसका भरोसा कर-कर के तो हम यहां तक आ पहुंचे हैं। पहले हमें यार कहता न थकता था और अब हमें नंगा करके घुमाने को कह रहा है। ये कमीना है धोखेबाज है।"
"मैं तेरी बात से सहमत हूं। लेकिन अब हमारा क्या होगा?"
"महाकाली की पहाड़ी है ये। मुझे लगता है कि अब हम किसी बड़ी मुसीबत में फंसने जा रहे हैं।"

"कहीं ये जिन्न हमारी बलि देने के लिए तो हमें नहीं ले जा रहा?"

दोनों की नजरें मिलीं। फिर मोमो जिन्न को देखा।

मोमो जिन्न को अपनी तरफ देखते पाकर, मुस्कराते पाया।

"सपन।"

"हां।"

"पहले ये मुस्कराया न करता था। जबसे महाकाली की पहाड़ी में आया है, ये मुस्कराने लगा है।"

"रहस्य वाली बात है कोई।"

"पक्का ये हमारी बलि देगा। महाकाली को बलि देकर खुश करना चाहता है।"

"ये महाकाली वो महाकाली नहीं है।"

"वो महाकाली कौन-सी है?"

"वो तो भगवानों की श्रेणी में आती है। मां महाकाली। जिसे हमारी दुनिया के लोग पूजते हैं। ये तो इस दुनिया की महाकाली है।"

"तभी तो हमारी बलि दी जाएगी। इस दुनिया की महाकाली हमारी बलि मांगती होगी। तभी हमें लाया गया है।"

मोमो जिन्न मुस्कराता हुआ इन्हें देखे जा रहा था।

"तुम हमारी बातें सुन रहे हो। कुछ कहते क्यों नहीं?" लक्ष्मण दास कह उठा।

"मेरी मुस्कान का रहस्य जानना चाहते हो?"

"ह...हां।"

"तो सुनो, पहले तुम इस तरह की बेवकूफी वाली बातें नहीं करते थे, इसलिए मैं मुस्कराता नहीं था।"

"तुम...तुम कहना चाहते हो कि हम बेवकूफ हैं।"

"अवश्य। तुम लोग बेवकूफ ही हो। वरना बलि जैसी घटिया बातें करके मेरे जैसे सर्वश्रेष्ठ जिन्न की तौहीन नहीं करते। तुम दोनों ने ये कैसे सोच लिया कि जिन्न बलि देने जैसा घटिया काम करेगा।"

"तो...तो हमें यहां क्यों लाए हो?"

"जथूरा के सेवकों ने मुझे आदेश दिया तो मैंने ऐसा किया।"

कश्ती किनारे पर जाकर ठहर गई।

"चलो।" कहकर मोमो जिन्न उठा और नाव से निकलकर किनारे पर पहुंच गया।

"चलना तो पड़ेगा सपन।"

वे दोनों भी नाव से बाहर नदी के किनारे पर आ गए।

उसी पल नाव में हरकत हुई और वो पानी में सरकती हुई वापस जाने लगी।

"मोमो जिन्न! नाव जा रही है।" सपन चड्ढा कह उठा।

"जाने दो।"

"हमें वापस जाना हुआ तो कैसे जाएंगे?"

"तब दूसरा रास्ता खुद ही बन जाएगा वापसी के लिए।"

दोनों की नजरें हर तरफ घूमीं।

घना-गहरा, दिल धड़का देने वाला जंगल था। हवा से पत्तियों का शोर खड़-खड़ पैदा कर रहा था।

चुप्पी और गहरा सन्नाटा था यहां।

"ये कैसी जगह है?"

"यहां पर हम क्या करेंगे?"

"मैं भी नहीं जानता कि... ।"

मोमो जिन्न कहते-कहते ठिठका। उसकी गर्दन एक तरफ झुक गई। आंखें बंद हो गईं।

फिर हौले-हौले मोमो जिन्न सिर हिलाने लगा।

"आ गया वायरलैस।" सपन कड़वे स्वर में बोला।

"हम तो पागल हो गए हैं यहां आकर।"

"अभी तो और होना है। अब पता नहीं ये जिन्न क्या बम फोड़ेगा।"

"चेहरा तो देख इसका। लगता है आंखें बंद करके जैसे तपस्या करके, ज्ञान पाने में लीन हो।"

"हरामी बोत है साला।"

"हमारा पीछा नहीं छोड़ता। हमें अपना गुलाम कहता है।"

"आंखें खुल गईं कमीने की।"

मोमो जिन्न ने दोनों को देखते कहा।

"हमें थोड़ा-सा पूर्व की तरफ जाना है।"

"वहां क्या है?"

"वहां हमें, तुम जैसे ही इंसान मिलेंगे।"

"हम जैसे?"

मोमो जिन्न ने सिर हिलाया।

सपन चड्ढा ने मोमो जिन्न को देखा फिर लक्ष्मण दास से कहा।

"हमारे जैसे इंसानों को यहां पर क्या काम?"

"मेरे से क्या पूछ रहा है। मुझे क्या पता।"

"तुम उन इंसानों को जानते होंगे।" मोमो जिन्न ने कहा।

"ये बात है तो चलो। तुम्हारे अलावा कोई दूसरी सूरत तो देखने को मिलेगी।" लक्ष्मण दास ने कहा।

वे तीनों पूर्व दिशा की तरफ चल पड़े।

"सपन। वहां कौन होंगे, जिन्हें हम जानते हैं।"

"देवराज चौहान या मोना चौधरी ही होंगे।"

"फिर तो ठीक है। पहला मौका मिलते ही जिन्न से पीछा छुड़ाना है हमने।"

"मुझे मौका मिला तो गर्दन काट दूंगा इसकी।"

"सैंसर लगे हैं, सुन रहा है ये कमीना, हमारी बातें।"

तभी चलते-चलते मोमो जिन्न ने कहा।

"इंसानों की जात घटिया होती है, ये तो मैं पहले ही जानता हूं। इंसानों का कितना भी कर लिया जाए, ये एक दिन उसी की गर्दन काट देते हैं, जो इनकी सेवा करता है। इससे ज्यादा मतलबी जात मैंने दूसरी नहीं देखी।"

"तुमने हमें तंग कर रखा है, तभी हम तुम्हारी गर्दन काटने की सोच रहे हैं।"

"मैं तो तुम दोनों का बहुत खयाल रख रहा हूं वरना हम जिन्न तो गले में रस्सा डालकर खींचते हुए चलते हैं।"

"गले में रस्सा?" सपन चड्ढा हड़बड़ाया।

"तुम दोनों के साथ मैं ऐसा नहीं कर रहा।"

"यही कसर रह गई है, ये भी कर लो।" सपन चड्ढा ने कड़वे स्वर में कहा।

"मैं एक बार कुत्ता बना था।" मोमो जिन्न बोला।

"क्या?" लक्ष्मण दास कह उठा—"कुत्ता?"

"हां। जिन्न बनते समय मेरे इम्तिहान का वक्त आया तो, मैंने कहा कि इंसान बुरे नहीं होते तो उन्होंने मुझे सबक सिखाने के लिए कुत्ते का जन्म दिलवा दिया। कुत्ते के जन्म में मैं अपने मालिक का वफादार बनकर रहने लगा कई बार मालिक को मुसीबतों से बचाया। दस साल बाद जब मैं बूढ़ा हुआ तो मुझे घर से निकाल दिया गया। परंतु उस घर से मेरा मोह था। मैं घर के पास ही घूमता रहता। उसी मकान के गेट के बाहर ही दिन रात बैठा रहता। मालिक ने मुझे अपने घर से दूर भगाने की बहुत चेष्टा की, परंतु मेरा प्यार मुझे दूर नहीं जाने देता। फिर एक रात मैं उसी मकान के गेट के बाहर सोया हुआ था कि मालिक ने चुपके से चाकू से मेरी गर्दन काट दी। मैं मर गया।"

"अच्छा—फिर?"

"फिर जब मैं कुत्ते के शरीर से निकलकर वापस पहुंचा तो पुनः मेरी परीक्षा हुई। परीक्षा में वो ही सवाल सामने आया कि इंसानों की जात के बारे में आपकी क्या राय है?"

"तुमने क्या जवाब दिया?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"मैंने क्या जवाब दिया।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा—"मैंने कहा, इस धरती पर, चींटे से लेकर हाथी तक—पशु से लेकर पक्षी तक, ऐसी कोई चीज जिसमें जीवन है, उन सबसे बुरे इंसान होते हैं।"

"तुमने ऐसा कहा।"

"हां और मैं परीक्षा में पहले नम्बर पर पास हुआ। मुझे सर्वश्रेष्ठ जिन्न माना गया। अब तो तुम्हें समझ आ गया होगा कि हम जिन्न इंसानों को कैसी नजरों से देखते हैं।" मोमो जिन्न ने शांत स्वर में कहा।

तीनों तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे।

"मैं तो पहले ही कहता था कि ये हरामी जिन्न है।" लक्ष्मण दास बोला—"इंसानों को बुरी निगाहों से देखता है। इसे ये नहीं मालूम कि इंसानों की जात, इस धरती पर सबसे सर्वश्रेष्ठ है।"

मोमो जिन्न मुस्कराया।

"कमीना फिर मुस्कराता है।"

"तुम लोग मेरे से शिष्ट भाषा में बात करो। मुझे गुस्सा आ गया तो गले में रस्सी डालकर घसीटूंगा।"

"ये जीते जी हमारी बलि देगा।"

"इसकी नीयत में खोट है।"

"ये खुद भी खोटा है।"

"चुप हो जाओ—वरना... ।"

"चुप हो जा लक्ष्मण। इसे गुस्सा आने वाला है।"

"मुझे थकान हो रही है।"

तभी मोमो जिन्न ठिठका और गर्दन टेढ़ी करके, सिर हिलाने लगा। उसके बाद पुनः आगे बढ़ता कह उठा।

"हमें उस तरफ जाना है। वो जगह ज्यादा दूर नहीं है। नदी के किनारे पर ही वे हमें मिलेंगे।"

"पर वे हैं कौन? उनके बारे में कुछ तो बता दो।"

"पता चल जाएगा। जरा तेज चलो। तुम दोनों तो सुस्तों की तरह चल रहे हो।"

"ये तो हमें चला-चला के हमारी जान लेगा।"

"तेरे को लगता है कि ये हमारे साथ सच बोलता है।"

"पता नहीं।" लक्ष्मण दास ने गहरी सांस ली—"लेकिन यहां पर तो इसी का सहारा है।"

जल्दी ही नदी किनारे उन्हें एक जगह पर ठिठक जाना पड़ा।

वहां जगमोहन, सोहनलाल और नानिया बेहोश पड़े थे।

"ये तो जगमोहन, सोहनलाल हैं।" लक्ष्मण दास के होंठों से निकला।

"ओह। कोई तो अपने जैसा मिला, वरना इस जिन्न के साथ रहकर तो हम अपनी जात भी भूलने लगे थे।"

"अब तो मानते हो कि मैंने सच कहा था, जिन्न झूठ नहीं बोलते।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तुम तो अब तक हमसे झूठ ही बोले हो।"

"इन्हें क्या हुआ पड़ा है?"

"बेहोश हैं, होश में लाओ इन्हें।"

"ये युवती कौन है?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"नानिया है। कालचक्र की रानी साहिबा।"

"खूबसूरत है। क्यों सपन।" लक्ष्मण दास ने धीमे स्वर में कहा।

सपन चड्ढा के कुछ कहने से पहले ही मोमो जिन्न कह उठा।

"तुम इंसानी मर्दों की ये बड़ी समस्या है कि औरत देखी नहीं कि उसके गिर्द मंडराने लगे।"

"ये समस्या तो हम मर्दों के साथ चिपकी हुई है।" लक्ष्मण दास ने गहरी सांस ली।

"जिन्नों में तो मर्द-औरत नहीं होते?"

"नहीं। हम जिन्नों में वो समस्या होती ही नहीं, जो मर्दों में होती है।"

"फिर तुम इंसानी मर्दों की समस्या को नहीं समझ सकते। हम भी कई बार परेशान हो जाते हैं, इस समस्या का समाधान ढूंढ़ते-ढूंढ़ते।"

मोमो जिन्न कमर पर हाथ बांधे वहीं पर टहलने लगा।

▭ ▭

बहुत पक्की बेहोशी थी तीनों की।

एक घंटा लग गया, उन्हें होश में लाने में। सपन-लक्ष्मण को बहुत मेहनत करनी पड़ी।

उन पर निगाह पड़ते ही जगमोहन के होंठों से निकला।

"तुम...लक्ष्मण दास-सपन...।"

थके अंदाज में दोनों ने सिर हिलाया।

"तुम दोनों यहां कैसे?" सोहनलाल ने पूछा।

लक्ष्मण ने मोमो जिन्न की तरफ इशारा करके कहा।

"ये हमें पालतू कुत्तों की तरह घुमाए जा रहा है। फंसे पड़े हैं बुरी तरह।"

"अब तुम लोगों के मिल जाने से राहत मिली है कि दुनिया में इंसान भी बसते हैं।"

सपन चड्ढा ने नानिया को देखा और मुस्करा पड़ा।

"सोहनलाल।" नानिया कह उठी—"ये मुझे देखकर मुस्कराता है।"

"तेरा भाई है। बहन पर प्यार तो आएगा ही।"

"भाई।" सपन चड्ढा ने लक्ष्मण दास को देखा।

"ठीक ही तो कह रहा है सोहनलाल।" लक्ष्मण दास ने जल्दी से कहा—"तेरी बहन तो है ये।"

"फिर तो तेरी भी होगी।" सपन चड्ढा ने चिढ़कर कहा।

"मेरा क्या है। मैं तो संसार को त्यागने की सोच रहा हूं। रिश्तों में मेरा कोई विश्वास नहीं।"

"तू...तू... ।" सपन चड्ढा ने कहना चाहा।

"चुप कर।" लक्ष्मण दास ने कहा फिर जगमोहन-सोहनलाल से बोला—"तुम लोग यहां कैसे?"

"हम...हम महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर आ गए थे।" जगमोहन ने सोच-भरे स्वर में कहा—"उस वक्त हम जथूरा के पास जाने के लिए नदी पार कर रहे थे। मगरमच्छों ने हमें अपने जबड़ों में कस लिया। इसके साथ ही हम बेहोश हो गए। उसके बाद अब होश में आया तो तुम लोगों को सामने पाया।"

"ये जगह कहां पर है?" सोहनलाल ने पूछा।

"हम तो इतना जानते हैं कि ये कालचक्र है। सब जगह एक जैसी है।" सपन चड्ढा ने कहा।

"तुम लोग यहां कैसे आ गए?"

"ये मोमो जिन्न ही हमें चक्कर घिन्नी की की तरह घुमाए जा रहा है। जिधर चाहता है हमारा स्टेयरिंग उधर ही मोड़ देता है। लगता है जब तक हमारी जान नहीं निकलेगी, ये हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा।" लक्ष्मण दास बोला।

"लेकिन तुम लोग महाकाली की मायावी पहाड़ी में आए क्यों?"

"बताया तो मोमो जिन्न खींचे जा रहा है हमें। कहता है देवा-मिन्नो को हमारी सहायता की जरूरत पड़ सकती है।" सपन चड्ढा ने लम्बी सांस लेकर कहा—"भला जिन्न से कोई पूछे कि हम देवराज चौहान की सहायता करने के लायक ही कहां हैं।"

"देवराज चौहान कहां है?"

"वो भी इसी तिलिस्मी पहाड़ी के भीतर है। सब ही भीतर हैं। हम जरा उनके पीछे रह गए। वरना उनके साथ ही होते।"

"मुझे बताओ, क्या हुआ था। देवराज चौहान से अलग हुए मुझे बहुत देर हो गई है।"

"जानता हूं। तुम्हें कालचक्र ने अपने में फंसा लिया था और तुम्हारी जगह मखानी, जगमोहन बन के आ गया।" (ये जानने के लिए पढ़ें राजा पॉकेट बुक्स से प्रकाशित अनिल मोहन का उपन्यास **'पोतेबाबा'**।)

"ओह।" जगमोहन के होंठ भिंच गए।

"सब बातें बताओ।" सोहनलाल बोला—"हम इन बातों से अंजान हैं।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने सब कुछ बताया।

जगमोहन, सोहनलाल जो नहीं जानते, वो अब जान चुके थे।

"तो ये हुआ देवराज चौहान-मोना चौधरी और बाकी सब के साथ।" जगमोहन सोच-भरे स्वर में कह उठा।

"तुम जानते हो कि जथूरा कहां पर कैद है?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"नहीं। हमें इतना ही पता है कि वो पूर्व दिशा में कहीं पर है।"

"वो पक्का नहीं, बूंदी ने बताया था।" सोहनलाल बोला।

"बूंदी?" जगमोहन की नजरें घूमीं—"वो कहां है?"

सोहनलाल और नानिया ने भी हर तरफ देखा।

परंतु बूंदी कहीं न दिखा।

"लगता है, वो हमारे पास नहीं है।" नानिया बोली।

"वो तो कहता था कि हमारे पास ही रहेगा।"

"कौन है बूंदी?" लक्ष्मण दास ने पूछा।

जगमोहन ने उन्हें कम शब्दों में बूंदी के बारे में बताया।

"इसका मतलब तुम लोगों के साथ भी मोमो जिन्न की तरह, कोई हरामी चिपका हुआ है।" सपन चड्ढा ने कहा।

नानिया ने मोमो जिन्न को देखते हुए कहा।

"ये जिन्न हमारे पास क्यों नहीं आ रहा?"

"ये बोत हरामी है।" लक्ष्मण दास बोला।

"क्या मतलब?"

"दूर रहकर ही, ये मजे से हमारी बातें सुन रहा है। हमारे कानों में सैंसर लगा रखे हैं। हम जो भी बातें करेंगे, सुनेंगे वो इसे भी सुनाई देगी। बोत पौंची हुई चीज है। कहता है मैं झूठ नहीं बोलता, लेकिन पक्का हरामी है, झूठ के अलावा कुछ भी नहीं कहता। हमें यार

कहता था और कपड़े उतारकर नंगा घुमाने को कहता है। इसका कोई भरोसा नहीं कि कब क्या कर दे।"

"लेकिन ये हमें नुकसान नहीं पहुंचाएगा।" नानिया कह उठी।

"क्यों?"

"ये जथूरा का सेवक है और हम जथूरा को आजाद कराने ही महाकाली की तिलिस्मी पहाड़ी में आए हैं।"

"हमसे जथूरा महान है, बुलवाता रहता है। पता नहीं कि कितना महान है जथूरा।" सपन चड्ढा ने कड़वे स्वर में कहा।

"इस जिन्न से बात करते हैं।" सोहनलाल ने कहा—"जथूरा तक पहुंचने में ये हमारी सहायता कर सकता है।"

"ये कुछ नहीं जानता।" लक्ष्मण दास कह उठा—"हमें बता चुका है ये बात।"

"फिर भी... ।"

तभी नानिया कह उठी।

"वो रहा बूंदी।"

सबकी निगाह उस तरफ घूमी।

बूंदी एक पेड़ के नीचे छाया में सुस्त मुद्रा में बैठा हुआ था।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।

"लक्ष्मण। ये बूंदी हमें बाहर जाने का रास्ता बता सकता है।"

"हां। इसे सब रास्तों का पता होगा।"

"बूंदी की बातों में मत फंसना।" जगमोहन ने कहा।

दोनों ने जगमोहन की बात को अनसुना कर दिया।

तभी मोमो जिन्न पास आ पहुंचा और दोनों से बोला।

"कहो, जथूरा महान है।"

"फिर आ गया तू... ।" सपन चड्ढा ने कहना चाहा।

"बोलो, वरना मुझे गुस्सा... ।"

"जथूरा महान है।" दोनों ने एक साथ कहा।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने एक दूसरे को देखा। आंखों में इशारे हुए फिर बूंदी की तरफ बढ़ गए।

दोनों पेड़ की छाया में बूंदी के पास पहुंचे।

"नमस्कार भैया।" लक्ष्मण दास ने शराफत से कहा।

"अच्छा हुआ जो तुम दोनों मेरे पास आ गए।"

"क्यों?"

"मैं अकेला बेचैन हो रहा था। कोई मेरे से बातें करने वाला नहीं था।" बूंदी ने उदास स्वर में कहा।

"तुम उदास मत होवो। हम हैं न, तुम्हारे पास, क्यों लक्ष्मण।"

"हां-हां, हम तुम्हारे यार हैं।"

"बैठ जाओ खड़े क्यों हो।" बूंदी ने कहा।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा बैठ गए।

"ये कितना अच्छा इंसान है।" लक्ष्मण दास ने सपन चड्ढा से कहा।

"हां, हमें पहली बार इतना अच्छा इंसान मिला है। किस्मत वाले हैं हम।"

"मुझे भी तुम दोनों बहुत शरीफ लगे हो।" बूंदी ने कहा।

"देखा सपन, शरीफ-शरीफ को कितनी जल्दी पहचान जाता है।"

"सच में मोमो जिन्न ने तो हमें पागल कर दिया था। बूंदी भाई, तुम इस मोमो जिन्न से हमें छुटकारा दिला दो।"

"मैं घटिया जिन्नों से बात नहीं करता।"

"सच में वो बोत घटिया जिन्न है।"

"तुम उससे हमें छुटकारा दिला दो।"

"मैं जिन्न के मामले में नहीं आता और जिन्न मेरे मामले में नहीं आता। हम एक-दूसरे को पसंद नहीं करते।"

"खानदानी दुश्मनी है?"

"महाकाली के सेवकों और जिन्नों के ग्रह नहीं मिलते। महाकाली जिन्नों को जरा भी पसंद नहीं करती।"

"समझदार है महाकाली।" सपन चड्ढा ने सिर हिलाया।

"तुम तो महाकाली की मायावी पहाड़ी के सारे रास्ते जानते हो।"

"हां, सब जानता हूं।"

"हमें बाहर जाने का रास्ता बता दो। हम जिन्न से दूर चले जाना चाहते हैं।"

"बाहर जाने के दो रास्ते बताऊंगा। उसमें एक सही होगा और एक गलत।"

"ये क्या हुआ?"

"मैं दो बातें एक साथ ही करता हूं। एक गलत, एक सही, चुनना तुम लोगों ने है।"

"बताओ तो कैसे हम इस मायावी पहाड़ी से बाहर जा सकते हैं?"

"सामने जो नदी है उसमें कूद जाओ। या तो तुम दोनों को मगरमच्छ खा लेंगे या तुम दोनों मायावी पहाड़ी से बाहर पहुंच जाओगे।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा हड़बड़ा गए।

"नदी में कूद जाएं?"

"मगरमच्छ भी हैं वहां।"

बूंदी ने मुस्कराकर दोनों को देखा।

"हमें तो तैरना भी नहीं आता।"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा।" बूंदी ने कहा।

"क्यों?"

"हो सकता है तुम दोनों के डूबने से पहले ही, मगरमच्छ ही तुम दोनों को खा लें।"

सपन चड्ढा ने लक्ष्मण दास को देखकर कहा।

"सुना तूने। ये हमारा शुभचिंतक है। हमें मायावी पहाड़ी से बाहर जाने का रास्ता बता रहा है।"

"इससे अच्छा तो मोमो जिन्न ही है, जो हमें सीधा मौत का रास्ता तो नहीं बताता।"

दोनों उसी पल उठ खड़े हुए।

"जा रहे हो मुझे अकेला छोड़कर।" बूंदी ने उदास स्वर में कहा।

"तू हमें बाहर जाने का रास्ता नहीं बताता तो हम तेरे पास बैठकर तेरा दिल क्यों बहलाएं।"

"तू हमें मायाबी पहाड़ी से बाहर निकाल दे, हम तेरी गोद में बैठकर, तेरे साथ खेलेंगे।"

"सच?" बूंदी खुश हो उठा।

"हां, तेरा पूरा खयाल रखेंगे। बता रास्ता?"

"नदी में कूद जाओ। या तो मगरमच्छ खा लेंगे, या नदी तुम दोनों को पहाड़ी के बाहर पहुंचा देगी।"

"चल सपन। इसका चक्का तो जाम हो गया लगता है।"

दोनों पलटे और जगमोहन की तरफ बढ़ गए।"

▭ ▭

जब लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा, बूंदी की तरफ गए तो जगमोहन, सोहनलाल व नानिया ने मोमो जिन्न को देखा।

मोमो जिन्न मुस्कराया।

"तुम जानते हो हमें?" जगमोहन ने पूछा।

"बहुत अच्छी तरह से। तुम जग्गू हो। ये गुलचंद और ये कालचक्र की रानी साहिबा, यानी कि नानिया।"

"तुम यहां कैसे पहुंचे?"

"मुझे जथूरा के सेवकों ने बताया कि तुम लोग यहां बेहोश हो।"

"जथूरा के सेवक महाकाली की मायावी पहाड़ी के भीतर कैसे देख सकते हैं?" जगमोहन ने पूछा।

"यूं तो वो महाकाली की पहाड़ी के भीतर नहीं देख सकते। परंतु जहां-जहां हम लोगों के कदम पड़ते जाएंगे, सैटलाइट पर उन लोगों को वहां-वहां की तस्वीरें मिलती जाएंगी।" मोमो जिन्न ने कहा।

"ऐसा कैसे सम्भव है?"

"बहुत आसान है जथूरा के सेवकों के लिए ये सब। तुम सब के ग्रहों को प्रोग्राम करके, उस चिप को उन्होंने, सैटलाइट से सीधे वास्ता रखती चिप से कनेक्शन दे दिया। इस तरह सैटलाइट तुम लोगों की खबरें, जथूरा के सेवकों के सामने लगी स्क्रीनों पर दे रहा है।"

"सैटलाइट की पहुंच पहाड़ी के भीतर तो नहीं है।"

"सैटलाइट ग्रहों से तुम लोगों की गतिविधियां पकड़कर भेजता है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"सैटलाइट तुम लोगों ने कब बनाया?" सोहनलाल ने पूछा।

"जथूरा महान है।" मोमो जिन्न मुस्करा पड़ा—"उस जैसा दूसरा कोई नहीं।"

"मैंने कोई सवाल पूछा है।" सोहनलाल की निगाह मोमो जिन्न पर थी।

"जथूरा बहुत बड़ा वैज्ञानिक भी है। सैटलाइट जैसी चीज बनाए उसे साठ बरस से ज्यादा हो गए।"

"जथूरा जिन्नों का भी मालिक है। तंत्र-मंत्र में भी माहिर है और विज्ञान में भी उस्ताद है।"

"हां।"

"क्या अजीब दुनिया है ये।"

"विज्ञान से वास्ता रखती बहुत चीजें बना रखी हैं जथूरा ने। उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। जथूरा अगर कैद में न पड़ गया होता तो अब तक उसने नगरी की सूरत बदल देनी थी। परंतु सोबरा की चाल ने जथूरा को फंसा दिया।"

नानिया देर से मोमो जिन्न को देखे जा रही थी फिर कह उठी।

"तुम कैसे जिन्न हो?"

"क्यों—क्या मैं जिन्न नहीं लगता?"

"नाक में नथनी। कानों में टॉप्स और।"

"ये ही जिन्न की पहचान है।" मोमो जिन्न कह उठा—"हमें सबसे अलग दिखना पड़ता है। हमारी जात सबसे अलग है।"

"अब काम की बात करें?" जगमोहन बोला।

"करो।"

"तुम्हें मालूम होगा जथूरा कहां पर कैद है?"

"नहीं मालूम।"

"तुम्हारा सैटलाइट तो पता लगा सकता है कि जथूरा... ।"

"जथूरा के ग्रहों को प्रोग्राम करके, सैटलाइट द्वारा उसके बारे में जानने की कई बार चेष्टा की गई, परंतु सैटलाइट उसके ठिकाने को नहीं पकड़ पाया। शायद जथूरा को महाकाली ने बेहद सुरक्षित जगह पर रखा है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तो हम कैसे जथूरा तक पहुंचेंगे?"

"इस बारे में बूंदी बताता है। एक गलत, एक सही। उनमें से एक को चुनना पड़ता है।" जगमोहन ने कहा।

"हम उसकी कही सही बात को चुनने की चेष्टा करेंगे। तुम उससे बात करो।"

"तुम ही उससे क्यों नहीं बात करते।"

"मैं घटिया लोगों से बात नहीं करता। जिन्न हूं मैं।"

"बूंदी घटिया है?"

"हां। वो महाकाली का सेवक है। वो नहीं चाहता कि हम जथूरा तक पहुंचे। मेरे मालिक को उसने कैद कर रखा है। अब तक अपने असल रूप में सामने होता तो, मैं इसे मार चुका होता।" मोमो जिन्न ने कठोर स्वर में कहा।

"तुम्हें कैसे पता कि बूंदी अपनी छाया के रूप में मौजूद है। तुमने तो अभी तक उसे छुआ नहीं।"

"जिन्न ऐसी चीजों को देखकर ही महसूस कर लेते हैं।"

तभी लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा वापस आ गए।

"दोस्ती गांठ आए उससे?" मोमो जिन्न ने उन्हें देखते हुए, मुस्कराकर कहा।

"वो तो तुमसे भी बड़ा हरामी है।" सपन चड्ढा ने गहरी सांस ली।

"क्यों?"

"हमने पहाड़ी से बाहर जाने का रास्ता पूछा तो बोला नदी में कूद जाओ। या तो मगरमच्छ खा लेंगे या हम पहाड़ी से बाहर पहुंच जाएंगे।"

"ऐसे दो-चार से और मिलोगे तो समझ जाओगे कि मोमो जिन्न जैसा शरीफ, दूसरा कोई नहीं।"

"हम तो फंस पड़े हैं। कोई टांगें खींचता है तो कोई गर्दन।" लक्ष्मण दास ने मुंह लटकाकर कहा।

"कोई कुछ नहीं खींच रहा।" मोमो जिन्न मुस्कराया—"तुम दोनों यूं ही वहम में पतले हुए जा रहे हो।"

"सपन हम कितने कमजोर हो गए हैं।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"इन हालातों में जिंदा हैं, ये क्या कम है।"

तभी जगमोहन उठता हुआ बोला।
"मैं बूंदी से बात करता हूं।"
"वो यहीं आ रहा है।" नानिया कह उठी।
सबकी निगाह बूंदी की तरफ उठी। वो पास आ पहुंचा था।
"अकेले में मेरा मन नहीं लग रहा था, सो यहां आ गया।" बूंदी ने मुंह लटकाकर कहा।
मोमो जिन्न ने अकड़ से मुंह दूसरी तरफ फेर लिया।
"मैं तुम्हारे पास ही आने वाला था।" जगमोहन बोला।
"कहो-कहो, मैं तुम्हारे किस काम आ सकता हूं?" बूंदी ने फौरन कहा।
"तुमने हमें बताया नहीं नदी में मगरमच्छ भी हैं।" जगमोहन बोला।
"नदी है तो मगरमच्छ भी होंगे। इसमें बताने की क्या बात है। पूछते तो मैं जरूर बताता।" बूंदी ने कहा।
"तुमने हमारे साथ चालाकी की।"
"ऐसा मत कहो। मैं तो महाकाली का आदेश मानकर तुम लोगों का बहुत खयाल रख रहा हूं।"
जगमोहन ने बूंदी को घूरा।
बूंदी मुस्करा पड़ा। उसके पास पहुंचने पर बूंदी ने कहा।
"अब क्या है?"
"मैं दिशा भटक गया हूं।"
"ये मामूली बात है।"
"जथूरा तक पहुंचने के लिए किधर जाना चाहिए मुझे?"
"उत्तर दिशा में चलो यहां से। या तो जथूरा तक पहुंच जाओगे या महाकाली तक।"
"मुझे जथूरा के ही पास जाना है।"
"एक ही बात है। महाकाली तक पहुंचे तो वो तुम्हें जथूरा तक ले जाएगी।"
"वो क्यों जथूरा तक ले जाएगी?"
"ये बात महाकाली से पूछना।"
जगमोहन ने बूंदी को घूरा।
बूंदी मुस्करा पड़ा।
"देवराज चौहान कहां है?"
"वो सब मजे में हैं। कुछ देर पहले ही ब्याह वाले घर में खाना खाया था उन्होंने।"
"क्या मतलब?"

"मैं ज्यादा नहीं बताऊंगा। मेरे लायक कोई सेवा हो तो कहो।"

"उत्तर दिशा किस तरफ है?" जगमोहन ने पूछा।

"उधर।" बूंदी ने एक तरफ इशारा किया—"परंतु वहां का सारा रास्ता मौसमों से भरा पड़ा है। कदम-कदम पर मौसम हैं। उधर। कभी आंधी-तूफान तो कभी तेज गर्मी। कभी सुहाना मौसम और कभी उमस। मौसमों से तुम्हें सावधान रहना होगा।"

"वो कैसे?"

"एक मौसम ऐसा है कि जिसमें कदम आगे बढ़ाओगे तो तुम सबकी दिशा बदल जाएगी। ऐसा मौसम जब आए तो सबको रुकना... ।"

"कौन-सा मौसम है ऐसा?"

"आंधी वाला भी हो सकता है, तूफान या उमस वाला भी हो सकता है। धूप वाला भी हो सकता है।"

"कोई तो होगा ही, मैं पूछ रहा हूं कौन-सा है?"

"ये नहीं बताऊंगा।" बूंदी मुस्कराया—"खुद पहचान लेना।"

"मैं नहीं पहचान सकता।"

"तब तो उस मौसम में चलकर तुम्हारी दिशा बदल जाएगी। तुम सब मौत की घाटी में पहुंच जाओगे।"

"तुम ठीक से पेश नहीं आ रहे।"

"जो मैं कर रहा हूं, यही मेरा कर्म है। महाकाली ने मुझे ऐसी ही आज्ञा दी है।"

"तुम जब भी कुछ बताते हो, उलझन में डाल देते हो।"

"मेरा सच जवाब भी, मेरी कही बातों में है। ढूंढ़ लो।"

जगमोहन ने होंठ भींच लिए।

"एक शर्त पर मैं तुम्हें सही-सही रास्ता बता सकता हूं।"

"कहो।"

"मोमो जिन्न को अपने से अलग कर दो।"

"उससे तुम्हें क्या समस्या है?"

"अकड़ू है वो। देखा नहीं, मेरे पहुंचने पर कैसे उसने मेरी तरफ पीठ कर ली थी। मैं उसे पसंद नहीं करता।"

"तुमने उसके मालिक जथूरा को कैद कर रखा है।"

"मैंने नहीं, महाकाली ने।"

"एक ही बात है। तुम उसी के सेवक हो। उसका नाराज होना लाजिमी है।"

"मुझे अच्छा नहीं लग रहा कि उसके हक में बात करो।" बूंदी ने उसे देखा।

"मैंने सच बात कही है।"

"ठीक है, जाओ, मैं नहीं बताता कि कौन-से मौसम में चलने से तुम लोगों की दिशा बदल जाएगी।"

"तुम बहुत घटिया हो।"

"महाकाली का सेवक हूं। सच्चा सेवक। मेरा पूरा परिवार महाकाली की सेवा में है।"

"तो यूं कहो कि सब ही कमीने हो।"

बूंदी मुस्कराकर उसे देखने लगा।

जगमोहन वापस पहुंचा और सारी बात बताई।

"हमें उत्तर दिशा में ही जाना होगा।" जगमोहन ने कहा।

"लेकिन वहां मौसमों का असर... ।" सोहनलाल ने कहना चाहा।

तभी मोमो जिन्न कह उठा।

"उसकी फिक्र मत करो। मौसम को पहचानने की ताकत मुझमें है।"

"तुम कैसे पहचानोगे?"

"जिन्न बनते समय मुझे मौसमों को पहचानने की शिक्षा दी गई है।"

"ओह।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं। सपन खिसककर लक्ष्मण के पास आया।

"यार हम तो मौसमों के चक्कर में बे-मौत मारे जाएंगे।" सपन चड्ढा ने कहा।

"कभी कश्ती भागती है तो कभी मौसम खराब हो जाता है। ये तो शुरुआत है, आगे जाने क्या होगा।"

"हमें इनके साथ नहीं जाना चाहिए।"

"हम यहीं रुक जाते हैं।"

"ठीक है।" सपन चड्ढा ने कहा। फिर ऊंचे स्वर में कह उठा—"हमने फैसला किया है कि हम यहीं पर हैं, वापसी पर हमें साथ ले लेना।"

"तुम फैसला करने वाले कौन होते हो।" मोमो जिन्न कठोर स्वर में बोला—"तुम दोनों का मालिक मैं हूं।"

"तुम हमारे मालिक हो तो क्या हुआ, हम अपना फैसला तो ले सकते हैं।"

"मैं अभी तुम दोनों को नंगा... ।"

"नहीं-नहीं।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाकर बोला—"हम चलते हैं साथ में। चल सपन।"

"अब तो चलना ही पड़ेगा।"

तभी सामने बैठा बूंदी कह उठा।

"तुम दोनों मेरे पास आ जाओ। बहुत खुश रहोगे।"

सपन व लक्ष्मण की नजरें मिलीं।

"वो ज्यादा खतरनाक है।" लक्ष्मण दास बोला—"अभी तो ये मोमो जिन्न ही ठीक है।"

फिर वे सब उत्तर दिशा की तरफ बढ़ गए।

▭ ▭

जंगल और घना होता जा रहा था। यहां तक कि पेड़ों के पत्ते जमीन को छू रहे थे। टहनियां नीचे तक झूल रही थीं। पेड़ों के ऊपरी हिस्सों पर टहनियां इस तरह फैली थीं कि आसमान नजर नहीं आ रहा था।

गुम जैसा वातावरण था यहां।

उनके कदमों के नीचे सूखी टहनियां आतीं तो चरमराहट की आवाज गूंज उठती।

"सपन, मेरा तो दिल धड़क रहा है।" लक्ष्मण दास सपन चड्ढा से धीमे स्वर में बोला।

"मुझे भी घबराहट हो रही है, कैसी भयानक जगह है ये।"

"हमारी दुनिया में तो ऐसी जगहें नहीं होतीं।"

"होती होंगी। हमने कौन-सा देखा है।"

"अब सोचता हूं कि नदी मे ही कूद जाते। क्या पता मगरमच्छों से बच ही जाते और इस जगह के बाहर पहुंच जाते।"

"तब तो तेरे को वो बूंदी खतरनाक लगा था।"

"हां, पर अब मोमो जिन्न खतरनाक लग रहा है। ये अगर इंसान होता तो मैं इस पर केस कर देता।"

"जिन्नों पर केस नहीं हो सकता।"

"वो ही तो मैं कह रहा हूं।"

"फंस गए यार। मोमो जिन्न को मैं श्राप दे दूंगा कि अबकी बार वो इंसान बने और मैं जिन्न। तब साले को...।"

"कोई फायदा नहीं। तेरा श्राप कभी भी सफल नहीं होगा। हम साधारण इंसान हैं।"

"मैं हिमालय पर जाऊंगा। वहां तपस्या करते साधु रहते हैं, उनसे श्राप दिलाऊंगा। तब...।"

"उनका श्राप भी नहीं चलेगा। उनमें ज्यादातर चोर-उचक्के होते हैं। दो को तो मैं जानता हूं जो कानून से भागे हुए हैं और हिमालय पर जाकर धूनी रमा ली, फिर वहीं से अंडरवर्ल्ड को चलाने लगे।"

"तेरा मतलब हर तरफ मुसीबत ही मुसीबत है।"
"वो देख, पीछे बूंदी आ रहा है।"
लक्ष्मण दास ने चलते-चलते तुरंत पीछे देखा।
पीछे फासले पर बूंदी आ रहा था।
"ये तो हमारा पीछा कर रहा है।"
"हमारा क्यों करेगा। हम तो शरीफ लोग हैं।" सपन चड्ढा ने कहा—"मैं मोमो जिन्न को बताता हूं।"
सपन चड्ढा आगे जाते मोमो जिन्न के पास पहुंचकर बोला।
"बूंदी पीछे आ रहा है।"
"आने दो।" मोमो जिन्न ने पीछे नहीं देखा।
"उसके इरादे ठीक नहीं लगते।" सपन चड्ढा ने पुनः कहा।
"तुम फिक्र मत करो।"
"वो हमें मार देगा।"
"मेरे होते वो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं जानता हूं कि वो किसी पर हमला नहीं करेगा।"
"क्यों?"
"करना होता तो वो बेहोश पड़े जग्गू, गुलचंद और नानिया को ही जिंदा क्यों छोड़ता।"
"वो मुझे और लक्ष्मण को मारेगा। क्योंकि हम उसकी बात मानकर नदी में नहीं कूदे। मुझे डर लग रहा है।"
"मेरे होते हुए डरो मत।"
सपन चड्ढा ने गहरी सांस ली।
पीछे से लक्ष्मण दास पास पहुंचा।
"क्या कहता है?"
"तसल्लियां दे रहा है।" सपन चड्ढा बोला—"लगता है हमारे साथ बहुत बुरा होने वाला है।"
लक्ष्मण दास ने चलते-चलते पीछे देखा तो कह उठा।
"अब वो पीछे नहीं है।"
सपन चड्ढा की नजरें पीछे गईं।
"कोई नया चक्कर चलाने गया होगा। देखना वो हमारी जान ले के रहेगा।"
चलते-चलते उन्हें काफी वक्त बीत गया।
"मैं तो थक गया।" सपन चड्ढा बोला।
"सीधे चलो।" मोमो जिन्न ने कठोर स्वर में कहा—"वरना नंगा करके... ।"
"ठीक है, ठीक है। चल तो रहे हैं।" सपन चड्ढा उखड़े स्वर

में बोला—"दूसरों को नंगा करने का तुम्हें ज्यादा शौक है। तुम्हारे पास तो वो सब सामान है नहीं, जो दूसरों के पास है। इसी कारण तुम हमसे जलते हो।"

"खामोश हमें उस सामान की जरूरत नहीं पड़ती। हम सिर्फ चूम के ही काम चला लेते हैं।"

"चूम के? किसे चूमते हो तुम?"

"ये नहीं बताऊंगा, ये जिन्न जाति का बेहद व्यक्तिगत रहस्य है।"

लक्ष्मण दास सपन चड्ढा के कान में बोला।

"ये कहीं हमें चूमने का मौका तो नहीं ढूंढ़ रहा?"

"चुप रहो। इंसानों को चूमने का मैंने सोचा भी तो जिन्न बिरादरी मुझे बोतल निकाला दे देगी।"

"बोतल निकाला।"

"हां, हम बोतलों में बंद होकर ही आराम करते हैं। वहीं हमें आराम मिलता है। फिर मुझे रहने को कोई बोतल नहीं मिलेगी।"

"बोतल तो तुम्हें हम दे देंगे।"

"वो बोतल नहीं। जिन्नों की बोतल खास होती है। बेहद आरामदेह। चौड़ी, लम्बी, खास खुशबू-भरी रहती है उसमें।" मोमो जिन्न ने कहा—"तुम लोग मुझसे बातें बहुत कर रहे हो, जबकि मुझे बातें करना जरा भी पसंद नहीं।"

"अब तो नवाब बन गया है तू।" सपन चड्ढा भुनभुनाया।

"खबरदार जो मुझे नवाब कहा। मैं जिन्न हूं। पक्का जिन्न। जिन्न जात है मेरी।"

"मान गए यार—मान गए—तुम...।"

"खबरदार जो मुझे यार कहा। जिन्न किसी का दोस्त नहीं होता। जिन्न सिर्फ जिन्न होता है।"

लक्ष्मण दास ने सपन चड्ढा का हाथ दबाकर कहा।

"चुप कर, क्यों मुसीबत को गले में डालता है।"

फिर वो वक्त भी आया जब वो घना जंगल पार हो गया।

वे खुले में निकल आए।

सामने ही तेज बरसात हो रही थी। मूसलाधार बरसात। इतनी तेज कि उसके उस पार देख पाना सम्भव ही नहीं था। मोटी-मोटी बूंदें। आसमान में जैसे पानी की लकीरें बहती नजर आ रही थीं।

"क्या तूफानी बरसात है सोहनलाल।" नानिया ने सोहनलाल से कहा—"मुझे बरसात अच्छी लगती है।"

सोहनलाल ने मुस्कराकर नानिया को देखा।

"मुझे भी बरसात अच्छी लगती है।" लक्ष्मण दास पीछे से कह उठा।

"तेरे से मैं बात नहीं कर रही। मैं तो अपने सोहनलाल से बात कर रही हूं।" नानिया ने मुंह बनाकर कहा।

"तू क्यों आगे-आगे हो रहा है।" सपन चड्ढा कह उठा—"उसके पास है।"

"क्या है?"

"मर्द। देख उसका हाथ पकड़ा हुआ है।"

जगमोहन मोमो जिन्न से बोला।

"सामने बहुत तेज बरसात है।"

"यहां से मौसमों वाला रास्ता शुरू हो रहा है।" मोमो जिन्न ने कहा—"सामने पहला मौसम है बरसात का।"

"तो हमें इस मौसम में प्रवेश करना चाहिए कि नहीं?" जगमोहन ने पूछा।

"मैं पहचान कर चुका हूं बरसाती मौसम की। इस मौसम से हमें दिशा भटक जाने का कोई खतरा नहीं है।"

"बहुत खतरा है।"

पीछे से बूंदी की आवाज आई।

सबने पीछे देखा।

बूंदी आंखें नचाता खड़ा था।

"ये भूत की तरह कहां से आ गया?" सपन चड्ढा बोला।

"शुभ-शुभ बोल।" लक्ष्मण दास कह उठा—"कहीं ये सच में भूत न हो।"

"लगता तो नहीं।"

"क्या खतरा है?" नानिया ने बूंदी से पूछा।

"रास्ता भटक जाओगे।" बूंदी मुस्कराकर बोला।

जगमोहन ने कठोर नजरों से देखा।

"तुम हमेशा दोगली बातें क्यों करते हो?" सोहनलाल ने कहा।

"महाकाली का ये ही आदेश है। मौसमों वाले रास्ते में प्रवेश कर रहे हो। एक मौसम तो ऐसा है ही, जिसे पार करने की चेष्टा करोगे तो उसी वक्त दिशा बदल जाएगी तुम लोगों की। रास्ता तो भटकोगे ही।" बूंदी ने मुस्कराकर कहा—"भटकना ही पड़ेगा। किसी के चक्कर में मत पड़ो। ये तुम्हें बचा नहीं सकेगा।"

"मोमो जिन्न की बात कर रहे हो।" जगमोहन बोला।

"नाम क्या लूं किसी का। तुम तो वैसे ही बहुत समझदार हो जग्गू।"

मोमो जिन्न ने बूंदी की तरफ पीठ कर ली।

"मोमो जिन्न साथ हो या न हो, रास्ता तो तब भी हम भटकेंगे ही। क्योंकि तुम हमारी सहायता नहीं कर रहे।"

"मैं पूरी तरह तुम लोगों के साथ हूं।"

"तो बताओ रास्ता भटकने से कैसे बचेंगे?"

"बच भी सकते हो और नहीं भी बच सकते। मौसमों के रास्ते पार करके देख लो।"

"ये क्या नई बात बता रहे हो। एक बात तो होगी ही।" नानिया ने तीखे स्वर में कहा।

"वो ही तो मैंने बताया है।" बूंदी हंसा—"किसी के चक्कर में मत पड़ो।"

तभी मोमो जिन्न कह उठा।

"चलो अब हम आगे चलेंगे।" इसके साथ ही मोमो जिन्न चल पड़ा।

बाकी सब उसके पीछे चल पड़े।

"तुम नहीं आओगे?" लक्ष्मण दास बूंदी से बोला।

"जाने दे इसे। क्यों पीछे आने को कहता है।" सपन चड्ढा ने कहा।

वे सब बरसात के मौसम में प्रवेश करते चले गए।

बूंदी भी बरसात के मौसम में प्रवेश कर गया। अगले ही पल बरसात की बूंदों से उसकी आकृति छिन्न-भिन्न होने लगी। बरसात की बूंदें उसकी आकृति को मिटाने की चेष्टा कर रही थीं। परंतु आकृति पुनः बनने की चेष्टा करती। हर पल जैसे उसकी आकृति खंडित होने को हो रही थी।

बरसात सच में बहुत तेज थी।

सिर पर हाथ रखकर वे बूंदों से बचने की चेष्टा कर रहे थे।

तभी सपन चड्ढा ने पीछे देखा बूंदी की तरफ।

बूंदी की आकृति को खंडित होते देखकर वो बरसात में ऊंचे स्वर में बोला।

"बूंदी को क्या हो रहा है देख तो लक्ष्मण।"

"बरसात ने बुरा हाल कर रखा है। वो क्या छोकरी है जो मैंने उसे देखना है।" लक्ष्मण दास ऊंचे स्वर में कह उठा।

साथ चलते जगमोहन ने बूंदी की तरफ नजर मारी फिर कह उठा।

"इस वक्त वो हमारी तरह के शरीर वाला इंसान नहीं है।"

"क्या मतलब?" सपन ने पूछा—"इंसान नहीं है?"

"वो इंसान के प्रतिरूप में, छाया में हमारे साथ है। वो सिर्फ देखने में इंसान लगता है।"

"ऐसा भी होता है क्या?"

"होता नहीं है, परंतु महाकाली ने अपनी शक्तियों के दम पर, बूंदी को ऐसा रूप दे रखा है कि वो हमारे साथ रहकर हम पर नजर रख सके, या जो भी वो करना चाहते हैं, वो कर सके। परंतु हम उस पर काबू ना पा सकें।" जगमोहन ने बताया।

"कितनी अजीब बात है।"

तेज बरसात में वे सब बुरी तरह भीग रहे थे।

चलना दुश्वार हो रहा था।

देर तक यही आलम रहा।

फिर बरसात का मौसम खत्म हो गया।

उन्होंने खुद को खुली जगह में पाया। तेज सूर्य निकला हुआ था। धूप एकाएक शरीरों को चुभने लगी। आंखें चौंधिया-सी गई थीं सूर्य की रोशनी में।

"कितनी गर्मी है।" नानिया कह उठी।

"बुरा हाल है।" सोहनलाल चेहरे पर हाथ फेरता कह उठा।

जगमोहन ने मोमो जिन्न को देखा, जो कि हर तरफ नजरें घुमा रहा था।

"तेज बरसात के बाद अब तेज धूप हो गई।" सपन चड्ढा बोला—"नर्क जैसा लग रहा है।"

"पीठ पर खुजली हो रही है। तेरे को भी हो रही है क्या?"

"जरूरी है क्या, जो तेरे को हो, वो मेरे को भी हो।" सपन चड्ढा चिढ़ा-सा कह उठा।

तभी मोमो जिन्न पलटा और पीछे खड़े बूंदी को देखा।

उसे अपनी तरफ देखते पाकर बूंदी मुस्करा पड़ा।

मोमो जिन्न ने चेहरा घुमा लिया।

"ये मौसम कैसा है?" जगमोहन ने मोमो जिन्न से पूछा।

"इस मौसम से भी दिशा भटकने का कोई खतरा नहीं है।" मोमो जिन्न ने कहा।

"फिर तो हमें चलना चाहिए।" जगमोहन ने कहा।

"चलो...चलो।" सपन चड्ढा बोला—"मुझे बहुत गर्मी लग रही है।"

"रास्ता भटक जाओगे। किसी पर विश्वास न करो।" पीछे से बूंदी कह उठा।

उसकी बात की परवाह न करके, वो सब आगे चल पड़े।

"सोहनलाल, ये पागल सा बूंदी उल्टा-पुल्टा क्यों बोलता रहता है?" नानिया ने कहा।

"वो पागल नहीं है। उसके इस प्रकार से बोलते रहने में भी कोई रहस्य है, जो हम समझ नहीं रहे।"

"ये बात तुमने कैसे कह दी?"

"मेरा मन कहता है।"

गर्मी में चलना मुहाल हो रहा था। परंतु रास्ता तो तय करना ही था।

जगमोहन ने चलते-चलते पलटकर पीछे देखा।

बूंदी अब पीछे नहीं था।

गर्मी में सिर के बालों से पसीना, चेहरे से होता पेट और पीठ तक बह रहा था। चेहरे तप से रहे थे। गीले कपड़े सूख चुके थे। बरसात का मजा तो कब का जा चुका था। धूप सुईयों की तरह शरीर को चुभ रही थी।

"सपन मैं तो इस गर्मी में मर जाऊंगा।" लक्ष्मण दास बोला।

"मैं सोच रहा हूं, बूंदी की बात मानकर नदी में कूद जाते तो ठीक रहता।"

"तब मगरमच्छ हमें खा जाते।"

"क्या पता हम मायावी पहाड़ी के बाहर पहुंच जाते।"

"अब बात कर लें बूंदी से।"

"नदी बहुत पीछे छूट गई है। अब क्या फायदा बात करने का?"

चलते-चलते उन्हें थकान होने लगी थी। परंतु किसी ने भी रुकने की बात नहीं की। रुकते भी तो कहां। हर तरफ सूखी, बंजर जमीन नजर आ रही थी। कोई पेड़ नहीं था। कोई छाया नहीं थी।

गर्मी में चेहरे सुर्ख-से हो रहे थे।

आखिरकार लम्बी परेशानी के बाद वो रास्ता भी पार हो गया।

धूप खत्म हो गई।

सामने तूफान और आंधी का मौसम था।

वे सब ठिठक गए।

मोमो जिन्न की निगाहें हर तरफ फिरने लगीं।

"ये मौसम बढ़िया है सपन।"

"हां, अब थोड़ा चैन मिलेगा।"

जगमोहन ने मोमो जिन्न से पूछा।

"आंधी-तूफान वाला ये रास्ता कैसा है?"

"इस मौसम वाले रास्ते को समझने में मुझे परेशानी हो रही है।" मोमो जिन्न बोला।

"कैसी परेशानी?"

"आंधी-तूफान की रफ्तार तेज है। मेरा दिमाग तूफान के भीतर झांक नहीं पा रहा।"

"कोशिश करो।"

"कर तो रहा हूं।" मोमो जिन्न कुछ उलझन में दिखने लगा था।

लक्ष्मण सपन के कान में बोला।

"ये हरामी जिन्न कहता है कि दिमाग काम नहीं कर रहा। इसके पास दिमाग भी है। सुना तुमने।"

"हम जैसे किसी शरीफ आदमी का दिमाग ले लिया होगा, वरना जिन्नों के पास दिमाग होता ही कहां है।"

"सच में नहीं होता?"

"मैंने अलादीन वाली फिल्म देखी थी। फिल्म में वो जिन्न अक्ल से पैदल था।"

"तो क्या ये भी... ।"

"किसी इंसान का दिमाग अपने सिर में भर रखा है इसने।"

तभी मोमो जिन्न कह उठा।

"मेरा दिमाग इस तूफान में झांक नहीं पा रहा। इसकी रफ्तार मेरे दिमाग से ज्यादा तेज है।"

"तो क्या करें?" सोहनलाल बोला।

"रुकने की जरूरत नहीं। हम ये रास्ता भी पार कर लेंगे।" जगमोहन ने कहा।

पीछे से बूंदी की आवाज आई उसी पल।

"गलती मत कर देना।"

सबकी नजरें बूंदी की तरफ घूमीं।

"इस बार तो तुम लोग अवश्य दिशा भटक जाओगे। किसी की बातों में मत आओ।"

"तो क्या करें?" सपन चड्ढा ने पूछा।

"बैठ जाओ। इंतजार करो। कभी तो तूफान थम ही जाएगा। नहीं थमेगा तो कम-से-कम दिशा तो नहीं भटकोगे। यहीं पर बैठे तो रहोगे। मेरी मानो तो इस तूफान में मत प्रवेश करो।"

"तेरी बातों का कोई ईमान-धर्म है?"

"ईमान-धर्म तो मेरा भी नहीं है। लेकिन कह सच रहा हूं। ये तूफान तुम लोगों को कहीं का कहीं पहुंचा देगा।" बूंदी के चेहरे पर मुस्कान थी—"ये मौसमों का रास्ता है। इसे समझ पाना आसान नहीं। बरसात का रास्ता तुम लोगों ने पार कर लिया। धूप का रास्ता

भी पार कर लिया, परंतु तूफान का रास्ता सबको दिशा भटकाकर, दूसरे रास्ते पर डाल देगा।"

"तुम अगर सच नहीं बोल सकते तो झूठ क्यों बोलते हो?" जगमोहन गुस्से से बोला।

"क्या झूठ बोला है मैंने?"

"तुम्हारी बातों में सच कम और झूठ ज्यादा होता है।"

"मेरी ईमानदारी पर शक मत करो जग्गू। अगर तूफान को पार कर गए तो अगला मौसम तुम लोगों को रास्ता... ।"

"चुप रहो तुम।"

"ठीक है।" बूंदी ने कहा और खामोश हो गया।

"इसके गुस्से का बुरा मत मानना।" लक्ष्मण दास बूंदी से कह उठा—"तुम कुछ कहना चाहते हो तो मेरे कान में कह दो।"

"रहने दे।" सपन ने कहा—"ये तो तेरा कान ही काट लेगा।"

जगमोहन और सोहनलाल की नजरें मिलीं। नानिया ने सोहनलाल का हाथ थाम रखा था।

जगमोहन ने मोमो जिन्न से पूछा।

"तुम क्या कहते हो मोमो जिन्न कि हमें क्या करना चाहिए?"

"मैं कुछ भी बता पाने में असमर्थ हूं। तुम लोग ही फैसला कर लो।" मोमो जिन्न ने कहा।

"हमें तूफान को पार कर लेना चाहिए।" नानिया कह उठी।

"मैं भी यही सोच रहा हूं।" सोहनलाल ने कहा।

जगमोहन ने अपना सोचों में डूबा चेहरा हिलाया।

"यार सपन! हमसे तो कोई राय मांगता ही नहीं।" लक्ष्मण दास कह उठा।

"जब सबके पास राय खत्म हो जाएगी, तब ये हमसे ही सलाह लेंगे।"

"मतलब कि हम एमरजैंसी के लिए हैं।"

"हां, यही बात है।"

तभी जगमोहन कह उठा।

"हम आंधी-तूफान के रास्ते को पार करेंगे। चलो, आगे बढ़ते हैं।"

उसके बाद वे सब तूफान में प्रवेश करते चले गए।

आंधी और तूफान इतना तेज था कि चंद कदम चलने के बाद वे संभल न सके। तूफान अपने संग उन्हें बहाकर ले जाने लगा। उन्होंने बचने की लाख चेष्टा की परंतु वे सफल नहीं हो सके और तूफान के संग बहने-लुढ़कने को मजबूर हो गए। अपने पर उनका

बस नहीं चल रहा था। तूफान का शोर ऐसा था कि एक का स्वर दूसरे को सुनाई नहीं दे रहा था। इन हालातों में फंसे कुछ देर तो वे होश में रहे, फिर होश गुम होने लगे उनके।

सिर्फ मोमो जिन्न ही ऐसा था जो कि आसानी से आंधी-तूफान का मुकाबला कर रहा था और सबके लुढ़कते बेहोश शरीरों के साथ-साथ आगे बढ़ता जा रहा था।

□ □

जाने कितनी देर वे आंधी में, तूफान में, बेहोश हुए लुढ़कते रहे।

समय का कोई ज्ञान नहीं था। दिशा का भी कोई ज्ञान नहीं था।

मोमो जिन्न तूफान में उनके साथ ही आगे बढ़े जा रहा था।

बहुत देर के बाद, तूफान उन सबको अपने साथ एक जगह पर लाया और थम गया। उठते शोर के बाद एकाएक ही खामोशी छा गई थी। सब कुछ जैसे थम गया लगता था।

जगमोहन, नानिया, सोहनलाल, लक्ष्मण दास, सपन चड्ढा सब पास-पास ही बेहोश पड़े थे।

मोमो जिन्न धूल से भरा पास ही मौजूद था। उसने आस-पास देखा।

ये किले जैसी कोई जगह थी।

जैसे कोई पुराना किला, धीरे-धीरे खंडहर में परिवर्तित होता जा रहा हो। ऐसा हाल था उस जगह का। देखकर ऐसा लगता था जैसे बरसों से यहां कोई आया ही न हो। किले के भीतर कच्ची जमीन पर कई पेड़ खड़े थे, परंतु अधिकतर पेड़ सूखे हुए थे। कुछ में पत्ते-टहनियां नजर आ रही थीं, परंतु वे भी आधी-अधूरी थीं। पेड़ों के पत्ते जमीन पर बिखरकर सूख चुके थे। लाल रंग के पत्थरों से वो पुराना किला बना था। साफ-सफाई न होने की वजह से वो पत्थर भी अब मटमैले होने लगे थे।

किले के आंगन में थे वे सब बेहोशी में।

मोमो जिन्न ने उन सब पर निगाह मारी। चेहरे पर सोचें दौड़ रही थीं।

एकाएक ही मोमो जिन्न सतर्क हुआ। उसने गर्दन जरा-सी टेढ़ी करके आंखें बंद कर लीं और हौले-हौले सिर हिलाने लगा। जैसे किसी की बात बहुत ध्यान से सुन रहा हो।

ये सब एक मिनट रहा फिर वो सामान्य हो गया।

उसी पल सामने से आता बूंदी दिखाई दिया।

उसे देखते ही मोमो जिन्न के चेहरे पर अकड़ के भाव आ गए। कमर पर हाथ बांधकर वो दूसरी तरफ देखने लगा।

वहां पहुंचकर बूंदी ने हर तरफ नजर मारी। चेहरे पर गम्भीरता थी।

मोमो जिन्न ने उसकी तरफ पीठ कर रखी थी।

बूंदी मोमो जिन्न से बोला।

"तुम मुझसे नाराज क्यों हो?"

मोमो जिन्न पलटा। बूंदी को घूरा।

बूंदी मुस्कराया।

"बोलो। तुम मुझसे नाराज क्यों हो?"

"महाकाली ने मेरे मालिक को कैद कर रखा है। तुम महाकाली के सेवक हो।"

"वो ही तो मैं कहना चाहता हूं कि हम सेवक हैं। मालिक की वजह से हम क्यों आपस में दुश्मनी करें।"

"तुम मुझे अच्छे नहीं लगते।"

"मैंने तो तुम्हारा कोई बुरा नहीं किया।" बूंदी बोला।

"अगर तुम मुझसे दोस्ती करना चाहते हो तो मुझे जथूरा तक ले चलो।" मोमो जिन्न बोला।

"महाकाली की आज्ञा के बिना मैं ये काम नहीं कर सकता।"

"फिर मुझसे बात मत करो।" मोमो जिन्न बोला।

"मैं तुम्हें जथूरा तक पहुंचा भी दूं तो तुम उसे आजाद नहीं करा सकते। वो तिलिस्मी कैद है। देवा-मिन्नो के नाम का तिलिस्म बंधा है। वो दोनों ही जथूरा तक, तिलिस्म तोड़कर पहुंच सकते हैं। इस काम में तुम्हारा कोई फायदा नहीं।"

"तुम मुझे जथूरा तक पहुंचा दो। बाकी देखना मेरा काम है।"

"ये मैं नहीं कर सकता।"

"तो फिर मुझसे बात मत करो।"

तभी नानिया के होंठों से कराह निकली। उसे होश आने लगा था।

▭ ▭

अगले दस मिनटों में सबको होश आ गया।

"ये तो कोई किला लगता है सोहनलाल।" नानिया कह उठी।

"किला ही है।" मोमो जिन्न बोला—"ये महाकाली का किला है।"

"तुम्हें कैसे पता?"

"कुछ देर पहले मुझे जथूरा के सेवकों ने ये बात बताई थी कि ये महाकाली का किला है।"

"ये तो खंडहर किला है।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"लगता है महाकाली यहां नहीं रहती।" जगमोहन ने कहा।

सोहनलाल ने बूंदी को देखकर पूछा।

"ये महाकाली का किला है?"

"हां।"

"महाकाली कहां है?"

"मैं नहीं जानता।"

"तुम्हें महाकाली से आदेश कैसे मिलते हैं?"

"महाकाली की परछाई आकर आदेश देती है।"

"हमें यहां क्यों लाए हो?"

"ताकि जथूरा तक पहुंच सको या कभी भी न पहुंच सको।" बूंदी ने कहा।

"इससे हमें कोई भी जवाब ठीक से नहीं मिलने वाला।" सपन चड्ढा ने कहा।

"लेकिन अब करें क्या?"

तभी मोमो जिन्न ने गर्दन टेढ़ी कर ली। आंखें बंद हो गईं। वो कुछ सुनते हुए सिर हिलाने लगा।

"इसका टेलीफोन फिर बजने लगा।" लक्ष्मण दास ने कहा।

"जिस दिन इससे पीछा छूटेगा, मंदिर में प्रसाद चढ़ाने जाऊंगा।" सपन चड्ढा ने तीखे स्वर में कहा।

"मेरी तरफ से भी चढ़ा देना। एडवांस में चढ़ा देते हैं।"

तभी मोमो जिन्न सीधा होते हुए कह उठा।

"जथूरा के सेवकों ने अभी-अभी मुझे बताया है कि जथूरा इसी किले में कैद है।"

"क्या?"

सब चौंक पड़े।

"इसी किले में?"

मोमो जिन्न ने सहमति में सिर हिलाया।

"जथूरा के सेवकों को ये बात कैसे पता चली?" सोहनलाल ने पूछा।

"जैसे पहले ही बताया था कि जथूरा के ग्रहों को प्रोग्राम करके सैटलाइट से जोड़ रखा है। सैटलाइट जथूरा को ढूंढ़ने का काम भी कर रहा था परंतु पहले जथूरा के बारे में कोई खबर नहीं मिल रही थी। अब हम लोग यहां पहुंचे हैं तो सैटलाइट सिग्नल भेजने लगा कि जिस किले में हम हैं, जथूरा भी इसी किले में कैद है। तो ये बात मुझे बता दी गई।"

"फिर तो हमने मैदान मार लिया।" जगमोहन मुस्कराकर कह उठा।

"अभी जथूरा को ढूंढ़ना बाकी है।" नानिया बोली।
"ये सब आसान नहीं है।" मोमो जिन्न ने कहा।
"अब क्या समस्या है। अब तो...।"
"जथूरा को महाकाली ने तिलिस्म के ताले में कैद कर रखा है।" मोमो जिन्न ने गम्भीर स्वर में कहा—"जब तब देवा-मिन्नो तिलिस्म के उस ताले को नहीं खोलेंगे, तब तक जथूरा की आजादी सम्भव नहीं।"
"हम नहीं खोल सकते तिलिस्मी ताले को?" सोहनलाल ने पूछा।
"नहीं वो चाबी वाला ताला नहीं है।" जगमोहन ने गहरी सांस लेकर कहा।
"देवराज चौहान और मोना चौधरी कैसे खोलेंगे, तिलिस्मी ताले को?" सोहनलाल ने पूछा।
"उनके छूने भर से रास्ता खुल जाएगा। क्योंकि उनके ग्रहों पर तिलिस्म बांधा गया है।"
"अब क्या पता देवा-मिन्नो कहां पर हैं?" नानिया कह उठी।
जगमोहन ने बूंदी को देखा।
"तुम्हें तो पता होगा कि देवराज चौहान और मोना चौधरी कहां पर हैं?"
"या तो वो जिंदा हैं या मर गए।" बूंदी ने मुस्कराकर कहा।
"इससे बात करने का कोई फायदा नहीं।" जगमोहन ने मुंह बिगाड़ा।
"हम पता तो लगा लें कि जथूरा कहां पर कैद है।" नानिया बोली।
"हां, हम कम-से-कम ये तो कर ही सकते हैं।" सोहनलाल ने कहा।
सब उठकर मिट्टी-धूल वाले कपड़े झाड़ने लगे।
जगमोहन ने बूंदी से कहा।
"हमें पता तो चल ही गया है कि जथूरा यहीं कैद है। हम उसे ढूंढ़ ही लेंगे। बेहतर होगा कि तुम ही बता दो। हमें भटकना नहीं पड़ेगा।"
"भटकने से फायदा भी हो सकता है। नुकसान भी हो सकता है।" बूंदी ने कहा।
"फायदा हो सकता है?"
"हां।"
"किस बात का?"
"भटकोगे तो पता चल जाएगा। फायदे के साथ नुकसान को मत भूलो। मैंने दो बातें कहीं हैं।"
"छोड़ो इसे। हम खुद ही जथूरा को ढूंढ़ लेंगे।" नानिया ने तीखे स्वर में कहा।
सोहनलाल ने मोमो जिन्न से कहा।

"तुम नहीं बता सकते कि इस महल में जथूरा कहां है?"

"मुझे ज्ञान होता तो मैं बता चुका होता।" मोमो जिन्न ने कहा। नजरें बूंदी पर गईं। उससे कहा—"तुम बता दो।"

"नहीं बता सकता। मुझे इसके लिए हुक्म नहीं है।" बूंदी ने कहा।

मोमो जिन्न ने कठोर निगाहों से बूंदी को देखा।

बूंदी मुस्करा पड़ा।

फिर वे सब महल के भीतर की तरफ चल पड़े।

हर तरफ सुनसानी थी।

"कभी ये महल कितना सुंदर रहा होगा।" नानिया कह उठी।

"अब भी बहुत बेहतर है।" जगमोहन बोला—"साफ-सफाई की जरूरत है।"

धूल-भरी राहदारी में आगे बढ़ते जा रहे थे। उनके कदमों की आवाजें गूंज रही थीं। सामने ही सूखे पेड़ पर झूला लटका रखा था। परंतु झूलने वाला कोई नहीं था। जगह-जगह स्त्री-पुरुषों के बुत नजर आ रहे थे। कोई बुत तो राहदारी में खड़ा था। उन्हें इस तरह मौजूद बुतों का मतलब समझ नहीं आया।

वो किले के भीतर जा पहुंचे थे।

धूल-मिट्टी, जालों का ही साम्राज्य था हर तरफ।

"सपन।"

"बोल लक्ष्मण।"

"इस किले की साफ-सफाई हो जाए तो ये कितना बढ़िया दिखेगा।"

"यहां की जमीन का भाव क्या होगा?"

"क्यों?"

"मैं किले की कीमत लगाने की सोच रहा हूं।"

"ये दुनिया भी बुरी नहीं। यहां रहा जा सकता है। बूंदी से पूछूं किले की कीमत।"

"अकेले में पूछना। लेकिन वो तो दो-दो कीमतें बताएगा।"

"लालच दे देंगे कि सौदा करा दे, उसे पांच परसेंट दे देंगे। फिर तो सीधे ढंग से बात करेगा ही।"

"ये तूने ठीक कही।"

राहदारी के अंतिम छोर पर बने, वे एक हॉल में पहुंचे।

बैठक जैसा कमरा था ये।

ऊंची छत। लटकता फानूस। एक तरफ लम्बी-सी मूर्ति खड़ी थी, जिस पर धूल पड़ी थी। बैठने के लिए लकड़ियों की कुर्सियां। कुर्सियों

पर गद्दे रखे थे। फर्श पर कालीन था। दीवारों पर छूल से अटी पेंटिंग्स थीं। देखने भर से ही इस बात का एहसास हो रहा था कि साफ-सफाई होने पर ये शानदार दिखेगा। हवा का झोंका भीतर तक आ जाता तो छत पर लटकते जाले सांप की तरह बल खाते दिखाई देते।

"यहां धूल न होती तो आराम करने का मजा आता।" नानिया कह उठी—"सोहनलाल।"

"हां।"

"तेरा घर भी ऐसा है?"

"नहीं। वो तो बहुत छोटा है।"

"कोई बात नहीं। मैं छोटे घर में रह लूंगी।"

"अभी घर मत बसाओ। यहां पर जथूरा को ढूंढो। किले में जाने कितने कमरे होंगे। तहखाने होंगे।" जगमोहन बोला—"हमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। वक्त भी बहुत लगेगा।"

"जथूरा की कोई तस्वीर होगी?" लक्ष्मण दास बोला।

"तस्वीर?"

"वो मिल गया तो उसे पहचानेंगे कैसे?"

"कोई जिंदा इंसान यहां पर मिल जाए तो उसे पकड़ लेना।"

"ठीक है, हमें क्या?" सपन चड्ढा लक्ष्मण के कान में बोला—"हमने कौन-सा जथूरा को ढूंढ़ने में सिर खपाना है।"

तभी मोमो जिन्न की गर्दन टेढ़ी हो गई। आंखें बंद हो गईं। वो सुनने लगा कुछ।

"आ गया टेलीफोन।"

फिर मोमो जिन्न सीधा हुआ और बोला।

"जथूरा के सेवकों ने कहा है कि ये जगह अच्छी तरह साफ करो। हर चीज चमका दो।"

"क्यों?"

"इससे हमारे बैठने की जगह भी बन जाएगी और आने वाले वक्त में सफाई हमारे काम आएगी।" मोमो जिन्न ने कहा।

"क्या काम?"

"मैं नहीं जानता। जो मुझे कहा गया। वो मैंने कह दिया।"

"सफाई करना जरूरी है?"

"जरूरी है, तभी तो आदेश मिला है।"

"कर देते हैं सफाई।" नानिया कह उठी—"सोहनलाल तुम भी मेरे साथ सफाई में लग जाना।"

"तुम जो कहोगी, मैं वो ही करूंगा।"

जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"ये नौबत आ गई लक्ष्मण कि अब झाड़ू सफाई करनी पड़ रही है।" सपन चड्ढा बोला।

"मोमो जिन्न की वजह से हमारा ये हाल हो रहा है। हम क्या सफाई करने वाले हैं जो... ।"

"मौका मिला तो मोमो जिन्न को नहीं छोड़ेंगे। पीठ की तरफ से छुरा मार देंगे।"

"वो कमीना हमारे पास ही आ रहा है।"

तब तक मोमो जिन्न पास आकर बोला।

"सैंसर लगे होने की वजह से मैं तुम दोनों की बातें सुन रहा हूं।"

"तो हम कौन-सा छिपकर बातें कर रहे हैं, क्यों सपन।"

"हां-हां, हमें पता है कि तुमने हमारे कानों में कहीं सैंसर लगा रखे हैं।" सपन चड्ढा ने कहा।

"तुम दोनों को मेरा कोई डर नहीं?" मोमो जिन्न कठोर स्वर में बोला।

"नहीं।"

"मैं तुम दोनों को अभी नंगा करके... ।"

"सपन थोड़ा तो हमें डरना चाहिए।" लक्ष्मण दास जल्दी-से कह उठा।

"हां, थोड़ा तो हम डरते ही हैं।" सपन चड्ढा ने सिर हिलाया।

मोमो जिन्न ने दोनों को सख्त नजरों से घूरा।

"मेरी पीठ में छुरा मारोगे?"

"वो तो हम मजाक कर रहे थे।" लक्ष्मण दास ने दांत दिखाए।

"चलो सफाई करो।"

"हां-हां, वो ही तो हम करने जा रहे थे।"

उसके बाद वे सब उस हॉलनुमा कमरे को साफ करने पर लग गए।

मेहनत वाला और लम्बा काम था।

बूंदी एक तरफ शांत और गम्भीर मुद्रा में खड़ा था। जगमोहन बूंदी से कह उठा।

"इस तरह खड़े तुम किसका अफसोस मना रहे हो?"

"अपने भाई बांदा के बारे में सोच रहा हूं कि कब उससे मिलूंगा।" बूंदी ने लम्बी सांस लेकर कहा।

"इससे बात करके वक्त बर्बाद मत करो।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तुम सफाई नहीं कर रहे।" सपन चड्ढा मोमो जिन्न से कह उठा।

"मैं सफाई करूंगा। कहते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती। मैं जिन्न हूं। सफाई जैसा काम करके जिन्नों की जात की बेइज्जती कराऊंगा क्या?"

"तुम लोग गंदगी में ही बैठे रहते हो क्या?"

"खबरदार जो फालतू बात की। जिन्नों को सफाई की जरूरत नहीं पड़ती।"

"तुम नहाते नहीं हो क्या?"

"जिन्न सिर्फ तब नहाते हैं जब वे बोतल में आराम करने जाते हैं या फिर बोतल से बाहर निकलते वक्त नहाते हैं। इंसानों की तरह हम रोज-रोज नहाकर वक्त बर्बाद नहीं करते। हमें बहुत काम करने होते हैं।"

"सुना लक्ष्मण।"

"सब सुन रहा हूं। तू चुपचाप काम पे लग जा। नहीं तो ये हमें फिर नंगा करने की धमकी देने लगेगा।"

▭ ▭

बांकेलाल राठौर ने खुद को नीचे गिरता महसूस किया। हर पल उसे लग रहा था कि अब जमीन से टकराया तो अब टकराया।

लेकिन नीचे गिरते समय अचानक ही उसकी सांसों से कोई तेज खुशबू टकराई, उसके बाद उसके होश गुम होते चले गए। उसके बाद क्या हुआ, उसे कुछ पता न चल पाया।

फिर उसे होश आया तो उसने खुद को बहती नदी में पाया। पानी के संग आगे को लुढ़कता जा रहा था।

'ये का मुसीबतों में फंसो गयो।' मुंह पानी से निकालकर वो बड़बड़ा उठा।

तभी उसने किनारे पर देवराज चौहान को खड़े पाया।

"देवराज चौहानो। म्हारे को बचायो। यो पाणी बोत तेजी दौड़ो हो।"

तब तक देवराज चौहान हाथ आगे बढ़ा चुका था।

बांकेलाल ने अपना हाथ आगे किया, जिसे कि देवराज चौहान ने थामा और बांके को बाहर खींच लिया।

"अंम बच गयो।" नदी से बाहर आते ही वो कह उठा—"क्या सबो बचो गयो?"

"हां।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"थारे को वो दुल्हनो पसंदो न करो हो।"

"वो धोखा था।" देवराज चौहान ने कहा।

"ईब तो यो बातो म्हारे को भी पतो हौवे।" बांकेलाल राठौर ने अफसोस-भरे स्वर में कहा तभी उसकी निगाह अन्यों पर पड़ी, जो कि कुछ दूर खड़े थे। परंतु सब ही भीगे हुए थे—"म्हारी किस्मतो दगो दे जायो।"

"क्यों?"

"म्हारो ब्याह हो जाणो था, पर यो बांदा और उसो का बाप प्रणाम सिंह बोत हरामी हौवो।"

"मैंने बताया कि वो सब धोखा... ।"

"पतो हौवे। थारे संग वां पे का हौवे हो?"

"जो तुम्हारे साथ हुआ, वो ही मेरे साथ हुआ।"

"म्हारे संग तो बोत बुरो मजाक हौवो हो। किस्मतो ही फूट गयो हो। ईब अंम किधरो हौवे?"

"पता नहीं। हम सब भी अभी यहां पहुंचे हैं।"

"तन्ने म्हारे को बचा लयो। नेई तो नदी के संगो, जाणो किधरो खिसक जायो अंम।"

देवराज चौहान और बांके अन्यों के पास जा पहुंचे।

"कैसा होईला बाप?" रुस्तम राव मुस्कराकर बोला।

"पूछ मत छोरे। घणों बुरा हो गयो म्हारे संग।"

"ब्याह नेई होईला?"

"नेई म्हारे को वो आसमानी कपड़ों वाली पसंदो हौवे।" बांके ने गहरी सांस ली।

"दुल्हन देखी बाप?"

"साड़ी में तो हरामो प्रणाम सिंह बैठो हो। म्हारे को नीचे फेंक दयो। मन्ने तो सोचो कि ब्याह हो ही गयो। पर वो हरामो तो दामोदों की खातिरो खूब पटक-पटक के करो हो।"

"लेकिन उन्होंने हमारे साथ ये व्यवहार क्यों किया?" पारसनाथ ने कहा।

"इस तरह वे हमें रास्ते से भटका रहे हैं।" रातुला ने कहा।

"किस रास्ते से?" तवेरा कह उठी—"अभी तो रास्ता हमें मिला ही नहीं। हम भीतर पहुंचे तो महाकाली का सेवक बांदा हमारे साथ चल पड़ा। उसने हमें ठीक से सोचने ही नहीं दिया और हमें उलझाता चला गया।"

"ये ही बात है।" देवराज चौहान कह उठा—"हमने जथूरा तक पहुंचने के लिए रास्ता तय किया ही नहीं कि बांदा और प्रणाम सिंह

हमें किसी-न-किसी रास्ते पर धकेले जा रहे हैं। हम जाने कहां पहुंचते जा रहे हैं।"

"ऐसा क्यों कर रहे हैं वो हमारे साथ?" महाजन ने कहा।

"शायद इसलिए कि हम सोच-समझकर सही रास्ता न चुन सकें।"

"ये हमारा विचार है। परंतु असल बात जाने क्या होगी।" रातुला गम्भीर स्वर में बोला।

"असल बात तो ये है कि महाकाली हमें जथूरा तक नहीं पहुंचने देना चाहती।" देवराज चौहान ने कहा।

"ये तो पक्का होईला बाप।" रुस्तम राव ने सिर हिलाया।

"महाकाली के इशारे पर बांदा और प्रणाम सिंह कुछ-न-कुछ करके हमें भटका रहे हैं।"

"अब हम बांदा की कोई बात नहीं मानेंगे।" मोना चौधरी कह उठी।

"पहले भी हम कहां उसकी बात मानते रहे हैं।" नगीना ने कहा—"परंतु हालात हर बार इस तरह हो जाते हैं कि हमें बांदा की बात मानने के लिए मजबूर होना पड़ता है। हमारे सामने दूसरा रास्ता नहीं होता।"

"इस बार जो भी हो जाए, बांदा की बात नहीं मानेंगे।" मोना चौधरी ने दृढ़ स्वर में कहा।

"ऐसा ही करेंगे।" पारसनाथ ने कहा।

तभी देवराज चौहान ने मोना चौधरी से कहा।

"प्रणाम सिंह ने तुम्हें गहरे कुएं में फेंक दिया, परंतु नीलकंठ तुम्हें बचाने नहीं आया। बल्कि वो आया ही नहीं।"

मोना चौधरी के होंठ सिकुड़े। देवराज चौहान को देखने लगी वो।

"ओह, नीलकंठ के बारे में तो मैंने भी सोचा नहीं।" महाजन ने मोना चौधरी को देखा।

"नीलकंठ क्यों नहीं आया तुम्हें बचाने?" नगीना कह उठी।

"मैं नहीं जानती।" मोना चौधरी के चेहरे पर उलझन थी।

तभी महाजन ने पुकारा।

"नीलकंठ।"

अगले ही पल मोना चौधरी के होंठों से मर्दानी, नीलकंठ की खरखराती आवाज निकली।

"क्या है?"

"तू मोना चौधरी को बचाने क्यों नहीं आया, जब प्रणाम सिंह ने इसे कुएं में फेंका।"

"मैं वहीं था तब।"

"तो बचाया क्यों नहीं?"

नीलकंठ की तरफ से आवाज नहीं आई।

"तू तो मोना चौधरी के आशिक होने का दम भरता था। अब क्या हो गया तुझे?" नगीना बोली।

"मैं इस मायावी पहाड़ी के हालातों को समझने की चेष्टा कर रहा हूं।"

"क्या मतलब?"

"मतलब ही तो अभी तक मेरे सामने स्पष्ट नहीं है, जो बता सकूं।" नीलकंठ की आवाज मोना चौधरी के होंठों से निकली।

"तुम स्पष्ट बात नहीं कर रहे।" महाजन ने कहा।

"मैंने कब कहा कि मैं स्पष्ट बात कर रहा हूं। इस बारे में मैं फिर बात करूंगा। पहले कुछ समझ लूं।"

"तुम क्या समझना चाहते हो?"

"अभी नहीं बता सकता, परंतु मैं मिन्नो के पास ही हूं और मिन्नो का अहित नहीं होने दूंगा। अभी मैं जा रहा हूं।"

उसके बाद नीलकंठ की आवाज नहीं आई।

मोना चौधरी सामान्य अवस्था में आ गई थी।

"नीलकंठ पर किसी तरह का शक मत करो।" मोना चौधरी बोली—"वो हमारे ही काम में व्यस्त है।"

"हमारे काम में?"

"महाकाली वाले काम में ही।" मोना चौधरी ने सोच-भरे स्वर में कहा।

देवराज चौहान की निगाह आसपास की जगहों पर घूमने लगी।

मखानी जो कि देर से सब्र किए बैठा था, वो दबे पांव कमला रानी के पास पहुंचा।

"मेरी कमला रानी कैसी है?" मखानी ने प्यार से कहा।

कमला रानी ने उसे घूरा।

"ऐसे क्या देखती है?" मखानी का स्वर प्यार से भरा ही था।

"जब तू प्यार से बोलता है तो तेरी नीयत ठीक नहीं होती।"

"मेरी नीयत ठीक ही है।" मखानी प्यार में डूबा हुआ था।

"मांगेगा तो नहीं।"

"जरूर मांगूंगा।" मखानी ने दांत फाड़े—"उसके लिए ही तो प्यार से बोल रहा हूं। पानी में भीगने के बाद से ठंड लग रही है। गर्मी की जरूरत है। दे दे कमला रानी, थोड़ी तबीयत संभल जाएगी।"

"नहीं।"

"दे दे न?" मखानी ने मुंह लटकाकर कहा।
"चुम्मी ले ले।"
"नहीं। अब चुम्मी से काम नहीं चलता। ठोस चीज चाहिए, जिससे कि पेट भर जाए। आत्मा प्रसन्न हो जाए और... ।"
"कुछ नहीं मिलेगा।" कमला रानी ने जिद-भरे स्वर में कहा।
"अड़ मत, कभी तो... ।"
"चुम्मी दे रही हूं, वो ही ले ले। नहीं तो उससे भी जाएगा।"
"मैं कोई बच्चा थोड़े न हूं जो चुम्मी से टरका रही है।" मखानी ने नाराजगी से कहा।
"अब तेरे को चुम्मी भी नहीं दूंगी।" कमला रानी ने मुंह बनाकर कहा।
"तू बहुत पत्थर दिल है।" मखानी बोला।
कमला रानी ने लम्बी सांस ली और कह उठी।
"तेरे को कब समझ आएगी।"
"समझदार बहुत हूं, तभी तो... ।"
"बेवकूफ जब औरत चुम्मी देने के लिए तैयार हो तो समझ जा कि सब काम के लिए वो तैयार है। चुम्मी लेने के बहाने औरत को एक तरफ ले जा और... ।"
"और?" मखानी की आंखें चमकी।
"और तेरा सिर।"
"समझ गया—समझ गया। चल आ जरा।"
"किधर?"
"साइड में। चुम्मी लेनी है।"
"अब तो पानी सारा ठंडा हो गया और तू अभी तक अंडा हाथ में पकड़े उबालने की सोच रहा है।" कमला रानी ने मुंह बनाया।
"क्या मतलब?"
"बाद में। अभी वक्त नहीं है।"
"ये क्या बात हुई?"
"सुना नहीं तूने। वक्त निकल गया। अंडा हाथ में पकड़े रख। दोबारा जब मौका मिले तो उबाल लेना।"
"तब तक तो अंडा टूट जाएगा।" मखानी ने फिर से मुंह लटका लिया।
"कोई बात नहीं टूटने दे। घर का अंडा है। दोबारा हाथ में आ जाएगा।"
सामने घना जंगल नजर आ रहा था। इस तरफ बहती नदी थी।
कोई और रास्ता नहीं था जाने का।

"अब क्या करें। किधर जाएं।" महाजन बोला—"हमें रास्ता भी तो नहीं पता।"

"ये भी नहीं पता कि हम कौन-सी दिशा में हैं।"

"हमें जंगल में जाना होगा। वो ही रास्ता है।" मोना चौधरी ने कहा—"कहीं तो पहुंचेंगे।"

"लेकिन हमने जथूरा को तलाशना है।" रातुला ने कहा।

"कहां है जथूरा?" मोना चौधरी ने रातुला से पूछा।

रातुला से कुछ कहते न बना।

"मोना चौधरी ठीक कहती है कि हमें चल देना चाहिए।" देवराज चौहान बोला—"आगे जैसा रास्ता मिलेगा, वैसा ही काम करेंगे।"

दूसरी कोई राय नहीं थी।

वे सामने नजर आ रहे जंगल की तरफ बढ़ गए।

अंजान रास्ता, अंजान मंजिल, दिशा का भी कुछ पता नहीं था।

चलते-चलते बांकेलाल राठौर, रुस्तम राव के पास जा पहुंचा।

"छोरे।"

"बोल बाप।"

"म्हारी तो जिंदगो ही खराबो हो गयो। ईक चांस मिलो ब्याह करने को, भी वो गयो।"

"आपुन तो पैले ही कहेला कि तुम्हारी उम्र ब्याह करनो की नहीं है। आशीर्वाद देने की होईला।"

"जिगरा मत जलायो म्हारा यो कह करो। अंम अभी ब्याहो करो हो।"

"करो बाप।"

"तम म्हारे साथो हौवो न?"

"किधर, ब्याह के बाद या पहले?"

"बादो में तंम का करो हो, अंम तो पैले की बातो करो हो।"

"आपुन साथ होईला बाप।"

जंगल शुरू हो चुका था।

सिर पर सूर्य था। परंतु जंगल में छाया और राहत मिल रही थी।

तभी सब ठिठकते चले गए।

सामने ही, पेड़ के तने से टेक लगाए बांदा बैठा था।

"ये हरामो म्हारे से फिरो टकरा गयो हो। ईब यो कोई नयो झंझट डालो हो।"

"ये नया प्लान इस्तेमाल करेला बाप।"

देवराज चौहान और मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

"अब हम इसकी कोई बात नहीं सुनेंगे।" मोना चौधरी ने दृढ़ स्वर में कहा।

"ये यूं ही हमारे सामने बार-बार नहीं आ रहा।" देवराज चौहान बोला—"इसका अवश्य कोई खास मतलब है।"

"और वो मतलब तुम नहीं जानते।"

"नहीं।"

"अब हम इसकी बातों में नहीं आने वाले।"

"मोना चौधरी ठीक कह रही है।" नगीना बोली—"हम इसके पास नहीं रुकेंगे।"

फिर वे सब बांदा को पार करते हुए जंगल में आगे बढ़ते चले गए।

ये देखकर बांदा फौरन उठा और उनके साथ-साथ चलता कह उठा।

"आप लोग मुझे हमेशा पीछे छोड़कर, आगे चल पड़ते हैं। मैं खुद को अकेला महसूस करता हूं।"

किसी ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया।

"मेरे से क्या गलती हो गई जो बात भी नहीं कर रहे।" बांदा पुनः बोला।

"तंम बोत कमीनो हौवे।" बांकेलाल राठौर कह उठा।

"मैंने ऐसा क्या कर दिया भंवर सिंह।"

"तन्ने म्हारे ब्याहो को टांग मारो हो।"

"मैंने तो दुल्हन को कहा था कि मूंछों वाले को पसंद कर...।"

"दुल्हनो की जगहों थारो बापू बैठो हो। अंम का थारे बाप संगो सुहागरात मनायो हो।"

साथ चलते हुए बांदा ने गहरी सांस ली।

"ईब थारी फूंको निकलो हो...। काये को?"

"मैं अपने पिता की हरकतों से बहुत परेशान हूं। तभी तो मैंने ब्याह भी नहीं किया।"

"का करो हो थारा बापो, थारे ब्याहो में?"

"वो खुद दुल्हन बनकर बैठ जाता है।"

"पक्को?"

"हां, सच कह रहा हूं मैं। दो बार शादी करने की चेष्टा की, दुल्हन को भगा कर, खुद घूंघट निकालकर बैठ जाता है।"

"थारे बापो को दूसरो स्वादो का चस्को लग गयो हौवे।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है। मैं अपने पिता से बोत परेशान हूं।"

"अंम तो थारे से भी परेशान हौवे और थारे बापू से भी। म्हारो तो ब्याह होतो-होतो रह गयो।"

"मेरा नहीं हुआ तो तुम्हारा कैसे होगा?"

"तंम पक्को हरामो हौवे। एकदम पक्को।"

"मैं बहुत शरीफ इंसान हूं, मैं तो... ।"

"तंम महाकालो को चमचो हौवे।"

"महाकाली का नमक खाता हूं मैं। उसकी बात तो माननी ही पड़ेगी।" कहने के साथ ही बांदा तेजी से आगे बढ़ा और देवराज चौहान के पास पहुंच गया—"मेरे से नाराज मत हौवो देवा।"

"तुम हर बार हमें भटका देते हो।"

"इसमें मेरा क्या कसूर।"

"सब कुछ जानते हुए भी तुम जथूरा के बारे में नहीं बताते कि वो कहां पर मिलेगा। पूछने पर हमें नई मुसीबत में फंसा देते हो। अभी तक हम अपना रास्ता भी तय नहीं कर सके।"

"तुम्हें एक खुशखबरी सुनाऊं।"

"कहते जाओ।"

बातों के दौरान सब तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे।

"जग्गू, गुलचंद उस जगह पर पहुंच गए हैं, जहां जथूरा कैद है।"

"क्या?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"हैरान हो गए न?"

"जथूरा उन्हें मिल गया?" देवराज चौहान बोला।

"मैंने कब कहा कि जथूरा उन्हें मिल गया। मैंने कहा है, वो उस जगह पर जा पहुंचे हैं।"

देवराज चौहान कुछ नहीं बोला।

"तुम्हें खुश होना चाहिए।"

"जगमोहन और सोहनलाल के वहां पहुंचने का कोई फायदा नहीं होगा।"

"वो क्यों देवा?"

"जथूरा की कैद का सिलसिला मेरे और मोना चौधरी के नाम से बांधा है। जब तक हम कैद के उस दरवाजे तक नहीं पहुंच जाते, तब तक जथूरा का किसी को दिखाई दे जाना भी सम्भव नहीं।"

"ये बात तो सही कही।" साथ चलते बांदा ने सिर हिलाया।

"तुम मुझे बता सकते हो कि जगमोहन-सोहनलाल इस वक्त कहां हैं?"

"नहीं बता सकता।"

"महाकाली से मेरी बात भी नहीं करा सकते?"

"ये तो मैं पहले ही मना कर चुका हूं।"

"तो तुम हमसे बातें क्यों करते हो?"

"अकेले में मन नहीं बहलता तो बातें करनी पड़ती हैं मुझे। एक बात और कहूं।"

"मैं सुन रहा हूं।"

"अगर तुम मेरे से रास्ते के बारे में पूछते तो मैं भी तुम्हें इसी रास्ते पर जाने को कहता।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर उसे देखा। कहा कुछ नहीं।

"मैं तुम्हें बता सकता हूं कि इस रास्ते के अंत में तुम्हें क्या नजर आएगा।"

देवराज चौहान खामोश रहा।

"तुम पूछोगे नहीं देवा कि क्या है इस रास्ते के अंत में। ये कहां जाकर खत्म होगा।"

"मुझे बता दे।" महाजन कह उठा।

"मैं तो देवा को बताऊंगा, वो भी अगर पूछे तो तब।" बांदा ने कहा—"क्यों देवा, बताऊं क्या?"

"बता।"

"सांभरा की नगरी है।"

"सांभरा कौन?"

"ये मैं नहीं बताऊंगा। वहां जाओगे तो खुद ही जानोगे।"

"फिर ये भी बताने की क्या जरूरत थी कि रास्ते के अंत में सांभरा की नगरी मिलेगी।"

"कोई तो बात करनी थी मैंने, ये कर दी।"

"थारे को बोत मारूंगा बांदो।"

"तुम जानते हो कि तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। एक बार कोशिश तो कर चुके हो।"

"थारे को देखकर तो म्हारे को अगन लग जावे।"

बांदा मोना चौधरी को देखकर कह उठा।

"लगता है मिन्नो मेरे से ज्यादा ही नाराज है।"

"तुमने।" नगीना कह उठी—"ऐसा कोई काम नहीं किया कि तुमसे कोई खुश हो।"

"मैं तो कोशिश कर रहा हूं कि आपको खुश करूं, परंतु आप सब खुश होते ही कहां हैं।"

"झूठ मत कहो।"

"मेरी सच बात को भी झूठ मानोगे तो...।"

"सांभरा की नगरी में क्या है?" मोना चौधरी ने पूछा।

"नगरी है।"

"वहां क्या होता है?"

"ये नहीं बताऊंगा। तुम क्या सोचती हो कि मुझे बातों में लगा के सच निकलवा लोगी।"

तभी पीछे से बांके ने बांदा को जोरों से घूंसा मारा।

बांदा की परछाई वहां से छिन्न-भिन्न हो गई, जहां बांके ने घूंसा मारा था। हाथ परछाई को पार करके आगे निकल गया। बांके के चेहरे पर गुस्सा था। वार खाली जाते पाकर, बांके ने अपना हाथ वापस खींचा तो पल-भर में ही, बांदा की परछाई का पहले की तरह पूर्ण रूप नजर आने लगा।

"हम इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" तवेरा ने कहा—"क्योंकि ये परछाई के रूप में हमारे सामने है।"

"शरीरों के साथ सामणो होता तो अंम इसो को 'वड' देता।" बांकेलाल राठौर गुर्राया।

बांदा हंस पड़ा।

"महाकाली को पता था कि ऐसा होगा, तभी तो उसने परछाई के रूप में तुम लोगों के सामने जाने को कहा।"

"तुम्हें लगता नहीं कि तुम घटिया हो।" पारसनाथ बोला।

"क्यों?"

"मुसीबत में पड़े लोगों के सामने और मुसीबतें डाल रहे हो।"

"मैं तुम लोगों को फौरन मुसीबत से छुटकारा दिला सकता हूं।"

"वो कैसे?"

"बस, एक बार कह दो कि महाकाली की मायावी पहाड़ी से बाहर निकलना चाहते हो।"

"और तुम हमें बाहर निकाल दोगे।"

"फौरन निकाल दूंगा। अच्छा रास्ता यही है कि यहां से वापस चले जाओ।"

"यही तो महाकाली चाहती है।"

"महाकाली तो बहुत कुछ चाहती है। परंतु इस वक्त तुम अपनी बात करो। निकालूं बाहर?"

"हम जथूरा को आजाद कराने आए हैं यहां।"

"ये काम तुम लोगों के बस का नहीं।"

"तुम हमें जथूरा तक पहुंचा दो। बाकी काम हम पूरा कर लेंगे।" पारसनाथ ने कहा।

तभी महाजन बोला।

"तुमने कहा कि जगमोहन-सोहनलाल उस जगह पर जा पहुंचे हैं, जहां जथूरा कैद है।"

"कहा तो?"

"वो वहां कैसे पहुंच गए?"

"किस्मत के धनी थे कि पहुंच गए। बूंदी ने तो बहुत चेष्टा की कि वो रास्ता भटक जाएं।"

"इत्तफाक से पहुंचे?"

"यही समझो।"

"तुम्हें अब चले जाना चाहिए यहां से।"

"मैं जानता हूं मेरी कोई इज्जत नहीं है। क्योंकि हर जगह पर बिन बुलाए ही पहुंच जाता हूं।"

"तंम तो नम्बरी बेईज्जतो हौवे। थारी तो मूंछों भी न हौवे।"

"मेरे खयाल में मुझे चुपचाप तुम लोगों के साथ चलते रहना चाहिए।"

"तुम चले क्यों नहीं जाते?"

"क्योंकि तुम सब को समझाने की जरूरत पड़ेगी अभी। वरना बहुत बड़ी गलती कर दोगे।"

"कैसी गलती?"

"जब समझाऊंगा तो, समझ जाओगे।"

"ये हमें गलत रास्ता ही, गलत बात ही समझाएगा।" मोना चौधरी सख्त स्वर में कह उठी।

जवाब में बांदा मुस्कराता रहा। कहा कुछ नहीं।

▭ ▭

लम्बे वक्त के बाद उन सबका सफर खत्म हुआ।

जंगल से वे बाहर निकल आए। सामने ही चारदीवारी जाती दिखाई दी, जो कि दस फीट ऊंची थी। कुछ दूर चारदीवारी में लगा बीस फुट बड़ा लकड़ी का फाटक लगा नजर आया।

ये नजारा सब देख रहे थे।

"बांदो। ये का हौवे?"

"चारदीवारी के भीतर सांभरा की नगरी है।" बांदा ने बताया।

"वो इत्तो बड़ो दरवाजो?"

"नगरी के भीतर प्रवेश करने का दरवाजा है।"

"चल्लो, अंम नगरो के भीतरो जायो।" बांकेलाल राठौर ऊंचे स्वर में बोला।

"वहां लफड़ा होईला बाप।"

"थारे को कैसो पतो कि वां पे लफड़ो हौवे?"

"आपुन का दिल कहेला बाप।"

"थारा दिल जरूरतों से ज्यादो बोल्लो हो।"

देवराज चौहान ने बांदा को देखा तो बांदा ने मुंह फेर लिया।

"इससे कुछ मत पूछो।" मोना चौधरी कह उठी।

फिर सब चारदीवारी में लगे, लकड़ी के फाटक की तरफ बढ़ गए।

तवेरा को चुप-चुप पाकर रातुला उसके पास आकर बोला।

"तुम क्यों खामोश हो तवेरा?"

"रातुला, मैं नीलकंठ के बारे में सोच रही हूं।" तवेरा सोच-भरे स्वर में कह उठी।

"क्या?"

"वो अचानक खामोश क्यों हो गया? वो तो मिन्नो का साथ देने का वादा करने को बोला, परंतु जब प्रणाम सिंह ने एक-एक करके सबको उस गहरी जगह में फेंका तो, नीलकंठ ने मिन्नो को बचाया क्यों नहीं?"

"तेरे को इसमें रहस्य लगता है?"

"रहस्य तो अवश्य है।"

"वो क्या?"

"मैं नहीं समझ पा रही। नीलकंठ बिना वजह तो पीछे हटा नहीं। अवश्य कोई गहरी बात है। जो कि पूछने पर भी नीलकंठ ने बताया नहीं।" तवेरा ने कहते हुए रातुला पर निगाह मारी।

रातुला ने फिर कुछ नहीं कहा।

मखानी चलते समय रह-रहकर नाराजगी-भरी निगाहों से कमला रानी को देख लेता था।

कमला रानी को उसकी नाराजगी का एहसास था तभी तो वो मखानी की तरफ देख ही नहीं रही थी।

वो सब चारदीवारी में लगे लकड़ी के फाटक पर जा पहुंचे।

वहां पीले कपड़ों में भाला थामे दो पहरेदार खड़े थे। दरवाजा बंद था।

"भीतरो को चल्लो। ठंडा पाणी तो पीनो के मिलो हो।" बांकेलाल राठौर कहता हुआ दरवाजे की तरफ बैठा।

तभी बांदा कह उठा।

"ये गलती मत करना।"

बांके ठिठका।

सबकी निगाह बांदा की तरफ गई।

"थारे को का दर्द हौवे, म्हारे भीतरो जाणें से?"

"अंदर तुम सबके लिए भारी खतरा है।"

"कैसे?" महाजन ने पूछा।

"ये पहरेदार तो तुम लोगों को भीतर जाने देंगे, परंतु सांभरा के लोग तुम सबको पकड़कर बंदी बना लेंगे। सांभरा जाति की रीति है कि जो भी बाहरी व्यक्ति नगरी में प्रवेश करता है, उसे सांभरा का एक काम पूरा करना पड़ता है। जो उनके कहे काम को पूरा नहीं कर पाता, उसे वे जान से मार देते हैं।"

"थारी बातों का भरोसो म्हारे को न हौवे।"

"ये बात मैं एकदम सच कह रहा हूं।" बांदा ने कहा।

"हम सांभरा की नगरी में जाएंगे।" मोना चौधरी कह उठी।

नगीना ने देवराज चौहान से पूछा।

"आप क्या कहते हैं?"

"मुझे किसी भी बात पर कोई एतराज नहीं। क्योंकि हम दिशा भटके हुए हैं। हमें नहीं मालूम कि जथूरा कहां पर है और हमें किस तरफ जाना है। रास्ता बताने वाला भी कोई नहीं है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"शायद इस नगरी से हमें पता चल सके कि जथूरा कहां पर है। क्या पता वो इसी नगरी में हो।" नगीना बोली।

तभी रातुला पास आकर बोला।

"क्या तुम नगरी के भीतर जाने को तैयार हो?"

"हां।"

बांदा पुनः कह उठा।

"इस नगरी के भीतर प्रवेश मत करना, वरना वो लोग तुम सबको मार देंगे।"

"बहुत चिंता हो रही है हमारी?" देवराज चौहान मुस्कराया।

"हां, क्योंकि तुम लोगों की शिकायत है, मैं तुम्हारे बारे में नहीं सोचता। अब सोच रहा हूं। मैं तो...।"

"तुम कभी भी हमारे बारे में, सही नहीं सोच सकते।"

"ऐसा न कहो।"

"तुम हमें हमेशा सही रास्ते पर बढ़ने से रोकोगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो नहीं मानोगे?"

"नहीं।"

"ठीक है, जाओ नगरी के भीतर। मैं भी तो यही चाहता हूं कि तुम सब नगरी के भीतर जाओ।"

"यही चाहते हो तो फिर रोक क्यों रहे थे?"

"ताकि तुम पक्का इरादा बना सको, नगरी के भीतर जाने का।" बांदा मुस्करा पड़ा।

"यो बोत बड़ो हरामी होवे।"

"हमें इसकी बात सुननी ही नहीं चाहिए।" पारसनाथ कह उठा।

तभी मोना चौधरी आगे बढ़ी और फाटक पर खड़े पहरेदारों के पास जा पहुंची।

"ये किसकी नगरी है?"

"सांभरा की।" एक पहरेदार ने कहा।

"दरवाजा खोलो, हमें भीतर जाना है।" मोना चौधरी ने कहा।

अगले ही पल पहरेदारों ने दरवाजे के एक पल्ले को धक्का देकर खोला।

भीतर आते-जाते लोग सबको दिखे।

"आप लोग भीतर जाइए।"

मोना चौधरी खुले दरवाजे की तरफ बढ़ गई।

तभी बांदा का स्वर सुनाई दिया।

"अभी भी वक्त है, रुक जाओ।"

"तुम तो घनचक्कर होईला बाप।" रुस्तम राव कह उठा—"कभी रुकने को बोईला तो कभी चलने को बोईला।"

"मैं तो इसलिए रोक रहा हूं कि तुम लोग जिद में आकर भीतर जाओ।" बांदा मुस्करा पड़ा।

"तंम पागलों होवे। थारा बापो भी पागलो होवे जो साड़ी पहनो के दुल्हन बनो हो।"

बांदा हंस पड़ा।

"हंसो बोत तंम। दांतो साफ करो ना।"

एक-एक करके सब दरवाजे से नगरी के भीतर प्रवेश कर गए।

पहरेदार धकेलकर ऊंचा दरवाजा बंद करने लगा।

बांदा मुस्कराता हुआ बाहर ही खड़ा रहा।

▭ ▭
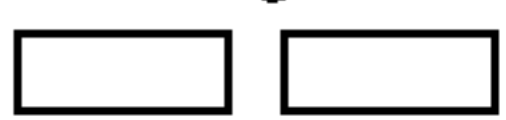
नगरी में पर्याप्त चहल-पहल थी। रोज की तरह सारे कार्य हो रहे थे।

देवराज चौहान, नगीना, मोना चौधरी, बांके, रुस्तम, पारसनाथ, महाजन, मखानी, कमला रानी, तवेरा और रातुला सांभरा नगरी के लोगों में जा पहुंचे थे। हर कोई उन्हें उत्सुकता-भरी नजरों से देख रहा था। क्योंकि वे सब नगरी के लोगों से जुदा लोग थे। अजनबी थे। एक छोटे-से मकान के दरवाजे पर खड़ी महिला से बांकेलाल राठौर बोला।

"बहणो म्हारे को ठंडो पाणी पिलायो जरो।"

"अभी लाई।" कहकर वो भीतर चली गई।

बाकी सब ठिठके।

"ये साधारण, किंतु साफ-सुथरी नगरी है।" तवेरा ने कहा।

"महाकाली की माया है ये।" रातुला बोला।

"परंतु यहां हम करें क्या रातुला भैया।" नगीना बोली।

"तुम सबकी तरह हम भी यहां पहली बार ही आए हैं।" रातुला ने कहा—"देवा-मिन्नो से पूछो।"

"अभी तक महाकाली ने हमारे सामने खास खतरनाक हालात पैदा नहीं किए।" तवेरा ने कहा।

"हम तो खतरों में फंसे-फंसे ही यहां पहुंचे हैं।" महाजन कह उठा।

"अभी तुम लोग महाकाली को जानते नहीं।" तवेरा कह उठी—"सच बात तो ये है कि अभी तक उसने अपना असली रूप दिखाया ही नहीं। लेकिन कभी भी हमें उसकी भयंकर चालों से सामना करना पड़ सकता है।"

"थारो मतलबो कि मुसीबतों अम्भी शुरू हौवो?"

"कुछ भी हो सकता है।"

तभी औरत जग जैसे बर्तन में पानी ले आई।

बांके ने हाथ से पानी पिया कि मखानी भी पास आ पहुंचा।

"मैं भी पिऊंगा।"

मखानी को भी औरत ने पानी पिलाया।

पानी पीने के बाद मखानी औरत को देखकर मुस्कराया।

"तुम कितनी अच्छी हो।"

"क्या बोला।" गुस्से में आ गई औरत ने पानी का बर्तन मखानी पर दे मारा।

मखानी बर्तन से बाल-बाल बचा और तेजी से आगे बढ़ गया।

सब चल पड़े।

कमला रानी मखानी के पास पहुंची और कह उठी।

"क्या कहा था तूने औरत से?"

"कुछ नहीं।" मुंह फुलाए मखानी बोला।

"कुछ मांगा होगा उससे।"

"क्या?"

"वो ही जो तू मेरे से मांगता है।"

"वो नहीं मांगा।"

"तो?"

"वो पागल थी। अपनी तारीफ नहीं सुन सकी। मैंने तो उसकी तारीफ की थी।"

"तूने सोचा कि तारीफ करेगा तो वो अपना सामान तेरे को दे देगी।"

"मैंने ऐसा नहीं सोचा। मुझे तो हर औरत खूबसूरत लगती है। तारीफ कर देता हूं। तुझे क्या?"

"मखानी दिल छोटा मत कर।" कमला रानी ने प्यार से कहा।

मखानी ने मुंह फुलाए रखा।

"मौका मिलते ही मैं तेरी सारी शिकायत दूर कर दूंगी।"

"तू अपनी बात पर खरी नहीं उतरती।"

"मौका मिलने दे। फिर तू एकदम खरी-खरी देखेगा मुझे।"

"सच कह रही है?"

"तेरी कमला रानी ने कभी झूठ बोला है क्या। याद कर महल में हम कितनी बार स्नानघर की तरफ गए थे।"

मखानी मुस्करा पड़ा।

"अंडा संभाल के रखा है न?"

"हां, वो तो एकदम...।"

"ठीक है, ठीक है। संभाल के रख उसे। मैं फोडूंगी जल्दी ही उसे।"

मखानी के लिए तो इतना ही काफी था। उसकी सब शिकायतें दूर हो गईं।

वो सब वहां के लोगों, वहां की जगहों को देखते आगे बढ़ रहे थे कि कानों में घोड़ों की टापों की आवाजें पड़ते ही उनके कदम ठिठक गए। वो सब पीछे को पलटे।

पीले कपड़ों में आठ-दस घुड़सवार उनके पास आ पहुंचे। देखते-ही-देखते वे घोड़ों का घेरा बनाकर उनके गिर्द खड़े हुए और एक रोबीले स्वर में कह उठा।

"हमें अपनी नगरी में अजनबियों का आना पसंद नहीं।"

"हम यहां जथूरा की तलाश में आए हैं।"

"जथूरा?" वो घुड़सवार बोला—"उसे तो महाकाली ने कैद कर रखा है।"

"हम जथूरा को आजाद कराने आए हैं।"

"जथूरा की कैद ने तो हमारी नगरी की किस्मत बदल दी। वो आजाद हो जाए तो, हमें खुशी होगी।"

"तुम्हें मालूम है कि जथूरा कहां पर कैद है?"

"नहीं। इस बारे में हमें कुछ नहीं मालूम।"

तभी मोना चौधरी बोली।

"तुमने कहा कि जथूरा की कैद ने इस नगरी की किस्मत बदल दी। इसका क्या मतलब हुआ?"

"बांबा इस बारे में तुम्हें बताएगा।"

"बांबा कौन?"

"नगरी के मालिक सांभरा का सबसे विश्वसनीय सेवक। वो ही पचास बरसों से नगरी को चला रहा है।"

"सांभरा कहां गया?"

"बांबा के पास चलो। सब पता चल जाएगा। सांभरा की नगरी का नियम है कि बाहरी व्यक्ति जब नगरी में आता है तो उससे नगरी का कोई काम कराया जाता है। उसी नियम के मुताबिक तुम सबको भी नगरी का एक काम पूरा करना होगा। जो काम को पूरा न कर सकेगा, उसकी जान ले ली जाएगी। चलो हमारे साथ बांबा के पास।"

घोड़ों के घेरे में वो सैनिक सबको लेकर एक दिशा में चल पड़े।

"छोरे।"

"बोल बाप।"

"इस बारो तो बांदो सच्चो बात ही कहो हो। वो ही बातो इधर यो बोल्लो हो।"

"बांदा बोत हरामी होईला।"

"उसो का बापो तो औरो भी हरामो हौवे। दुल्हन बनो के बैठो हो कि शायदो गोटी फिट हो जावो।" बांकेलाल राठौर ने मुंह बनाकर कहा—"वो तो अंम बचो के आ गयो, नेई तो जाणो का हो जायो।"

▭ ▭

बांबा।

छः फीट का स्वस्थ, सेहतमंद व्यक्ति था। वो एक महल में मिला। सैनिक उन सबको बांबा के पास छोड़कर चले गए थे। इस वक्त वे सब महल के आम हॉल में मौजूद थे। आठ सैनिक पहरे पर, या सेवा के लिए पहले ही मौजूद थे। बांबा सबको देखता कह उठा।

"न तो तुम लोग मेरे मेहमान हो और न ही दुश्मन। नियम के मुताबिक तुम लोगों को, नगरी में प्रवेश करने की एवज में हमारा एक काम पूरा करना होगा। काम पूरा नहीं किया तो मार दिए जाओगे। कर दिया तो नगरी में रहने की जगह मिल जाएगी।"

"हम यहां रहने नहीं आए।" नगीना बोली।

"तो?"

"जथूरा को कैद से आजाद कराने आए हैं।"

"बेशक तुम लोग अच्छा काम करने आए हो, परंतु हमारी नगरी के नियम तो पूरे करने ही होंगे।"

"तुम जानते हो कि जथूरा कहां पर कैद है?"

"इस बारे में हमारी नगरी में किसी को कोई ज्ञान नहीं। परंतु जथूरा को, जब महाकाली ने कैद किया तो हमारी नगरी का मालिक सांभरा नाराज होकर सामने की पहाड़ी पर चला गया। पचास बरस हो गए। परंतु सांभरा वापस नहीं लौटा। उसने पहाड़ी पर ऐसी रोक लगा रखी है कि, नगरी का कोई भी आदमी पहाड़ी चढ़कर उस तरफ नहीं पहुंच सकता। जबकि हम चाहते हैं कि सांभरा वापस आए और अपनी नगरी संभाले।" बांबा कह रहा था—"नगरी में जब भी किसी बाहरी व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया तो उसे एक ही काम सौंपा कि वो पहाड़ी पर जाए और सांभरा को समझाकर वापस नगरी में ले आए। अभी तक पच्चीस से ऊपर लोग सांभरा को समझाकर वापस लाने के लिए पहाड़ी पर जा चुके हैं लेकिन सांभरा का लौटना तो दूर, अभी तक वो भी वापस नहीं लौटे जो उसे बुलाने गए थे। अब मैं तुम लोगों को भी सांभरा को नगरी में लाने का काम सौंपता हूं। तुम सब पहाड़ पर जाओ और सांभरा को समझाकर वापस ले आओ। अगर ये काम करने को तैयार नहीं हो तो कह दो, ताकि नगरी में प्रवेश करने की सजा के तौर पर तुम्हारी गर्दन अलग कर दी जाए।"

सब एक-दूसरे को देखने लगे।

बांबा सख्त किस्म का, अपनी बात पूरी करने वाला इंसान लगा था उन्हें।

बांकेलाल राठौर कह उठा।

"म्हारी गर्दनो काये को 'वडो' हो। अंम थारे सांभरा को गोद में उठा के लायो पहाड़ो से।"

"सब तैयार हैं?" बांबा ने ऊंचे स्वर में पूछा।

"मन्ने कै दयो तो, एको ही बातो हौवे। सबो तैयार हौवो। म्हारे को बोल्लो, पहाड़ किधरो होवे?"

बांबा वहां खड़े सैनिकों से बोला।

"इन्हें ले जाओ और पहाड़ के पास ले जाकर छोड़ दो।"

"खाणे-पीणो को कुछो न दयो भायो?"

"सांभरा को लेकर आओ। तब तक तुम सबके लिए खाना तैयार हो जाएगा।"

"म्हारी खातिर हलवाई बिठायो हो।" बांकेलाल राठौर कह उठा।

▭ ▭

वे सब पहाड़ी के नीचे खड़े थे।

बांबा का सेवक उन्हें वहां छोड़कर चला गया था।

पहाड़ी काफी ऊंची थी।

तेज, कड़कती धूप थी। ऐसे में पहाड़ी पर चढ़ना किसी मुसीबत से कम नहीं था। शरीरों पर पसीने की लकीरें बह रही थीं। यूं ही बुरा हाल हो रहा था।

"खाणो-पीणो भी न दयो हो बांबो ने और पहाड़ो पर चढ़ने को बोल दयो।"

"सच में इतनी गर्मी में पहाड़ी पर चढ़ना कठिन काम है।" महाजन कह उठा।

"जाना तो पड़ेगा ही, वरना बांबा हमारी जानें ले लेगा।" पारसनाथ ने कहा।

"आओ। चढ़ाई शुरू करें।" देवराज चौहान ने कहा और आगे बढ़ गया।

सब उसके पीछे चल पड़े।

फौरन ही वे पहाड़ी पर चढ़ने लगे। पहाड़ तप रहा था।

"छोरे।" बांके ने कहा—"तंम म्हारे पीछे कू रहो।"

"क्यों बाप?"

"अभी पहाड़ से नीचो गिरो तो तंम म्हारे को थाम लयो।"

"और आपुन को कौन थामेला बाप।"

"यो बात भी तन्ने ठीको बोल्लो हो। तंम तो म्हारे साथ पीछो को लुढ़को जायो।"

पहाड़ पर चढ़ते हुए नगीना, देवराज चौहान के पास पहुंचकर कह उठी।

"यहां पर हमारे साथ क्या हो रहा है, बताएंगे आप?"

"क्या पूछना चाहती हो?" देवराज चौहान बोला।

"जब से हमने महाकाली की मायावी पहाड़ी में प्रवेश किया है, तब से हमें चैन नहीं मिल रहा। हमारे साथ कुछ-न-कुछ ऐसा हो रहा है कि अपने इरादों को छोड़कर हम फालतू के कामों में व्यस्त होते जा रहे हैं।" नगीना ने कहा।

"हां, हर समय महाकाली हमें उलझाए हुए है।"

"अगर हमारे साथ यही सब होता रहा तो हम जथूरा को कैसे तलाश कर पाएंगे।"

"तुम्हारी आशंका सही है। इन कामों में उलझकर हमारा वक्त खराब हो रहा है।"

"हम जितना सोचते हैं कि इन बातों में नहीं उलझेंगे, उतना ही उलझ जाते हैं।"

"महाकाली ने अपनी गोटियां इस तरह फैला रखी हैं कि एक गोटी पर पांव पड़ता है तो दूसरी गोटी तक पहुंच जाते हैं, इसी प्रकार तीसरी गोटी पर। वो हमें सोचने का मौका नहीं दे रही कि हमारे साथ क्या हो रहा है।" देवराज चौहान ने कहा।

"हम करें तो क्या करें। महाकाली तो हमें रास्ते से भटका रही है।"

"अभी इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। इस वक्त तो सांभरा नाम की समस्या हमारे सामने है।"

"उसे नगरी में लाना होगा तभी बच सकेंगे।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"सांभरा मान जाएगा, नगरी में आने को।"

"नगरी में उसे लाना ही पड़ेगा। बेशक कंधों पर उठाकर ही उसे क्यों न लाना पड़े।"

"ये क्या बात हुई?"

"वो चलने को नहीं मानेगा तो ऐसा करना ही पड़ेगा।"

तपती गर्मी में गर्म पहाड़ पर चढ़ने में उन्हें भारी परेशानी आ रही थी। कहीं-कहीं पर तो रास्ता इतना सीधा था कि नीचे गिरने का खतरा लगा रहता।

मोना चौधरी और तवेरा के खूबसूरत चेहरे तपकर सुर्ख-से हो रहे थे।

सबकी सांसें उखड़-सी रही थीं। प्यास से गला सूख रहा था।

महाजन ने पारसनाथ से कहा।

"हम पूर्वजन्म में प्रवेश करने से बचना चाहते थे, परंतु बच न सके।"

"पोतेबाबा ने हमें घेरा ही इस प्रकार कि हम अपने बचाव में कुछ न कर सके।" पारसनाथ ने गहरी सांस ली।

"इन झंझटों से जाने कब मुक्ति मिलेगी। तुम्हारा क्या खयाल है कि हम जथूरा तक पहुंच जाएंगे।"

"जो हालात हमारे सामने आ रहे हैं, उन्हें सामने रखें तो यही लगता है कि हम जथूरा तक नहीं पहुंच सकते।"

"महाकाली पर्दे के पीछे रहकर हमें नचा रही है।"

"ये महाकाली की मायावी पहाड़ी है। शायद यहां हम अपनी मर्जी नहीं चला सकते।"

"फिर तो हमारा आना बेकार ही हुआ। शायद हमें अपनी जान बचाने के लाले पड़ जाएं।"

पारसनाथ गहरी सांस लेकर रह गया।

मखानी पहाड़ पर चढ़ते-चढ़ते कमला रानी के पास पहुंचा। दोनों के चेहरे सुर्ख-से हो रहे थे।

"थक गई कमला रानी।" मखानी बोला।

"हां कहूंगी तो क्या तू मुझे उठा लेगा?" कमला रानी ने कहा।

"तू हर समय सड़ी क्यों रहती है?"

"तू बातें ही ऐसी करता है।"

"मैंने तो प्यार से पूछा था।"

"मैं भी प्यार से ही जवाब दे रही हूं। तेरे को सब कुछ सड़ा-सड़ा सा लगता है तो मैं क्या करूं?"

"जानती है, जब भी तेरे पास आता हूं मेरा अंडा मेरे को चैन नहीं लेने देता।"

"जानती हूं।"

"जानती है—कैसे?"

"तेरे को तो उंगली थमा दूं तो तेरे अंडे का आमलेट बन जाता है। आगे की तो बात ही अलग है।"

"ऐ कमला रानी।"

"बोल—बोल, तेरे को ही तो सुन रही हूं मैं।"

"एक बार गले तो लग जा।"

"क्यों?"

"अंडे को कुछ आराम मिलेगा।"

"मैं क्या मशीन हूं तेरे अंडे को आराम देने के लिए। पहाड़ पर चढ़ रहा है और बात अंडे की कर रहा है। ये तेरा हाल है।"

"समझा कर।"

"सब समझती हूं मैं। तेरी तो नस-नस पहचानती हूं। तेरे को अंडे की देखभाल के अलावा, दूसरा कोई काम नहीं।"

"ये काम क्या कम है।"

"कमीना, साला।" बड़बड़ा उठी कमला रानी।

"क्या कहा?"

"कमीना, साला।"

"कह ले।" मखानी दांत फाड़कर मुस्कराया—"तेरी बात का बुरा थोड़े न मानूंगा।"

"सब अंडे का कमाल है, जो तू इतने मीठे बोल बोल रहा है।"

पहाड़ चढ़ते-चढ़ते शाम ढलने लगी थी।

सूर्य के सरक जाने से उन्हें बहुत राहत मिली थी। पहाड़ की चोटी अब ज्यादा दूर नहीं थी। वहां से नगरी की तरफ देखने पर, नगरी बहुत छोटी सी नजर आ रही थी। नगरी में रोशनियां होती, नजर आने लगी थीं।

"पौंच गयो ईब तो।"

"पक्का बाप। आपुन की तो जान खिसकेला।"

"तंम तो जवानो होवे छोरे।"

"तुम क्या बुढ़ेला होईला बाप।"

"अंम भी जवानो हौवो। म्हारी मूंछ न देखो हो।"

सबकी हालात थकान-प्यास की वजह से बुरी हो रही थी।

पसीनों से भरे हुए थे वो।

अगर चोटी अब पास में न होती तो, थकान की वजह से उन्होंने चढ़ना बंद कर देना था। परंतु चोटी के पास में होने की वजह से थकान-भरे शरीरों में उत्साह भर आया था और पहाड़ पर चढ़ना उन्होंने नहीं छोड़ा था।

आखिर वो वक्त भी आया, जब वे पहाड़ के ऊपर जा पहुंचे।

अभी दिन की रोशनी जरा-जरा बाकी थी।

पहाड़ का ऊपरी हिस्सा उन्हें समतल दिखा और वहां पेड़ खड़े भी दिखे। दूर एक जगह रोशनी होती दिखी। सब नीचे बैठे गहरी-गहरी सांसें ले रहे थे कि तभी सामने से एक आदमी आता दिखा।

"कोई आ रहा है।" मोना चौधरी बोली।

"सांभरा होगा।" तवेरा ने कहा।

सबकी निगाह करीब आते उस व्यक्ति पर जा टिकी थी।

"छोरे तंम जाणों हो इसो को?"

"आराम करने दे बाप।"

मखानी ने मुस्कराकर प्यार-भरी निगाहों से कमला रानी को देखा।

कमला रानी ने मुंह बनाकर दूसरी तरफ देखा।

'साली नखरे बहुत लगाती है।' मखानी बड़बड़ाया।

तभी वो व्यक्ति पास पहुंचा और मधुर स्वर में कह उठा।

"सांभरा की तरफ से मैं आप सबका पहाड़ी पर स्वागत करता हूं।"

"तुम सांभरा नहीं हो?" पारसनाथ बोला।

"नहीं। मैं तो सांभरा का सेवक हूं।"

"सांभरा अपने साथ सेवक भी पहाड़ पर ले आया था?"

"नहीं। आया तो वो अकेला था। मैं और मेरे जैसे कुछ लोग वो

हैं, जो अंजाने में नगरी में आ गए थे। तो बांबा ने हमें सांभरा को पहाड़ से नीचे लाने का काम दिया। हम पहाड़ पर पहुंचे और सांभरा की सेवा में लग गए।"

"सेवा में क्यों लग गए?"

"वो तपस्वी और प्रभावी इंसान है। दूसरों को राह पर लगाना उसे आता है।"

"तुम्हारा मतलब कि वो जादू-टोना जानता है?"

"मैंने ये नहीं कहा। उसके पास शक्तियां हैं। ताकतें हैं। जिनसे वो मनचाहा काम करा लेता है। वो महाकाली का सच्चा सेवक है।"

"हमने तो सुना कि सांभरा महाकाली की हरकत से नाराज होकर, पहाड़ पर आ गया था।"

"इस बारे में सांभरा ही कुछ कहे तो बेहतर होगा। मैं तो आप लोगों को लेने आया हूं।"

"कहां?"

"सांभरा के पास तो चलेंगे आप?"

देवराज चौहान की निगाह दूर होती रोशनी की तरफ उठी।

"हां, हम सांभरा से ही मिलने आए हैं।" मोना चौधरी ने कहा।

"तो चलिए मेरे साथ।"

थकान से भरे सब वहीं बैठे रहे।

"वहां पर थकान उतारने के लिए, ठंडे पानी का तालाब मिलेगा। उसके बाद गर्मा-गर्म खाना... ।"

"खाना...पहाड़ पर?" मोना चौधरी बोली।

"जी हां। सांभरा को आप लोगों के आने की खबर थी। उसने पहले ही हमें खाना तैयार करने को कह दिया था। सांभरा को जो भी जानना होता है, अपनी ताकत के सहारे जान लेता है। उसकी नगरी में होने वाली हर बात की खबर उसे रहती है।"

"चलो उठो।" मोना चौधरी उठते हुए बोली—"हमें फौरन सांभरा के पास चलना चाहिए।"

▭ ▭

उस व्यक्ति के साथ वे सब उस रोशनी के पास जा पहुंचे।

वहां पांच-छः व्यक्ति और भी दिखे, जो कि अपने कामों में व्यस्त थे। चार झोंपड़े वहां बने हुए थे, जिनमें रोशनियां हो रही थीं। प्रकाश फैलाने के लिए मशालें, पास के पेड़ों में फंसा रखी थीं।

सबने वहां की जगह का जायजा लिया।

"सांभरा कहां है?" रातुला ने पूछा।

"वो अपने झोंपड़े में है। कुछ देर बाद वे खाने के लिए बाहर आएंगे, तब आप सबकी मुलाकात उनसे हो जाएगी। तब तक आप लोग तालाब पर चलकर नहा लीजिए। ठंडक मिलेगी नहाने से।"

"चलो।"

वो व्यक्ति कुछ दूर एक छोटे-से तालाब पर पहुंचा।

चांद की रोशनी में पानी चांदी की तरह चमकता लग रहा था, खासतौर से तब जब चांद की परछाई तालाब से नजर आती। पहाड़ी पर इतने ऊपर तालाब पाकर सबको सकून मिला।

"तंम इधरो आयो।" बांके ने उस व्यक्ति को बुलाया।

वो फौरन पास पहुंचकर बोला।

"कहिए।"

"म्हारे को यो समझायो कि पहाड़ो पर तालाबो कैसो बन गयो?" बांके ने पूछा।

"सांभरा ने अपनी शक्तियों से ये तालाब बनाया है।"

"शक्तियों से?"

"हां। सांभरा ने वो विद्या ग्रहण कर रखी है, जिससे उसे शक्तियां हासिल हैं। महाकाली का आशीर्वाद भी है सांभरा पर। महाकाली ने भी कई शक्तियां सांभरा को वरदान के रूप में दी हैं।"

"मन्ने तो सुनो हो कि जबो महाकालो ने जथूरा को कैदो के लियो, सांभरो तभो से ही नाराज हो के पहाड़ो पे आ गयो।"

"आपने ठीक सुना है।"

"यो मामलो म्हारे को समझ में न आयो। तंम जरो खुलो के समझायो।"

"इस बारे में तो आप सांभरा से ही बात करें।"

"तंम न बतायो?"

"मुझे ज्यादा नहीं पता। वैसे भी मेरी जिम्मेवारी इस समय एक सेवक जैसी है।"

"ओ के। ओ के। तंम म्हारी सेवो करो। इत्तो ही बोत हौवे।"

वो सबसे कह उठा।

"मेरे खयाल में पहले तालाब में औरतों को नहाने दिया जाए तो बेहतर होगा। आप सब मर्द पीठ मोड़कर इधर बैठ जाइए।"

"तंम का करो हो?"

"मैं भी पीठ मोड़कर आप सब के साथ ही बैठूंगा।"

"फिरो ठोको हौवे।"

नहाने के बाद सबने राहत महसूस की। थकान कुछ कम हुई।

वो व्यक्ति उन सबको वापस झोंपड़ों के पास ले आया। एक जलती मशाल के नीचे पेड़ों के बड़े-बड़े पत्ते बिछाकर बैठने के लिए बिछौना बना रखा था। उस व्यक्ति ने सबको वहीं बैठने को कहा और वहां मौजूद अन्यों को खाना परोसने को कहा।

"सांभरा कहां है?" मोना चौधरी ने कहा।

"उन्हें अभी आपके आने की खबर भिजवाता हूं।"

"अभी तक खबर भी नहीं दी उसे।" नगीना ने कहा।

"सांभरा का आदेश था कि जब नहाकर आप सब खाने के लिए बैठें तो उन्हें खबर दी जाए।"

वो व्यक्ति एक झोंपड़े की तरफ चला गया।

"कैसा अजीब है सांभरा। इतनी बड़ी नगरी का मालिक होते हुए इस तरह पहाड़ पर रह रहा है।" महाजन ने कहा।

"ऐसा करने की कोई खास वजह होगी।" पारसनाथ ने कहा।

"जो वजहो भी हौवे, म्हारे को तो पहाड़ पर गर्मा-गर्म खाणो मिल्लो हो।"

"भूख लगेला है बाप।"

सबको ही भूख लग रही थी।

"वापसो परो भी म्हारे को गर्म-गर्म खाणों मिल्लो हो। वो बांबो म्हारे वास्ते उधरो हलवाई बैठायो हो।"

"तेरे को खाने का चस्का लगेला बाप।"

"भूखो बोत लगो हो म्हारे पेटो में।"

मखानी और कमला रानी पास-पास बैठे थे। या यूं कहें कि जब कमला रानी बैठी, तब मखानी तुरंत उसकी बगल में आ बैठा था कि कोई दूसरा वहां न बैठ जाए। मौका पाकर मखानी प्यार से बोला।

"कमला रानी।"

"क्या है?"

"पहाड़ पर मौसम अच्छा है। ठंडी हवा चल रही है।" मखानी धीमे स्वर में कह उठा।

"तो?"

"मेरा मतलब है कि मौसम भी है, अंधेरा भी है। खाना खा के अंधेरे में चलते हैं। प्यार करेंगे।"

कमला रानी मुस्कराकर मखानी को देखने लगी।

मखानी उसकी मुस्कान पर जैसे नाच उठा।

"गधा है तू।"

"क्या मतलब?"

"जब मौसम भी है, अंधेरा भी है, वक्त भी है तो कहने की क्या जरूरत है।"

"तो क्या करूं?"

"मेरी बांह पकड़कर, मुझे अंधेरे में खींच ले। ये भी तेरे को मैं ही बताऊंगी क्या।"

"आह। तूने तो मेरा दिल खुश कर दिया कमला रानी।" मखानी का चेहरा खुशी से चमक रहा था।

"अंडा कहां है?"

"संभाल के रखा है, तेरी ही कमी है।"

"चिंता मत कर। अब अंडे का आमलेट बना दूंगी। पहले जरा खाना खा लूं।"

"तू कितनी अच्छी है कमला रानी।"

"चुप हो जा। कहीं बातों-बातों में ही तेरा अंडा फूट गया तो, तब आमलेट नहीं बनेगा।"

तभी वो व्यक्ति आता दिखा।

साथ में एक बूढ़ा व्यक्ति था जो कि पतला और लम्बा था। उसके सिर के बाल सफेद और दाढ़ी के बाल भी सफेद ही थे। उसकी कमर बिल्कुल सीधी थी। वो बहुत फुर्तीला था।

वो पास पहुंचकर उनके साथ ही खाने की पंक्ति में बैठता कह उठा।

"मैं सांभरा आप सबका यहां स्वागत करता हूं। मुझे खुशी है कि देवा और मिन्नो यहां आ गए हैं।"

खाना उनके सामने लगना शुरू हो गया था।

"तुम हमें जानते हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"बहुत अच्छी तरह से।"

"तुम्हारी बात से तो ऐसा लगता है कि जैसे तुम हमारे आने का इंतजार कर रहे थे।"

"तुमने ठीक कहा देवा।"

"ये सब क्या हो रहा है, हमें खुलासा करके बताओ। हम यहां जथूरा को कैद से आजाद कराने आए हैं।"

सांभरा खामोश रहा।

"सुना है कि महाकाली ने जब जथूरा को कैद किया तो तुम इस बात से नाराज होकर, नगरी छोड़कर पहाड़ी पर आ गए।"

"ऐसा कुछ नहीं है।" सांभरा ने कहा।

"तुम्हारा सेवक बांबा तो यही कहता है।"

"वो, वो ही बात करेगा, जो उसे मालूम होगी।"

"बांबा ने हमें धमकी देकर भेजा है कि तुम्हें वापस नगरी में लाएं, वरना वो हमारी जान ले लेगा। वो नगरी से भी हमें निकलने नहीं देगा। मजबूरी में उसकी बात मानकर आना पड़ा।"

"बांबा अच्छा सेवक है। वो चाहता है कि मैं वापस नगरी में आ जाऊं।"

"तो तुम जाते क्यों नहीं?"

"आज रात ही मैं अपनी नगरी के लिए रवाना हो जाऊंगा।" सांभरा ने शांत स्वर में कहा।

"आज रात?"

"आज रात ही क्यों?"

"देवा और मिन्नो के यहां आ जाने से मेरा काम समाप्त हो गया, मेरे कष्ट के दिन खत्म हो गए।"

"हम समझे नहीं।"

"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"हमें खाना खाना चाहिए और समझदार लोग खाने के बीच बातें नहीं करते।"

"तुम हमें उलझा रहे हो।"

सांभरा ने खाना खाना शुरू कर दिया।

उसे खामोश पाकर बाकी सब भी खाना खाने लगे।

▭ ▭

खाना खाने के बाद वे सब फुर्सत में आए।

उनकी बातें फिर शुरू हुईं तो सांभरा कह उठा।

"मैं तुम लोगों को बता दूं कि मैं किसी से नाराज होकर पहाड़ी पर नहीं आया। पचास बरसों से मैं यहां रह रहा हूं तो इसमें कोई रहस्य है। महाकाली ने जथूरा को कैद में किया तो महाकाली के सामने नए हालात पैदा हो गए, जब उसने देवा और मिन्नो के नाम का तिलिस्म बांधा, जथूरा की कैद पर। उसी वक्त ही मेरे को नए हालातों का अंदाजा हुआ तो मुझे पहाड़ी पर आना पड़ा।"

"क्यों?"

सांभरा ने अपनी धोती में छिपी चमकती दो गोलियों को निकाला। चंद्रमा की रोशनी जब-जब उन पर पड़ती तो वो गोलियां चमक उठती थीं। सांभरा हाथ में रखी गोलियों को देखता कह उठा।

"इन्हें बचाना था।"

"ये क्या है?"

"ये देवा और मिन्नो के ही रूप हैं। तुम नहीं समझोगे। ये रहस्य

है, जिसे मैं नहीं बता सकता। परंतु वक्त आने पर सब कुछ तुम लोगों को खुद-ब-खुद ही पता चल जाएगा।" सांभरा ने नजरें उठाकर देवराज चौहान और मोना चौधरी को देखा—"मैं अगर नगरी में रहता। वहां के ऐशोआराम लेता रहता तो ये रहस्यमय गोलियां किसी ने चुरा लेनी थीं। इस बात का आभास मुझे मेरी शक्तियों ने करा दिया था। इसलिए मैं पहाड़ी पर आ गया और पहाड़ी पर अपनी ताकतों द्वारा लाइन खींच दी कि नगरी वाले मेरे पास न पहुंच सके। तभी मैं इन्हें सुरक्षित रख सकता था।"

"तुमने कहा कि ये गोलियां देवा-मिन्नो के रूप हैं।" नगीना बोली।

"हां बेला।"

"इस बात को स्पष्ट करो।"

"नहीं कर सकता। अभी कुछ भी बताना ठीक नहीं।"

"तो हमें कैसे मालूम होगा कि तुम क्या सच-झूठ कह रहे हो।"

"इसका जवाब तो आने वाला वक्त देगा। अब मेरी मुसीबतों के दिन खत्म हुए।"

"हमें तुम्हारी कोई बात नहीं समझ आ रही।"

सांभरा ने एक गोली देवराज चौहान की तरफ उछाल दी।

देवराज चौहान ने फौरन गोली को हवा में लपक लिया।

सांभरा ने दूसरी गोली मोना चौधरी की तरफ उछाली।

जिसे मोना चौधरी ने थाम लिया।

"अब मैं मुक्त हुआ।" सांभरा एकाएक मुस्कराकर कह उठा।

"ये...ये कैसी गोलियां हैं? हम इनका क्या करें?" मोना चौधरी ने पूछा।

"पूछने की जरूरत नहीं। आने वाला वक्त, तुम लोगों को हर बात का जवाब दे देगा। इन्हें खोने मत देना।"

"तुम तो हमारे लिए स्वयं ही रहस्य बन गए हो।"

"मैं रहस्य नहीं, मैं तो महाकाली का छोटा-सा सेवक हूं। साधारण-सा हूं।"

"तुम आज रात पहाड़ी से उतरकर नगरी में चले जाओगे?"

"हां। क्योंकि जो जिम्मेवारी मुझे दी गई थी, उससे मैं मुक्त हो गया।"

"किसने दी थी जिम्मेवारी?"

"मैं किसी बात का जवाब नहीं दे सकता। हर बात का जवाब तुम लोगों को भविष्य में से ही मिलेगा।"

"हमने जथूरा को आजाद करवाना है। तुम हमें बता सकते हो कि जथूरा कहां पर कैद है?" देवराज चौहान ने कहा।

"नहीं बता सकता। इस बारे में कुछ भी कहना, मेरे हिस्से में नहीं आता।"

"सांभरो। तंम सीधो हो जायो। म्हारे को क्रोध मत दिलायो।"

"भंवर सिंह।" सांभरा मुस्कराया—"इस जीवन में तुम मजे कर रहे हो।"

"यो का बोल्लो हो छोरे?" बांके हड़बड़ा-सा उठा।

"तुम चुप रहोगे बाप। वो पौंची चीज होईला।"

"हम भी तुम्हारे साथ नगरी में जाएंगे।" पारसनाथ ने कहा।

"नहीं।" सांभरा ने सिर हिलाया—"तुम लोगों को उस तरफ नहीं जाना है। आगे की दिशा में पहाड़ी पर से उतर जाओ। आगे नगरी की बहुत ऊंची दीवार आएगी। मेरी दी गोलियों को दीवार से लगाना तो दीवार तुम लोगों को नगरी से बाहर निकलने का रास्ता दे देगी। याद रहे, ये पहाड़ी तब तक ही है, जब तक मैं पहाड़ी पर मौजूद हूं। मेरे पहाड़ी से जाते ही, ये पहाड़ी गायब हो जाएगी। क्योंकि इस पहाड़ी का निर्माण मेरी मायावी ताकतों ने, मेरे रहने के लिए किया था। इसलिए रात-रात में ही तुम लोगों ने पहाड़ी के दूसरी तरफ उतर जाना है। रुकना नहीं है।"

"हम तो थके हुए हैं।" कमला रानी कह उठी।

"हां-हां।" मखानी ने फौरन सिर हिलाया—"हम रात-भर नींद लेना चाहते हैं।"

सांभरा मुस्कराया और कह उठा।

"मैं जानता हूं तुम दोनों आराम की आड़ में किस फेर में हो।"

मखानी और कमला रानी ने हड़बड़ाकर एक-दूसरे को देखा।

रातुला ने दोनों को देखकर कहा।

"दोनों चुप रहो। किसी को कोई आराम नहीं मिलेगा।"

"तुम हमें पहाड़ी के उस तरफ कहां भेजना चाहते हो?"

"कहीं भी नहीं। मैं चाहता हूं कि तुम लोग मेरी नगरी से बाहर निकल जाओ।"

"जथूरा के बारे में कुछ तो बता दो कि वो कहां है?"

"वक्त बताएगा।" सांभरा उठता हुआ बोला—"अब जाओ यहां से।"

"तुम महाकाली के सेवक हो?" महाजन बोला।

"हां नीलसिंह।"

"तो तुम ये कभी नहीं चाहोगे कि हम जथूरा तक पहुंचें और उसे आजाद करा दें।"

सांभरा मुस्कराया।

"इसकी दी चमकीली गोलियां कोई चाल है हमें भटकाने को।" महाजन बोला—"वो गोलियां फेंक दो।"

"ऐसा अनर्थ मत करना।" सांभरा फौरन बोला—"उन गोलियों की रक्षा करने के लिए तो मैं नगरी की सुविधाएं छोड़कर, पचास बरसों से इस पहाड़ी पर रह रहा हूं। ये मैंने देवा-मिन्नो के हवाले करनी थीं। वो कर दीं। एक बात याद रखना देवा-मिन्नो। इन गोलियों का इस्तेमाल तुम दोनों ही करोगे तो फायदा मिलेगा। नहीं तो फायदा नहीं मिलेगा।"

"कैसा फायदा?"

"ये तो आने वाला वक्त बताएगा।"

"तुम हर बात के जवाब को टाल रहे हो।"

"मुझे जितनी आज्ञा है। उतना ही काम मैं कर रहा हूं। शायद मेरे खामोश रहने में कोई भलाई होगी।"

"किसकी आज्ञा की बात कर रहे हो तुम?"

क्षण-भर चुप रहकर सांभरा बोला।

"महाकाली की आज्ञा।"

"वो तो चाहती नहीं कि हम जथूरा को आजाद कराएं। तुम कहीं चालाकी से हमें उलटे रास्ते पर तो नहीं डाल रहे।"

"मैंने तुम लोगों का स्वागत किया। तुम्हारे साथ बैठकर खाना खाया। क्या उसमें कोई चालाकी दिखाई दी?"

सब खामोश रहे।

"मैं सिर्फ इतना कहूंगा कि मैं कोई चालाकी नहीं कर रहा। जो किया वो सिर्फ सत्य है।" कहने के साथ ही सांभरा पलटा और झोंपड़े की तरफ बढ़ता चला गया।

उसके सेवक भी वहां से चले गए।

सब खामोश से एक-दूसरे को देखने लगे।

"मालूम नहीं कि हमें इसकी बात माननी चाहिए कि नहीं।" तवेरा गम्भीर स्वर में कह उठी।

"मान लो।" पारसनाथ बोला—"हम सांभरा की बात नहीं मानेंगे तो क्या करेंगे?"

सब चुप।

"हमारे पास करने को कुछ नहीं है। कोई रास्ता नहीं है। कोई दिशा नहीं है।"

"सांभरा अगर हमसे कोई चाल चल रहा तो हम... ।"

"वो हरामी बांदो।" बांके का स्वर सबने सुना—"यो हरामी म्हारे को ही पैले काये को दिखो हो।"

सबकी निगाह, उधर घूमी, जिधर बांकेलाल राठौर देख रहा था।
बांदा नजर आया।
वो कुछ अंधेरे में खुले में खड़ा था।
"इधरो आ जावो भूतनो के। म्हारे से शर्मावो मतो। थारे-म्हारे बीचो घूंघटो की क्या जरूरतो हौवे।"
बांदा कुछ कदम आगे आ गया और कह उठा।
"आ गए तुम सांभरा की बातों में।"
"हो गयो शुरो।"
बांदा मुस्कराया।
मशाल की रोशनी में पर्याप्त दिखाई दे रहा था।
"सांभरा तुम लोगों को भटका रहा है और तुमने उसकी बात को सच मान लिया।" बांदा ने कहा।
"मतलब कि तुम सच बोलते हो।" देवराज चौहान ने कहा।
"क्यों नहीं। मैंने कहा था कि सांभरा की नगरी में मत जाओ। वरना फंस जाओगे। फंसे कि नहीं?"
"हमें सांभरा की नगरी में कोई खास समस्या नहीं आई।"
"तंमने म्हारे को समस्याओ में डालो हो। अपणों बापो को दुल्हन बना के बिठा दयो, म्हारे से ब्याहो के वास्ते। अगर टांको भिड़ जातो तो युद्धो हो जातो तबो। म्हारे और थारे बापो में।"
"मेरा बाप शरारती है।"
"मूंछों वालों से शरारतो अच्छी न हौवो।"
"सांभरा तुम सबको गलत रास्ते पर डाल रहा है।"
"सही रास्ता क्या है?" रातुला ने पूछा।
"वापस सांभरा की बस्ती में चले जाओ।"
"वहां क्या होगा?" पारसनाथ ने पूछा।
"तब बांबा बता देगा कि जथूरा को महाकाली ने कहां पर कैद कर रखा है।"
"ये बात तो तुम भी बता सकते हो।"
"नहीं बता सकता। मुझे जथूरा की कैद के बारे में कुछ पता ही नहीं कि वो कहां है।"
"तुम हमारे पास आते ही क्यों हो?"
"भटकों को रास्ता दिखाने के लिए।"
"जबकि तुम महाकाली के सेवक हो और महाकाली नहीं चाहती कि हम जथूरा को आजाद कराएं।"
"सांभरा भी तो महाकाली का सेवक है। उसकी बात क्यों मान रहे हो?"

"तुम्हारी बातें मानकर हम देख चुके हैं। तुम हमें गलत राह दिखा रहे हो। इस बार सांभरा की बात मानकर देख लें।" देवराज चौहान बोला।

"मैं तुम्हारा भला चाहता हूं।"

"सांभरा भी हमारा भला चाहता है।"

"वो झूठा है।"

"हमारे खयाल से तुम झूठे हो।"

"तो सांभरा का रंग तुम तुम लोगों पर अच्छी तरह चढ़ गया।" बांदा एकाएक मुस्कराया।

"क्योंकि तुम्हारी बात कभी भी खरी नहीं निकली।" नगीना बोल पड़ी।

"शराफत का तो जमाना ही नहीं रहा।" बांदा ने गहरी सांस ली—"मैं तुम लोगों का भला कर... ।"

तभी झोंपड़े से सांभरा अपने सेवकों के साथ निकला और उन्हें देखकर बोला।

"तुम लोग अभी तक यहीं खड़े हो। वक्त कम है, फौरन यहां से... ।"

"यहां आओ।" देवराज चौहान ने कहा।

"क्यों?"

"इधरो खिसक आयो। थारे से प्राईवेटो बातों करनी हौवे।"

सांभरा पास आ पहुंचा। तभी उसकी निगाह बांदा पर पड़ी।

बांदा और सांभरा की नजरें मिलीं।

बांदा हल्का-सा सिर झुकाकर, सांभरा को देखता मुस्कराया।

"तुम हो बांदा। अंधेरा होने की वजह से मैंने पहचाना नहीं।" सांभरा कह उठा।

"बांदा कहता है कि तुम हमें गलत रास्ते पर डाल रहे हो। इसका क्या मतलब हुआ?" देवराज चौहान ने कहा।

सांभरा सिर हिलाता कह उठा।

"हम दोनों ही महाकाली के सेवक हैं।"

"परंतु तुम दोनों की बातों में भिन्नता है। ये कहता है कि हम वापस तुम्हारी बस्ती में जाएं। जबकि तुम कहते हो कि हम आगे बढ़ते हुए पहाड़ी उतर जाएं। किसकी बात सच मानें?"

बांदा और सांभरा की नजरें मिलीं। दोनों मुस्कराए।

"बांदा अपना काम कर रहा है और मैं अपना।" सांभरा ने कहा।

"परंतु हम किसकी बात सच मानें।"

"जो तुम लोगों को ठीक लगे, वो करो।"

"ये क्या बात हुई।" महाजन कह उठा—"तुम दोनों महाकाली के सेवक हो। दोनों एक-दूसरे को पहले से जानते हो। हमें तो वैसे भी तुम दोनों में से किसी पर भरोसा नहीं, क्योंकि महाकाली जथूरा की आजादी नहीं चाहती। ऊपर से तुम दोनों हमें अलग-अलग दिशाओं में जाने को कह रहे हो। तुम लोग हमें भटका रहे हो या रास्ता दिखा रहे हो?"

"मैं तो महाकाली का हुक्म बजा रहा हूं।" बांदा कह उठा।

"मैं भी। मैं वो ही कर रहा हूं जो महाकाली के हक में अच्छा है।" सांभरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"महाकाली तो ये ही चाहती है कि जथूरा आजाद न हो।" मोना चौधरी बोली।

"क्या महाकाली ने तुमसे ऐसा कहा?"

"नहीं। महाकाली की हमसे ऐसी कोई बात नहीं हुई। वो हमसे नहीं मिली।"

"मुझसे महाकाली की परछाई मिलती रही है। मेरी बात हुई महाकाली से।" तवेरा ने कहा।

"तुम तवेरा, जथूरा की बेटी।" सांभरा ने सिर हिलाया—"तुम्हारी बात का कोई महत्त्व नहीं।"

"क्यों?"

"महाकाली तुम्हारी इज्जत करती है। वो तुमसे यूं ही बातचीत करती रहती है।"

"यूं ही।"

"हां।"

"कितनी अजीब बात कह रहे हो सांभरा। वो मुझे अपने कामों में अपने साथ लेना चाहती... ।"

"जानता हूं वो ये बात करती है।"

"फिर भी कह रहे हो कि... ।"

"क्या तुमने महाकाली के संग काम करने की हामी भरी?" सांभरा मुस्कराया।

"नहीं।"

"हामी भरती तो असलियत तुम्हारे सामने आ जाती।"

"कैसी असलियत?"

"यही कि महाकाली की तुममें कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"तुझ झूठे हो।"

"क्यों?"

"महाकाली ने मुझे हमेशा कहा कि मैं उसके साथ काम करने की हामी भर दूं तो वो जथूरा को आजाद कर देगी।"

"एक बार हां कहती महाकाली को तो पर्दा उठता।" सांभरा मुस्करा रहा था।

"कैसा पर्दा?"

"रहने दे तवेरा। जो पर्दा महाकाली ने नहीं उठाया, वो मैं कैसे उठा दूं। लेकिन जल्दी ही सब कुछ तुम्हारे सामने होगा।"

इन बातों के दौरान बांदा शांत खड़ा था।

"आखिर तुम कहना क्या चाहते हो सांभरा?"

"पीछे की मत सोचो। आगे देखो। वक्त आने पर सब सवालों के जवाब सामने होंगे।"

"तुम मुझे उलझा रहे हो।"

"नहीं। मैं स्पष्ट बात कह रहा हूं।"

"अब हम तुम्हारी नगरी में जाएं या तुम्हारे कहेनुसार आगे को जाएं?"

"सोचो। अपना दिमाग लगाओ। उसके बाद फैसला करो।" कहकर सांभरा अपने सेवकों के साथ आगे बढ़ता चला गया।

सबकी निगाह बांदा की तरफ उठी।

बांदा मुस्कराकर उन्हें देख रहा था।

"वक्त कम है।" बांदा बोला—"तुम लोगों को जल्दी ही पहाड़ी से उतर जाना है। सुबह तक पहाड़ी अदृश्य हो जाएगी और पहले की तरह यहां गहरा पानी होगा। जो भी करना है जल्दी करो। आगे जाओ या पीछे जाओ।"

"थारी मुंडी तो अंम 'वडो' हो।" बांकेलाल राठौर कड़वे स्वर में बोला।

तभी मोना चौधरी कह उठी।

"हम सांभरा की बात मानेंगे।"

"फंसोगे।" बांदा बोला।

"मोना चौधरी ठीक कहेला बाप। बांदा की बात पर आपुन लोग नेई चलेगा।" रुस्तम राव ने कहा।

बांदा मुस्कराता हुआ उन्हें देखता रहा।

"आओ।" मोना चौधरी ने कहा और आगे चल पड़ी।

सब मोना चौधरी के पीछे चल पड़े।

पीछे से बांदा बोला।

"इस बार मैं सच कह रहा हूं, मेरी बात मान लो। नहीं तो बुरे फंसोगे।"

"थारी चोंचो को तोड़ो अंम।"
"मेरी बात तुम लोग मानते क्यों नहीं। मैं ठीक कह रहा हूं।" बांदा ने परेशान स्वर में कहा।
परंतु बांदा की बात की किसी ने परवाह नहीं की।
वे सब चंद्रमा की रोशनी में पहाड़ी उतरने लगे। ऐसे अंधेरे में पहाड़ से उतरना खतरनाक था।
परंतु उतरना भी जरूरी था।
क्योंकि आने वाले उजाले के साथ ही इस मायावी पहाड़ी ने गायब हो जाना था।
रातुला ने तवेरा से बात की।
"सांभरा की बातों में रहस्य था तवेरा।"
"बहुत।" तवेरा के चेहरे पर उलझन थी।
"महाकाली तेरे को कहती रही कि उसके साथ मिल जा, परंतु सांभरा कहता है ऐसा कहना, महाकाली का खेल था।"
"सांभरा की बातों से मैं कुछ भी नहीं समझी। सांभरा ने मेरे को उलझा दिया है।"
"ये उलझन पैदा हो गई कि महाकाली की मंशा क्या है?"
"सांभरा और बांदा दोनों महाकाली के सेवक है, परंतु अलग-अलग दिशाओं में जाने को कह रहे हैं। सांभरा ने कहा कि अगर मैं महाकाली को उसके साथ काम करने को हां कर देती तो पर्दा उठता। पता नहीं वो कैसे पर्दे की बात कर रहा था?"
"इन बातों में बड़ा रहस्य छिपा है।"
"मैं तो उलझन में फंस गई हूं।" तवेरा ने पहाड़ से उतरते हुए कहा।
तभी बांकेलाल राठौर की आवाज आई।
"देवराज चौहानो। म्हारे को पहाड़ों से उतरने में कितनो वक्त लागे हो?"
"उतना ही, जितना चढ़ते हुए लगा था।" महाजन ने कहा।
"उतरना जल्दी हो जाता है। चढ़ने में जितना वक्त लगा, उतरने में उससे आधा वक्त लगेगा।" देवराज चौहान बोला।
"लुढ़केला नेई बाप।"
"अंम ना ही गिरो हो। म्हारे को अभी आसमानो कपड़ों वालो से ब्याह करणो हो।"
वे सब सावधानी से धीरे-धीरे पहाड़ से नीचे उतरते रहे।
चंद्रमा सरकता जा रहा था।
रात बीतती जा रही थी।

जगमोहन, सोहनलाल, नानिया, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने मिलकर उस कमरे की इस तरह सफाई कर दी कि धूल-मिट्टी का नामोनिशान नहीं रहा। हर चीज साफ चमकने लगी थी।

मंच जैसी जगह पर महाकाली का आदमबुत अब पूरी तरह से चमक रहा था। वो एक खूबसूरत स्त्री का बुत था जो कि रंग-बिरंगी घाघरा-चोली पहने हुए थी। कंधे पर चुनरी लटक रही थी। जिस कलाकार ने भी वो बुत बनाया, वो तारीफ के काबिल था। देखने में ऐसा लगता कि बुत में अभी जान पड़ेगी और वो चलने-बोलने लगेगा।

दीवारों से धूल हट चुकी थी। सोफेनुमा कुर्सियों पर से भी।

फानूस पर अवश्य अभी धूल थी। क्योंकि फानूस को साफ करने का कोई साधन नहीं था।

ये काम करके सब थक गए थे और सोफे जैसी कुर्सियों पर बैठ गए थे।

"बैठे क्यों?" मोमो जिन्न कह उठा—"वो जगह ढूंढो जहां जथूरा कैद है।"

"आराम करने दे।" सपन चड्ढा ने तीखे स्वर में कहा—"जान निकाल दी हमारी सफाई करवाकर।"

"तुम इंसानों में ये ही समस्या है कि जरा-सा काम करते ही...।"

"जरा सा।" लक्ष्मण दास बोला—"हम क्या साफ-सफाई करने वाले हैं, जो हमें ये काम जरा-सा लगे। मुझे तो भूख लग रही है।"

"अब तो मुझे भी भूख लग रही है।" नानिया बोली—"क्यों सोहनलाल?"

सोहनलाल ने प्यार से मुस्कराकर नानिया को देखा।

"लग रही है न?" नानिया ने उसका हाथ पकड़ा।

"तुझे लग रही है तो मुझे भूख क्यों नहीं लगेगी नानिया।" सोहनलाल बोला।

"लैला-मजनू की औलाद बस करो।" जगमोहन ने व्यंग से कहा।

"देखा, तुम्हारा दोस्त फिर चिढ़ने लगा हमारे प्यार से।"

"मैंने तुम्हें पहले भी समझाया था कि इसकी बात का बुरा मत माना करो।"

"धीरे-धीरे आदत पड़ेगी न।" नानिया ने गहरी सांस ली।

सोहनलाल ने मोमो जिन्न से कहा।

"तुम नानिया के लिए खाने का इंतजाम कर सकते हो?"

"सोहनलाल के लिए भी।" नानिया बोल पड़ी।

"हम क्या बुरे हैं। हमारा पेट नहीं है क्या?" सपन चड्ढा चिढ़कर बोला।

"दोनों में कितना प्यार है।" लक्ष्मण दास ने नानिया और सोहनलाल को देखकर कहा।

"तेरे पेट में मरोड़ क्यों उठ रही है।" सपन चड्ढा कह उठा।

"मैं तो दोनों का प्यार देख रहा... ।"

"ज्यादा मत देख।" सोहनलाल ने तीखे स्वर में कहा—"मुंह मोड़ ले।"

"सोहनलाल। सब हमारे प्यार से चिढ़ते क्यों हैं?"

"वो ही चिढ़ता है, जिसके पास अपना प्यार नहीं होता। ये दोनों भी बिना औरत के लगते हैं।"

"सुन लिया लक्ष्मण।" सपन चड्ढा कह उठा—"हमारी इज्जत उतार रहे हैं ये।"

"मैं तो अब वापस जाकर शादी कर लूंगा।"

"क्यों?"

"अब उम्र नहीं रही तांक-झांक की। तू भी कर लेना।"

सोहनलाल ने दांत फाड़कर जगमोहन से कहा।

"सुना। ये समझदार हैं जो समझ गए कि बिना औरत के इज्जत नहीं मिलती। तू अपने बारे में सोच।"

जगमोहन ने खा जाने वाली निगाहों से सोहनलाल को देखा।

तभी टेबल पर खाना पड़ा नजर आने लगा। खाने की महक उनकी सांसों में टकराई। भूख बढ़ गई।

वो सब खाने में व्यस्त होने लगे।

मोमो जिन्न कह उठा।

"खाना खाने के बाद इस किले में जथूरा को तलाश करना है।"

"तू कुछ नहीं करेगा?" सपन चड्ढा बोला।

"ये काम मेरा नहीं है। मैं यहां की रखवाली करूंगा।" मोमो जिन्न ने कहा।

"हम खाना खा रहे हैं, तू जथूरा को ढूंढ़।" सपन चड्ढा बोला।

"शिष्टता से बात करो। जिन्न को सिर्फ उसका मालिक ही हुक्म दे सकता है।"

'भाड़ में जा।' सपन चड्ढा बड़बड़ाया।

"क्या कहा तुमने?" मोमो जिन्न के माथे पर बल पड़े।

"जथूरा महान है।" लक्ष्मण दास जल्दी से कह उठा।

"अब समझदार हो गए हो तुम दोनों। सोचता हूं जब तुम मेरे पास नहीं होगे तो मेरा दिल कैसे लगेगा।"

"हम नहीं होंगे—क्या मतलब?" सपन चड्ढा कह उठा।

"ये हमारी बलि तो नहीं देने जा रहा।" लक्ष्मण दास खाना छोड़कर कह उठा।

"जिन्न बलि जैसा नीच काम नहीं करते।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तो क्या करते हैं?"

"हाथ गर्दन मरोड़कर, तोड़कर, अलग कर देते हैं।"

"तुम...तुम हमारी गर्दनें... ।"

"खाना खाओ। मैंने तुम्हारी बात का जवाब दिया है। ऐसा करने का मेरा कोई इरादा नहीं।"

"तुम हमें छोड़कर चले क्यों नहीं जाते?"

"कैसे छोड़ूं। अब तुम दोनों मेरे गुलाम हो। मैं पास न रहा तो तुम दोनों भूखे मर जाओगे।"

"ओए जिन्न के बच्चे।" नानिया बोली—"चुप कर। खाना खाने दे हमें।"

मोमो जिन्न कमर पर हाथ बांधे टहलता रहा, जब तक कि उन्होंने खाना नहीं खा लिया।

"यार सपन।" लक्ष्मण दास पेट पर हाथ फेरता कह उठा—"कुछ ज्यादा खा लिया।"

"अच्छा किया। क्या भरोसा दोबारा कब खाने को मिले। ये कमीना जिन्न तो हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ा है।"

"क्या कहा?" मोमो जिन्न ने ठिठककर उन्हें देखा। माथे पर बल पड़ गए।

"हम में लगे सैंसरों से इसने बात सुन ली होगी।"

"तेरे को नहीं कह रहे।" सपन चड्ढा मुस्कराया—"आपस में बात कर रहे हैं।"

"क्या कहा तुमने अभी?"

"वो, यूं ही जुबान फिसल गई थी।"

"अगर तुम दोनों इसी प्रकार बदतमीजी करते रहे तो मैं तुम दोनों को भस्म कर दूंगा।"

"जथूरा महान है।" लक्ष्मण दास कह उठा।

"बहुत महान है।" सपन चड्ढा ने मुस्कराकर कहा—"उस जैसा कोई दूसरा नहीं।"

मुस्कराया मोमो जिन्न।

"देख तो सपन, मुस्कराता भी है।"

"तुम दोनों में जथूरा के सेवक बनने के भरपूर लक्षण हैं।" मोमो जिन्न ने कहा—"मैं तुम दोनों... ।"

"यार तुम हमेशा हमारे पीछे क्यों... ।" सपन चड्ढा ने कहना चाहा।

"खबरदार जो जिन्न को यार कहा। वरना सारी जिन्न बिरादरी तुम दोनों के पीछे पड़ जाएगी।"

"एक संभाला नहीं जाता।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाकर बोला—"सब पीछे पड़ गए तो हम पागल हो जाएंगे।"

"जिन्न से हमेशा तमीज से बात करो।"

"हम तो तुम्हें कितनी इज्जत देते हैं। क्यों सपन।"

"हां-हां। हम तो हर वक्त तुम्हारा ही गुणगान करते रहते हैं।" सपन चड्ढा ने कहा।

"मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं तुम दोनों के मन की बात।"

"क्या जानते हो?"

"चुपचाप उठो और किले में कहीं मौजूद जथूरा को ढूंढ़ो।"

नानिया सोहनलाल से कह उठी।

"जिन्न ने तो इन दोनों का हाल बुरा कर रखा है।"

मोमो जिन्न ने नानिया को घूरा। फिर बोला।

"हमारी बातों में तुम लोग दखल मत दो।"

"हम दखल नहीं दे रहे। आपस में बात कर रहे हैं। तुझे क्या।"

"हमारी बातें भी मत करो।"

"क्यों न करें। हम तेरे गुलाम नहीं हैं। तेरा हुक्म हम पर नहीं चल सकता।" नानिया ने मुंह बनाकर कहा।

मोमो जिन्न ने मुंह फेर लिया।

"कैसा जिन्न है ये।" सपन चड्ढा बोला—"औरत के आगे तो इसकी फूंक निकलती है।"

"चुप कर।" लक्ष्मण दास हड़बड़ाया।

मोमो जिन्न ने गर्दन घुमाकर, सपन चड्ढा को देखा।

सपन चड्ढा दांत फाड़कर कह उठा।

"जथूरा महान है।"

"इन इंसानों की संगत में आकर तुम दोनों बदतमीज होते जा रहे हो।" मोमो जिन्न ने सख्त स्वर में कहा।

"चल सपन।" लक्ष्मण दास जल्दी से उठता हुआ बोला—"जथूरा को ढूंढ़े।"

"हां-हां चल।" सपन चड्ढा भी खड़ा हो गया।

जगमोहन भी उठ खड़ा हुआ और सोहनलाल से बोला।

"हमें भी जथूरा को तलाश करना चाहिए।"

सोहनलाल ने सिर हिलाया फिर नानिया से बोला।

"तुम चाहो तो आराम कर लो नानिया—हम... ।"

"मैं तो तेरे साथ ही रहूंगी सोहनलाल।" नानिया उठ खड़ी हुई।

लक्ष्मण दास मोमो जिन्न से कह उठा।

"तुम भी तो जथूरा को तलाश... ।"

"गुलामों के होते जिन्न काम नहीं करते। मैं तुम दोनों पर नजर रखूंगा कि तुम दोनों ठीक से काम कर रहे हो या नहीं।"

"उल्लू का पट्ठा।" सपन चड्ढा बोला।

"क्या कहा?"

"उल्लू का पट्ठा। इंसान जिसकी खातिरदारी करते हैं, उसे उल्लू का पट्ठा... ।"

"मत भूलो कि मैं भी कभी इंसान था। तब मैं भी दूसरों को उल्लू का पट्ठा कहा करता था।" मोमो जिन्न ने उसे घूरा।

सपन चड्ढा सकपका उठा।

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए जिन्न को गाली देते हुए।"

"गाली, म...मैंने तो प्यार से कहा था।"

तब तक जगमोहन, सोहनलाल और नानिया बाहर निकलने वाले दरवाजे की तरफ बढ़ गए थे।

तभी जगमोहन के सामने कुछ उछला।

जगमोहन फौरन ठिठका। उछलने वाली चीज की तरफ नजर गई।

सोहनलाल और नानिया भी रुक गए थे।

"क्या हुआ?" सोहनलाल ने पूछा।

परंतु जगमोहन की निगाह तो महाकाली की परछाई पर टिक चुकी थी। तीन इंच की, बेहद नन्ही-सी गुड़िया जैसी लग रही थी वो। परंतु कमर पर हाथ रखे, जगमोहन को देख रही थी।

"कौन हो तुम?" जगमोहन ने पूछा।

मोमो जिन्न, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा का ध्यान इस तरफ हुआ।

"मैं महाकाली हूं।" महाकाली की आवाज वहां गूंज उठी।

"तुम महाकाली नहीं हो सकती।"

"महाकाली की परछाई हूं। पूर्ण रूप में तुम्हारे सामने नहीं हूं मैं... ।"

"वो तुम्हारी मूर्ति है?"

"हां।"

"तुम्हारी प्रतिमा बहुत सुंदर है।"

"तुमने प्रतिमा को ध्यान से नहीं देखा। वरना तुम्हें पता चल जाता कि चेहरा खूबसूरत नहीं है।"

"क्या कहती हो?"

"पास जाकर एक बार फिर ध्यान से देखो।"

जगमोहन होंठ सिकोड़े मंच पर बनी प्रतिमा की तरफ बढ़ गया।

"आ सोहनलाल। हम भी देखें।"

नानिया और सोहनलाल भी प्रतिमा की तरफ बढ़ गए।

मोमो जिन्न फौरन करीब आया और महाकाली की परछाई के सामने थोड़ा-सा सिर झुकाया।

"तुम तो जथूरा के सेवक हो फिर मेरे आगे सिर क्यों झुकाते हो मोमो जिन्न?" महाकाली कह उठी।

"मैं तेरे आगे नहीं, तेरी कमाल की विद्या के सामने सिर झुका रहा हूं। तेरी विद्या महान है।"

"तू वास्तव में सच्चा जिन्न है। लेकिन यहां क्यों आया?"

"अपने मालिक जथूरा को आजाद कराने।"

"ये काम तेरे बस का नहीं है, तू चला जा यहां से।"

"जथूरा को लिए बिना मैं नहीं जाऊंगा।"

"जिद मत कर, जथूरा को मेरे कब्जे से निकाल ले जाना खेल नहीं है जो तू...।"

"जानता हूं कि तू विद्या की बहुत धनी है, परंतु मैं जथूरा को आजाद करवाने की पूरी चेष्टा करूंगा।"

"लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा के दम पर तू इतनी बड़ी बात कह रहा है।"

"नहीं-नहीं।" लक्ष्मण दास कह उठा—"ये हमें जबर्दस्ती यहां ले आया है। हम तो जथूरा को जानते भी नहीं।"

"सुना तुमने मोमो जिन्न।" महाकाली हंस पड़ी।

"जग्गू और गुलचंद भी हैं साथ में।"

"वो तेरे गुलाम नहीं हैं। वो अपनी मर्जी करेंगे। चला जा तू यहां से।"

"मैं अपनी मर्जी का मालिक हूं महाकाली।"

"मुझे क्रोध आ गया तो तेरे को बोतल में बंद कर दूंगी।" महाकाली ने गुस्से से कहा।

"हम यही चाहते हैं महाकाली कि तुम इसे बोतल में बंद कर दो।" सपन चड्ढा ने कहा—"इसने हमें बहुत परेशान कर रखा है।"

मोमो जिन्न ने लक्ष्मण-सपन को घूरा।
"मैंने नहीं।" लक्ष्मण दास जल्दी से बोला—"ये बात सपन ने कही है।"
"तू भी तो मेरे साथ है।" सपन ने लक्ष्मण से कहा।
"इस बात में तेरे साथ नहीं हूं। देखता नहीं, मोमो जिन्न कैसे घूर रहा है तुझे। ये पक्का तेरे को भस्म कर देगा अभी।"
मोमो जिन्न महाकाली की परछाई को देखकर, गम्भीर स्वर में बोला।
"महाकाली, जथूरा कहां है?"
"मेरी कैद में आराम से है।" महाकाली ने हंसकर कहा।
"तू उसे आजाद कर दे। मैं हमेशा के लिए तेरा सेवक बन जाऊंगा।"
"मेरा सेवक। मैं अपने कामों में जिन्नों का इस्तेमाल नहीं करती। मेरी नजर में जिन्न बेकार के होते हैं।"
"ये कहकर तू जिन्नों का अपमान कर रही है महाकाली।" मोमो जिन्न तेज स्वर में कह उठा।
"आवाज नीची रख। तू जथूरा का मामूली-सा सेवक है। मेरे से ऊंचे स्वर में तूने बात कैसे कर दी।"
"क्षमा चाहता हूं।" मोमो जिन्न बोला—"लेकिन मैं जथूरा को लेकर ही जाऊंगा।"
तभी जगमोहन, सोहनलाल और नानिया पास आ पहुंचे।
"चेहरा देखा मेरे बुत का।" महाकाली ने पूछा—"कुछ नजर आया?"
"आंखों की पुतली में बीच का गोल घेरा नहीं है।"
"तो कुरूप लगा मेरा बुत?"
"कुछ-कुछ।"
"आंखों का गोल घेरा किसने निकाल लिया?" सोहनलाल ने पूछा।
"जाने दो। तुम लोग अपनी बात करो। यहां पर फिजूल में ही आए।" महाकाली की परछाई ने कहा।
"बेकार में क्यों?"
"तुम लोग तो जथूरा को आजाद नहीं करा सकते। मैंने तिलिस्म देवा और मिन्नो के नाम का बांधा है। तब तुम लोग कैसे जथूरा तक पहुंचोगे। तुम लोग तो ये भी नहीं जान सकते कि जथूरा कहां पर है।"
"हम उसे ढूंढ़ लेंगे।" नानिया कह उठी।

"नहीं ढूंढ़ सकते। देवा-मिन्नो के अलावा जथूरा तक कोई नहीं पहुंच सकता।"

"तुम चाहोगी तो हमें जथूरा तक पहुंचा सकती हो।"

महाकाली हंस पड़ी। बोली।

"मैं क्यों चाहूंगी जग्गू। मैंने ही तो उसे कैद करके, उस पर तिलिस्म बांधा है।"

"अब तुम क्या चाहती हो हमसे?" सोहनलाल ने पूछा।

"यहां से चले जाओ। ये मेरा किला है। मैं अपने किले में किसी को नहीं देखना चाहती।"

"हमने तुम्हारे इस बुत वाले कमरे की सफाई की है।" नानिया बोली—"और अभी आराम भी नहीं किया। तुम कहती हो कि हम चले जाएं। बहुत नाशुक्री हो तुम। स्वागत क्या करना है हमारा तुमने, तुम तो धक्के मार रही हो।"

"मैं मेहमानों का स्वागत करती हूं, तुम लोग जबर्दस्ती मेरे किले में... ।"

"हम जबर्दस्ती नहीं आए। बूंदी का किया-धरा है, ये सब।" नानिया हाथ हिलाकर बोली—"उसने हमें मौसमों वाले रास्तों पर फंसा दिया था। आंधी-तूफान ने हमें तुम्हारे किले में ला पटका। बूंदी से पूछ तू। बुला उसे।"

महाकाली की परछाई हंस पड़ी।

"दांत क्यों फाड़ती है। चुहिया-सी है तू। हाथ में पकड़कर मसल दूंगी।" कहते हुए नानिया महाकाली की परछाई पर झपटी।

महाकाली की परछाई को उसने मुट्ठी में जकड़ना चाहा।

परंतु देखते-ही-देखते महाकाली की परछाई गायब हो गई।

"कहां भाग गई?" नानिया ने हड़बड़ाकर कहा।

"मैं यहां हूं।" महाकाली की आवाज उभरी।

महाकाली की परछाई सोफे जैसी कुर्सी की बांह पर खड़ी दिखाई दी।

"मुझे पकड़ना तो दूर, मेरी मर्जी के बिना कोई मुझे छू भी नहीं सकता नानिया।"

"देवराज चौहान इसी तिलिस्मी पहाड़ी में है क्या?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।" महाकाली ने कहा।

"बाकी सब?"

"वो सब साथ ही हैं।"

"कहां पर हैं वे?"

"ये मैं नहीं बता सकती।"

"वो यहां पहुंच जाएंगे?"

"इस बात का जवाब मैं नहीं दूंगी।"

"स्पष्ट है कि तुम मुझे किसी भी बात का जवाब नहीं दोगी।" जगमोहन बोला।

"हां।"

"फिर तो तुमने बात करने का कोई फायदा नहीं। हमें ही जथूरा को ढूंढ़ना होगा।"

"तुम लोग उसे आजाद नहीं करा सकते।" महाकाली ने व्यंग से कहा।

"हो सकता है देवराज चौहान और मोना चौधरी यहां तक आ पहुंचे। अगर तब तक हम जथूरा को ढूंढ़ लेते हैं तो उन्हें अपना काम करने में आसानी होगी।" जगमोहन बोला।

"लेकिन तुम लोग इस काम में सफल नहीं हो सकोगे। जथूरा मेरी कैद में है। उस तक देवा-मिन्नो ही पहुंच सकते हैं। वो भी तब, जब वो समझदारी से काम लें। जब तक उनके नाम का बना तिलिस्म नहीं टूटेगा तब तक जथूरा बहुत दूर है तुम लोगों से। अब चलती हूं। जथूरा अकेला है। बातों से उसका भी तो मन बहलाना है।"

अगले ही पल महाकाली की परछाई आंखों के सामने से गायब हो गई।

जगमोहन के चेहरे पर सोच दौड़ रही थी।

"देखा सोहनलाल। कैसे अकड़कर बात कर रही थी चुहिया सी। मेरे हाथ लग जाती तो... ।"

"इज्जत से बात करो।" मोमो जिन्न बोला—"वो महाकाली है। बहुत ज्ञानी है।"

"तू मुझे तमीज मत सिखा।" नानिया ने मुंह बनाया।

"बड़ों की इज्जत करनी चाहिए।"

"तू तो जथूरा का सेवक है। फिर उसकी तरफदारी क्यों करता है?"

"मैं उसकी नहीं। उसकी विद्या की कद्र करता हूं।" मोमो जिन्न ने कहा।

"तू कर। मैं तो परवाह नहीं करती। क्यों सोहनलाल?"

"तू जो कहेगी, तेरी हर बात में सौ बार हां।" सोहनलाल ने कहा।

"देखा।" लक्ष्मण दास ने सपन चड्ढा से कहा—"कितना प्यार है दोनों में।"

"प्यार?" सपन चड्ढा खा जाने वाले स्वर में बोला—"चमचा है साला चमचा। औरत के अंदर घुसे जा रहा... ।"

"धीरे बोल वो सुन लेगा।"

मोमो जिन्न ने घूरकर दोनों को देखा।

"जिन्न साहब हमें देख रहे हैं।" लक्ष्मण दास ने शराफत से कहा।

"लेकिन हम तो उनकी बात कर रहे हैं जिन्न की नहीं। अब ये हमें क्यों देखता है?"

"उसकी मर्जी।" लक्ष्मण दास ने दांत फाड़कर कहा और मोमो जिन्न की तरफ देखा—"सैंसर कानों में लगा होने की वजह से सब सुन लेता है तू। कैसा अजीब जिन्न है, जो सैंसर का भी इस्तेमाल करता है।"

सोहनलाल ने जगमोहन से कहा।

"तू किस सोच में है।"

"महाकाली के बारे में सोच रहा हूं।" जगमोहन ने सोहनलाल को देखा।

"क्या?"

"महाकाली ने खासतौर से हमारा ध्यान बुत की आंखों की तरफ क्यों करवाया?"

"वो तो उसने यूं ही... ।"

"नहीं, यूं ही नहीं, अवश्य कोई खास बात है। मुझे तो लगता है कि वो आई ही इसी वास्ते थी, हमारा ध्यान बुत की आंखों की तरफ करवाने के लिए। इसके अलावा उसने कोई खास बात नहीं की और चली गई।"

सोहनलाल की निगाह जगमोहन के चेहरे पर टिक गई।

"सोहनलाल।" नानिया बोली—"तूने पहले नहीं बताया कि तेरा दोस्त वहम भी करता है।"

"चुप कर।"

"क्या?" नानिया ने सोहनलाल को देखा—"तूने मुझे डांटा।"

"डांटा नहीं, प्यार से कह रहा हूं कि थोड़ी देर के लिए चुप हो जा।" सोहनलाल बोला।

"अच्छा चुप। चुप हो जाती हूं।"

"कोई तो बात है।" जगमोहन ने पुनः सोच में डूबे कहा।

"हमें अपना ध्यान जथूरा की तलाश में लगाना चाहिए।" सोहनलाल बोला—"उसे ढूंढ़ते हैं।"

देवराज चौहान, नगीना, मोना चौधरी, बांके, रुस्तम, पारसनाथ, महाजन, मखानी, कमला रानी, तवेरा व रातुला पहाड़ से नीचे आ गए थे। सब थके-हारे और बुरे हाल में थे। गहरा अंधेरा था हर तरफ। दिन का उजाला फैलने में थोड़ा ही वक्त था। आसमान पर उजाले की सफेदी बिछनी शुरू हो गई थी।

"मेरी तो ना बोल गई।" महाजन बोला—"थकान से बुरा हाल हो गया है।"

"हमें कुछ देर आराम कर लेना चाहिए। सबको नींद की जरूरत है।" नगीना कह उठी।

"म्हारे को भी आरामो की जरूरत हौवे।"

पहाड़ के सामने उन्हें जंगल जैसी जगह दिखाई दे रही थी। पेड़ों के काले साये खड़े दिख रहे थे।

वे सब जंगल में प्रवेश कर गए।

आगे जाकर मुनासिब जगह देखकर उन्होंने डेरा डाला।

"जरूरत हो तो मैं रोशनी कर देती हूं।" तवेरा बोली।

"नहीं। ऐसे ही ठीक है। अंधेरे में कुछ देर नींद लेंगे। कुछ देर में दिन भी निकलने ही वाला है।"

फिर वे सब नींद लेने की चेष्टा करने लगे।

मध्यम-सी ठंडी हवा चल रही थी। वे थके हुए थे। फौरन ही नींद में डूबते चले गए।

परंतु मखानी को चैन कहां।

मखानी सरकता हुआ कमला रानी के पास पहुंच गया।

"ऐ कमला रानी।"

"मैं तेरा ही इंतजार कर रही थी।" कमला रानी बोली।

"मेरा इंतजार?" मखानी खिल उठा।

"हां। क्योंकि मुझे पता था कि तेरे में जो कीड़ा है वो हिलेगा और... ।"

"कीड़ा नहीं अंडा।"

"एक ही बात है। मैं हिलने वाली चीज की बात कर रही हूं कि तब तू मेरे पास अवश्य आएगा।"

"मुझे नहीं पता था कि तू मेरा इंतजार भी करती है।"

"इसलिए कि तू मेरी नींद न खराब करे।"

"तो चलें।"

"कहां?"

"अंडे का आमलेट बनाने।"

"बहुत आग है मेरे में। मिनट में ही तेरे अंडे को आमलेट में बदल दूंगी, आ।"

"यहीं?"

"हां, यहां क्या है?"

"बाकी सब पास में हैं। शोर सुनकर वो जान जाएंगे कि हम आमलेट बना रहे हैं।"

"वो आमलेट नहीं बनाते क्या?"

"समझा कर, जरा साइड में आ जा। तसल्ली से सारा काम निबटा लेंगे।"

"चल मखानी। तेरी ये बात भी मानी।" कमला रानी उठ खड़ी हुई।

"चार बार आमलेट बनाएंगे।"

"पागल है क्या। एक बार ही बहुत है।"

"इतने में मेरी तसल्ली नहीं होती। मना मत कर। कभी-कभी तो तू हाथ के नीचे आती है। चार बार।"

"नहीं।"

"मान जा मेरी जान।"

"दो बार।"

"अच्छा तीन। अब मना मत करना।"

"तू चल तो सही। एक ही बार में अंडे को चूर-चूर न कर दिया तो कहना।"

मखानी और कमला रानी पास के अंधेरे में गुम हो गए।

बांकेलाल राठौर ने पास में लेटे रुस्तम राव का कंधा हिलाकर कहा।

"छोरे। सुनो मेरी बातो।"

"नींद लेने दे बाप।"

"म्हारे को पैले ही शक था।" बांकेलाल राठौर धीमे स्वर में कह उठा।

"क्या बाप?"

"बलात्कारो हुओ ही हुओ।"

"किसका?"

"कमला रानी का। वो दोनों अंधेरो में खिसक गयो हो।"

"वो बलात्कार नहीं बाप। रजामंदी का सौदा होईला। सोने का है अब।"

"म्हारे को मौको न मिल्लो हो।"

"तुम उधर पैले से ही देखेला बाप।"

"म्हारे को शको हौवे कि मखानो गड़बड़ो करो ही करो।"

"तेरी मूंछों का, कमला रानी पर कोई असर नेई होईला बाप। वो मखानी की दीवानी होईला।"

"म्हारे में कोई कमी तो न हौवो छोरे।"

"वो उधर चने खाईला और तू इधर चने गिनेला बाप। सो जा अब।"

"म्हारे दिलो पे छुरो चलो हो।"

"मखानी तो उधर बोत कुछ चलाईला बाप।"

"तंम म्हारे को आग लगायो हो।"

"नेई बाप मलहम लगाईला।"

"म्हारो किस्मतो में तो कांटे ही लिखो हो। किधर भी मामलो फिटो न हौवे।"

"कोशिश करता रह बाप।"

"अंम तो करो हो। पर कमलो रानी म्हारे पे कोशिशो न करो हो।"

"कभी तो दिन बदलेईला बाप। लगा रह।"

"म्हारो किस्मतो पर तो झाड़ू फिर गयो हो।" बांकेलाल राठौर ने कहकर गहरी सांस ली।

▭ ▭

देवराज चौहान की आंख खुली।

सूर्य निकल आया था। पेड़ों से छनकर धूप उन तक पहुंच रही थी। उसने अंदाज लगाया कि करीब चार घंटे की नींद ली होगी। परंतु थकान अभी भी शरीर में कूट-कूट कर भरी थी। बदन दुख सा रहा था। बहरहाल इतना ही बहुत था कि सोने को चार घंटे मिल गए।

उसने सब पर निगाह मारी।

सब गहरी नींद में थे।

देवराज चौहान उठा और चहलकदमी करने लगा। चेहरे पर सोचों के भाव थे।

इसी पल पारसनाथ की आख खुल गई। वो उठ बैठा।

"अब क्या करना है?" पारसनाथ ने पूछा।

"मंजिल का तो पता है, परंतु रास्ते से हम अंजान हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो?"

"जो रास्ता नजर आता है, उस पर आगे बढ़ते जाते हैं। देखते हैं कि अब क्या होता है।"

"सांभरा ने हमें सही रास्ते पर डाला है या गलत?"

"बांदा और सांभरा का, दोनों का ही कोई भरोसा नहीं, वे महाकाली के सेवक... ।"

"हममें एक आदमी ज्यादा है।" तभी पारसनाथ के होंठों से निकला।

"क्या?"

देवराज चौहान की निगाह सब पर गई।

आखिरकार उस पर जाकर टिक गई। जो औंधे मुंह घास पर गहरी नींद में पड़ा था।

"वो, वो हमारे साथ नहीं था।" पारसनाथ ने उसी व्यक्ति की तरफ इशारा किया।

देवराज चौहान उसकी तरफ बढ़ गया।

बातचीत की आवाज से एक-एक करके, वे सब नींद से जागने लगे।

पारसनाथ भी उठकर उसी तरफ बढ़ गया।

"क्या हुआ?" मोना चौधरी ने पूछा।

"हममें एक आदमी ज्यादा है। वो जो औंधे मुंह नींद में है।" पारसनाथ ने कहा।

देवराज चौहान उसके पास जाकर ठिठका और झुककर उसे हिलाया।

वो फौरन उठ बैठा।

प्रणाम सिंह था वो।

प्रणाम सिंह को यहां देखकर सब के माथों पर बल नजर आने लगे।

प्रणाम सिंह ने आंखें मलीं। चेहरे पर नींद के निशान थे। वो मुस्कराया।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"सुबह यहां से निकल रहा था कि तुम लोगों को नींद में देखा तो ये सोचकर रुक गया कि इस अंजान जगह पर तुम लोगों को शायद मेरी जरूरत पड़े। कब तक इंतजार करता तुम लोगों के जागने का, आंख लग गई।"

"तुम खामखाह तो हमारे पास आए नहीं।"

"मैं कहां आया। मैं तो यहां से निकल रहा था कि... ।"

तभी बांकेलाल राठौर उठता हुआ बोला।

"तन्ने म्हारे को कुओं में फेंको हो। ईब अंम थारे को 'वड' दयो हो। आ छोरे।" बांके प्रणाम सिंह की तरफ बढ़ा।

"तुम उसकी गर्दन 'वडेला' बाप। आपुन गड्ढा खोदेला।"

इससे पहले बांके प्रणाम सिंह पर झपटता, देवराज चौहान ने उसे रोका।

"रुक जाओ बांके।"

"इसो ने म्हारे को कुओं में फेंको हो।"

"वो बात पुरानी हो गई है अब।"

"यो म्हारे ब्याहो वकत दुल्हनो बनो के बैठो हो। यो म्हारे से ब्याह करो के भिड़ना चाहो।"

"चुप हो जाओ बांके।"

"तंम म्हारे को बतायो कि वो आसमानो कपड़ो वाली किधर हौवे। उसो से ब्याह करो हो।"

प्रणाम सिंह ने गहरी सांस ली।

"ईब का लड़ो हो थारे को?"

"वो सब बांदा का कसूर था।" प्रणाम सिंह ने कहा।

"तंम बाप-बेटो दोनों ही हरामो हौवे। म्हारे को खूबो बेवकूफो बनायो हो।"

"मैं तो बहुत शरीफ इंसान हूं।" प्रणाम सिंह मुंह लटकाकर बोला—"बांदा ही चालाकी करता है।"

"का चालाकी कियो हो वो थारे से?"

"मैंने जो भी किया उसी के कहने पर किया। कहता था कि मेरी बात मानकर... ।"

"तंम तो म्हारे से कुश्तो लड़ो हो। तंम तो... ।"

"मुझे बांदा ने कहा ऐसा करने को। मेरा कोई कसूर नहीं।"

तभी बांकेलाल राठौर हड़बड़ा-सा उठा।

अन्यों की निगाह भी उस तरफ गई।

उधर से बांदा आता दिखाई दिया।

"बांदा भी आईला बाप। इसे भी 'वड' देईला।"

"तंम म्हारे साथो हौवो न?"

"पक्का बाप।"

देखते-ही-देखते बांदा पास आ गया।

"तेरी वजह से मैं बहुत बदनाम हो रहा हूं बांदा।" प्रणाम सिंह ने शिकायत-भरे स्वर में कहा।

"मैंने तो कुछ भी नहीं किया बापू।" बांदा बोला।

"तूने मुझे जो करने को कहा, मैंने किया। अब ये सब मुझे दोष दे रहे हैं।"

"इनका क्या है। इनका तो जितना भी भला कर दो, ये एहसान नहीं मानते।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"तूने कहा इन्हें कुएं में फेंक दो। मैंने फेंक दिया। तूने कहा मैं दुल्हन बनकर... ।"

तभी देवराज चौहान कह उठा।

"बस करो। इन बेकार की बातों से तुम लोग हमें बदल नहीं सकते।"

"तो क्या हम झूठे हैं?" प्रणाम सिंह बोला।

"शत-प्रतिशत।" देवराज चौहान पुनः मुस्कराया—"तुम लोग विश्वास के काबिल हो ही नहीं।"

"सुना बांदा। तूने तो मेरी पूरी इज्जत ही मिट्टी में मिला दी।"

"मैं तो आपका नाम रोशन करने की चेष्टा में था बापू।" बांदा दुखी स्वर में कह उठा—"ये तो उल्टा ही हो गया।"

"तेरे से अच्छा तो बूंदी है।"

"बूंदी को सब कुछ मैंने ही पढ़ाया है। वो मेरे से अच्छा कैसे हो सकता है।"

"कम-से-कम उसने मेरी इज्जत तो मिट्टी में नहीं... ।"

"बूंदी कौन है?" पारसनाथ बोला।

"मेरा छोटा बेटा है, जो कि इस वक्त जग्गू-गुलचंद के पास है।"

"जगमोहन-सोहनलाल कैसे हैं?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।

"बहुत बढ़िया, वो तो महाकाली के किले में पहुंच चुके हैं, जहां पर जथूरा कैद है।" प्रणाम सिंह बोला।

"उन्हें जथूरा मिल गया?" नगीना ने पूछा।

"उन्हें कैसे मिलेगा। जथूरा की कैद में ताले पर तो तिलिस्म देवा और मिन्नो के नाम का बंधा है।" प्रणाम सिंह ने कहा।

"तुम हमें वहां पहुंचा सकते हो?"

"क्यों नहीं?" प्रणाम सिंह ने शराफत से कहा—"परंतु मैं ऐसा करूंगा नहीं।"

"क्यों?"

"तुम लोग तो वहां पहुंचकर जथूरा को कैद से आजाद करा लोगे। महाकाली मुझ पर नाराज होगी कि मैंने तुम सबको वहां तक का रास्ता क्यों बताया। आखिर हूं तो मैं महाकाली का सेवक ही।"

"तुम तो कह रहे थे कि तुम हमारी सहायता करना चाहते हो।" मोना चौधरी बोली—"तभी यहां रुके।"

"ठीक तो कहा।"
"तो हमारी सहायता क्यों नहीं कर रहे?"
"कहिए क्या चाहिए आपको। खाना या... ।"
"हमें जथूरा तक पहुंचने का रास्ता चाहिए।"
"ये तो सम्भव नहीं।"
"बापू।" बांदा कह उठा—"तुम्हें इनकी कुछ सहायता तो करनी चाहिए।"
"चुप कर नालायक। तेरी बातों में आकर मैंने पहले ही अपनी इज्जत खराब कर ली है।"
"बापू तुम... ।" बांदा ने कहना चाहा।
"चला जा यहां से। दूर हो जा मेरी नजरों से।"
"बापू मेरी बात तो... ।"
"जाता है या तेरे को भगाने के लिए मंत्र पढ़ दूं। मंत्र पढ़ा तो दस दिन के लिए तू बीमार हो जाएगा।"
बांदा ने कुछ नहीं कहा और खामोशी से एक तरफ चला गया।
देखते ही देखते बांदा सबकी निगाहों से ओझल हो गया।
प्रणाम सिंह ने मुस्कराकर सबको देखा।
अब सबकी निगाह प्रणाम सिंह पर टिक चुकी थी।
"मेरी बात मानो तो।" प्रणाम सिंह ने मुस्कराकर कहा—"उस रास्ते पर चले जाओ। उधर उत्तर दिशा है।"
"वहां क्या है?"
"वहां जाने पर, तुम लोगों की समस्या का कोई हल निकल सकता है।"
"समस्या यानी कि जथूरा?" महाजन बोला।
"हां, वो ही। इस वक्त तो तुम लोगों की समस्या जथूरा ही है।"
"तंम म्हारे साथो खेल खेलो हो।"
"वो कैसे?"
"तंम म्हारे को जथूरो के बारो में क्यों बतायो। नेई बतायो तंम।"
प्रणाम सिंह मुस्कराता रहा।
"तंम महाकालो की बातो मानो हो, म्हारे को गलत रास्ता दिखावो हो।"
"उत्तर दिशा में चले जाओ। वहां महाकाली मिलेगी।"
"महाकाली मिलेगी?" देवराज चौहान के होंठों से निकला।
प्रणाम सिंह पलटा और एक दिशा में चल पड़ा।
"सुनो तो।" नगीना ने पुकारा।
परंतु प्रणाम सिंह नहीं रुका।

"म्हारे को नखरो दिखावे हो।"

प्रणाम सिंह निगाहों से ओझल हो गया।

तभी रातुला कह उठा।

"वो पहाड़ गायब हो गया। उसकी जगह पर पानी बह रहा है।"

सबकी नजरें पहाड़ की दिशा की तरफ उठीं।

पहाड़ का नामोनिशान नहीं था। वहां तेज रफ्तार से पानी बहता दिखाई दे रहा था।

"सांभरो ठीको बोल्लो हो कि रातो के बादो पहाड़ो गायब हो जावो।"

"ये महाकाली की मायावी दुनिया है।" तवेरा बोली—"यहां कुछ भी हो जाना सम्भव है।"

मखानी और कमला रानी की नजरें मिलीं।

मखानी मुस्कराया तो कमला रानी भी मुस्कराई।

मखानी कमला रानी के पास खिसक आया।

"अंडा फिर तैयार हो गया है।" मखानी ने कान में कहा।

"हाथ से फोड़ ले। खुद ही आमलेट बना ले।" कमला रानी ने दोनों बांहें उठाकर अंगड़ाई ली।

"मजाक करती है।" मखानी ने दांत फाड़े—"रात तीन बार तूने अंडे का आमलेट बनाया। कैसा लगा?"

"बढ़िया। तू कमाल का है।"

"लेकिन मेरा पेट अभी तक नहीं भरा।"

"तेरा क्या है, तेरा अंडा तो... ।"

"मेरा कहां, उस पर तो तेरा नाम लिखा है। वो तेरा ही अंडा है।"

"बातें करना तो कोई तेरे से सीखे।"

"पहला मौका मिलते ही आ जाना। एक बार फिर आमलेट बनाना।"

"नहीं।"

"दिल मत तोड़।"

"चुप कर। हर वक्त अंडा लिए घूमता रहता है।" कमला रानी ने मुंह बनाकर कहा।

मखानी का चेहरा लटक गया।

उधर मोना चौधरी कह उठी।

"प्रणाम सिंह की बात का हमें जरा भी भरोसा नहीं करना चाहिए। वो हमें भटकाना चाहेगा।"

"भटके तो हम तब, जब हम सही रास्ते पर जा रहे हों। रास्ता तो हमें भी नहीं मालूम।" महाजन ने कहा।

"कम-से-कम हमें प्रणाम सिंह की बताई दिशा में नहीं जाना चाहिए।" मोना चौधरी ने पुनः कहा।

"क्या फर्क पड़ेला बाप। उत्तर दिशा हो या पश्चिम-दक्षिण हो। किसी तरफ तो बढ़ेला ही।"

तवेरा कह उठी।

"हमें उत्तर की तरफ ही बढ़ना चाहिए।"

"क्यों?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा।" तवेरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"महाकाली हमारे रास्ते में ऐसी-ऐसी परेशानियां डाल सकती थी कि हम दस कदम भी न उठा पाते और जान गंवा बैठते। परंतु उसने ऐसा कुछ नहीं किया।"

"तुम कहना क्या चाहती हो?"

"मैं खुद भी हालातों को ठीक से नहीं समझ पा रही। परंतु हम उत्तर दिशा की तरफ ही जाएंगे। देखें तो सही कि महाकाली ने उस दिशा में हमारे लिए क्या तैयार कर रखा है। अभी तक महाकाली की तरफ से हमें नुकसान नहीं पहुंचा तो शायद आगे भी नहीं पहुंचेगा।"

देवराज चौहान ने मोना चौधरी की तरफ देखा।

मोना चौधरी खामोश रही परंतु नगीना कह उठी।

"ठीक है। हम उत्तर दिशा की तरफ ही जाएंगे।"

"हमने काफी आराम कर लिया।" तवेरा बोली—"अब हमें चल देना चाहिए।"

उसके बाद वे सब चल पड़े।

हरे-भरे पेड़ों से घिरा, जंगल जैसा इलाका था, परंतु रास्ता साफ था।

वे अभी कुछ ही आगे बढ़े कि सामने बांदा खड़ा दिखाई दिया।

"इससे बात करने की जरूरत नहीं है।" मोना चौधरी बोली—"ये खामखाह हमारा दिमाग खराब करेगा।"

वे बांदा के पास रुके नहीं। आगे बढ़ते चले गए।

बांदा उनके साथ चलता कह उठा।

"मेरे से तुम लोग नाराज क्यों हो जाते हो। मैं तो तुम सबके भले के लिए ही हूं।"

"तंम म्हारे पासो आ जायो।" बांकेलाल राठौर बोला—"थारी-म्हारी बातो जमो हो।"

बांदा फौरन बांके पास पहुंचा और साथ चलते कह उठा।

"तुम अच्छे इंसान हो भंवर सिंह।"

"और तंम महा हरामो हो। कमीनो हो। म्हारे को रास्तो से भटकावो हो।"

"मैं तो तुम लोगों को काम की बात बताने आया था।" बांदा जल्दी-से बोला—"मैं जानता हूं कि प्रणाम सिंह, यानी कि मेरा बापू तुम लोगों को उत्तर दिशा में ही भेजेगा, वो... ।"

"उत्तरो दिशाओ में लंगरो लागे हो। थारा बापू बोल्लो हो।" बांकेलाल राठौर ने तीखे स्वर में कहा।

"मेरी बात तो सुन लो।"

"बोल्लो, ईबो तको अंम थारी ही सुन्नो हो।"

"उत्तर दिशा में खतरा है तुम लोगों के लिए। बापू तुम सबकी जान ले लेना चाहता है।"

"औरो थारे को म्हारी बोत चिंतो हौवे।"

"हां, तभी तो मैं... ।"

"म्हारे को ईक बात बतायो।"

"क्या?"

"वो आसमानो कपड़ो वाली छोरी किधरो रहो हो। उसो का घरो किधरो हौवे।"

"क्यों?"

"अंम ब्याह करो हो उसो से।"

"मैं तुम्हें खतरे से आगाह कर रहा हूं और तुम लड़की की बातें... ।"

"पैले म्हारे जीवनो में छोरी आयो। फिरो खतरो आवो। बिना छोरी के खतरो किधरो से आवो हो?"

बांदा तेजी से चलता मोना चौधरी के पास जा पहुंचा।

"तुम मेरी बात का भरोसा करो। उत्तर दिशा में तुम लोगों के लिए खतरा है। मेरी बात मान लो।"

"तुम जैसे झूठे की बात मैं नहीं मान सकती।"

"पहली बार तो मैं सच कह रहा हूं।" बांदा के स्वर में आग्रह के भाव थे।

"हम उत्तर में इसलिए नहीं जा रहे कि तेरे बाप ने हमें इधर जाने को कहा। हमें कहीं तो जाना है, इसलिए हम जा रहे हैं।"

"मेरा विश्वास क्यों नहीं करते।" बांदा उखड़े स्वर में बोला।

किसी ने बांदा की बात का जवाब नहीं दिया।

वे सब तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे।

बांदा ठिठक गया। पीछे रह गया। फिर नजरों से ओझल हो गया। वे सब आगे बढ़ते रहे।

चलते-चलते दोपहर होने लगी थी। सूर्य सिर पर चढ़ आया था। अब गर्मी के साथ-साथ थकान भी उन्हें महसूस होने लगी। एकाएक उन्हें महसूस हुआ कि जिस रास्ते पर वे चल रहे हैं, वो ढलवा होने लगा है। ढलानी रास्ता होने की वजह से उनके कदम खुद-ब-खुद ही आगे को उठने लगे थे। तभी मोना चौधरी ने कहा।

"शायद ये रास्ता कहीं खत्म होने वाला है। क्योंकि ये ढलवा होता जा रहा है।"

"अम्भी पतो चल जावे।"

रास्ते पर उनके कदम खुद-ब-खुद ही उठे जा रहे थे।

बांकेलाल राठौर तेजी से चलता हुआ, कमला रानी के पास आ पहुंचा।

कमला रानी ने बांके को देखा तो मुस्करा पड़ी।

बांकेलाल राठौर का हाथ मूंछ पर पहुंच गया और बोला।

"म्हारे को देखो के मुस्करायो औरो गुलाब-जामनो मखानो को खिलायो।"

"गुलाब जामुन?" कमला रानी बोली—"यहां गुलाब-जामुन कहां है जो मैं मखानी को खिलाऊं।"

बांके का हाथ पुनः मूंछ पर जा पहुंचा।

"अंम रातो को सबो कुछ देखो हो।"

"ओह।" कमला रानी मुस्कराई—"तो उसे तुम गुलाब-जामुन कह रहे हो।"

"अंम शरीफो बंदो हौवे। गुलाब-जामुनो ही बोल्लो हो।"

कमला रानी हंसकर बोली।

"तुमने भी गुलाब-जामुन खाना है?"

"अंम तो कबो से बोल्लो हो, गुलाब जामुन खाणो वास्ते।"

"ठीक है तुम्हें भी खिला दूंगी।"

"कबो?"

"जल्दी ही।"

"वादो?"

"वादा।"

बांकेलाल राठौर का चेहरा खिल उठा।

"तंम म्हारे को गुलाब-जामुनो खिलायो अंम थारे को रसमलाईयो खिलायो।"

"रसमलाई कहां है?"

"वो थारे को मौको परो ही बतायो।" कहकर बांकेलाल राठौर आगे बढ़ गया।

सब तेजी से ढलान पर नीचे को तेजी से चलते जा रहे थे।

मखानी फौरन पास आ पहुंचा।

"वो मुच्छड़ तेरे को क्या कह रहा था?" मखानी ने पूछा।

"यूं ही बात कर रहा था।"

"क्या बात?"

"कह रहा था मैं उसे गुलाब जामुन खिलाऊं।"

"ये ही बात की। कोई और तो बात नहीं की?" शंकित से मखानी ने पूछा।

"तेरी कसम मखानी। ये ही बात की। पर तू उससे चिढ़ता क्यों है?"

"वो मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता।" मखानी ने नाराजगी से कहा।

"क्यों?"

"वो तेरे से बात करने के चक्कर में रहता है। तेरे को ताड़ता रहता है।"

"तू घबरा मत। उसके ताड़ने से मैं पिघलने वाली नहीं। वो सिर्फ गुलाब-जामुन खाना चाहता है मेरे से। वो तो खिला दूं न?"

"हां-हां, मैंने कब मना किया है।" मखानी मुस्कराया फिर बोला—"वो मेरा अंडा।"

"चुप कर।" कमला रानी झल्ला उठी—"हर समय अंडा-अंडा लगाए रहता है।"

मखानी की मुस्कान झाग की तरह गायब हो गई। चेहरा लटक गया।

एकाएक वो ढलान चौड़े रास्ते का रूप लेने लगी।

रास्ते के आसपास पेड़ों की कतार नजर आने लगी। अब रास्ते पर घास नहीं थी। वो मिट्टी से भरा साफ रास्ता था।

देवराज चौहान ऊंचे स्वर में कह उठा।

"हम किसी खास जगह पहुंचने जा रहे हैं।"

"मुझे भी ऐसा लगता है।" मोना चौधरी कह उठी—"ये अब स्पष्ट तौर पर रास्ता बनता जा रहा है।"

कुछ देर वे इसी तरह ढलवा रास्ते पर तेजी से आगे बढ़ते रहे, फिर उन्हें बड़ी-सी इमारत दिखाई देने लगी। रास्ता उसी तरफ जा रहा था।

"वो महल जैसा कुछ है।" नगीना बोली।

"किला लगता है।" पारसनाथ ने कहा—"लाल पत्थरों से बना हुआ।"

"हम कहां जा रहे हैं। वो कैसी जगह है?" महाजन ने कहा।

"महाकाली की मायावी नगरी में हमारे साथ कुछ भी हो सकता है।" तवेरा ने कहा—"हमें सावधान रहना चाहिए।"

"प्रणाम सिंह हमें यहीं भेजना चाहता है।" रातुला बोला—"तभी तो उसने हमें इस दिशा में आने को कहा।"

"कहीं यहां पर हमारे लिए खतरा न हो।" तवेरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"महाकाली जाने क्या खेल खेल रही है।"

कुछ ही देर में वो रास्ता उस किले पर पहुंचकर खत्म हो गया।

वे सब किले के प्रवेश द्वार पर आ पहुंचे थे। ठिठक गए थे।

"ये कैसा किला है। सुनसान लगता है। लगता है जैसे बरसों से इसकी सफाई न हुई हो।"

किले का लोहे का गेट भी जाम जैसा लग रहा था। परंतु वो थोड़ा-सा, इतना खुला हुआ था कि एक आदमी सरककर भीतर जा सके। एक-एक करके सब भीतर प्रवेश कर गए।

भीतर सूखे-हरे पेड़ थे। नीचे हर तरफ सूखे-पत्ते बिखरे हुए थे। असीम शांति थी वहां। हवा इस तरह कानों के पास से निकल रही थी कि जैसे सरसराहट-सी गूंज रही हो। उनमें से कोई आगे बढ़ता तो सूखा पत्ता जूते के नीचे आकर चरमरा उठता। पत्ते के चरमराने की आवाज, किसी नगाड़े जैसी प्रतीत होती थी।

सबकी निगाहें सब तरफ जा रही थीं।

परंतु कोई नजर न आया था।

"किसका किला है ये?" महाजन बोला।

"भीतर चलो।" मोना चौधरी ने कहा और आगे बढ़ गई।

सब चल पड़े।

पत्तों के चरमराने की आवाजें फिर सुनाई देने लगीं। ऐसी भयावह खामोशी में जरा-सी आवाज भी बहुत लग रही थी।

काफी खुली जगह पार करके वे किले के मुख्य द्वार पर जा पहुंचे।

वहां लकड़ी का बीस फुट चौड़ा और बीस फुट ऊंचा ही दरवाजा था। दरवाजे पर सोने की नक्काशी की गई थी। बेल-बूटियां बनी हुई थीं।

बीच-बीच में जरूरत के हिसाब से रंग-बिरंगे हीरे भी जड़े थे। दरवाजे के दोनों हैंडिल सोने और हीरे की नक्काशी से जड़े थे। दरवाजे की खूबसूरती देखते ही बनती थी।

"लगता है इस किले का निर्माण, बनाने वाले ने मन से किया है।" नगीना कह उठी।

परंतु दरवाजे के पल्लों पर धूल थी।

मोना चौधरी ने दरवाजे को हाथ से धकेलना चाहा। परंतु वो हिला तक नहीं।

"काफी लम्बे वक्त से दरवाजे को खोला नहीं गया। जाम हो गया लगता है।" मोना चौधरी ने कहा।

देवराज चौहान आगे बढ़ा और दरवाजे को धकेला।

मोना चौधरी ने भी जोर लगाया।

थोड़ा-थोड़ा करके दरवाजा इतना खुल गया कि भीतर सरका जा सके।

"यो किलो किसको हौवे छोरे?"

"आपुन को उतना ही मालूम होईला, जितना तेरे को पता होईला बाप।"

तभी बांके की निगाह कमला रानी पर पड़ी, जो उसे देख रही थी।

बांके का हाथ अपनी मूंछ पर पहुंच गया।

कमला रानी ने मुस्कराकर मुंह फेर लिया।

"अपणो गुलाब जामुनो तो पक्को हो गयो।"

"क्या बोला बाप?"

"थारे कामो की बातो न हौवे।"

फिर सब एक-एक करके दरवाजों के पल्लों से सरककर भीतर प्रवेश कर गए।

हर तरफ धूल ही धूल थी। जाले लगे हुए थे। फर्श पर धूल की मोटी परत थी।

"यहां लम्बे वक्त से कोई नहीं आया।" तवेरा बोली।

उन्होंने खुद को खुली जगह में पाया, जहां से अलग-अलग दिशाओं की तरफ आठ राहदारियां जा रही थीं। भीतर, बाहर से रोशनी पहुंच रही थी। रहस्यमय वातावरण था यहां का।

"हम यहां पर क्यों आए हैं?" महाजन कह उठा।

"ये तो हम भी नहीं जानते।" देवराज चौहान ने कहा।

"किला म्हारे रास्ते में पड़ा तो हम भीतर आ गए।" मोना चौधरी बोली।

"यो म्हारे रास्ते में न पड़ो हो, वो रास्तो म्हारे को इधर खींचो लायो हो।"

सोचों में डूबी नगीना कह उठी।

"हमारे सामने आठ रास्ते हैं। ऐसे में हमें किस तरफ जाना चाहिए?"

"हम सब एक साथ एक ही रास्ते पर जाएंगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"किस रास्ते पर?" मोना चौधरी बोली—"हमें नहीं मालूम कि कौन-सा रास्ता किस तरफ जाता है।"

तभी उनके कानों में मध्यम-सी आहट पड़ी।

वे चौंके।

एक-दूसरे से नजरें मिलीं।

फिर उनकी निगाहें उन आठों रास्तों पर जाने लगीं।

हर तरफ शांति और गहरी खामोशी छाई हुई थी।

"ये आवाज किसी रास्ते से आई है।" मोना चौधरी ने धीमे स्वर में कहा।

"किस रास्ते से?" नगीना कह उठी।

"ये अंदाजा नहीं हो सका।" मोना चौधरी ने होंठ सिकोड़े कहा।

देवराज चौहान की निगाह हर तरफ घूम रही थी। कान पुनः आहट सुनने को बेताब थे।

"यहां हमारे अलावा भी कोई है।" महाजन ने कहा।

हर कोई चुप-चुप सा था।

कई पल इसी खामोशी में बीत गए।

वे इस माहौल में बोरियत महसूस करने लगे कि तभी पुनः आहट हुई।

चूंकि इस बार वे आहट सुनने को तैयार थे, इसलिए पता चल गया कि किस रास्ते से आवाज आई है।

"इधर आओ।" कहते हुए देवराज चौहान एक रास्ते में प्रवेश कर गया।

सब उसके पीछे हो गए।

वहां उनके कदमों की मध्यम-सी आहटें गूंज रही थीं।

कुछ आगे जाने पर, उसी रास्ते में उन्हें बाईं तरफ एक रास्ता जाता दिखा।

देवराज चौहान ठिठक गया कि आगे जाए या इस रास्ते पर जाए।

पीछे से आते बाकी सब भी पास आ गए।

"किधर चलेगा बाप?"

"अब हमारे सामने दो रास्ते...।" देवराज चौहान ने कहना चाहा।

इसी पल पुनः आहट गूंजी।
आवाज नए रास्ते से आई थी, जो कि मुड़ रहा था।
देवराज चौहान ने सबको पीछे आने का इशारा किया और चल पड़ा।
कुछ आगे जाने पर दाईं तरफ एक खुला दरवाजा दिखा।
देवराज चौहान ठिठका और सिर आगे करके भीतर झांका।
अगले ही पल उसकी आंखें सिकुड़ गईं।
लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा दिखे थे उसे। वे बातें कर रहे थे।
"अब हमें क्या मालूम कि जथूरा को महाकाली ने कहां कैद कर रखा है।" लक्ष्मण दास ने कहा।
"मोमो जिन्न तो पागल है साला तो हमें लिए घूमे जा रहा है। मेरा दिल करता है उसे जान से मार दूं।"
"चुप कर। हमारे कानों में उसने सैंसर लगा रखे हैं, वो सुन लेगा।"
"यही तो मुसीबत है कि हम बातें भी नहीं कर... ।"
"व...वो, देवराज चौहान।" लक्ष्मण दास के होंठों से निकला।
सपन चड्ढा की नजरें घूमीं।
तब तक देवराज चौहान भीतर आ गया था।
"ओह देवराज चौहान तुम।" लक्ष्मण दास उसकी तरफ बढ़ता कह उठा—"तुम्हें यहां देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। आखिर तुम भी यहां आ गए। कुछ तो आस बंधी कि, शायद हमें मोमो जिन्न से छुटकारा मिल जाए।"
"तुम दोनों यहां क्या कर रहे हो?"
तब तक बाकी सब भी भीतर आ गए।
"ये तो बहुत सारे लोग हैं।" सपन चड्ढा बोला—"मोना चौधरी भी है।"
"तुम्हारे कारण ही हम मुसीबत में फंसे हैं देवराज चौहान।" लक्ष्मण दास कह उठा—"मैं तुम्हें जानता हूं, इसी बात को लेकर मोमो जिन्न ने मुझ पर अधिकार जमा लिया कि, तुम्हारे खिलाफ मुझसे मनचाहा काम लेगा। ये सपन तो खामखाह ही मेरे संग फंस गया। हमारे द्वारा मोमो जिन्न ने तुम्हारी और मोना चौधरी की लड़ाई करानी चाही, परंतु... ।"
"ये पुरानी बातें हैं।" (विस्तार से जानने के लिए पढ़िए अनिल मोहन का पूर्व प्रकाशित उपन्यास **'जथूरा'**।)
"ये कौन-सी जगह है?"
"महाकाली का किला है।"

"महाकाली का किला?"

"हां। महाकाली ने जथूरा को यहीं-कहीं कैद कर रखा है। वो कमीना मोमो जिन्न कहता है कि हम जथूरा को ढूंढ़ें। भला हम...।"

"जगमोहन भी यहां है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां। वो भी जथूरा को ढूंढ़ रहा है। साथ में सोहनलाल और नानिया भी हैं।"

देवराज चौहान ने राहत की सांस ली। चेहरे पर मुस्कान उभरी।

"मुझे जगमोहन के पास ले चलो।"

"चलो। वो भी यहीं किले के किसी हिस्से में, जथूरा को ढूंढ़ रहा होगा—आओ।"

▭ ▭

देवराज चौहान और जगमोहन गले मिले। ऐसे मिले कि आंखों में आंसू आ गए। जगमोहन तो अलग होने का नाम नहीं ले रहा था। देवराज चौहान ने उसे अलग किया।

"कभी-कभी तो मुझे लगता था जैसे हम दोबारा मिल ही नहीं पाएंगे।" जगमोहन भीगे स्वर में कहा।

"सब ठीक है।" देवराज चौहान ने भर आई आंखों को साफ किया—"हम सब ही यहां आ पहुंचे हैं।"

जगमोहन सबसे मिला।

मौका पाकर बांकेलाल राठौर, सोहनलाल के पास जा पहुंचा।

"सोहनलालो। मजे में हौवो?"

"एकदम बढ़िया।" सोहनलाल मुस्कराया।

"वो तो दिखो ही हो।" बांके की निगाह नानिया की तरफ उठी—"यो छोरी थारे साथो हो क्या?"

"हां। मैं उससे शादी करने वाला हूं।"

"करो। करो। मन्ने का रोको हो। ये बतायो कि छोरी को पटायो कैसो। म्हारे काबू में तो कोईयो आयो नेई। बोत ट्राई करो अंम।"

"फिर बताऊंगा। फुर्सत में।"

"पक्को बता दयो। अंम भी कोई छोरी तलाशो हो।"

सबसे मिलने के बाद जगमोहन बोला।

"आओ। एक साफ कमरे में बैठने का इंतजाम है। वहां चलकर बातें करेंगे।"

सब चल पड़े। नानिया सोहनलाल से, देवराज चौहान की तरफ इशारा करके बोली।

"ये कौन है, जगमोहन जिसके गले मिला?"

"बड़ा भाई है। देवराज चौहान।"

"ओह, तो ये है देवराज चौहान। तुम्हारा क्या लगा?"
"दोस्त और बड़ा भाई।"
"मैं बात कर लूं इससे?"
"क्यों नहीं।"
नानिया देवराज चौहान के पास जा पहुंची।
सब एक धूल-भरी राहदारी पर आगे बढ़े जा रहे थे।
"नमस्कार भाई साहब।" नानिया ने प्रेम से हाथ जोड़कर कहा।
"नमस्कार।" देवराज चौहान मुस्कराया—"तुम नानिया हो।"
"आपने कैसे जाना?"
"बताया था किसी ने।"
"आपको पता है सोहनलाल और मैं, उसकी दुनिया में पहुंचकर शादी करने वाले हैं।" नानिया ने कहा।
"ये अब पता चला।"
"मैं सोहनलाल से शादी करूं, आपको एतराज तो नहीं?"
"एतराज कैसा। अगर हम ठीक-ठाक वापस पहुंच गए तो तुम्हारी शादी के सारे इंतजाम मैं करूंगा। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ होगा।"
"धन्यवाद भाई साहब। आपको क्या लगता है कि हम ठीक-ठाक वापस अपनी दुनिया में नहीं पहुंच सकेंगे?"
"अभी कुछ नहीं कहा जा सकता।"
तभी सब ठिठके।
सामने मोमो जिन्न खड़ा था। देवराज चौहान और मोना चौधरी पर नजरें पड़ते ही वो मुस्करा पड़ा।
"देवा-मिन्नो को यहां देखकर मुझे कितनी खुशी हो रही है।"
"तुम मजे में हो?" देवराज चौहान मुस्कराया।
"जिन्न हमेशा मजे में रहते हैं।" मोमो जिन्न बोला।
"जथूरा का पता चला कि वो कहां है?"
"अभी तो नहीं। तुम और मिन्नो आ गए हो तो पता चलने में देर नहीं लगेगी।"
"आगे से हटो।"
मोमो जिन्न एक तरफ हो गया।
सब आगे बढ़ते चले गए।
लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मोमो जिन्न से मिलीं तो दोनों ने गर्दनें अकड़ा लीं।
वे आगे निकल गए।
मोमो जिन्न पीछे रहकर, उनके पीछे चल पड़ा।

बांकेलाल राठौर कुछ धीमा हुआ और मोमो जिन्न के करीब आकर बोला।

"ईक बातो म्हारे को बतायो।"

"क्या?"

"तंम, लक्ष्मणो और सपणो के साथ उसो दिन किधरो खिसक गयो थे?"

"जिन्नों से ऐसे सवाल नहीं पूछते।"

"का मतलब थारा?"

"जिन्नों का काम करने का अपना ढंग होता है। इस बारे में वे इंसानों को नहीं बताते।"

"जिन्नों का कामो प्राइवेटो हौवे?"

"हां। हमारी दुनिया तुम्हारी दुनिया से बहुत अलग है। जिन्न और इंसानों में बोत बड़ा फर्क होता है।"

"तंम म्हारे को जिन्न बनावो?"

"खबरदार। साधारण इंसान से जिन्न बनने का सफर बहुत लम्बा और कष्ट-भरा है। मैं इस सफर को तय कर चुका हूं। जिन्न बनने की सोचना भी मत। इस सफर में ऐसे कई मौके आते हैं जब तकलीफों से घिरकर इंसान मौत मांगता है, परंतु मौत मिलती नहीं।"

"मुश्किलो हौवे।"

"बोत।"

"फिरो तो अंम जिन्नो न बनो हो। इंसानो ही बेहतरो हौवे।" कहने के साथ बांकेलाल राठौर आगे बढ़ गया।

▭ ▭

उस साफ-सुथरे कमरे में बैठकर उनकी जगमोहन और सोहललाल से सारी बातचीत हुई।

एक-दूसरे से सारे हालातों की जानकारी मिली।

लम्बे समय के बाद वे सब आराम से बैठे थे।

बातें हो जाने के पश्चात देवराज चौहान कह उठा।

"हमें वक्त बर्बाद करने की अपेक्षा जथूरा को ढूंढ़ना चाहिए कि यहां पर वो कहां पर कैद है।"

"तुम्हारे आने तक हम उसे ही ढूंढ़ रहे थे। अभी तक तो हमें सफलता नहीं मिली।" जगमोहन बोला।

"अब हमारी संख्या ज्यादा है। हम जथूरा को ढूंढ़ लेंगे।" सोहनलाल कह उठा।

उसके बाद वे किले में जथूरा को ढूंढ़ने में व्यस्त हो गए।

जथूरा की तलाश में वक्त बीतने लगा।

☐ ☐

जाने कितना वक्त बीत गया।

जथूरा की तलाश में बहुत वक्त बीत गया परंतु जथूरा नहीं मिला।

सारा किला छान मारा।

थक-हारकर वे वापस उसी कमरे में इकट्ठे हुए।

"हम सफल नहीं हो सके।" पारसनाथ ने कहा।

"जथूरा हमें नहीं मिलेगा।" तवेरा बोली—"देवा-मिन्नो को ही मिलेगा।"

"क्यों?" नगीना ने उसे देखा।

"महाकाली ने जथूरा की कैद के ताले पर देवा-मिन्नो के नाम का तिलिस्म बांध रखा है। वो ही सबसे पहले जथूरा तक पहुंच सकेंगे।"

"ओह, ये बात तो मुझे याद न रही।" नगीना ने सिर हिलाया।

"परंतु वो मुझे या मोना चौधरी को भी नहीं मिल रहा।" देवराज चौहान कह उठा।

"मिलेगा।" तवेरा ने गम्भीरता से कहा—"दिल से ढूंढ़ो, मेहनत करो। अवश्य मिलेगा जथूरा।"

"क्या पता हमें झूठ कहा गया हो कि यहां पर ही जथूरा है।" महाजन ने कहा।

"मेरे खयाल में जथूरा यहीं पर है। ये बात बूंदी ने भी स्वीकारी है और महाकाली की परछाई ने भी यही कहा है।"

मोना चौधरी ने सांभरा की दी गोली निकाली और हथेली पर रखकर उसे देखने लगी। वो छोटी-सी गोली भूरे रंग की, चमकदार, खूबसूरत और चिकनी थी। मोना चौधरी के चेहरे पर सोच के भाव तैर रहे थे।

"क्या कर रही हो?" देवराज चौहान ने पूछा।

"सोच रही हूं कि सांभरा ने ये गोली यूं ही तो दी नहीं होगी। इसका अवश्य कुछ तो महत्त्व होगा।" मोना चौधरी ने कहा।

देवराज चौहान सिर हिलाकर रह गया।

तभी जगमोहन आगे बढ़ा और पास पहुंचकर मोना चौधरी से बोला।

"मैं उसे देख सकता हूं?"

"देख लो।"

जगमोहन ने मोना चौधरी की खुली हथेली से वो भूरे रंग की गोली उठाई और उसे ध्यान से देखने लगा।

"ऐसी एक मेरे पास भी है।" कहकर देवराज चौहान ने जेब से गोली निकाली।

जगमोहन ने देवराज चौहान से भी गोली ले ली।

कुछ पलों बाद उसकी आंखें सिकुड़ीं और नजरें महाकाली के बुत की तरफ उठ गईं।

"मिल गया।" एकाएक जगमोहन के होंठों से निकला।

"क्या?" नगीना कह उठी।

"पता नहीं, लेकिन कुछ तो मिल ही गया।" जगमोहन ने उत्साह-भरे स्वर में कहा—"वो सामने छोटे-से चबूतरे पर महाकाली का बुत है, परंतु बुत की आंखों के बीच की भूरे रंग की पुतली का गोल दायरा नहीं है। ये दोनों गोलियां बुत की आंखों की पुतलियों के बीच लगने पर बुत की आंखें पूर्ण हो जाएंगी। जिसकी वजह से बुत अधूरा लग रहा है।" कहने के साथ ही जगमोहन तेजी से चबूतरे की तरफ बढ़ गया।

सबकी उत्सुकता और उलझन-भरी निगाह जगमोहन पर थी।

चबूतरे पर चढ़कर जगमोहन ने हाथ में पकड़ी गोली को बुत की आंख पर, उस खाली जगह में लगाया, जहां पर आंख का भूरे रंग का गोला होना चाहिए था। वो गोली फौरन पुतली में फिट हो गई।

अब बुत की आंख पूर्ण दिखने लगी थी।

"यही है।" जगमोहन आवेश में कह उठा—"इन गोलियों की जगह बुत की आंख की पुतली के बीच ही है।"

देवराज चौहान और मोना चौधरी की नजरें मिलीं।

जगमोहन ने दूसरी आंख की पुतली में भी गोली फिट कर दी।

अब बुत की आंखें पूर्ण हो गईं।

"देखा, मैं न कहता था कि ये गोलियां महाकाली के बुत की आंखों की हैं।" जगमोहन बोला—"पूरी फिट आई हैं।"

तभी मोना चौधरी उठते हुए बोली।

"फिर तो इन गोलियों को आंखों में लगाने पर कुछ नया सामने आना चाहिए। क्योंकि जथूरा की कैद तिलिस्म से बंधी हैं।

"महाकाली ने जथूरा की कैद का तिलिस्म हमारे नामों से बांधा है।" देवराज चौहान ने कहा।

"ओह। फिर तो गोलियों को हमें बुत की पुतलियों में लगाना चाहिए। तब नतीजा सामने आएगा।"

देवराज चौहान ने जगमोहन को देखकर इशारा किया।

जगमोहन ने फौरन पुतलियों में फंसाई दोनों गोलियां निकालीं।

तब तक देवराज चौहान और मोना चौधरी चबूतरे पर आ चढ़े थे। जगमोहन ने दोनों को एक-एक गोली थमा दी।

देवराज चौहान ने महाकाली के बुत की एक आंख में वो गोली फिट कर दी।

मोना चौधरी ने बुत की दूसरी आंख में वो गोली फिट कर दी।

बुत की दोनों आंखें पुनः पूर्ण दिखने लगीं।

अगले कई पलों तक शांति रही।

मोना चौधरी और देवराज चौहान की नजरें मिलीं।

"शायद अभी तक हम तिलिस्म के ताले तक नहीं पहुंचे।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो फिर सांभरा ने महाकाली के बुत की पुतलियों में फिट करने को ये गोलियां क्यों दीं?"

"सांभरा हमें ऐसा कुछ नहीं देगा कि जिसकी सहायता से हम जथूरा तक पहुंच सकें।" देवराज चौहान ने कहा।

"परंतु कुछ तो बात... ।"

मोना चौधरी के शब्द अधूरे रहे गए।

उसी पल बुत में कम्पन हुआ।

"नीचे उतरो। कुछ हो रहा है।"

अगले ही क्षण मोना चौधरी, देवराज चौहान और जगमोहन चबूतरे से कूदकर नीचे आ गए।

बुत में मध्यम-सा कम्पन सबको साफ नजर आ रहा था।

सबकी उत्सुक्ता-भरी निगाह बुत पर थी कि तभी वो चबूतरा जो कि चार फुट ऊंचा और आठ फुट लम्बा चौड़ा था, एकाएक अपनी जगह से सरकने लगा।

"चबूतरो खिसको हो।"

सबकी निगाह चबूतरे के नीचे खाली होती जगह पर थी।

बेहद मध्यम गति से चबूतरा खिसक रहा था। पांच मिनट लग गए चबूतरे को खिसककर थमने में। चबूतरे के खिसकने की मध्यम-सी आवाज भी थम गई।

पहले जहां चबूतरा था, वहां अब नीचे जाने को सीढ़ियां नजर आ रही थीं। नीचे रोशनी थी।

"हमें रास्ता मिल गया।" जगमोहन खुशी-भरे स्वर में कह उठा।

"आओ।" देवराज चौहान खाली हुई जगह की तरफ बढ़ता कह उठा—"हमने जथूरा को ढूंढ लिया है शायद।"

"शायद नहीं।" मोना चौधरी आगे बढ़ी—"पक्का ढूंढ़ लिया है।"

देवराज चौहान सीढ़ियां उतरने लगा। मोना चौधरी भी।

बाकी सब उनके पीछे थे।

"चल छोरे। जथूरो को देखो हो कि वो किसो पोजिशन में हौवे।"

"चल बाप।"

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा भी आगे बढ़े।

"वो भूतना जिन्न भी पीछे-पीछे आ रहा है।" सपन चड्ढा बोला।

"हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा कमीना।"

"वो सुन रहा होगा हमारी बातें।" कहकर सपन ने पीछे देखा।

मोमो जिन्न उन्हें ही देख रहा था। परंतु चेहरे पर मुस्कान थी।

"अब तो मुस्करा रहा है साला। कहीं उसमें इंसानी इच्छाएं फिर से तो नहीं आ गईं।"

"पीछे मत देख, बला को दूर ही रहने दे।"

▭ ▭

सब सीढ़ियां तय करके नीचे पहुंचे तो उन्हें ठिठक जाना पड़ा।

वो काफी बड़ा कमरा था। फर्नीचर के नाम पर टूटी-फूटी कुर्सियां पड़ी थीं।

जथूरा वहां मौजूद था।

उसकी दाढ़ी इस हद तक बढ़ी थी कि पूरी छाती तक फैल रही थी।

काली और सफेद थी उसकी दाढ़ी। शरीर पर मैली हो रही धोती लिपटी थी।

"जथूरा महान है।" मोमो जिन्न ने कहा और आगे बढ़कर उसके कदमों में झुक गया—"तुम जैसा दूसरा कोई नहीं जथूरा।"

जथूरा की आंखों में खुशी के आंसू चमक उठे।

"तुम्हें देखकर प्रसन्नता हुई मोमो जिन्न। कितनी खुशी की बात

है कि देवा-मिन्नो अपने पूर्वजन्म में आ गए और मुझे आजाद कराया।"

मोमो जिन्न उठ खड़ा हुआ।

"पिताजी।" तवेरा की रुलाई फूट पड़ी। वो दौड़ी और जथूरा के गले से जा लगी।

जथूरा की आंखों से आंसू बह निकले।

"तवेरा, मेरी बेटी।"

"पिताजी।"

"तू ठीक तो है ना मेरी बच्ची?"

"मैं ठीक हूं। पोतेबाबा ने पिता बनकर मेरा खयाल रखा।"

"ये तो कितनी अच्छी बात है।" जथूरा ने उसकी पीठ थपथपाकर, उसे अलग किया और देवराज चौहान, मोना चौधरी को देखकर खुशी-भरे स्वर में कह उठा—"मैंने तुम्हें पहचान लिया है देवा-मिन्नो। तुम सबको पहचान लिया है, नील सिंह, परसू, जग्गू, गुलचंद, बेला, भंवर सिंह, त्रिवेणी, तुम सब मेरे अपने तो हो।"

"मैं तुमसे बात करना चाहता हूं जथूरा।" देवराज चौहान ने कहा।

"कहो।"

"तुम्हें आजाद कराने की मेरी शर्त है।"

"आजाद तो पिताजी हो गए हैं।" तवेरा कह उठी।

"नहीं। अभी मैं आजाद नहीं हुआ।" जथूरा बोल पड़ा—"महाकाली का तिलिस्म अभी पूरी तरह टूटा नहीं।"

"क्या बाकी है पिताजी?"

"देवा-मिन्नो जब मुझे छू लेंगे, तभी मैं पूरी तरह महाकाली की कैद से मुक्त हो सकूंगा।"

"ओह।"

"तुम कहो देवा क्या कहना चाहते हो। मैं पूरी कोशिश करूंगा कि तुम्हारी बात मान लूं।"

"दो शर्तें हैं तुम्हारी आजादी की। एक तो ये है कि तुम्हें अपने पिता से विरासत में मिली शक्तियों का बंटवारा अपने भाई सोबरा से करना होगा। क्योंकि उनका हकदार वो भी है।"

"मैं ऐसा ही करूंगा।" जथूरा ने गम्भीर स्वर में कहा।

"दूसरी शर्त ये है कि तू हादसों का निर्माण करके, उन्हें हमारी दुनिया में नहीं भेजेगा।"

"ये समस्या वाली बात है।" जथूरा कह उठा।

"क्यों?"

"मैं हादसों का देवता हूं। मुझे अपना काम करते रहना होगा।" जथूरा बोला।

"आजादी चाहते हो तो तुम्हें ऐसा नहीं करना होगा।"

"हादसों का निर्माण करके, तुम्हारी दुनिया में भेजना मेरा काम है। मेरा कर्म है। इससे मैं पीछे नहीं हट सकता।" जथूरा ने सोच-भरे गम्भीर स्वर में कहा—"कोई बीच का रास्ता निकालो तो मैं हामी भर सकता हूं।"

"मैं बताती हूं बीच का रास्ता।"

"बोल मिन्नो।" जथूरा ने मोना चौधरी को देखा।

"तुम नए हादसों का निर्माण बहुत कम करोगे।"

"ठीक है।"

"और पुराने हादसों को हमारी दुनिया में भेजने की रफ्तार भी बहुत कम कर दोगे।"

"ये भी ठीक है।" जथूरा ने सहमति से सिर हिलाया।

"ये बाद में अपनी बात से पीछे भी हट सकता है।" पारसनाथ ने कहा।

"नहीं परसू। जथूरा जो बात कहता है, खरी कहता है।"

"तुम इतने ईमानदार होते तो अपने भाई सोबरा के साथ धोखा न करते।" नगीना बोली।

"मैं ईमानदार ही हूं।" जथूरा ने गम्भीर स्वर में कहा—"परंतु तब मुझे ताकतों की जरूरत थी। इसलिए मैंने सोबरा के साथ बे-ईमानी की। परंतु पचास साल की इस कैद से मुझे इस बात का पता चला कि जिंदगी कैसे जीनी है। अब आगे आओ देवा और मिन्नो। मुझे महाकाली की तिलिस्मी कैद से पूरी तरह आजाद कर दो, ताकि मैं वापस अपनी नगरी में जा सकूं।"

देवा-मिन्नो आगे बढ़े। पास जा पहुंचे।

"तुम अपने वादे पर कायम रहोगे जथूरा।" देवराज चौहान ने कहा।

"यकीनन मैं कायम रहूंगा। मुझ पर भरोसा रखो।"

देवराज चौहान और मोना चौधरी ने हाथ बढ़ाकर जथूरा को छुआ।

जथूरा के शरीर में जोरों का कम्पन उठा और फौरन ही सामान्य हो गया।

जथूरा ने गहरी सांस ली और मुस्कराकर बोला।

"अब मैं फिर से अपनी नगरी जा सकूंगा। मैं महाकाली की कैद

से आजाद हो गया। इससे बढ़कर मेरे लिए खुशी की दूसरी बात नहीं।" कहने के साथ ही जथूरा ने सामने नजर आते दरवाजे की तरफ देखा—"जाओ, उसे भी आजाद करो। वो भी पचास बरसों से सुखी नहीं रही।"

"आप किसकी बात कर रहे हैं पिताजी?" तवेरा कह उठी।

सबकी निगाह जथूरा पर जा टिकी।

"महाकाली की बात कर रहा हूं।"

"वो, वो कैद है?" जगमोहन के होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

"उसके कर्मों ने उसे कैद कर लिया।" जथूरा गम्भीर स्वर में बोला—"जब मैं सोबरा के कालचक्र को कैद करने की सोच चुका था तो इस बात का एहसास था मुझे कि सोबरा भी कम नहीं, उसने अवश्य इस बात का कोई इंतजाम किया होगा कि अगर मैं कालचक्र पर कब्जा जमा लूं तो मुझे कोई-न-कोई सजा अवश्य मिले। इसलिए मैंने अपनी विद्या से अपने गिर्द ऐसा सुरक्षा चक्र फैला दिया कि मेरा जो हाल हो, वैसा ही हाल उसका हो, जिसने मेरा बुरा हाल किया होगा। परंतु तब मैं ये नहीं जानता था कि सोबरा, मुझे कैद करने के लिए महाकाली की सहायता ले रहा है। ऐसे में जब मैंने कालचक्र पर अपनी ताकतों से कब्जा किया तो महाकाली ने अपनी ताकत से मुझे कैद कर लिया। लेकिन मेरे फैलाए सुरक्षा चक्र में महाकाली अंजाने में कैद हो गई। उसने नहीं सोचा था कि मैंने अपनी सुरक्षा का इंतजाम कर रखा है। उसने मुझे कैद किया तो वो स्वयं भी कैद हो गई। तब वो उस कमरे में थी। वो कैद में रहे, इसके लिए मेरे सुरक्षा चक्र ने उसका आधा शरीर पत्थर का बना दिया। वो वहीं की वहीं खड़ी रह गई। वो भी कैद में पड़ी है पचास बरसों से। मेरे से कम तकलीफ नहीं भोगी बेचारी ने। उसे भी आजाद कर दो।"

ये बात हैरान कर देने वाली थी।

जथूरा को कैद करते ही महाकाली स्वयं भी कैद हो गई थी।

"लेकिन हमने तो कभी नहीं सुना कि महाकाली कैद में है।" तवेरा ने कहा।

"महाकाली ने अपने कैद में होने का प्रचार नहीं किया और अपनी परछाइयों के द्वारा सामान्य ढंग से अपने सारे काम करती रही। वो नहीं चाहती थी कि उसे कैद में जानकर, कोई इस बात का फायदा उठा ले।"

"आपको ये बातें कैसे पता?" तवेरा ने पूछा।

"महाकाली से मेरी बात होती रहती है। वो उस कमरे में, मैं इधर, हम बातें कर लेते हैं।"

"हम महाकाली को कैसे आजाद कराएंगे?" जगमोहन ने पूछा।

"देवा और मिन्नो के छूने भर से वो आजाद हो जाएगी। उसका शरीर सामान्य हो जाएगा।" जथूरा ने बताया।

तभी मोना चौधरी के होंठों से नीलकंठ की आवाज निकली।

"अब मेरी जरूरत नहीं रही। मैं वापस जा रहा हूं।"

"तुम?" महाजन के होंठों से निकला—"तुमने किया ही क्या है, जो अपनी मौजूदगी के बारे में... ।"

"मुझे कुछ करने की जरूरत ही नहीं पड़ी।" मोना चौधरी के होंठों से नीलकंठ का मर्दाना स्वर निकल रहा था।

"क्यों?"

"क्योंकि जब तुम सबने महाकाली की मायावी पहाड़ी में प्रवेश किया, तभी मुझे इस बात का एहसास होने लगा कि महाकाली तुममें से किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहती। उसकी इंकार में भी, हां है। वो स्वयं चाहती है कि तुम लोग आओ और जथूरा को आजाद करो। ताकि वो स्वयं भी आजाद हो सके। इसलिए मैंने महाकाली के मामले में दखल देना उचित नहीं समझा।"

"ऐसा ही था तो प्रणाम सिंह-बूंदी और बांदा हमें भटकाने पे क्यों लगे रहे। वो महाकाली के इशारे पर काम कर रहे थे।" नगीना बोली।

"इस बात का जवाब महाकाली से पूछो। अब यहां मेरा कोई काम नहीं। मैं जा रहा हूं।"

अगले ही पल मोना चौधरी सामान्य होती दिखी।

"नीलकंठ चला गया बेबी।" महाजन ने कहा।

"जानती हूं।" मोना चौधरी ने शांत स्वर में कहा—"मैंने सब सुना।"

"छोरे।" बांके बोला—"नीलकंठो तो गयो।"

"मालूम है बाप। सब सुनेला आपुन।"

तभी जथूरा ने कहा।

"आओ। महाकाली को आजाद करो। जब तक वो आजाद नहीं होगी, मुझे चैन नहीं मिलेगा।" कहकर जथूरा दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

सब उसके पीछे चल पड़े।

मखानी कमला रानी के पास पहुंचकर बोला।

"यहां तो सब ठीक हो गया कमला रानी। अब हमारा क्या होगा?"

"शौहरी से पूछ।"

"जब से हम इस दुनिया में आए हैं, शौहरी तो जैसे गुम हो गया। तू भौरी से क्यों नहीं पूछती?"

"भौरी व्यस्त है, वो खुद ही बात करेगी, जब फुर्सत में आएगी।" कमला रानी बोली।

"तेरे को ये दुनिया कैसी लगी?"

"ठीक है, बुरी नहीं।"

"और वो अपनी दुनिया?"

"हमारी दुनिया ज्यादा मजेदार है। वहां हम दोनों पूरी तरह आजाद हैं। अपनी मर्जी कर सकते हैं।"

"लेकिन हम अपनी दुनिया में नहीं जा सकेंगे।" मखानी ने दुखी स्वर में कहा—"शौहरी और भौरी हमें नहीं जाने देंगे।"

दूसरे कमरे का नजारा देखने लायक था।

सब ठिठक-से गए थे।

वो महाकाली ही थी। कमसिन-सी युवती लग रही थी। चेहरे पर ऐसी खूबसूरती कि जो देखे देखता ही रह जाए। काली साड़ी में थी वो। परंतु उसकी कमर का नीचे का हिस्सा पत्थर का हुआ पड़ा था।

महाकाली ने सबको देखा।

कुछ पल खामोशी रही।

"मुझे खुशी है जथूरा कि तू आजाद हो गया।" महाकाली मुस्कराकर कह उठी।

"तेरे को भी आजाद करके ही जाऊंगा। तूने तो मेरे से ज्यादा तकलीफ भोगी है। मैं कैद में चल-फिर तो सकता था, परंतु तू तो आधी पत्थर की हो गई थी। तेरी तकलीफ ज्यादा है।"

तभी नगीना बोली।

"मुझे समझ नहीं आता कि बूंदी-बांदा और प्रणाम सिंह रास्ते में हमें धोखे में रखने की चेष्टा क्यों करते रहे?"

"ऐसी बात नहीं है।" महाकाली ने कहा—"चूंकि वो मेरे सेवक हैं और ये मायावी पहाड़ी मेरी है, इसलिए हम बाहरी लोगों को सीधे-सीधे सहायता नहीं कर सकते थे। मेरी विद्या का उसूल है। इसलिए बूंदी, बांदा और प्रणाम सिंह या सांभरा, सीधे-सीधे न कहकर, खामोशी से तुम लोगों की सहायता करते रहे और तुम सबको ऐसे रास्ते पर धकेलते रहे, जो कि मेरे इस किले की तरफ आता था। उन्होंने तुम लोगों को कहीं भी तकलीफ नहीं होने दी। परंतु सीधे-सीधे बताकर वे तुम लोगों की सहायता करते तो मेरी तकलीफें और बढ़ जातीं।"

"ओह।"

"और हम सोचते रहे कि तुम हमें रोकना चाहती हो।"

"मैं रोकना नहीं चाहती थी। सिर्फ रोकने का दिखावा कर रही थी। जो कि मेरी विद्या के हिसाब से करना जरूरी था। वरना मेरी जमीन पर आकर, कोई मेरी मर्जी के बिना, दस कदम भी नहीं चल सकता।" कहते हुए महाकाली की निगाह कुछ दूर टेबल पर बोतल की तरफ गई। फिर बोली—"वक्त कम है। अपने को कैद में पाकर मैंने प्रलय के वक्त को पचास बरस पर तय कर दिया था कि अगर मैं पचास बरस तक कैद रहूं तो हर तरफ प्रलय आ जाए। कोई भी जिंदा न रहे। इसके लिए मुझे समय का ज्ञान रहे तो मैंने उस बोतल में पानी भरकर मंत्र पढ़ दिया कि उस बोतल का पानी पचास बरसों में समाप्त हो जाए और अब उस बोतल में पानी की आखिरी बूंद बची हुई है। वो कभी भी सूख सकती है। मैं नहीं चाहती कि अब प्रलय आए और हमारी सारी दुनिया तबाह हो जाए। मुझे जल्दी से आजाद करो।"

मोना चौधरी फौरन आगे बढ़ी और महाकाली को छू लिया।

देवराज चौहान ने भी आगे बढ़कर महाकाली को छुआ।

अगले ही पल सबके देखते-देखते महाकाली की कमर के नीचे का हिस्सा सामान्य होता चला गया।

दो पल में ही महाकाली सामान्य खड़ी थी सामने।

महाकाली ने अंगड़ाई ली। मुस्कराई। फिर कह उठी।

"देवा और मिन्नो का मैं शुक्रिया अदा करती हूं कि मुझे तकलीफदेह कैद से छुटकारा दिलाया। परंतु साथ में ये भी कहूंगी कि पानी की आखिरी बूंद सूखने से पहले देवा-मिन्नो को इस दुनिया से बाहर निकल जाना होगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि पानी की आखिरी बूंद सूखते ही मेरे मारक मंत्र तबाही का रास्ता तलाशेंगे। परंतु जब उन्हें पता चलेगा कि देवा-मिन्नो की वजह से उन्हें कुछ करने का मौका नहीं मिला तो वो मंत्र क्रोध में तुम दोनों को खत्म कर देंगे। इसलिए तुम दोनों का इस दुनिया में अब रहना, खतरे से खाली नहीं। बेहतर है कि फौरन अपनी दुनिया की तरफ रवाना हो जाओ।"

"हम इतनी जल्दी नहीं निकल सकते।" मोना चौधरी ने कहा।

"उसकी फिक्र मत करो।" महाकाली ने कहा—"मैं तुम लोगों को पलों में ही तुम्हारी दुनिया में पहुंचा दूंगी।"

"वो कैसे?" देवराज चौहान बोला।

महाकाली गम्भीर स्वर में बोली।

"जो भी वापस अपनी दुनिया में जाना चाहता है वो आपस में हाथ पकड़ ले।"

फिर तो जैसे एक-दूसरे के हाथों को पकड़ने की होड़ लग गई।

देवराज चौहान का हाथ एक तरफ से नगीना ने पकड़ा, दूसरी तरफ से मोना चौधरी ने।

उसके बाद सब एक-दूसरे का हाथ पकड़ते चले गए। रातुला तवेरा और मोमो जिन्न जथूरा के पास खड़े रहे।

मखानी और कमला रानी की नजरें मिलीं।

आंखों-ही-आंखों में इशारे हुए। दोनों जल्दी से आगे बढ़े और कमला रानी ने कतार के अंत में खड़े बांके लाल राठौर का हाथ थाम लिया।

बांके की मूंछें फड़कीं।

मुस्कराया वो।

मखानी कमला रानी का हाथ पकड़ता कह उठा।

"तूने मुच्छड़ का हाथ क्यों थामा?"

"चुप कर।" कमला रानी फुसफुसाई—"वापस अपनी दुनिया में जाना है कि नहीं।"

"जाना है।"

"तुम सबका भला हो जो मुझे और महाकाली को कैद से आजाद किया।" तभी जथूरा कह उठा।

उसी पल महाकाली ने आंखें बंद करके अपने दोनों हाथ छत की तरफ उठाकर, होंठों ही होंठों में मंत्र बड़बड़ाने लगी। इस दौरान कई बार उसने पांव भी पटका। चंद मिनट बाद महाकाली ने आंखें खोलीं तो सामने किसी को भी न पाया।

"वो सब धुआं बनकर गुम हो गए महाकाली।" जथूरा ने कहा।

"अब वो अपनी दुनिया में पहुंच गए होंगे।" महाकाली मुस्कराई।

"हम अब दोस्त बन गए हैं महाकाली। पचास बरसों से हम बातें करते रहे हैं सुख-दुख की।" जथूरा बोला।

महाकाली मुस्करा रही थी।

"ऐसी बात है तो तुम मुझे क्यों कहती थी कि मैं तुम्हारे साथ, तुम्हारे कामों में हाथ बंटाऊं?" पूछा तवेरा ने।

"जरूरी था ऐसा कहना। मैं जानती थी कि तू मेरी ये बात कभी नहीं मानेगी। ऐसा कहकर मैं ये भ्रम बनाए रखना चाहती थी कि

जथूरा मेरी कैद में है और मैं आजाद हूं। मैं नहीं चाहती थी कि कोई जाने कि मैं भी कैद में हूं और इस बात का फायदा मेरा कोई दुश्मन उठाए और अपनी मनमानी करने लगे।"

"सच में, तुमने भी पचास बरसों में बहुत तकलीफें सहीं।"

महाकाली मुस्कराकर बोली।

"अब मैं खुश हूं कि देवा-मिन्नो की मेहरबानी से मैं आजाद हो सकी।"

"आओ महाकाली।" जथूरा बोला—"बाहर, आसमान देखें। पचास बरसों से जैसे मैं दुनिया ही भूल गया हूं।"

▭ ▭

देवराज चौहान, मोना चौधरी, जगमोहन, सोहनलाल, नानिया, महाजन, पारसनाथ, नगीना, बांकेलाल राठौर, रुस्तम राव, कमला रानी, मखानी, लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा ने खुद को मुम्बई के समुद्र तट के किनारे पर खड़े पाया। सबने अभी भी हाथ थाम रखे थे। शाम हो रही थी। सूर्य की तेज किरणें, पानी को चमका रही थीं, जिससे आंखें चौंधियाई जा रही थीं।

उन्होंने एक-दूसरे के थाम रखे हाथ छोड़े।

वापस अपनी दुनिया में आया पाकर सबने राहत की सांस ली।

"आ गए वापस।" नगीना कह उठी।

"वापसी कितनी आसान रही।" सोहनलाल ने कहा।

"ये तुम्हारी दुनिया है सोहनलाल?" नानिया ने दूर बनी इमारतों पर नजरें दौड़ाते कहा।

"हां।"

"यहां तो कितने बड़े-बड़े घर हैं।"

"वो एक घर नहीं है। वहां पर हजारों लोग रहते हैं।" सोहनलाल ने बताया।

"हजारों लोग एक साथ रहते हैं?" नानिया आश्चर्य से बोली।

"एक साथ नहीं। सब अपने-अपने फ्लैट में रहते हैं। जो इतनी बड़ी इमारत देख रही हो, उसके भीतर छोटे-छोटे घर हैं।"

"ओह, अभी इस दुनिया की बातें मेरी समझ से बाहर हैं। धीरे-धीरे समझूंगी।"

"तुम्हें मैं समझा दूंगी।" नगीना ने प्यार से कहा।

नानिया ने देवराज चौहान से कहा।

"बड़े भैया, तुमने वादा किया था कि इस दुनिया में पहुंचकर, तुम मेरी शादी सोहनलाल से कराओगे।"

"मैं अपने वादे पर कायम हूं।" मुस्कराया देवराज चौहान।

"कायम क्या, ब्याह करा दो। देर किस बात की?"

सोहनलाल ने आगे बढ़कर नानिया का हाथ पकड़ लिया।

नानिया ने प्यार से उसे देखा।

"हम एक-दो दिन में शादी कर लेंगे। चलो तुम्हें अपना घर दिखाता हूं।"

"कहां है?"

"मेरे साथ आओ, पता चल जाएगा।"

"चलो-चलो, मैं अपना घर देखूंगी। तुम्हारा घर मेरा ही तो हुआ अब।" इसके बाद नानिया ने बुरा-सा मुंह बनाकर जगमोहन को देखा फिर कह उठी—"तुम आना कभी मेरे घर। मेहमान बनकर।"

जगमोहन ने गहरी सांस लेकर मुंह फेर लिया।

"उसकी छोड़ो। उसे बुलाने की जरूरत नहीं। वो बिन बुलाए ही आ जाता है।" सोहनलाल बोला।

"अब ये सब नहीं चलेगा। अब तुम्हारे घर में औरत भी रहती है। इसे समझा दो कि कभी-कभी ही आए।"

"चलो भी।" सोहनलाल नानिया का हाथ पकड़े वहां से दूर होता चला गया।

नगीना देवराज चौहान के पास आकर बोली।

"हम भी चलें?"

देवराज चौहान ने सहमति से सिर हिला दिया।

नगीना ने मोना चौधरी को देखा, जो कि उसे ही देख रही थी।

"तुम जरा गुस्सा कम किया करो। जब भी देखो तुम देवराज चौहान से झगड़ा मोल लेने में लगी रहती हो। जब-जब भी ऐसा होगा तुम मुझे अपने सामने पाओगी।" नगीना ने कहा।

जवाब में मोना चौधरी मुस्करा पड़ी।

"चल जगमोहन।" नगीना बोली।

देवराज चौहान ने मोना चौधरी को देखा।

दोनों की नजरें मिलीं।

देवराज चौहान, नगीना और जगमोहन वहां से आगे बढ़ गए।

"हमें भी चलना चाहिए बेबी। एयरपोर्ट चलते हैं, वहां से दिल्ली की फ्लाईट लेंगे।"

"चलो।" मोना चौधरी बोली—"इस काम में खामखाह ही उलझ गए। ये अच्छा रहा कि महाकाली की अपनी दिलचस्पी थी कि हम कैद में पड़े जथूरा तक पहुंच जाएं। क्योंकि ऐसा होने पर महाकाली भी आजाद हो गई। अगर महाकाली की अपनी दिलचस्पी न होती तो उसने अपनी शक्तियों से हम सब को खत्म कर देना था।"

"जो भी हुआ, ठीक-ठाक वापस आ गए।" पारसनाथ बोला—"वरना पूर्वजन्म में तो खतरे भरे पड़े हैं।"

"चलो।" महाजन ने कहा और मोना चौधरी, पारसनाथ के साथ वहां से चल पड़े।

बांकेलाल राठौर और रुस्तम राव की नजरें मिलीं।

"बाप, अब आपुन का भी इधर कोई काम नेई होईला।"

"छोरे सोहनलाल किस्मतो वालो रहो। छोरी का साथो में ला आयो हो।" कहकर बांके ने गहरी सांस ली।

"बाप तुम्हारी मूंछें सलामत होईला न?"

बांके ने फौरन मूंछों को छुआ।

"ठीको है। एकदमो कड़को।"

"तो छोरी की फिक्र क्यों करेला। आज नेई तो कल तो पक्का मिलेला।"

"म्हारी किस्मतो का तो बैंड बजो हो।"

"चल बाप।"

बांके और रुस्तम भी चले गए।

मखानी और कमला रानी ने मुस्कराकर एक-दूसरे को देखा।

"कमला रानी हम अपनी दुनिया में आ गए।" मखानी बहुत खुश था—"यहां हम अपनी मर्जी से जी सकेंगे।"

"ये तो कितनी अच्छी बात है मखानी।" कमला रानी बोली—"मुच्छड़ गुलाब-जामुन खाना भूल गया।"

"गुलाब-जामुन?"

"मैंने मुच्छड़ से वादा किया था कि उसे गुलाब-जामुन खिलाऊंगी। लेकिन वो भूल गया।"

"अच्छा हुआ।"

"अच्छा नहीं हुआ।" कमला रानी ने मुंह बनाया—"गुलाब-जामुन के बदले उसने रस-मलाई खिलाने का वादा किया था।"

"वो तेरे को मैं खिला दूंगा।"

"तेरी रस-मलाई तो खाती ही रहती हूं, एक बार उसकी...।"

"मैंने कब खिलाई तेरे को रस-मलाई?" मखानी एकाएक कह उठा।

कमला रानी ने मखानी को देखा फिर संभलकर कह उठी।

"नहीं खिलाई तो अब खिला देना। चल यहां से। कहीं पर रहने का ठौर ठिकाना भी ढूंढ़ना है। जीवन नए सिरे से शुरू करना है। तेरे को काम-धंधा भी करना पड़ेगा और...।"

"कमला रानी।" मखानी ने प्यार से कहा।

"क्या है?" कमला रानी ने उसे देखा।
"सिर्फ एक बार, मना मत करना, बहुत मन है।"
"यहां?"
"उधर चलते हैं। वहां कोई नहीं है। देख, मना मत करना। बहुत मन है।"
"रोता क्यों है, चल, तू भी क्या याद करेगा।"
कमला रानी और मखानी हाथ थामे उस तरफ चले गए।
"लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।
"सपन।" लक्ष्मण दास ने गहरी सांस ली—"यार विश्वास नहीं आ रहा कि हम अपनी दुनिया में वापस आ पहुंचे हैं।"
"मुझे अब थोड़ा-थोड़ा भरोसा होने लगा है।" सपन चड्ढा की आवाज में राहत के भाव थे।
"उस कमीने, उल्लू के पट्ठे, हरामी मोमो जिन्न ने तो हमें पागल बना दिया था।" लक्ष्मण दास बोला।
"बहुत रंग दिखाए उस मक्कार जिन्न ने। हमें कैसा-कैसा वक्त नहीं देखना पड़ा।"
"कहता था हमें नंगा करके...।"
"याद मत दिला। वो वक्त याद करके दिल कांप उठता है। वो हमारा बहुत बुरा वक्त था।"
तभी लक्ष्मण दास को लगा पीछे कोई खड़ा है। वो फौरन घूमा।
अगले ही पल उसकी सांसें जैसे थम-सी गईं।
पीछे मोमो जिन्न खड़ा था।
"स-स-पन।" लक्ष्मण दास के होंठों से घरघराता स्वर निकला—"म...मोमो जिन्न।"
सपन चड्ढा फौरन पलटा। मोमो जिन्न को देखते ही हड़बड़ा उठा और उसके होंठों से निकला
"जथूरा महान है। उस जैसा दूसरा कोई नहीं।"
मोमो जिन्न मुस्कराया और कह उठा।
"तुम लोगों के पीछे-पीछे मुझे आना पड़ा।"
"अ...अच्छा किया।" लक्ष्मण दास लटके स्वर में बोला—"हम तुम्हें ही याद कर रहे थे।"
"मैं तो तुम लोगों का धन्यवाद करने आया हूं। मेरे से तुम दोनों को कोई कष्ट हुआ हो तो माफी चाहता हूं।"
"माफी?" लक्ष्मण दास के होंठों से निकला।
"तुम दोनों ने मेरी बहुत सहायता की। उसका मैं आभारी हूं।" मोमो जिन्न बराबर मुस्करा रहा था।

लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।
"ये...ये कौन-सी भाषा बोल रहा है।" लक्ष्मण दास के होंठों से निकला।
"पता नहीं। अब तो ये पूरा पागल हो गया लगता है। ये हमसे इतने प्यार से तो नहीं बोलता था।"
मोमो जिन्न मुस्कराते हुए पुनः कह उठा।
"अब मुझे वापस जाना है। बहुत काम करने हैं मैंने अभी। जथूरा अपनी नगरी में पहुंचने वाला है। वहां मैंने खबर कर दी है। वो जथूरा के स्वागत की तैयारियां करने में व्यस्त है।"
"वहां...वहां हमारी जरूरत तो नहीं?" लक्ष्मण दास फंसे स्वर में कह उठा।
"नहीं। तुम दोनों अब आजाद हो। मैं तुमसे फिर कभी नहीं मिलूंगा।" मोमो जिन्न ने मुस्कराकर कहा अगले ही पल वो उनके देखते ही देखते धुआं बनकर इस तरह हवा में घुल गया, जैसे वहां कोई था ही नहीं। गायब हो गया था मोमो जिन्न।
लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा की नजरें मिलीं।
दोनों के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं।
"सपन।" लक्ष्मण दास ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।
"ह...हां।"
"व...वो गया?"
"पता नहीं, य...यहीं कहीं होगा।" सपन चड्ढा व्याकुल-सा आसपास नजरें दौड़ाता कह उठा।
"वो चला गया है।" लक्ष्मण दास एकाएक चीखा—"भाग ले। वो पागल है। फिर आ गया तो हमारे लिए मुसीबतें खड़ी हो जाएंगी।"
अगले ही पल लक्ष्मण दास और सपन चड्ढा बदहवास से वहां से भागते चले गए।

समाप्त